211

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ज्योतिर्विद्वरशुकदेवविरचित ज्योतिषसार।

पंडित-केशवप्रसादजीशर्माद्विवेदीकृत

भाषाटीकासमेत।

यह पुस्तक

राधाकृष्णमिश्रसे अनेक मुहूर्त कोष्ठक आदिक

अधिक बढाकर शोधन करके

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये

छापकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९७७, शके १८४२

कल्याण-मुंबई.

प्रस्तावना.

समस्त ज्योतिषी पंडितोंको तथा ज्योतिषके विद्यार्थियोंको सविनय विदित करता हूं कि, अहो समस्त विद्वज्जन ! तथा विद्यार्थिजनहो ! ! मनुष्यमात्रोंकी प्रवृत्ति केवल सुखप्राप्तिके वास्तेही होती है. सुखपदका अर्थ मनका संतोष कहाता है मनका संतोष शारीरिकक्रियाके आश्रयसे रहता है तहां प्रत्यक्ष जिसका फल दीखनेमें आता है ऐसा ज्योतिःशास्त्र सबसे अधिक शारीरिक सुखदायक होनेसे सर्वजनसंमान्य है. यह सर्वत्र प्रसिद्ध है.

वह ज्योतिःशास्त्र चार लक्ष ग्रंथ होनेसे सांप्रतकालके अल्पायुषी मंदबुद्धि मनुष्योंको पढनेमें अशक्य है. इससे कोई पढता नहीं है. समग्र शास्त्र न पढनेसे उस उस शास्त्रमें कहा हुआ सर्व पदार्थका ज्ञानभी नहीं होता है. जिससे मनुष्योंको कौनसे कार्य करनेमें कौनसा योग्य उपयोगी होता है यह ज्ञान होना दुर्लभ है. इसवास्ते सर्वजनोपकारक पंडितवर्य श्रीशुकदेवजीने यह सर्व ज्योतिषशास्त्रका सार लेकर ज्योतिषसार ऐसा अन्वर्थनामक ग्रंथ निर्माण किया है इस ग्रंथका आबालवृद्ध सर्वलोगोंको उपयोग होनेके वास्ते आग्राकॉलेज संस्कृताध्यापक पण्डितवर्य केशवप्रसादजीने इसके ऊपर सरल हिंदीभाषाटीका बनाय छपवाई थी अब वहही ग्रंथ उन्होंने मुझको सब रजिष्टरी हक्कके साथ अपनी सौजन्यतासे दिया है. वह मैंने अपने मित्र राधाकृष्णमिश्रजीसे अधिक कोष्ठक और शोध तथा अन्य अन्य अनेक ग्रंथोंके वचन वगैरह भीतर मिलाकर बहुतही बढवायके अपने लक्ष्मी- वेंकटेश्वर छापेखानेमें छापकर प्रसिद्ध किया है. अब मैं सर्व ज्योतिःशा- स्त्रानुरागियोंको सविनय प्रार्थना करता हूं कि यह ज्योतिषसार पुस्तक पह- लेकी अपेक्षा बहुतही बढ गया तौभी विद्वानोंकी सेवामें पूर्ववत् स्वल्पही मूल्यसे रवाना होता है, इसवास्ते ग्राहकजन इस अपूर्वग्रंथके संग्रहमें त्वरा करके सांसारिक सुखानुभव करेंगे.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण–मुंबई.

श्रीः ।

ज्योतिषसारस्थविषयानुक्रमणिका ।

विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना कल्याण-मुंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः॥

अथ भाषाटीकासमेतं ।

बृहज्ज्योतिषसारम् ।

मङ्गलाचरणम् ।

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ॥
अज्ञानगजगण्डघ्नीं गर्गलल्लादिकान् मुनीन् ॥ १ ॥
नानाग्रन्थान् समालोक्य दैवज्ञानां च तुष्टये ॥
कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनुत्तमम् ॥ २ ॥

टीका–ग्रंथके निर्विघ्न परिसमाप्तिके लिये प्रथमतः गणेशजीको नमस्कार करके और चैतन्यस्वरूपिणी अज्ञानको नाश करनेहारी ऐसी जो सरस्वतीजी ताको नमस्कार करके और गर्गाचार्य, लल्ल, वसिष्ठ, नारद इत्यादिक जो ज्योतिःशास्त्रके प्रवर्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करके और सूर्यसिद्धांतादिक नाना प्रकारके ग्रन्थ अवलोकन करके ज्योतिर्वित्के संतोषके लिये बालकोंको थोडेमें मुहूर्तादिकका ज्ञान होय इस कारण अत्युत्तम ज्योतिषसार नामक ग्रंथको करते भये ॥ १ ॥ २ ॥

शकप्रकरणप्रारंभः ।

संवत्सरनामपरिज्ञानम् ।

शकेन्द्रकालेऽर्कयुते कृते शून्यरसैर्हृते ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ३ ॥

टीका–शालिवाहनशकमें जिस संवत्सरका नाम जानना होय उसकी यह रीति है कि शककी संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावे और ६० का भाग देय जो शेष बचे वही संवत्सरका नाम जानिये ॥ ३ ॥

संवत्परिज्ञान।

स एव पञ्चाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ॥
रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नातिविश्रुतः ॥ ४ ॥

टीका-जो शालिवाहनके शकमें १३५ मिलावे तो वही विक्रम संवत् हो जाय जो रेवानदीके उत्तरतटमें संवत् नाम प्रसिद्ध है ॥ ४ ॥

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ॥
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ॥ ५ ॥

टीका-संवत्सरके अंकोंमें ९ युक्त करे और ६० के भाग लेनेसे जो शेष रहे सो प्रभवादि संवत्सर जानना. उदाहरण जैसे १९३५ में ९ मिलाये तो १९४४ हुए अब इसमें ६० का भाग दिया तो शेष २४ रहे इस कारण इस संवत्सरका नाम विकृति जानना चाहिये ॥ ५ ॥

संवत्सरोंके नाम।

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ॥
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ ६ ॥
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ॥
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ ७ ॥
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ॥
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ८ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः ॥
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ९ ॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारण विरोधकृत् ॥
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥ १० ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ॥
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ११ ॥

सं०	नाम.	सं०	नाम.	सं०	नाम.	सं०	नाम.	सं०	नाम.
१	प्रभवः	१३	प्रमाथी	२५	खरः	३७	शोभनः	४९	राक्षसः
२	विभवः	१४	विक्रमः	२६	नन्दनः	३८	क्रोधी	५०	नलः
३	शुक्लः	१५	वृषः	२७	विजयः	३९	विश्वावसुः	५१	पिंगलः
४	प्रमोदः	१६	चित्रभानुः	२८	जयः	४०	पराभवः	५२	कालयुक्तः
५	प्रजापतिः	१७	सुभानुः	२९	मन्मथः	४१	प्लवङ्गः	५३	सिद्धार्थी
६	अङ्गिराः	१८	तारणः	३०	दुर्मुखः	४२	कीलकः	५४	रौद्रः
७	श्रीमुखः	१९	पार्थिवः	३१	हेमलंबी	४३	सौम्यः	५५	दुर्मतिः
८	भावः	२०	व्ययः	३२	विलंबी	४४	साधारणः	५६	दुन्दुभिः
९	युवा	२१	सर्वजित्	३३	विकारी	४५	विरोधकृत्	५७	रुधिरोद्गारी
१०	धाता	२२	सर्वधारी	३४	शार्वरी	४६	परिधावी	५८	रक्ताक्षी
११	ईश्वरः	२३	विरोधी	३५	प्लवः	४७	प्रमादी	५९	क्रोधनः
१२	बहुधान्यः	२४	विकृतिः	३६	शुभकृत्	४८	आनंदः	६०	क्षयः

संवत्सरोंका फल।

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ॥ सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ॥ एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ॥ त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ॥ १२ ॥

टीका—प्रभवादि संवत्सरोंमेंसे चलते हुए संवत्सरको द्विगुणा करे उसमेंसे तीन घटाके सातका भाग देनेसे जो शेष रहे तिससे शुभाशुभ फल जानिये ॥ १ अथवा ४ शेष रहें तौ दुर्भिक्ष और ५ वा २ बचें तौ सुभिक्ष, ३ अथवा ६ शेष रहें तौ साधारण और जो शून्य आवे तो पीडा जाननी ॥ १२ ॥

संवत्सरोंके स्वामी।

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्ट्या ॥ भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥ विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यःपितरः ॥ विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनो नासत्यनामानौ च भगः ॥ १३ ॥

टीका—पांच वर्षका एक युग होता है इसी प्रमाणसे६०वर्षके१२युग और क्रमसे उनके १२ स्वामी हैं। विष्णु१ बृहस्पति २ इन्द्र ३अग्नि४ब्रह्मा५शिव६ पितर ७ विश्वेदेवा ८ चन्द्र ९ अग्नि१० आश्विनीकुमार११सूर्य १२॥१३॥

भेद।

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोऽन्यस्तस्मादिडावि-
दिति पूर्वपदाद्भवेयुः ॥ एवं युगेषु सकलेषु तदीय-
नाथा वह्न्यर्कशीतगुविरञ्चिशिवाः क्रमेण ॥ १४ ॥

टीका–इष्ट शकमें पांचका भाग दे शेष बचें उसके संवत्सरोंके नाम क्रमो
जानिये। पहिले संवत्का स्वामी अग्नि १ दूसरे परिवत्सरका स्वामी सूर्य २
तीसरे इडावत्सरका स्वामी चन्द्रमा ३ चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा ४
पांचवें इद्वत्सरके स्वामी शिव ५ ॥ १४ ॥

दूसरा मत।

आनन्दादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ॥
जयादेः शङ्करः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका--आनंदादि ६० संवत्सरोंके स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्ता हैं और
भावादिक २० संवत्सरोंके स्वामी विष्णु हैं जो सबका पालन करते हैं तीसरे
जयादिक २० संवत्सरोंके स्वामी रुद्र संहारकर्ता हैं ॥ १५ ॥

ऋतुप्रकरणम्।

अयन।

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदाऽमरम् ॥ भवाति
दक्षिणमन्यऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥ १६ ॥

टीका--शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन ऋतुमें सूर्यकी गति उत्तर दिशाकी
होती हैं तिसको उत्तरायण कहते हैं, यही देवताओंका दिवस है और
वर्षा शरद् हेमंत इन तीनों ऋतुमें सूर्यकी गति दक्षिणको होती है तिसको
दक्षिणायन कहते हैं यही देवताओंकी रात्रि है ॥ १६ ॥

अयनोंमें शुभाशुभ कर्म।

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षा ॥ सौम्या-
यने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥ १७ ॥

टीका--गृहप्रवेश देवप्रतिष्ठा विवाह मुंडन व्रतधारण मंत्र लेना ये सब शु
कर्म उत्तरायणमें करावे और सब निंद्यकर्म दक्षिणायनमें करने योग्य हैं ॥ १७

संक्रांति अनुसार ऋतु ।

मृगादिराशिद्वयभानुभोगात् षडर्तवः स्युः शिशिरो वसन्तः ॥
ग्रीष्मश्च वर्षाश्च शरच्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः ॥ १८ ॥

टीका-मकर आदि लेकर दो राशि जब सूर्य भोगते हैं तब एक ऋतु होती है उसी प्रकार सूर्य १२ राशि भोगते हैं उससे ६ ऋतु होती हैं ॥ १८॥

तथा मतांतर राशि ।

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्दतवश्च षट् ॥
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥ १९ ॥

टीका-चैत्रादिक दो मासमें १ ऋतु इस प्रकारसे १२ मासमें ६ ऋतु होते हैं सो दक्षिणदेशमें देव पितृकर्ममें प्रसिद्ध हैं ॥ १९ ॥

राशि	ऋतु	राशि	ऋतु
१ मकर २ कुंभ	शिशिरऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षाऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसंतऋतु २	९ कन्या १० तुला	शरदृऋतु ५
५ वृषभ ६ मिथुन	ग्रीष्मऋतु ३	११ वृश्चिक १२ धन	हेमंतऋतु ६

मतांतरराशिअनुसार.

मेषादिक दो राशि सूर्य भोगते हैं इस प्रमाणसे वसंत आदिक६ होती हैं.

राशि	ऋतु	राशि	ऋतु
१ मेष २ वृषभ	वसंत	७ तुला ८ वृश्चि.	शरद्
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्म	९ धन १० मक.	हेमंत
५ सिंह ६ कन्या	वर्षा	११ कुंभ १२ मीन	शिशिर

मासानुसार.

चैत्रसे लेकर दो २ मास वसंत आदिक छः ६ ऋतु होती हैं.

मास	ऋतु	मास	ऋतु
१ चैत्र २ वैशा.	वसंत	७ आश्वि. ८ कार्ति.	शरद्
३ ज्येष्ठ ४ आषा	ग्रीष्म	९ मार्ग. १० पौष	हेमंत
५ श्राव. ६ भाद्र.	वर्षा	११ माघ १२ फा.	शिशिर

१ दक्षिण देशवासी इस महीनेमें पितृकर्म करते हैं ।

मासप्रकरणं तत्र मासपरिज्ञानम् ।

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरां याति भास्करः ॥
सा राशिः संक्रमाख्या स्यान्मासर्त्वयनहायने ॥ २० ॥

टीका—पूर्व राशिको छोडके जिस आगेकी राशिमें सूर्य जाता है उसी सूर्यकी राशिमें १२ संक्रांति मास ऋतु अयन इन सबोंकी गणना होती है॥ २०॥

दर्शावधिं मासमुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर राशिभोगात् ॥
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमिन्दोर्भगणाश्रयाच्च ॥ २१ ॥

टीका—मास कई प्रकारके होते हैं एक चांद्रमास जो शुक्ल प्रतिपदासे अमावस्यापर्यंत होताहै, दूसरा सौरमास जो सूर्यके एक राशि भोगनेसे होता है, तीसरा सावनमास जो तीस दिनका होता है, चौथा नाक्षत्रमास जो चंद्रमाके गिरद नक्षत्रोंके फिरनेसे होता है ॥ २१ ॥

मासोंके नाम तथा सूर्य देवता और देवी ।

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः ॥ तथेष ऊर्जश्च सहाः सहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण ॥ २२ ॥ अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ॥ चैत्रमासे तु वेदांगो भानुर्वैशाख एव च ॥ २३ ॥ ज्येष्ठमासे तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः ॥ गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ॥ २४ ॥ सुवर्णरेताश्वयुजि कार्तिके च दिवाकरः ॥ मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः ॥ इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ॥ २५ ॥ केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ॥ माधवं माघमासे तु गोविन्दमथ फाल्गुने ॥ २६ ॥ चैत्रे विष्णुं तथा विंद्याद्वैशाखे मधुसूदनम् ॥ त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः ॥२७॥ श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ॥ आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः ॥ २८ ॥ मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ॥ माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामिका ॥ २९ ॥ चैत्रे मासि रमा देवी वैशाखे मोहिनी तथा ॥ पद्माक्षी ज्येष्ठमासे तु आषाढे कमलेति च ॥ ३० ॥ कान्तीमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ॥ पद्मावती आश्विने तु राधा देवी तु कार्तिके ॥ ३१ ॥

संख्या	नामानि	नामानि	सूर्य	देवी	देवता
१	चैत्रमास	मधुः	वेदांगः	रमा	विष्णुः
२	वैशाखमास	माधवः	भानुः	मोहिनी	मधुसूदनः
३	ज्येष्ठमास	शुक्रः	इन्द्रः	पद्माक्षी	त्रिविक्रमः
४	आषाढमास	शुचिः	रविः	कमला	वामनः
५	श्रावणमास	नभाः	गभस्तिः	कांतिमती	श्रीधरः
६	भाद्रपदमास	नभस्यः	यमः	अपराजिता	हृषीकेशः
७	आश्विनमास	इषः	सुवर्णरेताः	पद्मावती	पद्मनाभः
८	कार्तिकमास	ऊर्जः	दिवाकरः	राधा	दामोदरः
९	मार्गशीर्षमा.	सहाः	मित्रः	विशालाक्षी	केशवः
१०	पौषमास	सहस्यः	विष्णुः	लक्ष्मी	नारायणः
११	माघमास	तपाः	अरुणः	रुक्मिणी	माधवः
१२	फाल्गुनमास	तपस्यः	सूर्यः	धात्री	गोविन्दः

वार अनुसार मासफल।

पञ्चार्कवासरे रोगः पञ्चभौमे महद्भयम् ॥
पञ्चार्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ॥३२॥

टीका—एक महीनेमें पांच रविवार पडें तो रोग उत्पन्न होय और ५ भौमवार पडनेसे अधिक भय उपजे और ५ शनिवारसे दुर्भिक्ष होय और शेष वार ५ पडें तो वे शुभदायक होंय ॥ ३२ ॥

पक्ष।

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ॥
पूर्वस्तु दैवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृष्णे सितपञ्चमीतः ॥
आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित् कृष्णेऽपि मासके ॥३३॥

टीका—शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णमासीतक शुक्लपक्ष और वदी प्रतिपदासे अमावास्यातक कृष्णपक्ष होता है. शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका होता है ॥ दूसरा भेद—शुदी पंचमीसे लेकर वदी ५ तक शुक्लपक्ष जानिये पहिले

शुक्लपक्ष तदनंतर कृष्ण जो अमावास्याको मास पूरा होता हो तो प्रथम कृष्णपक्ष तिसके पीछे शुक्ल और कदाचित् पूर्णिमाको मासांत हो तो ये दोनों पक्ष देश अनुसार प्रचलित हैं ॥ ३३ ॥

अधिक मास ।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ॥
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥ ३४ ॥

टीका–३२ महीने १६ दिवस ४ घडी बीत जानेपर्यंत अधिकमासका संभव होता है ॥

शाके बाणकराङ्कके विरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते
शेषा वह्निमधौ च माधवाशिवे ज्येष्ठे वरे चाष्टके ।
आषाढे नृपतौ नभश्च शरके भाद्रे च विश्वांशके
नेत्रे चाश्विनकेऽधिमाससुदिते शेषेऽन्यके स्यान्न हि ॥ ३५ ॥

टीका–वर्तमान शाकके अंकमें ९२५ हीन करो और शेष अंकमें १९ का भाग दो जो शेष ३ रहें तौ अधिक चैत्रमास जानना और ११ शेष रहे तौ वैशाख और जो ०० । ०९ बचें तौ ज्येष्ठमास अधिक होगा और जो १६ शेष रहें तौ आषाढ अधिक होगा और जो ५ बचें तौ श्रावण अधिक जानना और जो १३ शेष रहें तौ दो भाद्रपद होंगे और जो २ शेष रहें तौ आश्विनमासकी वृद्धि होगी और अंश शेष रहनेसे कोई मास अधिक नहीं जानना ॥ ३५ ॥

क्षयमास ।

असंक्रांतिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्द्विसंक्रांतिमासः
क्षयाख्यः कदाचित् ॥ क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः
स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च ॥ ३६ ॥

टीका–जो दो अमावास्याके बीचमें संक्रांति न होय तौ वह अधिकमास होता है दो अमावस्याके बीचमें कदाचित् दो संक्रांति होय तौ क्षयमास जानना और जो कार्तिक आदि ३ मास क्षय होते हैं और जिस संवत्में क्षयमास होता उसी संवत्में अधिकमास २ होंगे इन सब श्लोकोंका आशय ग्रहणके सूर्य चंद्रमाका स्पर्श मोक्षसहित नीचे चक्रोंमें देख लेना चाहिये ॥ ३६ ॥

संवत्सर फल	नामसंख्या अंकोंके जो शेषफलबचे	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चन्द्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ।
१ शे. ३ सम	१९३५ विकृति शा. १८००	विष्णुअधिपति त्वाष्ट्र	शेष१ नास्ति	श्रावण १५ चंद्र स्प. ५२। १७ मो. २।३१	प्रकृतिर्विकृतिंयाति विकृतिंप्रकृतिस्तथा ।तथापिसुखिनो लोकाश्चास्मिन् विकृतिवत्सरे ॥
२ शे. ५ सुभि.	१९३६ खर शाके १८०१	विष्णुअधिपति त्वाष्ट्र	अश्विन शेष २	श्रा.कृ.३०मं.सू.पौ.शु. १५ चं. स्पर्श३३।५२ मो. ३८।१८	खराब्देनेः स्वनालोकाअन्यन्यिसमरोत्सुकाः। मध्यमावृष्टिरत्युग्र रोगैर्भूयात्प्रकंपनम् ॥
३ शे. ० पीडा	१९३७श. १८०२ नंदन ६	विष्णुअधिपति अहिर्बुध्न्य.	चैत्रसंभव शेष३ अब्दांशे	ज्ये.श१५चं.ग्र.स्प ३१।३६ मो.३९।२८मार्ग.शु.१५चं. स्प. २८।३४ मो. ३७।२२	नंदनाब्दे सदापृथ्वी बहुसस्यार्घवृष्टयः । आनंदोप्यखलानां च जंतूनांसमहीभुजाम् ॥
४ शे. २ महर्घ.	सं. १९३८ श. १८०३ विजय	विष्णुअधिपति अहिर्बु०	नास्ति शेष ४	मार्ग. शु. १५ चं स्प. ३८।८ मो. ४१। २२ उत्तरआशा	विजयाब्दे तु राजानः सदाविजयकांक्षिणः। सुखिनोजंतवः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥
५ शे. ४ दुर्भि.	सं. १९३९ श. १८०४ जय.	वि. अ. अहिर्बु.	श्राव. शेष५	ज्येष्ठ कृ.३०स्प. १५। ५८ मोक्ष २३।५७ संभवदृष्टिनास्ति	जयमंगलघोषैर्धरणीभातिसर्वदा । जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकांक्षिणः ॥
६ शे. ६ सम	सं. १९४० श. १८०५ मन्मथ	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ६	०	मन्मथाब्देजनाःसर्वे तस्करारतिलोलुपाः । शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥
७ शे. १ दुर्भि.	सं. १९४१ श. १८०६ दुर्मुख	वि. अ अहिर्बु.	नास्ति शेष ७	वै.शु.१५चं.ग्र.दृष्टिनास्तिआ.शु.१५चं.स्प. ४५।२०मो.४७।२४	दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा । महावैरामहीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥
८ शेष ३ सम	सं. १९४२ श. १८०७ हेमलंब	वि.अ. पितर	ज्येष्ठ. शेष ८	चै. शु. १५ चं. स्प. ३४।५०मो.४२।५८	हेमलंबेत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः । भातिभूर्भूपतिक्षोभाखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥
९ शे. ५ दुर्भि.	सं. १९४३ श. १८०८ विलंबी	वि. १२ पितर	नास्ति शेष ९	माघशुक्ल १५ चंद्रग्रहणसंभव दृष्टिनास्ति	विलंबवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः। प्रजापीडात्वनर्घत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥
१० शे. ० पीडा	सं. १९४४ श. १८०९ विकारी	वि. १३ पितर	नास्ति शेष१०	श्राव.१५चं.स्प.४३।६ भा. ३० ग्र. सू. ९।४८ मो. २२।४४	विकार्यब्देखिलालोकाःसरोगावृष्टिपीडिताः । पूर्वसस्यफलंस्वल्पं बहुलंचापरंफलम् ॥
११ शे. २ सुभि.	सं. १९४५ श. १८१० शर्वरी	वि. १४ पितर	वैशा. शेष११	मा.१५ग्र.स्प.४९।५२ मो. ५९।१२ सं. १९।४५ नास्ति	शर्वरीवत्सरेपूर्णा धरासस्यार्थवृष्टिभिः । जनाश्चसुखिनःसर्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ॥
१२ शे०४ दुर्भिक्ष	सं. १९४६ श. १८११ प्लव	वि. १५ पितर	नास्ति शेष१२	आषाढ शु. १५ चं. ग्र. स्प. ४९।१३ मोक्ष ५६।४०	प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्रवसंतिभाः। रोगाकुलात्वीतिभीतिः संपूर्णवत्सरेफलम् ॥
१३ शे. ६ सम	सं. १९४७ शक. १८१२ शुभकृत्	विष्णु १६ विश्वेदेवा	भाद्रप. शेष १३	आ.३०सू.स्प.२२।४४ मो.२९।५७का.चं.स्प. २६।२५मो. ३०।४७	शुभकृद्वत्सरेपृथ्वी राजते विविधोत्सवैः । आतंकचौराभयदाराजानः समरोत्सुकाः ॥
१४ शे. १ दुर्भि.	सं. १९४८ शक.१८१३ शोभन	विष्णु १७ विश्वेदेवा	शेष १४ नास्ति	वैशा.१५चं.स्प.४१। १६ मो.५० का. १५ चं. स्प. ५२।५७	शोभनेवत्सरेधात्री प्रजानांरोगशोकदा । तथापिसुखिनोलोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥

संवत्सरफल	शेषफलब चे अंकोंके जो नामसंख्या	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ।
१५ शेष ३ सम	सं. १९४९ शकः १८१४ क्रोधी	विष्णु १८ विश्वेदेवा	शेष १५ नास्ति	वै.शु१५चं.स्प५१।४६ का. शु. १५ चं. स्प. ३२ मो. ४०।४४	क्रोध्यब्देत्वाखिलालोकाः क्रोधलोभपरायणाः इति दोषेणसततंमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
१६ शेष ५ दुर्भि.	सं. १९५० शकः१८१५ विश्वावसु	विष्णु १९ विश्वेदेवा	आषाढ शेष १६	फा.शु१५चंस्प३१।३१ मो. ३५।० चै. कृ. ३० सू.स्प.१।२७मो.७।१९	अब्देविश्वावसोःशश्वद्घोररोगाधरासुच । सस्यार्घवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ॥
१७ शेष० पीडा	सं. १९५१ शकः१८१६ पराभव	विष्णु २० विश्वेदेवा	शेष १७ नास्ति	नास्ति	पराभवाब्देराजास्यात् सपरंसहशत्रुभिः । आमयःक्षुद्रसस्यातिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥
१८ शेष २ सम	सं. १९५२ शकः १८१७ प्लवंग	विष्णु शिव चंद्रमा	शेष १८ नास्ति	फा. शु. १५ भृ. चं. ग्र. स्प. ४१।४ मो. ४५।५४	प्लवंगाब्देमध्यवृष्टी रोगचौराकुलाधरा । अन्योन्यसमरेभूपाःशत्रुभिर्हृतभूमयः ॥
१९ शेष ४ दुर्भि.	सं. १९५३ शकः १८१८ कीलक	शिव अधिपति चंद्रमा	ज्येष्ठ ०	०	कीलकाब्देत्वीतिभीतिः प्रजाक्षोभनृपाहवौ । तथापिवर्द्धतेलोकः समधान्यार्घवृष्टिभिः ॥
२० शेष ६ सम	सं. १९५४ शकः १८१९ सौम्य	शिव ३ चंद्रमा	शेष १ नास्ति	पौ.शु.१५चं.स्प३/६मो. १/६मा.कृ.३०श.सू.स्प. १३।५१ मो. २०।२६	सौम्याब्देत्वखिलालोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः विवैरिणोधराधीशाविप्राश्चांध्यपरंपराः ॥
२१ शेष १ दुर्भि.	सं. १९५५ शकः १८२० साधारण	शिव अधिपति चंद्रमा	आश्विन २ ०	आ.१५र.चं.स्प५०मो. ५८।२२मार्ग.१५भौ. चं.स्प.४८।२८मो. १/५	साधारणाब्देवृष्टयर्द्धभयंचमारणेमनः । मध्यसंपद्धराधीशाः प्रजाःस्युः स्वस्थचेतसः ॥
२२ शेष ३ सम	सं. १९५६ शकः १८२१ विरोधक	शिव ५ चंद्रमा	चैत्र ३ संभव अंतमें	ज्ये.१५भृ.चं.ग्र.स्प.३१/८ मो.३/१मार्ग. १५श.स्प. ५३।४०मो.५७।२६	विरोधकृद्वत्सरेतुपरस्परविरोधिनः । सर्वेजनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
२३ शेष ५ सम	सं. १९५७ शकः १८२२ परिधावी	वि. शि. ६ अग्नि	शेष ० ४	०	भूपाहवोमहारोगो मध्यसस्यार्घवृष्टयः । दुःखिनोजंतवःसर्वेवत्सरेपरिधाविनः ॥
२४ शेष ० पीडा	सं. १९५८ शकः १८२३ प्रमाथी	शिव ७ अग्नि	० श्रावण ५	१ ग्रह. सू. ३० चै. स्प. ७।३२ मो. १२।२७	प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टयः । प्रजानांजीवनेदुःखंसमात्सर्याःक्षितीश्वराः ॥
२५ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९५९ शकः १८२४ आनंद	शिव ८ अग्नि	० ६	१ ग्रह. चं. चैत्र १५ भौम स्प. ४०।२२ मोक्ष ४२।४८	आंनदाब्देखिलालोकाः सर्वदानंदचेतसः । राजानः सुखिनः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
२६ शेष ४ दुर्भिक्ष	सं. १९६० शकः १८२५ राक्षस	वि. शि. अग्नि	७ नास्ति	२ग्र.चै.शु१५श.स्प२/३ मो.२।४५आ.शु१५स्प ३१।२ मो. २९।१०	स्वस्वकार्येरताः सर्वेमध्यसस्यार्घवृष्टयः । राक्षसाब्देखिलालोकाराक्षसाइवानिष्क्रियाः ॥
२७ शेष ४ सम	सं. १९६१ शकः १८२६ नल	वि. शि. अग्नि	८ ज्येष्ठ	१ ग्र. मा. शु. १५ र. स्प. ४०।३९मो.४६। ५९	नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिःप्रवराधरा । नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥
२८ शेष ६ दुर्भिक्ष	सं. १९६२ शकः १८२७ पिंगल	वि. शि. अश्वि. कुमार	नास्ति	३ ग्र.ना. श्रा. १५ स्प. २७।० मो. ३०।११	पिंगलाब्देत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः । राजानोविक्रमाक्रांताभुंजतेशत्रुमेदिनीम् ॥

संवत्सर फल	शेषफलबचे अंकोंके जो नामसंख्या	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल।
२९ शेष १ सम	सं. १९६३ शकः १८२८ काल	वि. शि. अश्वि. कुमार	१० नास्ति	का.३०सूस्प.९।३६मो १४।२४मो.१५मं.स्प २५।२४मो.३०।२४	वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनःसर्वजंतवः । सन्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥
३० शेष ३ सुभिक्ष	सं.१९६४ शकः१८२९ सिद्धार्थ	वि. शि. अश्वि. कुमार	११ वैशाख	ग्रहणंनास्ति	सिद्धार्थवत्सरेभूपो ज्ञानवैराग्ययुक्प्रजाः । सकलावसुधाभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
३१ शेष ० पीडा	सं. १९६५ शकः १८३० रौद्र	वि.शि. अश्वि. कुमार १४	१२ नास्ति	प्र.मार्ग.शु.१५चं.स्प. ४८।२०मो.५१।३०	रौद्राब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसभागिने । सततंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
३२ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९६६ शकः १८३१ दुर्मति	वि. शि. अश्वि. कुमार	१३ भाद्र	१ प्र. ज्ये. शु. १५ भू. स्प. ५९।३मो.७।४३	दुर्मत्यब्देखिलालोका भूपादुर्मतयःसदा । तथापिसुखिनःसर्वे संग्रामाःसंतिचेदपि ॥
३३ शेष ४ दुर्भिक्ष	सं. १९६७ शकः १८३२ दुंदुभि	वि. शि. १६ भग	१४ नास्ति	१ प्र. का. शु. १५ भु स्प. ५३।३७ मोक्ष ५६।३७	सर्वसस्ययुताधात्री पालिताधरणीधरे । पूर्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ॥
३४ शेष ६ सम	सं. १९६८ शकः १८३३ रुधिरोद्गारी	शि. वि. १७ भग	१५ नास्ति	का. कृ. ३० स्प.५९। २६ मो. ४।५०	आहवेनिहिताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः । यथाकथंचिज्जीवंतिरुधिरोद्गारिवत्सरे ॥
३५ शेष १ दुर्भिक्ष	सं. १९६९ शकः १८३४ रक्ताक्षी	शि. वि. १८ भग	१६ आशा.	चं.चै.१५सो.स्प.६१मो ५६चै.३०बु.स्प.२९। ०मो. ३३।३१	रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा । प्रेक्षंतेसर्वदान्योन्यंराजानोरक्तलोचनम् ॥
३६ शेष ३ सं.१९	सं. १९७० शकः १८३५ क्रोधन	१७ ना. भग	१७ नास्ति	फा. १५स्प. २२।२० चं.भा.१५स्प.२४।९ मोक्ष ३२।५९	क्रोधनाब्देमध्यवृष्टिः पूर्वदेशेचवृष्टयः । संपूर्णमितरत्सर्वे भूपाःक्रोधपरायणाः ॥
३७ शेष ३ सं.२०	सं. १९७१ शकः १८३६ क्षय	शि. वि. २० भग ५	१८ नास्ति	सू. भा.३०भृ. स्प.३०। ३८मो३५।२८भा.१५ भृस्प२५।१मो३३।१६	कार्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्याविनाशनं । क्षयमाणाश्चापिनराजीवंतिक्षयवत्सरे ॥
३८ शेष५ पीडा	सं. १९७२ शकः १८३७ प्रभव	विष्णु १ ब्रह्मा १	० ० ज्येष्ठ	नास्ति ०	काश्यप्यामीतयश्चाग्निकोपाश्चव्याधयोभुवि । प्रभवाब्देमंदवृष्टिस्तथापिसुखिनोजनाः ॥
३९ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९७३ शकः १८३८ विभव	ब्रह्मा २ विष्णु २	१ नास्ति	नास्ति १	दंडनीतिपराभूपा बहुसस्यार्घवृष्टयः । विभवाब्देखिलालोकाः सुखिनःस्युर्विवैरिणः॥
४० शेष ४ दुर्भिक्ष	सं. १९७४ शकः १८३९ शुक्ल	ब्रह्मा ३ विष्णु ३	२ आश्वि.	१ चं. आषा. शु. १५ खग्रासस्पर्श ४९।५५ मो. ५९।२९	शुक्लाब्देनिखिलालोकाः सुखिनःस्वजनैःसह । राजानोयुद्धनिरताःपरस्परजयैषिणः ॥
४१ शेष ४ सम ६	सं. १९७५ शकः१८४० प्रमोद	ब्रह्मा ४ विष्णु ४	३ चैत्र संभव	नास्ति	प्रमोदाब्देप्रमोदंतेराजानोनिखिलाजनाः । वीतरोगावीतभयाईतिशत्रुविनाशकाः ॥
४२शेष६ १५ दुर्भिक्ष	सं. १९७६ शकः १८४१ प्रजापति	ब्रह्मा ५ विष्णु ५	० ०	नास्ति	नचलंतिचलालोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन । अब्देप्रजापतौनूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥

संवत्सर फल	शेषफलबचे अंकोंके जो नामसंख्या	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल।
४३ शेष ५ सम ७	सं. १९७७ शकः १८४२ अंगिरा	ब्रह्मा ६ बृहस्पति	५ श्रावण	चं.ग्र.वै.शु.१५चं.स्प. ५८।३मो.६।४७आ. ११ बु.स्प. ३२।९	अन्नाद्यंभुज्यतेशश्वज्जनैरतिथिभिःसह। आंगिराब्देखिलालोकाभूपाश्चकलहोत्सुकाः॥
४४ शेष ५ सुभि.७	सं. १९७८ शकः १८४३ श्रीमुख	ब्रह्मा बृहस्पति २	६ नास्ति	आश्वि. १५र. स्प. ४९।३१मो. १७।४९ चंद्रग्रहण	श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्घसंयुता। अध्वरेनिरताविप्रावीतरोगाविवैरिणः॥
४५ शेष ० पीडा ०	सं. १९७९ शकः १८४४ भाव	ब्रह्मा बृहस्पति ३	७ नास्ति	आश्वि. कृ. ३०गु. सू. स्प.५।५मो. १०।११ ३० आषा.	भावाब्दे प्रचुरारोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः। राजानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः॥
४६ शेष २ सुभि.९	सं. १९८० शकः १८४५ युवा	ब्रह्मा गुरु ४	८ ज्येष्ठ	माघ. १५ बु. खग्रास ५।४७स्प. ३२।३८ मो. ४१।४८चं. ग्र.	प्रभूतपयसोगावः सुखिनस्सर्वजंतवः। सर्वकामक्रियायुक्तो युवाब्देयुवतीजनः॥
४७ शेष ४ दुर्भि१०	सं. १९८१ शकः १८४६ धाता	ब्रह्मा बृहस्पति ५	९ नास्ति	श्रा.१५शु.५०स्प.४३ मो.५५ख.मा.१५र.स्प ४६।१मो.५१।३६चं.ग्र	धात्रवर्षेखिलाःक्ष्मेशाःसदायुद्धपरायणाः। संपूर्णाधरणीभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः॥
४८ शेष ६ सम ११	सं. १९८२ शकः १८४७ ईश्वर	ब्रह्मा इंद्र १	१० नास्ति	श्रा.१५भौ. दृष्टि. ना. माघ३०गु.स्प.१२।१७ मो.१५।३३सू. ग्रहण	ईश्वराब्देखिलाजंतुधात्रीधात्रीवसर्वदा। षोडशयत्यतुलेवान्नफलमाषैस्तुव्रीहिभिः॥
४९ शेष ६ दु. १२	सं. १९८३ शकः १८४८ बहुधान्य	ब्रह्मा इंद्र १२	११ वैशाख	० ० ०	अनीतिरतुलावृष्टिर्बहुधान्याख्यवत्सरे। विविधैर्धान्यनिचयः सुखपूर्णाखिलाधरा॥
५० शेष ३ सम १३	सं. १९८४ शकः १८४९ प्रमाथी	ब्रह्मा इंद्र ०	१२ नास्ति	० ० ०	नमुंचतिपयोवाहःकुत्रचित्कुत्रचिज्जलम्। मध्यमावृष्टिरर्घश्चनूनमब्देप्रमाथिनि॥
५१ शेष ५ सुभिक्ष	सं. १९८५ शकः १८५० विक्रम	ब्रह्मा १४ इंद्र	१३ भाद्रपद	ज्ये.शु.१५र.संभवअदृष्टिका. ३०चं.स्प.१६। ३७मो.२१।२१चं.सू.	विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रांतभूमयः। सर्वत्रसर्वदामेघामुंचंति प्रचुरंजलम्॥
५२ शेष ० पी. १५	सं. १९८६ शकः १८५१ वृष	ब्रह्मा १५ इंद्र	१४ नास्ति	वै.३०गु. संभव ग्रहणं नास्ति सू.	वृषाब्देनिखिलाः क्ष्मेशायुद्ध्यंतिवृषभाइव। विद्याप्रसक्ताविप्रेन्द्राः पूज्यंतेसततंभुवम्॥
५३ शेष २ १६सम	सं. १९८७ शकः १८५२ चित्रभानु	ब्रह्मा १६ अग्नि	१५ नास्ति	० ०	वित्ताघवृष्टसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा। निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभान्वाख्यवत्सरे॥
५४ शेष ४ १७दु.	सं. १९८८ शकः १८५३ सुभानु	ब्रह्मा १७ अग्नि	१६ आषाढ	चै.१५स्प४४।३मो ५३ भा.१५स्प.४०मो.४९ फा१५स्प१५मो२३ख	सुभानुवत्सरेभूमिर्भूमिपानांचविग्रहः। भातिभूर्भूरिसस्याढ्या भयंकरभुजंगमाः॥
५५ शेष ६ १७सम	सं. १९८९ शकः १८५४ तारण	ब्रह्मा १८ अग्नि ३	१७ नास्ति	भा. १५ बु. स्प. ४७ ४४ मो. ५३।० ख. चंद्रग्रहण	कस्यचिन्निखिलालोकास्तरंतिप्रतिपन्नताम्। नृपाहुंवक्ष्यताद्रोगा भैषज्यैस्तारणाब्दके॥
५६ शेष १ १९ दु.	सं. १९९० शकः १८५५ पार्थिव	ब्रह्मा अग्नि ०	१८ ०	भा.३०सो.स्प.५०मो. ५४।२४फा.३०संभवदृष्टिनास्ति सू. २	पार्थिवाब्देतुराजानः सुखिनःसुप्रजाश्चशम्। बहुभिः फलपुष्पाढ्यैर्विविधैश्चपयोधरैः॥

संवत्सर फल	नामसंख्या अंकोंकेजो शेषफलवचे	अधिपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ।
५७ शेष ३ ६ सम	सं. १९९१ शकः १८५६ व्यय	ब्रह्मा अग्नि ५	० ० ज्येष्ठ	आषा. १५ स्प. २ मो. ३५ पौ.१५ स्प.२९ मो. ३७ खग्रास ४।१	व्ययाब्देनिखिलालोका वहुव्ययपराभृशम् । विरमंताहतुरगैरथैर्भूतानिसर्वदा ॥
५८ शेष ५ ...	सं. १९९२ शक १८५७ सर्वजित्	विष्णु त्वाष्ट्र	१ ०	पौ. १५ बुध स्प. ३५। ४३ मो. ४४।० चंद्रग्रहण	सर्वजिद्वत्सरेत्सर्वे जनास्त्रिदशरात्रिभाः । राजानोविलयंयांति भीमसंग्रामभूमिपाः ॥
५९ शेष० पीडा २	सं. १९९३ शकः १८५८ सर्वधारी	विष्णु त्वाष्ट्र	२ आश्वि.	पौ.१५ बुध स्प९।४८ मो. १४ आ.१५ स्प. ४०।८ मोक्ष ४३।२	सर्वधार्यब्दकेभूपाः प्रजापालनतत्पराः । प्रशांतवैराः सर्वत्र बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥
६० शेष २ ३ सम	सं. १९९४ शकः १८५९ विरोधी	विष्णु त्वाष्ट्र	३ संभव	ग्रहणंनास्ति ०	विरोधिवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः । भूरिभूरियुताभूमिर्भूरिकारिसमाकुलः ॥

सिद्धांतशिरोमणौ ।

क्षयमासविचार ।

गतोऽब्ध्यद्रिनंदैर्मिते शाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः ॥
गजाद्र्यग्निभूमिस्तथा प्रायशोयं कुवेदेंदुवर्षैःक्वचिद्गोकुभिश्च ॥ ३७ ॥

टीका–पहिले जिस संवत्‌में क्षयमास पडे तो उसके १४१ वर्ष पीछे फिर होता है इससे आगे १९ वर्षमें या इससे बाहर इसके मध्यम जो९७४के संवत्‌में क्षयमास हो तो फिर आगे १११५।१२५६।१३७८ में पडेगा और इसके पीछे १४१ और१९ वर्षके अंतरसे क्षयमासका संभव जानना योग्य है॥ ३७॥

तिथिप्रकरण–मासभाच्चांद्रभं यावत् गणयेत्तावदेव तु ॥
यावंति गणनाद्भानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ॥ ३८ ॥

टीका–चैत्रादि बारह मासोंके नाम और तिन नामोंके नक्षत्रसे मासनक्षत्र जानिये जैसा चैत्रका चित्रा विशाखा ज्येष्ठा पूर्वाषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी इस प्रकार नक्षत्रोंमें क्रमसे जानिये, इन मासनक्षत्रसे दिनके चंद्रनक्षत्र जहांतक हो जहांतक गिनना, गिननेसे जितनी संख्या आवे उतनीही क्रमसे तिथि जानना. उदाहरण किसीने पूंछा कि चैत्र.कृष्णमें अनुराधानक्षत्रके दिन कौन तिथि है. उत्तर चैत्रमासमें

आसनक्षत्र चित्रा है और वहां चांद्रनक्षत्र अनुराधा है इसलिये चित्रा अनुराधातक गिननेसे संख्या ४ आई इससे चैत्रकृष्णमें अनुराधाके दिन तृतीया तिथि है परंतु पूर्णिमांत महीनेसे गणित बराबर होता है ॥ ३८ ॥

तिथिसंज्ञापरिज्ञानम् ।

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी ॥ तृतीयारोग्यदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥ ३९ ॥ शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा मता ॥ सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी ॥ ४० ॥ मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा ॥ एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥ ४१ ॥ त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ॥ पुष्टिदा पौर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्याऽशुभा तिथिः ॥ ४२ ॥ वृद्धिस्याथ सुमंगलाथ सबला प्रोक्ता खला श्रीमती कीर्तिर्मित्रपदा तथा बलवती चोग्रा क्रमाद्धर्मिणी ॥ नंदाख्या हि यशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्या तिथिर्नाम्ना तुल्यफला क्रमात् प्रतिपदो दर्शस्त्वमासंज्ञकः ॥ ४३ ॥ नंदा सिते सोमसुते च भद्रा कुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ॥ पूर्णा गुरौ ताश्चमृताः कुजार्के सितांबुजेज्ञेच गुरौशनिः स्युः ॥ ४४ ॥

इन श्लोकोंकी टीका चक्रमें लिखी है ॥

स्वामी ।

वह्निर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः ॥ दुर्गान्तको विष्णुहरी स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ॥ ४५ ॥ अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ॥

संज्ञा ।

नंदा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ॥ कनिष्ठमध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवंत्युत्तममध्यहीनाः ॥ ४६ ॥

वर्जित–कूष्मांडी बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा । तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालांत्रकम् निष्पा-

वांश्च मसूरिकाफलमथो वृंताकसंज्ञं मधु चूतं स्त्रीगमनं क्रमा-त्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ॥ ४७ ॥

टीका

ति.	नामतिथि	तिथि	फल	स्वामी	संज्ञा नाम	शुक्ल	कृष्ण	तिथिपालन
१	वृद्धि	प्रतिपदा	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	कूष्मांड
२	सुमंगला	द्वितीया	कार्यसाध.	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेरीफ.
३	सबला	तृतीया	आरोग्य	गौरा	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	खला	चतुर्थी	हानि	गणश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	श्रीमती	पंचमी	शुभा	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खटाई
६	कीर्ति	षष्ठी	अशुभा	स्कंद	नंदा,	मध्यम	मध्यम	तैल
७	मित्रपदा	सप्तमी	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आंवला
८	बलवती	अष्टमी	व्याधिना.	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	उग्रा	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफल
१०	धर्मिणी	दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	नंदा	एकादशी	शुभा	विश्वेदे.	नंदा	शुभ	अशुभ	दलिया
१२	यशोबला	द्वादशी	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	जयकरी	त्रयोदशी	सर्वसिद्धा	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	क्रूरा	चतुर्दशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	सौम्या	पूर्णिमा	पुष्टिदा	चंद्र	पूर्णा	शुभ	अशुभ	चूत
१६	दर्श	अमा०	अशुभा	पितर	०	०	०	स्त्रीसंगम

नंदासु चित्रोत्सववास्तुतंत्रक्षेत्रादिकुर्वीत तथैव नृत्यम् ॥ विवाह-भूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ ४८ ॥ जयातु संग्रामबलोपयोगी कार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि ॥ रिक्तासु विद्वद्वधघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च यांति सिद्धिम् ॥ ४९ ॥ पूर्णासु मांगल्यविवाहयात्रा सुपौष्टिकं शांतिककर्मका-

यम्॥सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमंगलानि ५०॥

टीका–पडवा, छठि, एकादशीको नंदा तिथि कहते हैं इसमें आनन्दादिक कर्म और देवताओंके उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य गृहस्थल बनाना वस्तु मोल लेना नृत्य सम्बन्धी गीत वाद्य इत्यादि कर्म करने चाहिये १। द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी इनको भद्रा कहते हैं इन तिथियोंमें विवाह गाडी संबन्धी काम मार्गसंबन्धी काम पुष्टिक्रिया करनी चाहिये २। तीज, अष्टमी, त्रयोदशीको जया कहते हैं इनमें संग्राम और सेनाके उपयोगी अस्त्र शस्त्र ध्वजा पताका आदि निर्माण करने योग्य हैं ३। चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये रिक्त हैं इनमें विद्वानोंका वध, घातकर्मकी सिद्धि, विषप्रयोग, शस्त्र इत्यादि उग्र कर्म करने योग्य हैं ४। पंचमी, दशमी, पूर्णमासी इन तिथियोंको पूर्णा कहते हैं इनमें विवाह इत्यादि कर्म यात्रा शांतिक पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावास्याको पितृकर्म करने योग्य है ५॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥

अथ वारसंज्ञापरिज्ञान ।

आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधश्चाथबृहस्पतिः । शुक्रः शनैश्चरश्चैवं वासराः परिकीर्तिताः ॥ ५१ ॥ शिवो दुर्गा गुहो विष्णुः कालब्रह्मेंद्रसंज्ञकाः । सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ ५२ ॥ गुरुश्चंद्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः । क्रूरास्तु क्रूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ॥ ५३ ॥ सूर्यश्चरः स्थिरश्चंद्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः ॥ लघुर्जीवो मृदुः शुक्रः शनिस्तीक्ष्णः समीरितः ॥ ५४ ॥

अष्टदिशाओंके स्वामी ।

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः॥

टीका–पूर्वका स्वामी रवि१ आग्नेयका स्वामी शनि २ दक्षिणका स्वामी मंगल ३ नैर्ऋत्यका स्वामी राहु ४ पश्चिमका स्वामी शनि ५ वायव्यका स्वामी

चंद्र ६ उत्तराका स्वामी बुध ७ ईशानका स्वामी गुरु ८ इन दिशाओंके स्वामी नवग्रहभी जानिये ॥ ५५ ॥

ग्रहोंकी जाति ।

ब्राह्मणो जीवशुक्रौ च क्षत्रियो भौमभास्करौ ॥
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ॥ ५६ ॥

टीका-गुरु शुक्र ये ब्राह्मण, मंगल रवि ये क्षत्रिय, बुध चंद्र ये वैश्य राहु केतु और शनि ये शूद्र हैं ॥ ५६ ॥

ग्रहोंका वर्ण ।

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतौ शुक्रनिशाकरौ ॥
गुरुसौम्यौ पीतवर्णौ शनिराह्वसितौ शुभौ ॥ ५७ ॥

टीका-मंगल और सूर्य इनका रंग लाल, चंद्रमा और शुक्र इनका वर्ण श्वेत, गुरु बुध इनका वर्ण पीत, शनि, राहु, केतु इनका वर्ण कृष्ण है॥ ५७॥

वारोंके अनुसार कर्म ।

रविवारके कर्म ।

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ॥
सुवर्णताम्रोर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादि रवौ विदध्यात् ॥५८॥

टीका-राज्याभिषेक गीत वाद्य यानकर्म राजसेवा गाय बैलका लेना देना हवन यज्ञादि मंत्र उपदेश लेना देना औषधिका लेना शास्त्रप्रारंभ सोना तांबा ऊर्णावस्त्र चर्म काष्ठ लेना युद्धप्रसंग खरीदना बेचना ये कर्म रविवारको करे५८॥

सोमवारके कर्म ।

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्याम्बुविभूषणीद्याः ॥
गीतक्रतुक्षीरविकारशृङ्गी पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ॥ ५९ ॥

टीका-शंख कमल मोती रूपा ऊख भोजन स्त्रीभोग वृक्ष जलादि कर्म अलंकार गाना यज्ञादि गोरस गाय भैंस पुष्पवस्त्र इत्यादिक भोगने सोमवारको योग्य हैं ॥ ५९ ॥

भौमवारके कर्म ।

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघाताहवशाठ्यदम्भान् ॥
सेनानिवेशाकरधातुहेमप्रवालरक्तानि कुजे विदध्यात् ॥ ६० ॥

टीका-भेद करना अनृत चोरी विष अग्निशस्त्र वध नाश संग्राम कपट दंभ सेनाका पडाव खानि धातु सुवर्ण मूंगा रक्तस्राव ये कर्म भौमको करावे॥ ६०॥

बुधवारके कर्म ।

नैपुण्यपुण्याध्ययनं कलाश्च शिल्पादिसेवालिपिलेखनानि ॥
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्च बुधे विधेयाः॥ ६१ ॥

टीका-चातुर्य पुण्य अध्ययन कला शिल्प, सेवा लिखना चित्र काढना धातुक्रिया सुवर्णयुक्ति सख्यत्व व्यायाम और वाद करना ये कर्म बुधवारको करावे ॥ ६१ ॥

गुरुवारके कर्म ।

धर्मक्रियापौष्टिकयज्ञविद्यामाङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः ॥
रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिवारे ॥ ६२॥

टीका-धर्म करना नवग्रहादि पूजा यज्ञ विद्याभ्यास सुभग वस्त्र ग्रह कर्म यात्रा रथ अश्व औषधि विभूषण आदि कृत्य गुरुवारको करावे ॥ ६२ ॥

शुक्रवारके कर्म ।

स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धवस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म॥भूपण्य-गोकोशकृषिक्रियाश्च सिध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ॥६३॥

टीका-स्त्री गायन शय्या मणि रत्न हीरा गंध वस्त्र उत्साह अलंकार वाणिज्य पृथ्वी दूकान गाय द्रव्यखेती, ये कर्म शुक्रवारको करावे ॥ ६३ ॥

शनिवारके कर्म ।

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषार्कविद्याम् ॥
गृहप्रवेशद्विपबन्धदीक्षा स्थिरं च कर्मार्कसुतेह्नि कुर्यात्॥ ६४॥

टीका-लोहा पत्थर सीसा जस्त शस्त्र दास पाप अनृत भाषण चोरी विष अर्क काढना गृहप्रवेश हाथी बांधना मंत्र लेना और स्थिर कर्म इत्यादि शनिवारको करावे ॥ ६४ ॥

वारोंके देवता अधिदेवताओंके नाम ।

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेन्द्रकालाः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणाम् ॥ वह्न्यम्बुभूमिहरिशक्रशचीविरिञ्चि-स्तेषां पुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ॥ ६५ ॥

टीका-शिव पार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्यादिक वारोंके देवता जानना और अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा ये ७ सूर्यादिक वारोंके अधिदेवता जानना ॥ ६५ ॥

विचार करनेका कालपरिमाण ।

पतंगसूनोर्दिवसाधिपत्यं निशाग्रहश्चैव तु तिग्मभानोः ॥
रात्रिद्वयं चैकदिनं च सोमे शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ॥ ६६ ॥

टीका-शनैश्चरसे कालका प्रमाण दिन रात्रि अर्थात् अष्ट प्रहरका कहना चाहिये और सूर्यसे दिन अर्थात् चार प्रहरका कहना और चंद्रमासे दो रात्रि १ दिनका कहना और शेष ग्रहोंसे उदय प्रवृत्ति अर्थात् उदयसे आठ प्रहरका काल प्रमाण कहना चाहिये ॥ ६६ ॥

दोषादोषमाह ।

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् ॥
दिवा शशाङ्कार्किजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ ६७ ॥

टीका-गुरु शुक्र रवि इन तीन वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है और सोम शनि मंगल इन तीन वारोंका दिनको दोष नहीं मानना और बुधवारको सर्वत्र निंदित जानना ॥ ६७ ॥

कृत्य ।

सोमसौम्यगुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ॥
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति ॥ ६८ ॥

टीका-चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारोंमें सर्व कर्म सिद्धि जानना और रवि भौम शनि इनमें उक्त कार्यमात्रकी सिद्धि जानना ॥ ६८ ॥

तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ ।

रविस्तापं कान्तिं विशति शशी भूमितनयो मृतिं लक्ष्मीं

सौम्यः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ॥ विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभो-
गानुगमनं नृणां तैलाभ्यंगात् सपदि कुरुते सूर्यतनयः ॥६९॥

टीका—रविवारको तैलाभ्यंग संतापप्रद है, सोमवारको कांतिप्रद, मंगलको मृत्युप्रद, बुधवारको लक्ष्मीप्रद, गुरुवारको वित्तनाशक शुक्रवारको तैल लगानेसे विपत्ति आती है, शनिवारको तैल लगाना संपत्तिका कर्ता है ॥ ६९ ॥

वस्त्रपरिधानशुभाशुभ ।

जीर्णं रवौ सततमम्बुभिरार्द्रमिन्दौ भौमे शुचे बुधदिने च भवे-
द्धनाय ॥ ज्ञानाय मंत्रिणि भृगौ प्रियसंगमाय मन्दे मलाय च
नवाम्बरधारणं स्यात् ॥ ७० ॥

टीका—रविवारको नूतन वस्त्र परिधान करनेसे शीघ्र जीर्ण होगा; सोमवारको अशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्रही रहेगा; मंगलके दिन पहरनेसे शोकप्रद होगा, बुधवारको धनप्राप्ति, गुरुवारको ज्ञानप्राप्ति, शुक्रवारको मित्रप्राप्ति, शनिवारको पहरनेसे मलिन रहेगा ॥ ७० ॥

श्मश्रुकर्म ।

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तंडसूनुर्भौमश्चाष्टौ वितरति
शुभं बोधनः पञ्च मासान् ॥ सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एका-
दशेति प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ॥ ७१ ॥

टीका—रविवारको क्षौर करनेसे १ महीना आयुष्य नाश जानना, सोमवारको क्षौर करनेसे ७ महीने आयुकी वृद्धि जानना, मंगलको ८ महीने आयुष्य नाश जानना, बुधवारको ५ महीने आयुकी वृद्धि जानना, गुरुवारको १० महिने आयुकी वृद्धि जानना, शुक्रवारको ११ महीने आयुकी वृद्धि जानना, शनिवारको ७ मास आयुका नाश जानना यह गर्ग लल्ल नारदप्रभृति मुनियोंने क्षौरकार्यमें लिखा है ॥ ७१ ॥

विद्यारम्भ ।

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्त्तुश्चायुश्चिरमपि
करोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ॥ नीहारांशौ भवति जडता पञ्चता

भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयः कीर्तयन्त्येवमाद्याः ॥ ७२ ॥

टीका—गुरु, शुक्र, बुध इन तीन वारोंमें विद्यारंभ करनेसे उत्तम विद्या शीघ्रही प्राप्त होती है और चिरंजीवी होता है और रविवार मध्यम है, सोमवारको बुद्धि जड होती है, मंगल और शनिवारको विद्यारंभ करनेसे मृत्यु होता है यह नारद गर्गादि मुनियोंने कहा है ॥ ७२ ॥

वारोंकेनाम	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वारोंकेपति	शिव	पार्वती	स्कंद	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
विचारयोग्य समय	८ प्रहर	२रात्री ४प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर	८ प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिनदोष	दिनदोष	रात्रिदो.	रात्रिदोष	दिनदोष
कृत्य	उक्तकर्म सिद्ध	सर्वकाम सिद्ध	उक्तकर्म सिद्धि	कर्मसिद्ध	कर्मसि.	कर्मसि.	उक्तकर्म सिद्धि
तैलाभ्यंग	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युद	लक्ष्मीप्र.	वित्तना.	दुःखद.	संपत्तिप्र.
वस्त्र परिधान	जीर्ण होय	सदा गीलारहे	शोक प्राप्ति	धन प्राप्ति	ज्ञान प्राप्ति	इष्ट सन्मान	मलिन रहे
श्मश्रुकर्म	१ महीना आ.न्यून	७महीना आ.वृद्धि	८महीना आ. न्यून	५ मास आ.वृद्धि	१० मास आ० वृ.	११मास आ० वृ.	७ मास. आ.न्यू
विद्यारम्भः	मध्यम	जडत्व	मृत्यु	आयु.वृ. अर्थसि.	तथा	तथा	मृत्यु

नक्षत्रपरिज्ञान।

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक् विधूनो भशेषितः स्यादुडुशेषसंख्या ॥
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः कृष्णे द्विहीने मुनयो वदन्ति ॥ ७३ ॥

टीका—चैत्रसे लेकर गत मास चलते मास सहित दूने करे और उसमें गत तिथि चलते दिवस समेत मिलावे मास दिन. जोडे और एक घटावे शेषमें सत्ताईसका भाग देनेसे शेष बचे वही नक्षत्रकी संख्या जानिये ॥ ७३ ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ॥ आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ॥ ७४ ॥ पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ॥ हस्ताश्चित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ ॥ ७५ ॥ अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ॥ पूर्वाषाढोत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ धनिष्ठा शततारारूयं पूर्वभाद्रपदा ततः ॥ उत्तराभाद्रपदश्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥ ७६ ॥

अथ गमनादौ शुभाशुभनक्षत्र ।

अश्विनी तु शुभा प्रोक्ता भरणी नाशकारिणी ॥ कार्यघ्नी कृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः ॥ ७७ ॥ मृगः शुभस्तत आर्द्रा मध्यमस्तु पुनर्वसुः ॥ पुष्यः शुभः सार्पमघापूर्वाः शुभ नाशमृत्युदाः ॥ ७८ ॥ उत्तराहस्तचित्रास्तु विद्यालक्ष्मी शुभप्रदाः ॥ स्वातीविशाखे त्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥ ७९ ॥ ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोयक्षयनाशार्थहानिदम् ॥ विश्वब्रह्मविष्णवश्च बुद्धिवृद्धिसुखप्रदाः ॥ ॥ ८० ॥ वासवं वरुणं शैवं शुभं भद्रं मृतिप्रदम् ॥ उत्तराभाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका ॥ ८१ ॥

नक्षत्रोंके स्वामी ।

भेशाद्दस्रयमाग्निकेन्दुगिरिशाः प्रोक्ता अदित्यङ्गिराः सर्पाः कव्यभुजो भगोर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात् ॥ इन्द्राग्नी त्वथ मित्र इन्द्रनिर्ऋतिर्नीरं च विश्वेविधिर्वैकुण्ठो वसुपाश्यजैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥ ॥ ८२ ॥ अधोमुखनक्षत्र ॥ मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्पाणिपूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्तितम् ॥ तिर्यङ्मुखनक्षत्र ॥ ज्येष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरःपूषानुराधानिलत्वष्ट्राख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्यङ्मुखान्येषु च ॥ ८३ ॥ ऊर्ध्वमुखनक्षत्र ॥ पुष्यार्द्राश्रवणोत्तरा शताभिषक् ब्राह्मश्रवि

ब्राह्मयान्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्यान्यथैतेषु तु ॥ ॥ ८४ ॥ ध्रुवास्थिरनक्षत्र ॥ रोहिणीसहितमुत्तरात्रयं कीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ॥ ८५ ॥ मृदुनक्षत्र ॥ त्वाष्ट्रमित्रशशिपूषदैवतान्यामनन्ति मुनयो मृदून्यथ ॥ ८६ ॥ लघु नक्षत्र ॥ अश्विनी गुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघु चतुष्टयं मतम् ॥ ८७ ॥ तीक्ष्णनक्षत्र ॥ मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युल्लपन्त्यथ च तीक्ष्णसंज्ञया ॥ ८८ ॥ चरनक्षत्र ॥ वैष्णवत्रयथुतः पुनर्वसुर्मारुतं च चरपञ्चकं त्विदम् ॥ ८९ ॥ उग्रनक्षत्र ॥ पूर्विकात्रितयमान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ॥ ॥ ९० ॥ मिश्रनक्षत्र ॥ हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मित्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ॥ ९१ ॥ चरादिनक्षत्र ॥ चरं चलं क्रूरमुशन्ति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ॥ क्षिप्रं लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति ब्रुवन्ति ॥ ९२ ॥

अन्धादिक नक्षत्रसंज्ञा ।

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ॥
रोहिणीप्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनः पुनः ॥ ९३ ॥

नक्षत्रोंके स्वरूप ।

तुरगमुखसदृक्षं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैणस्योत्तमाङ्गेन तुल्यम् ॥ मणिगृहशरचक्रं भाति शालोपमम्भं शयनसदृशमन्यच्चात्र पर्यङ्करूपम् ॥ ९४ ॥ हस्ताकारमतश्च मौक्तिकसमं चान्यत् प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवत्स्थिते बलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ॥ क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्यासमानं परं चान्यद्दन्तिविलासवत्स्थितमतः शृङ्गानिभं व्यक्तिमत् ॥ ९५ ॥ त्रिविक्रमाभं च मृदङ्गरूपं वृत्तं ततोऽन्यद्यमलद्वयाभम् ॥ पर्यङ्करूपं मुरजानुकारी चेत्येवमश्वादिवचक्ररूपम् ॥ ९६ ॥

नक्षत्रोंके तारोंकी संख्या ।

वह्नित्रिऋत्विषुगुणेन्दुकृताग्निभूतबाणाश्विनेत्रशरभू-
कुयुगाब्धिरामाः ॥ रुद्राब्धिरामगुणवेदशतद्वियुग्मं
दन्ताबुधैर्निगदिताः क्रमशो भताराः ॥ ९७ ॥

संख्या	नक्षत्रोंके नाम	शुभाशुभ संज्ञा	स्वामीका नाम	मुख संज्ञा	रूपसंज्ञा नाम	नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आकृति	तारोंकी संख्या
१	अश्विनी	शुभ	अश्वि.कु.	तिर्यङ्मु.	लघु	क्रूर	मंदलोचन	अश्वरूप	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	साधा.	मध्यलो॰	योनिरूप	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	स्थिर	सुलोचन.	क्षुररूप	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	मैत्र	अंधलो॰	शकट	५
५	मृगशिर	शुभ	चंद्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	दारुण	मंदलोच.	मृगसम	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊर्ध्वमुख	तीक्ष्ण	चल	मध्यलो॰	मणिसम	१
७	पुनर्वसु	मध्यम	आदिति	तिर्यङ्मु.	चर	क्षिप्र	सुलोचन.	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमुख	लघु	दारुण	अंधलो॰	शरसम	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमुख	तीक्ष्ण	क्रूर	मंदलोच.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो॰	शालासम	५
११	पूर्वाफा॰	मृत्युद	भग	अधोमुख	उग्र	स्थिर	सुलोचन	शय्यासम	२
१२	उत्तराफा.	विद्या	अर्यमा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	क्षिप्र	अंधलो॰	पर्यंकसम	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यङ्मु.	लघु	मैत्र	मंदलोच.	हस्ताकृति	५
१४	चित्रा	शुभद	त्वष्टा	तिर्यङ्मु.	मृदु	चल	मध्यलो॰	मौक्तिक	१
१५	स्वाति	अशुभ	वायु	तिर्यङ्मु.	चर	साधा.	सुलोचन	प्रवाल	१
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमुख	मिश्र	मैत्र	अंधलो॰	तोरण	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	क्षिप्र	मंदलोच.	बलिसम	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयनाश	इन्द्र	तिर्यङ्मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	कुंडल	३
१९	मूल	अर्थनाश	राक्षस	अधोमुख	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोचन	सिंहसम	११
२०	पूर्वाषाढा	हानि	उदक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	अंधलो॰	शय्यासम	४
२१	उत्तराषा.	बुद्धिदा	विश्वेदेव	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	हस्तीसम	३
२२	अभिजित्	वृद्धिदा	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	अंधलो॰	त्रिकोण	३
२३	श्रवण	सुखदा	विष्णु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	अंधलो॰	वामनसम	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	मंदलोच	मृदंगसम	१००
२६	पूर्वाभाद्र.	मृत्युदा	अजैक.	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो॰	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा.	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकार	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मुख	मृदु	मैत्र	अंधलो॰	मृदंगसम	३२

कार्याकार्यविचार।

अधोमुख ।

वापीकूपतडागगर्तपरिखाखाता निधेरुद्धृति-
क्षेपो द्यूतबिलप्रवेशगणितारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ॥

टीका--अधोमुख नक्षत्र ये हैं मूल कृत्तिका मघा विशाखा भरणी आश्लेषा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा इनमें वापी कूप तालाव गर्त और खाई खोदना द्रव्य काढना और रखना जुआ खेलना बिलान्तःप्रवेश गणितारम्भ ये कर्म करने योग्य हैं ॥

तिर्यङ्मुख।

अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरभ्रादिदान्त्याश्विनौ ।
गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ॥

टीका--तिर्यङ्मुख कहिये ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृगशिरा रेवती अनुराधा स्वाती चित्रा इन नक्षत्रोंमें घोडा हाथी ऊंट भैंस गधा बैल मेंढा सूकर श्वान लेना, नाव पानीमें डालना गंत्री यंत्र हल चलाना धारण गमनादिक करे ॥

ऊर्ध्वमुख ।

प्रासादध्वजधर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणो-
च्छ्रायारामविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादि च ॥

टीका--पुष्य आर्द्रा श्रवण उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा शत-भिषा रोहिणी धनिष्ठा इन नक्षत्रोंको ऊर्ध्वमुख कहते हैं इनमें देवस्थान ध्वजा मंडप घर कोट भीत तोरण बाग राज्याभिषेक आदि कर्म करने योग्य हैं ॥

ध्रुवनक्षत्र ।

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशान्तिषु हितं स्थिरेषु च ॥

टीका-रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा ये ध्रुव नक्षत्र हैं इनमें बीज बोना, हर्म्य तथा नगरमें प्रवेश, राज्याभिषेक, बाग लगाना ये कर्म करने योग्य हैं ॥

मृदुनक्षत्र ।

मित्रकार्यरतिभूषणाम्बरोद्गीतिमङ्गलविधानमेषु तु ।

टीका--मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इनको मृदु कहते हैं इनमें मित्रकार्य स्त्रीप्रसंग भूषण और वस्त्रधारण नाना आदि नाना प्रकारके मंगल कर्म करने योग्य हैं ॥

लघुनक्षत्र ।

पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषु सिद्धिदम् ।

टीका--अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् इनको लघु कहते हैं इनमें दूकान खोलना, भूषण धारण करना, क्रीडा करना, औषधी बनाना, कारखाना, ज्ञान, विद्या, शिल्पविद्या, प्रस्थान गमनादिक शुभ हैं ॥

तीक्ष्णनक्षत्र ।

भूतयक्षनिधिमन्त्रसाधनं भेदबन्धवधकर्म चात्र तु ।

टीका--आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा मूल ये तीक्ष्ण नक्षत्र हैं इनमें भूत और यक्षादिकोंकी पीडाका निवारण करना, द्रव्य काढना, मंत्रसाधन, भेद, बंधन वध ये कर्म उक्त हैं ॥

चरनक्षत्र ।

दन्तवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ।

टीका--पुनर्वसु स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका ये चर नक्षत्र हैं इनमें हाथी, घोडा, नाना प्रकारके वाहन, बागमें जाना, पालकी रथ गाडी आदिकी सवारीमें बैठना योग्य है ॥

उग्रनक्षत्र ।

शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषु स्मृतम् ।

टीका--भरणी मघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये उग्र नक्षत्र हैं इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बंधन, उत्साह, शस्त्र, जलाना आदि कर्म करना विहित हैं ॥

मिश्रनक्षत्र।

स्वाभिधानसमकर्मसाधने कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः॥

टीका—कृत्तिका विशाखा भरणी ये मिश्र हैं इनमें नक्षत्रोंके समान कर्म करने योग्य हैं॥

नष्टवस्तुके देखनेका प्रकार।

नक्षत्रोंकी लोचनसंज्ञा।

अन्धके लभते शीघ्रं मन्दके च दिनत्रयम्।
मध्यके च चतुःषष्टिर्न प्राप्नोति सुलोचने॥

टीका—अंध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिलती है और मंदलोचनमें जानेसे ३ दिन पीछे प्राप्त होती है मध्यलोचन नक्षत्रमें वस्तु नष्ट होय तो ६४ दिवस पर्यंत मिल जाय। सुलोचनमें गई वस्तु कभी प्राप्त नहीं होती॥

नष्टवस्तुदिग्ज्ञान।

अन्धके पूर्वतो वस्तु मंदके दाक्षिणे तथा।
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने॥

टीका—अंधे नक्षत्रमें नष्ट वस्तु पूर्व दिशामें जानिये और मंदलोचनमें नष्ट वस्तु दक्षिणमें और मध्यलोचनमें गत वस्तु पश्चिम दिशामें और सुलोचनमें गत वस्तु उत्तर दिशामें जानिये॥

अंधादिनक्षत्रोंमें नष्टवस्तुकी प्राप्ति होनी वा न होनी।

अन्धे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मन्दनेत्रे च तद्वत्।
दूरात् श्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे॥

टीका—अंध नक्षत्रमें नष्ट वस्तु शीघ्र प्राप्त होती है, मंदलोचनमें वस्तु परिश्रम और विलंबसे और मध्य लोचनमें गई वस्तु दूर जानिये और मिलनेहारभी नहीं और सुलोचनमें नष्ट वस्तु न सुननेमें आवे न मिले॥

नक्षत्रानुसारप्रश्न।

मघादिआर्यमान्तं च समीपे वस्तु दृश्यते। हस्तादिवसुपर्यन्तमन्यहस्ते

च दृश्यते ॥ शततारादिभान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते । अन्यादिसार्पपर्यन्तमदृष्टं दूरगं तथा ॥

टीका—मघासे लेकर उत्तराफाल्गुनीपर्यंत नक्षत्रोंमें जो वस्तु चोरी जाय तो वह समीप जानिये, हस्तसे धनिष्ठातक दूसरे हाथमें वस्तु जानिये, शतभिषासे भरणीतक अपने घरमें जानिये और कृत्तिकासे आश्लेषातक गई वस्तु प्राप्त नहीं होती ॥

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् । दिक्संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ॥ एकेन भूतले द्रव्य द्वयं चेद्भाण्डसंस्थितम् । तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ॥ तुषस्थं पञ्चमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् । सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ॥

टीका—प्रश्नसमयकी तिथि, वार और ग्रह नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करे और इनमें प्रहर मिलाके आठ गुणा करे और सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उससे फल विचार एक शेष रहे तो भूमिमें वस्तु जानिये और २ शेष रहें तो बरतनमें, ३ शेष रहे तो जलमें, ४ बचें तो अंतरिक्षमें जानिये, ५ बचें तो तुसम, ६ बचें तो गोबरमें, ७ बचें तो भस्ममें वस्तु जानिये ॥

दिवारात्रिमुहूर्तान्याह ।

शिवोहिर्मित्रपितरौ वस्वम्भाविश्ववेधसः ।, विधिरिन्द्रोऽथ शक्राग्नीरक्षोब्धीशोर्यमा भगः ॥ मुहूर्त्तांशा इमे प्रोक्ता दिवा पंचदशक्रमात् । मुहूर्ता रजनौ शंभुरजैकचरणाश्रयः ॥ दस्रात्पश्चादितेर्जीवो विश्वकोतक्षमारुतेः । दिनमानस्य तिथ्यंशो रात्रेरपि मुहूर्तकाः ॥ नक्षत्रनाथतुल्येऽस्मिन् स्थितकार्यात् खभोदितम् । दिनमध्येऽभिजिन्मध्ये दोषसंघेषु सत्स्वपि ॥ सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ॥

अथ रव्यादिवारे त्याज्यमुहूर्त्ताः ।

अर्यमा भानुमद्वारे चन्द्रे हि विधिराक्षसौ । पित्राग्नी कुजवारे तु चन्द्रपुत्रे तथाऽभिजित् ॥ पित्रब्राह्मौ भृगोर्वारे राक्षसाम्बू गुरोर्दिने । रौद्रसार्पौ शनेराह्नि इमे त्याज्या मुहूर्त्तकाः ॥

दिवारात्रिचक्रम्।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	सं
शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अम्बु	विश्वे	विधि	विधि	इंद्र	इद्रा.	रक्षा.	वरुण	अर्य.	भग	मुहू.
आ०	श्लेषा	अनु.	मघा	धनि.	पूषा	उत्त.	ऽभि.	रोहि	ज्ये.	वि.	मूल	शत	उ.	पू०	०.
रुद्र	अजै.	अहि	पूषा	दस्र	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदि.	गु॰.	वि.	सूर्य	त्वा.	वायु	रात्रि
आ०	पू.भा	उ.	रेवती	अश्वि	भर	कृत्ति	रोहि	मृग	पुन	पुष्य	श्रव	हस्त	चि.	स्वा	नक्ष.

अथ रव्यादिवारे त्याज्यचक्रम्।

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
अर्यमा	ब्रह्माराक्ष.	पितृअग्नि	ऽभिजित्	राक्षसअंबु	पितृब्रह्म	शिवसर्प	मुहूर्ताः
उ०फा०	रोहिणी.	मघाकृत्ति	ऽभिजित्	मूलपूर्वाषा	मघा. रो	आर्द्राश्लेषा	नक्षत्र
दिन १४	दिन९।१२ रा. ८।	दि. ४। रा. ७।	दिन. ८ रा. ०	दिन१२। रा. ६	दिन ४।८ रा. ९	दिन१।२ रा. १	दिनरात्रि

मद्य काढनेका मुहूर्त।

रौद्रे पैत्र्ये वारुणे पौरुहूते याम्ये सार्पे नैर्ऋते चैव धिष्ण्ये।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारम्भः कालविद्भिः पुराणैः॥

टीका—आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें प्रथम मद्य काढनेका प्रारंभ करे॥

नवीनवस्त्रधारण।

रोहिणीषुकरपंचकेऽश्विभे त्र्युत्तरेऽपि च पुनर्वसुद्वये।
रेवतीषु वसुदैवते च भे नव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते॥

टीका—रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इनमें नवीन वस्त्र धारण करे और करावे॥

मोतीसुवर्णमणिरक्तवस्त्रधारण।

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च, मार्त्तण्डभौमगुरुमन्त्रिशशाङ्कवारे। मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमदन्तशङ्खरक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्धौ॥

टीका—अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और भौम रवि गुरु शुक्र सोम इन वारोंमें मोती सुवर्ण मणि मूंगा हस्तिदंतका चूडा नूतन शंख पूजामें लाना रक्तवस्त्र धारण करना शुभ जानिये ॥

पुंसवनक नक्षत्र ।

श्रवणः सकरः पुनर्वसुर्निर्ऋतेर्भं च सपुष्यको मृगः ।
रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ॥

टीका—श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर और रवि भौम गुरु ये ३ वार पुंसवनादिक कर्ममें उक्त हैं ॥

कर्णवेधन ।

पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्रे ।
सैन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयो हि शिशूनाम् ॥

टीका—रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर इनमें बालकका कर्णवेध करावे ॥

अन्नप्राशन ।

रेवतीश्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मतः पृथगपि द्वितये च ।
त्र्युत्तरेषु गदितं हि नवान्नप्राशनं तु ऋषिभिः पृथुकानाम् ॥

टीका—रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इनमें ऋषियोंने आद्यमें और नया अन्न भक्षण करना कहा है ॥

क्षौरकर्म ।

पुष्ये पौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवे च शाके हस्ताद्येत्रिके भेष्वदित्याः ।
क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रये च मुक्त्वा भौमादित्यपातङ्गिवारान् ॥

टीका—पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंमें श्मश्रुकर्म कराइये और ये वार वर्जित हैं भौम रवि शनि इनमें न करे ॥

दन्तबन्धन ।

येषु येषु प्रशंसन्ति क्षौरकर्म महर्षयः ।
तेषु तेष्वेव शंसन्ति नखदन्तादिलेखनम् ॥

टीका-दंतबंधन और बेधना दांत और नख काटना, जो नक्षत्र ऊपरके श्लोक क्षौरकर्ममें कहे हैं उन्हींमें करना ॥

आज्ञया नरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च ।
बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ॥

टीका-राजा अथवा ब्राह्मणोंकी आज्ञा और दाहक्रिया करनेमें सूतकके अंतदिनमें यज्ञकी दीक्षामें बंधनसे छूटनेमें अवश्य क्षौर कर्म करानेसे पुष्टिका देनेवाला होता है ॥

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतदीक्षा ।
शुक्रविशुद्धा यात्रा सर्वं शुद्धं शशाङ्केन ॥

टीका-क्षौरकर्ममें नक्षत्रकी शुद्धि और व्रतके प्रारंभमें दीक्षाके लेनेमें रवि गुरुकी शुद्धि और यात्रामें शुक्रशुद्धि और चंद्रमाकी शुद्धि सब कामोंमें चाहिये ॥

श्मश्रुकर्ममें वर्जनीय ।

भद्रापक्षान्तरिक्ताव्रतदिनवसुभूश्राद्धषष्ठीषु रात्रौ ।
संध्यापातारभास्वच्छनिषु घटधनुः कर्ककन्यागतेऽर्के ॥
जन्मर्क्षे जन्ममासे सुरदिनयजने भूषितोग्रामयायी ।
भुक्तोभ्यक्तोभिषिक्तः समदिनरजिगः श्मश्रुकार्यं न कुर्यात् ॥

टीका-भद्रा पूर्णिमा अमावास्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिवस अष्टमी प्रतिपदा श्राद्धदिवस षष्ठीमें रात्रिमें संध्याकाल व्यतिपातादिक दुष्टयोग भौमवार रविवार शनिवारमें कुंभ धनु कर्क कन्या इन चार राशियोंके सूर्यमें जन्मनक्षत्र और जन्ममास देवताके पूजन वा हवनादिकर्मदिवस अलंकारादिधारण दिवस और यात्रा जानेकी तय्यारी हो उस दिन भोजनके पीछे तेल लगाने और स्नानके पीछे मंगल अभिषेक तथा स्त्रीके रजस्वला होनेमें और सम दिवस आदिकमें क्षौरकर्म वर्जनीय है ॥

मौंजीबंधन ।

सौम्ये पौष्णे वैष्णवे वासवाख्ये हस्ते स्वातित्वाष्ट्रपुष्याश्विभेषु ।
ऋक्षेऽदित्यां मेखलाबन्धमोक्षौ संस्मर्यैते नूनमाचार्यवर्यैः ॥

टीका–मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्प अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौंजी बंधन और त्यागना आचार्योंने श्रेष्ठ कहा है ॥

विवाहनक्षत्राणि ।

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ॥
निर्विधाभिरुडभिर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ॥

टीका–मूल अनुराधा मृगशिर रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा तीनों उत्तरा इन सब नक्षत्रोंमें विवाह शुभ जानिये ॥

अग्निहोत्रारम्भ ।

प्राजापत्ये पूषभे साद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठास्वैंदवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेऽपि श्रेष्ठं प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ॥

टीका–रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृत्तिका और तीनों उत्तरा इनमें प्रथम अग्निहोत्र प्रारंभ करे ॥

विद्यारम्भमूहूर्त ।

मृगादिपञ्चस्वपि भेषु मूल हस्तादिके च त्रितयेऽश्विनीषु ।
पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्वद्विद्यासमारम्भमुशन्ति सिद्ध्यै ॥

टीका–मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती अश्विनी पूर्वाषाढा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें बालकके प्रथम विद्याभ्यास आरंभ करावे ॥

औषधग्रहण ।

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ।
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भषज्यकम प्रवदन्ति सन्तः ॥

टीका–रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मूल मृग इन नक्षत्रोंमें औषध बनाना खाना शुभ है ॥

रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभ नक्षत्र।

स्वात्याश्लेषारौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे ॥
नंदारिक्तास्वेव रोगस्य चाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शङ्करो रक्षितापि ॥

टीका—स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा और भौम शनि रवि ये वार, नंदा तिथि कहिये पडवा षष्ठी एकादशी और रिक्ता कहिये चौथ नवमी चतुर्दशी इनमें रोग उत्पन्न होते हैं उनकी शिवभी रक्षा नहीं कर सकते ॥

रोगसे मुक्ति होनेका प्रमाण।

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात् ॥
वश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासाद्विंशत्या स्याद्वासराणां मघासु ॥

टीका—रोग उत्पन्न होनेके दिवस जो रेवती अथवा अनुराधा होय तो रोगीके प्राण अति कठिनतासे बचें; उत्तराषाढा अथवा मृगशिर होय तो एक मासपर्यंत और मघा होय तो वीस दिवसतक पीडा रहे ॥

पक्षाद्धस्ते वासवे साद्रिदेवे मूलाश्विन्योराग्निधिष्ण्ये नवाहात् ॥
याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणे च नैरृत्यं स्यान्नूनमेकादशाहात् ॥

टीका—हस्त नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ रोग १५ दिवस रहता है और धनिष्ठा विशाखा मूल अश्विनी कृत्तिकामें उत्पन्न हुआ रोग ९ दिन और भरणी चित्रा श्रवण शततारकामें उत्पन्न हुआ रोग ११ दिवस भोगना होता है ॥

आहिर्बुध्न्ये तिष्यसंज्ञे सभागे प्रजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ॥
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ॥

टीका—उत्तराभाद्रपदा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुआ रोग सात दिवसतक निश्चय भोगना पडता है यह गर्ग-मुनिका वाक्य है ॥

रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र।

इंदोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु सर्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ॥
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नातं रोगमुक्तस्य जन्तोः ॥

टीका—सोम शुक्रवार और ध्रुवनक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा और

आश्लेषा पुनर्वसु स्वाती ये शुभ हैं और मघा रेवती इनमें रोगीका स्नान अयोग्य और दुःखदायक है ॥

रोगमुक्तस्नानलग्न ।

लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चंद्रबले च हीने ॥
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानाम् ॥

टीका—मेष कर्क तुला मकर ये चर लग्न, रवि भौम गुरु ये वार और रिक्ता तिथि ४ । ९ । १४ और चन्द्र हीनबल होय, केंद्र तथा त्रिकोणमें पापग्रह होय ऐसी लग्नमें स्नान करावे तो आरोग्य होय ॥

लता औषधी वा वृक्षारोपण ।

सावित्रतिष्याश्विनवारुणानि मूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि ॥
लतौषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ॥

टीका—हस्त पुष्य अश्विनी शततारका मूल विशाखा और मृदु ध्रुव इन नक्षत्रोंमें लता औषधी और वृक्षोंका लगाना शुभ है॥

कूपारंभके नक्षत्र ।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ॥
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥

टीका—हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा तीनों उत्तरा और रोहिणी इन नक्षत्रोंमें अगले मुनीश्वरोंने कूपारंभ श्रेष्ठ कहा है ॥

द्रव्य देना वा स्थापित करना ।

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तम् ॥
हस्तेन विन्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्नियतं कदाचित् ॥

टीका—साधारण उग्र ध्रुव और दारुणसंज्ञक नक्षत्रोंमें दूसरेको द्रव्य दे वा स्थापित करे तो वह वस्तु फिर प्राप्त नहीं होय ॥

हस्ती लेना वा देना ।

हस्तेषु चित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये च पुनर्वसौ च॥

प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥

टीका—हस्त चित्रा अश्विनी स्वाती पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें हाथी लेना और देना और उसके अलंकार शृंगारादिक सकल कर्म करना गर्गादिमुनियोंने शुभ कहे हैं ॥

अश्व लेना वा देना ।

पुष्यश्रविष्ठाश्विनसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु ॥
सवारुणर्क्षेषु बुधैः स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमानाम् ॥

टीका—पुष्य, धनिष्ठा, अश्विनी, मृगशिर, रेवती, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें तुरंग ले और दे तथा उसके अलंकार और शृंगार आदि कर्म करे ॥

गवादि पशुओंके नगरमें लाने और पहुँचानेमें वर्ज्य ।

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषु चतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ॥
ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्याद्धीमान् पशूनां न कदाचिदेव ॥

टीका—चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी चतुर्दशी अमावास्या अष्टमी इनमें गवादि पशुओंको ग्राममें न लावे और न बाहिर पहुँचावे ॥

गवादि पशुओंके क्रयविक्रयमें वर्जित ।

शुक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ॥
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥

टीका—ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इन नक्षत्रोंमें गायका बेंचना और मोल लेना दोनों वर्जनीय हैं ॥

तृणकाष्ठादिसंग्रहमें वर्ज्य ।

वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ॥
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकावितरणं च वर्जयेत् ॥

टीका—धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे लेकर पांच नक्षत्रोंको पंचक कहते हैं इनमें दक्षिणदिशाका गमन और घर बनाना, प्रेतदाह, तृणकाष्ठसंग्रह, शय्यादिक निर्माण करना वर्जित है ॥

हल चलानेका नक्षत्र ।

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषु भेषु ॥
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगपुष्कान्वितसौरभेयैः ॥

टीका—मृदु ध्रुव क्षिप्र चरसंज्ञक नक्षत्रोंमें तथा मूल और मघा विशाखा इन नक्षत्रोंमें रोगरहित आंडू बैलोंसे प्रथम हल चलावे ॥

बीज बोना ।

रौद्राहियाम्यानिलवारुणेन्द्रान्याहुर्जघन्यानि तथा बृहन्ति ॥
ध्रुवाद्विदेवादितिभानि नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनीन्द्रैः ॥
बृहत्सुधान्यं कुरुते समर्घं जघन्यधिष्ण्येऽभ्युदितो महर्घः ॥
समेषु धिष्ण्येषु समं हिमांशुर्वदन्ति संदिग्धमिदं महान्तः ॥

टीका—आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शतभिषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंको जघन्य कहते हैं इनमें मासकी आदिमें चंद्रमा उदय होय तो धान्य महंगा होय ध्रुव कहिये तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु इनको बृहत् कहते हैं इनमें चंद्रमा उदय होय तो अन्न सस्ता होय और शेष नक्षत्र सम जानिये उनमें चंद्रोदय होनेसे अन्नका भाव साधारण रहता है ॥

राशिपरत्वमें चन्द्रोदयका फल ।

मीनमेषोदितश्चन्द्रः सततं दाक्षिणोन्नतः ॥ शेषोन्नतश्चोत्तरायां समता वृषकुम्भयोः ॥ विड्वरं तु समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दाक्षिणोन्नते ॥ सुभिक्षं क्षेममारोग्यमुत्तराश्रितचन्द्रमाः ॥

टीका—मीन अथवा मेष राशिमें जो शुक्ल द्वितीयाका चंद्रमा उदय होय तो उससे दक्षिणको उन्नत जानिये और दुर्भिक्षका संभव होता है और मिथुनसे लेकर मकरपर्यंत जो चंद्रोदय होय तो उत्तरको उन्नत जानिये यह चंद्रमा सुभिक्ष क्षेम और आरोग्यताका कर्ता, वृष और कुंभमें चंद्रमाका उदय होय तो सम रहता है इसमें राजाओंके कलह और विड्वरता होती है ।

पुष्यनक्षत्रके गुणदोष ।

परकृतमखिलं निहन्ति पुष्यो न खलु निहन्ति परं तु पुष्यदोषम् ।
ध्रुवममृतकरोऽष्टमोऽपि पुष्ये निखिलमुपैति सदैव कर्म सिद्धिम् ।

टीका—पुष्य दूसरेके दोष और अष्टमस्थानस्थित चंद्रके दोषको दूर करता है परंतु उसी नक्षत्रका दोष होय तो वह दूर नहीं होता और इस नक्षत्रमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है ॥

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु ॥
स्वातौ धनिष्ठासु मघासु मूले बीजोप्तिरुत्कृष्टफलप्रतिष्ठा ॥

टीका—हस्त अश्विनी पुष्य तीनों उत्तरा रोहिणी चित्रा अनुराधा मृग रेवती स्वाती धनिष्ठा मघा मूल इन नक्षत्रोंमें बीज बोनेसे खेत अधिक फलते हैं ॥

सर्पदंशविचार ।

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पान्तकार्द्रासु भुजंगदष्टः ॥
स वैनतेयेन सुरक्षितोऽपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ॥

टीका—कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रोंमें जो सर्प काटे तो गरुडभी रक्षक होनेपर मनुष्य मृत्युको प्राप्त होय ॥

गानारंभविचार ।

हस्तस्तिष्यो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ॥
पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चन्द्रवर्ती नृत्यारम्भे शोभनो ऋक्षवर्गः ॥

टीका—हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनों उत्तरा और शुभचन्द्रमा पाकर गाने और नृत्यका प्रारंभ करना पूर्वाचार्योंने शुभ कहाहै।

राज्याभिषेकनक्षत्र ।

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषु तिसृषूत्तरासु च ॥
रेवतीमृगशिराश्विनीषु च क्ष्माभृतां समभिषेक इष्यते ।

टीका--अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनी इन नक्षत्रोंमें राज्याभिषेक करना उचित है ॥

राजदर्शन ।

सौम्याश्वितिष्यश्रवणधनिष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रभपूषभानि ॥
मित्रेण युक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भानि शुभप्रदानि ॥

टीका--मृगशिर, अश्विनी, पुष्य श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, ध्रुव, चित्रा, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रोंमें राजाका प्रथम दर्शन शुभदायक है ॥

पुष्यका फल ।

सिंहो यथा सर्वचतुष्पदानां तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम् ॥
चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि सिद्ध्यन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये ॥

टीका–जैसे सब चतुष्पद जीवोंमें सिंह बलवान् है वैसेही नक्षत्रोंमें पुष्य है, पुष्यमें किया कार्य गोचर दोष और कनिष्ठ अर्थात् चौथा आठवां बारहवां चंद्र होनेपरभी सिद्ध होता है ॥

ग्रहेण विद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्धतारोपि विलोमगोपि ॥
करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणं तु पुष्यः ॥

टीका–ग्रह करिके विद्ध वा अशुभ ग्रह करिके युक्त हो अथवा तारा इससे प्रतिकूल होय तथापि पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है परंतु विवाहमें पुष्य नक्षत्र वर्जित है ॥

योगप्रकरण ।

प्रतिदिनके योग जाननेकी रीति ।

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चान्द्रमेव च ॥
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्याद्दक्षशेषतः ॥

टीका–पुष्यसे सूर्यनक्षत्रतक चलते नक्षत्रोंको गिने और श्रवणसे दिवस-नक्षत्रतक गिने दोनों संख्याओंको इकट्ठा करे और सत्ताईसका भाग देवे जो शेष रहे वही योग जानिये ॥

योगोंके नाम ।

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा ॥ अति-गण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ॥ वज्रसिद्धी व्यतीपातो वर्याणः परिघः शिवः ॥ सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ॥ सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥

टीका–विष्कंभ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अति-गंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्ध १६ व्यतीपात १७ वर्याण १८ परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ये सत्ताईस योग निज नामके तुल्य फल करते हैं अर्थात् जो इनके नामोंका अर्थ है वेही फल जानो ॥

योगोंमें वर्जनीय घटिका।

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ॥
स वैधृतिस्तु व्यातिपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥
तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नव पञ्च शूले ॥
गण्डेऽतिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥

टीका–और इनमें अशुभ योगोंका आदिका चतुर्थांश वर्जनीय है व्यती-पात वैधृति ये सम्पूर्ण और विष्कंभकी ३ वज्रकी ४ व्याघातकी ५ गंडकी ६ अतिगंडकी ६ शूलकी १५ घडी सकल शुभ कार्यमें वर्जनीय हैं ॥

करण जाननेकी रीति।

गततिथ्यो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ॥
एकोनाः सप्तहृच्छेषः करणं स्याद्ववादिकम् ॥

टीका–शुक्ल प्रतिपदासे जिस तिथिका करण जानना हो उसकी पूर्वगत तिथिको द्विगुणी करे तिसमें एक मिलाकर सातका भाग दे जो शेष बचे वही उस तिथिका करण जानिये और प्रत्येक तिथिको दो करण भोगते हैं ॥

नाम।

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ॥
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ॥
अन्ते कृष्णचतुर्दश्यां शकुनिर्दर्शभागयोः ॥
ज्ञेयं चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले ॥

स्वामी ।

इन्द्रोब्रह्मामित्रनामार्यमाभूः श्रीः कीनाशश्चेति तिथ्यर्धनाथाः ॥ कक्ष्युक्षाख्यो सर्पवायुस्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम् ॥

कृत्य ।

पौष्टिकस्थिरशुभानि बवाख्ये बालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ॥ कौलवे प्रमदमित्रविधानं तैतिले शुभगताश्रयकर्म॥ गरे च बीजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक्क्रियाश्च ॥ न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिषु तन्त्रसिद्धिः ॥ मन्त्रौषधानि शकुनौ तु सपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदोति ॥ सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागे किंस्तुघ्ननाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यम् ॥

शुक्लतिथि ६०				कृष्णतिथि६०				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरद		पूर्वदल		उत्तरद				
१	स्थिर			०	०	०·	०	किंस्तु.	वायु	समस्त शुभ कार्य करे
५	८	१	१५	४	११	७	०	बव	इन्द्र	व्रतउत्साह देवालय आदि शुभकर्म करे
२	९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्मणोंसे हित करे
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रता करे
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य	विवाहादिक मंगल कार्य करे
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गरज	भूमि	बीजबोना हल चलाना [करावे
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देवप्रतिष्ठा घर दुकान और व्यापार
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि	यम	सकल कर्म वर्जित परंतु विष और घात ये क्रूरकर्म वर्जित नहीं
स्थिर		०	०	०	०	०	१४	शकुनि	कलि	मित्रोपदेश औषधि ग्रहपूजा करावे
स्थिर		०	६	३०	०	०	०	चतुष्प	वृषभ	गौ ब्राह्मण राज्य पितृ इन संबंधी कृत्य करावे
स्थिर		०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्यकर्म युद्धमें जाना धीरज और विद्याभ्यास करना ये कर्म करावे

कल्याणीतिथिमानम् ।

कृष्णेऽग्निदिशयोरूर्ध्वं सप्तमीभूतयोरधः ॥ शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं भद्रा प्राग्वसुपूर्णयोः ॥ मनुवसुमुनितिथियुगदशशिवगुण

संख्यासु तिथिषु पूर्वान्त्याः ॥ आयाति विष्टिरेषा पृष्ठेषु भद्रा च पुरस्त्वशुभा ॥ शास्त्रार्थः ॥ दिवासर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ॥ सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत् ॥ रात्रिभद्रा यदाह्नि स्यादिवाभद्रायदानिशि ॥ न तत्र भद्रादोषः स्यात्सर्वकार्याणि साधयेत् ॥ शरीरभागः ॥ नाड्यस्तु पञ्चवदनेथ गले तथैकावक्षोदशैकसहितं नियतं चतस्रः ॥ नाभ्यां कटौषडथ पुच्छ लताच तिस्रोविष्टेबुधैरभिहितोङ्गविभाग एषः । स्थानफलम् । मुखे कार्यध्वास्तिर्भवति मरणं चाथ गलके धनाहानिर्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धिविलयः ॥ कलिर्नाभौदेशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः शरीरेभद्रायाः पृथगितिफलं पूर्वमुनयः ॥ चन्द्रः ॥ मीने मेषालिकर्के शशिनि निवसति स्वर्गसंस्थापिविष्टिः कन्यायां तौलिसंस्थेधनमिथुनगते नागलोके निवासः ॥ कुंभेसिंहेवृषेवा मकरमुपगतेराजतेमृत्युलोके भद्राचन्द्रप्रभावा हिमकरतनया नोशुभा लौकिके स्यात् ॥ स्थानफलम् ॥ स्वर्गेभद्राभवेत् सौख्यं पाताले च धनागमः ॥ मृत्युलोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदानहि ॥ वारानुसारनाम ॥ सोमे शुक्रे च कल्याणी शनौ चैव तु वृश्चिकी ॥ गुरौ पुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषु भद्रिका ॥

तिथि		शास्त्रार्थ	सं	स्थान	फल	चन्द्र	स्थान	फल	वार	नाम
	३	इन तिथियोंकां ३० घडी	३	पुच्छ	विजय	मीन			सो	
कृष्ण		उत्तरार्द्धकीभद्रातिसकाना-				मेष	स्वर्ग	सौख्य	शु०	कल्याणी
	१०	मवृश्चिकीदिवसमें होती है.	६	कटि	बुद्धि	वृश्चि				
	४	उत्तरकी ३० घटिकापुच्छ			नाश	कर्क			श.	वृश्चिकी
शुक्ल		वर्जनीय मुख शुभहोय,	४	नाभि	कलह	कन्य				
	११	उत्तरार्द्ध कहिये रात्रि ३०	११	कपाल	धन	तुला	पाताल	धनप्रा-		
	७	घ० पूर्वार्द्धकी भद्राका ना-			नाश	धन		प्ति	गुरु	पुण्यवती
कृष्ण		मंसर्पिणी रात्रिमेंआतिहैउ-	१	गल	मरण	मिथु				
	१४	सकी ९ घडी मुखवर्जनीय				कुंभ			रवि	
	८	है विध्वंस करता पीछे पु-	५	मुख	विध्वस	सिंह	मृत्युलोक	अशुभ	बुध	भद्रिका
शुक्ल		च्छ शुभहोय पूर्वार्द्ध कहि-				वृषभ			भौ.	
	१५	ये दिवसमें भद्राहोय.	३०			मकर				

दैत्येन्द्रैः समरेऽमरेषु विजयेष्वीशः क्रुधाहष्टवान् स्वंकायात्किल निर्गताखरमुखीलांगूलिनीचक्रपात् ॥ विष्टिः सप्तभुजा मृगेन्द्रगल-

काक्षामोदरीप्रेतगादैत्यघ्नी मुदितैः सुरैस्तु करणप्रान्तेनियुक्तातुसा ॥

टीका–दैत्य और देवताओंमें बडा घोर युद्ध हुआ तब देवताओंका पराजय हुआ तिस समय शिवजीके क्रोध करनेसे उनकी देहसे एक स्त्री गर्दभमुखी पुच्छवती पहियेके समान जिसके चरण विष्टि नाम सप्त भुजा मृगकीसी ग्रीवा कृश उदर प्रेतपर चढी दैत्योंके वध करनेवाली निकली और देवताओंने प्रसन्न होके अपने करणोंमें लगाया ॥

संक्रान्ति।

वारानुसारनाम॥ घोरा रवौ ध्वाङ्क्ष्यमृतद्युतौ च संक्रांतिवारे च महोदरीस्यात् ॥ मंदाकिनीज्ञेचगुरौचनन्दामिश्राभृगौराक्षसि चार्कपुत्रे ॥ नक्षत्रोंके अनुसारनाम ॥ उग्रक्षिप्रचरमैत्रध्रुव-मिश्राख्यदारुणैः ॥ ऋक्षैः संक्रांतिरर्कस्यघोराद्याः क्रमशोभ-वेत् ॥ फलम् ॥ ध्वांक्षींवैश्यान्सुखयाति महोदर्यलंचौरसार्था-न्घोराशूद्रानथनरपतीनेवमन्दाकिनीच ॥ नंदाख्याचद्विजव-रगणान्मिश्रकाख्यापशूंश्च चाण्डालां तां प्रकृतिमखिलां राक्ष-सीसंज्ञिताच ॥ कालफलम् ॥ पूर्वाह्णकालेनृपतिद्विजेन्द्रान्म-ध्यंदिनेचाथविशोपराह्णे ॥ शूद्रान्रवावस्तमितेप्रदोषेपिशाच-कान्रात्रिचरान्निशीथे ॥ नटादिकांश्चापररात्रिकालेप्रत्यूषका-लेपशुपालकांश्च ॥ संक्रांतिरर्कस्यसमस्तलिंगा प्रभातसंध्या-समयेनिहन्ति ॥ दिशाको मुख ॥ अर्के शुक्रे मुखं पूर्वे सौम्ये भौमे च दक्षिणे ॥ शनौचन्द्रेमुखंपश्चाद्गुरौचैवोत्तरामुखी ॥

वार और नक्षत्रोंके अनुसार जाननेका कोष्टक।

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा मुख
रवि	उग्र	घोरा	शूद्रोंकोसुख	पूर्वाह्ण	विप्रराजाओं.	पूर्वको
सोम	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्योंकोसु०	मध्याह्न	वैश्योंको	पश्चिमको
भौम	चर	महोदरी	चोरोंकोसु०	अपराह्ण	शूद्रोंको	दक्षिणको
बुध	मैत्र	मंदाकि.	राजाओंकोसु.	प्रदोष	पिशाचोंको	दक्षिणको
गुरु	ध्रुव	नंदा	द्विजगणको०	अर्द्धरात्रि	राक्षसोंको	उत्तरको
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुओंकोसुख	अपररात्रि	नटादिकको	पूर्वको
शनि	दारुण	राक्षसी	चांडालोंको०	प्रत्यूषकाल	पशुपालकोंको	पश्चिमको

करणानुसार संक्रांति।

स्थितिः ॥ चतुष्पदेतैतिलनागयोश्च सुप्तोरविःसंक्रमणंकरोति ॥ विंद्याद्भवाख्येचगराह्वये च सबालवाख्योस्थितएवविप्रौ ॥ फलम् ॥ किंस्तुघ्ननाम्निशकुनेवणिकौलवाख्ये चोर्ध्वस्थितस्यखलुसंक्रमणंरवेःस्यात् ॥ धान्यार्घवेविष्टिषुभवेत्क्रमशस्त्वनिष्टो मध्येष्टतेतिमुनयःप्रवदन्तिपूर्वे ॥ वाहनम् ॥ सिंहो व्याघ्रोवराहश्चगर्दभः कुञ्जरस्तथा ॥ महिषीघोटकःश्वा च छागो वृषभकुक्कटौ ॥ उपवाहनम् ॥ गजोवाजिर्वृषोमेषःखरोष्ट्रोकेसरी क्रमात् ॥ शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्चबवादितः ॥ फलम् ॥ गजेलक्ष्मीर्वृषेस्थैर्यंघोटके वाहनेतथा ॥ सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंसुभिक्षंगर्दभेशुनौ ॥ वाराहे महतीपीडाजायतेमेषवाहने ॥ महिष्यां चभवेत्क्लेशः कुक्कुटेमृत्युरेवच ॥ वस्त्रम् ॥ श्वेतपीतहरितंच पांडुरंरक्तश्याममसितंबहुवर्णम् ॥ कंबलोविवसनंघनवर्णान्यंशुकानिच बवादितः क्रमात् ॥ आयुधम्॥ भुशुण्डीचगदाखङ्गदण्डकोदण्डतामेरान् ॥ कुन्तपाशांकुशास्त्रं च बाणश्चैवायुधंबवात् ॥ भोजनपात्रम् ॥ सौवर्णराजतंताम्रं कांस्यंलौहंचखर्परम् ॥ पत्रंवस्त्रंकरोभूमिः काष्ठपात्रं बवादितः ॥ भक्ष्यपदार्थः॥ अन्नंचपायसंभक्ष्यं पक्वान्नंचपयोदधि ॥ चित्रान्नंगुडमध्वाज्यं शर्करातुबवादितः ॥ गन्धम् ॥ कस्तूरीकुंकुमं चैव चन्दनं मृत्तिकातथा ॥ गोरोचनमलक्तंच हरिद्राचतथाञ्जनम् ॥ सिन्दूरमगुरुश्चैव कर्पूरश्चबवादितः ॥ जातिः ॥ देवभूताहिविहगपशवोमृगएवच ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्छूद्रमिश्रजातिर्बवादितः ॥ पुष्पम् ॥ पुन्नागजातीबकुलाश्चकेतकी बिल्वस्तथार्कः कमलंचदूर्वाः ॥ मल्लीतथापाटलिका जपाचबवादिपुष्पाणिचयोजयेत्तु ॥ भूषणम् ॥ नूपुरंकङ्कणंमुक्ता विद्रुमंमुकुटं

मणिम् ॥ गुञ्जावराटकंनीलंगरुत्मंरुक्मकंबवात् ॥ कंचुकी ॥
विचित्रपर्णाशुकभूर्जपत्रिका सीतातथापाटलनीलवर्णा ॥
कृष्णाजिनंचर्मचवल्कपाण्डुरा बवादितश्चैवतुकंचुकीस्यात् ॥
वयः॥शिशुःकुमारीचगतालकाशुवाप्रौढाप्रगल्भाथततश्चवृद्धा।
वन्ध्यातिवन्ध्याचसुतार्थिनीच प्रव्राजिकाचैवफलंशुभं बवात्॥

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर	वाणज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किंस्तु
स्थिति	बैठी	बैठी	खडी	निद्रित	बैठी	खडी	बैठी	निद्रित	खडी	निद्रित	खडी
फल	मध्यम	मध्यम	महर्घ	समर्घ	मध्य	महर्घ	महर्घ	महर्घ	समर्घ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मेंढा	बैल	कुक्कुट
उपवा	गज	अश्व	बैल	मेंढा	गर्दभ	ऊंट	सिंह	शार्दू	महिष	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कंबल	नग्न	घनवर्ण
आयुध	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	कुंत	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तीकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रा.	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोच	अलक्त	हलद	सुरमा	सिंदूर	अगर	कर्पूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलक	पुन्ना	सुवर्ण
कंचु	विचित्र	पर्ण	हरित	भूर्जपत्र	सीत	पांढरी	नील	कृष्ण	अंजन	वल्कल	पांडुर
वय	बाल	कुमारी	गताल.	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वंध्या	अतिवं	पुत्रव०	संन्या.

फलश्रुति ।

वाहनादिबुधैर्ज्ञेयमथोत्क्रान्तिविशेषतः ॥
वाहनादिकवस्तूनां संक्रमात्तु विनाशता ॥

टीका—संक्रांति जिस वाहनपर स्थित होय और जो वस्तु धारण करे उन सबका नाश होय ॥

मुहूर्त्त ।

संक्राति कितने मुहूर्त्त होती है उसके नक्षत्र और फल ।

संक्रान्तौ मुहूर्तभेदा हरपवनयमे वारुणे सार्परौद्रे एषा पञ्चेन्दुसं-

ज्ञा गुरुकरपितृभे चाग्निदस्रे च सौम्ये ॥ त्वाष्ट्रे मैत्रे च मूले श्रुति-
वसुवपुषा त्रीणि पूर्वा खरामे ब्राह्मोदित्ये द्विदैवे भवति शरकृताद्दु-
त्तरा त्रीणि ऋक्षम्॥बाणवेदैः समर्घं स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः॥
मूर्तौ पञ्चदशे याते दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥

टीका–आर्द्रा स्वाती भरणी शतभिषा आश्लेषा ज्येष्ठा इनमें जो संक्रांति अर्के वह १५ मुहूर्त्त होती है और दुर्भिक्ष करनेवाली है और पुष्य हस्त मघा कृत्तिका आश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रवेती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंकी संक्रांति ३० मुहूर्त्त होती है यह साधारण फलदायक हैं और रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनों उत्तरा इनमें संक्रांति अर्के तो ४५ मुहूर्त्त होती है यह स्वस्थताका कारण है ॥

दूसरा प्रकार ।

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रांतिऋक्षकम् ॥
द्वित्रिसंख्यासमर्घं स्याच्चतुःपञ्चमहर्घता॥

टीका–गतमासदिन संक्रांतिनक्षत्र और प्राप्त संक्रांति दिननक्षत्र इनका अंतर २ अथवा तीन होय तो सस्ता और ४ वा ५ का नक्षत्रोंमें अंतर आवे तो महर्घ अर्थात् महंगा जानिये ॥

धान्यविचार ।

संक्रांतिनाड्या तिथिवारऋक्षधान्याक्षरं वह्निहरेत्तु भागम् ॥
संक्रांतिनाडी नवमिश्रिता च सप्ताहता पावकभाजिता च ॥
एके समर्घं द्वितये च सौम्यं शून्ये समर्घं मुनयो वदन्ति ॥

टीका–संक्रांतिकी घडी और गततिथि वार नक्षत्र और धान्यके नामाक्षर एकत्र करके तीनका भाग दे वह एक मत और दूसरे मतके आज्ञानुसार संक्रांतिकी घडियोंमें ९ मिलाके ७ से गुणाकर ३ का भाग दे शेषका फल विचारे १ शेष रहे तो धान्यकी स्वस्थता और २ बचे तो साधारणता और निःशेष हो तो महर्घता जानिये ।

नक्षत्रअनुसारसंक्रांतिपीडा ।

सक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि॥ त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः ॥ पन्थाभोगव्यथावस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ॥

टीका–संक्रांतिके अधर नक्षत्रसे अपने नक्षत्रतक गिने और इस रीतिमें उसका विचार करे प्रथम ३ पंथा चलावे फिर ६ भोग फिर ३ दुःख ६ वस्त्र फिर ३ हानि और ६ धनप्राप्ति कहते हैं ॥

जन्मनक्षत्रोंका फल ।

यस्य जन्मर्क्षमासाद्यतिथौ संक्रमणं भवेत् ॥
तन्मासाभ्यन्तरे तस्य वैरं क्लेशं धनक्षयः ॥

टीका–जिसके जन्मनक्षत्रविषे संक्रांति अर्के उसका किसीसे वैर होय और जिसके जन्ममासमें संक्रांतिका संभव हो उसे क्लेश और जिसके जन्मतिथिमें संक्रांति पडे उसका धनक्षय होता है ॥

संक्रान्तिका स्वरूप ।

षष्टियोजनविस्तीर्णा संक्राांतिः पुरुषाकृतिः ॥ एकवक्त्रा नव-भुजा लम्बोष्ठी दीर्घनासिका ॥ पृष्ठे लोका भ्रमन्त्येव गृहीत्वा खर्परं करे ॥ एवं संक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ॥

टीका–शरीर साठि योजन लम्बा और चौडा पुरुषाकृति एक मुँह ९ भुजा ओठ और नासिका लंबे और खर्पर हाथमें लिये पीछेसे लोक भ्रमण करते है

चंद्रसे संक्रांतिका बर्ण और फल ।

मेषालिकर्के च तथैव रक्तं चापे च मीने च तुले च पीतम् ॥
श्वेतं वृषे स्त्री मिथुने च चन्द्रे कृष्णं च नक्रेऽथ घटे च सिंहे ॥
रक्ते फलं भवेद्दुःखं श्वेतं चैव सुखं शुभम् ॥ पीते श्रीस्तु तथा प्रोक्ता श्यामे मृत्युर्न संशयः ॥

टीका–मेष वृश्चिक कर्क इन राशियोंके चंद्रमामें जो संक्रांतिका प्रवेश होय तो इसका रक्तवर्ण जानिये वह दुःखदायक है और धनु मीन तुलाके

चंद्र मासमें संक्रांतिका पीतवर्ण ये लक्ष्मीकी प्राप्ति करती है और वृष कन्या मिथुनकी संक्रांतिका श्वेतवर्ण सुख और शुभप्राप्ति करानेवाली है मकर कुंभ और सिंहके चंद्रमाकी संक्रांतिका कृष्णवर्ण है यह मृत्युदायी है ॥

राशि अनुसार चंद्रमा ।

यादृशेन हिमरश्मिमालिना संक्रमो भवति तिग्मरोचिषा ॥
तादृशं फलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपि वशेन शीतगोः ॥

टीका—जैसे चंद्रमा नष्टस्थानी व उत्तमस्थानी होकर शुभाशुभ फलको देता है उसी भांति नष्ट अथवा उत्तम चंद्रमाकी अर्की हुई संक्रांति चंद्रमाके अनुसार फलदायक होती है ॥

पुण्यकाल ।

पूर्वतोपि हि रवेश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तु षोडश ॥
अर्धरात्रिसमयादनन्तरं संक्रमे परदिनं हि पुण्यदम् ॥

टीका—सोलह घटिका पुण्यकाल होता है जो संक्रांति दिनमें पडे पूर्व रात्रि ताई तो पुण्यकाल उसी दिवस जानना चाहिये और जो वृद्धि रात्रिके पीछे पडे तो दूसरे दिवस पुण्यकाल होगा ॥

ग्रहण प्रकार ।

चंद्रग्रहणकी प्रवृत्ति ।

भानोः पञ्चदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति ॥
पौर्णमास्या निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—सूर्यसे पंद्रहवें नक्षत्रमें जो चंद्रमा स्थित होय तो पूर्णमासीके निशा शेष अर्थात् प्रतिपदाकी संधिमें चंद्र ग्रहण होता है ॥

सूर्यग्रहण ।

मघोनं ग्रस्तनक्षत्रात् षोडशं यदि सूर्यभम् ॥
अमावास्या दिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ॥

टीका—संपूर्ण महीनोंकी अमावास्याके दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशिके

होते हैं परंतु अमावास्याके दिन सूर्यनक्षत्र और दिवसनक्षत्र एक होय तो अमावास्या और प्रतिपदाकी संधिमें सूर्यग्रहण होता है उस दिन सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्र देखिये उसमेंसे ११ दिन काटि शेष १६ वें सूर्यनक्षत्र हो तो वही सूर्य ग्रहण होता है ॥

राशि अनुसार शुभाशुभ ग्रहणफल ।

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदं स्याद्ग्रहणं रवीन्द्वोः ॥
द्विसप्तनन्देषु च मध्यमं स्याच्छेषेष्वनिष्टं मुनयो वदन्ति ॥

टीका—सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनी राशिसे जिस राशिपर होय उसका शुभाशुभ फल विचारिये तीसरी छठी दशवीं राशिपर होय तौ शुभ जानिये और दूसरा सातवां नववां ये मध्यम और पहिला चौथा पांचवां आठवीं ग्यारहवां बारहवां ये नष्ट हैं ॥

दूसरा पक्ष ।

ग्रासात्तृतीयोऽष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभगः स्वराशेः ।
ग्रासाद्रविः पञ्चनवर्तुमध्यस्ततोऽधमोक्ताश्च बुधैश्च शेषाः ॥

टीका—जिस राशिपर सूर्यग्रहण होय उससे अपनी राशितक गिने तो ३ । ८ । ४ । ११ ये उत्तम और ५ । ८ । ६ ये मध्यम और १ । २ । ७ । १० । १२ ये राशि अधम जैसी राशि होय वैसाही फल होता है ॥

ऋतुप्रकरण शुभाशुभ फल ।

तिथिरेकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ॥ वारःषष्ठगुणोज्ञेयो मासश्चाष्टगुणःस्मृतः ॥ वस्त्रं शतगुणं विद्याद्दर्शनं च ततोऽधिकम् ॥

टीका—तिथि एक गुणी नक्षत्र ४ गुणा वार ६ गुणा मास ७ गुणा और वस्त्र १०० गुणा जो अधिक ज्ञान होय तिसका गुण सबसे अधिक परंतु अच्छा दिवस होय तौ अच्छा गुण और दुष्ट होय तौ बुरा जानिये ॥

मासफल ।

आर्तवे प्रथमे चैत्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ॥ वैशाखे धनवृद्धिः

स्याज्ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत् ॥ आषाढे मृतवत्सा च श्रावणे धनसंयुता ॥ भाद्रे च दुर्भगा नारी आश्विने धनधान्यभाक् ॥ कार्तिके निर्द्धना नारी मार्गशीर्षे बहुप्रजा ॥ पौषे च पुंश्चली नारी माघे पुत्रवती भवेत् ॥ फाल्गुने पुत्रसंपन्ना ज्ञेयं मासफलं बुधैः ॥

टीका—चैत्रमासमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो विधवा होय, वैशाखमें धनवृद्धि, ज्येष्ठमें रोगयुक्त, आषाढमें मृतवत्सा, श्रावणमें लक्ष्मी, भाद्रपदमें दरिद्र, आश्विनमें धनधान्य, कार्तिकमें निर्धन, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें व्यभिचारिणी, माघमें पुत्रवती और फाल्गुनमें ऋतुदर्शन होनेसे पुत्रसंपन्न जानिये ॥

तिथिफल।

शुचिर्नारी प्रतिपदि द्वितीयायां तु दुःखिनी ॥ तृतीयायां पुत्रवती चतुर्थ्यां विधवा भवेत् ॥ पञ्चम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी ॥ सप्तम्यां सुप्रजा नारी चाष्टम्यां राक्षसी तथा ॥ नवम्यां विधवा नारी दशम्यां सौख्यभोगिनी ॥ एकादश्यां शुचिर्नारी द्वादश्यां मरणं ध्रुवम् ॥ त्रयोदश्यां शुभा प्रोक्ता चतुर्दश्यां परान्विता ॥ पौर्णमास्याममायां च शुभं चाशुभमेव च ॥

टीका—प्रतिपदामें ऋतुदर्शन होय तो शुचि, द्वितीयामें दुःखिनी, तृतीयामें पुत्रवती, चतुर्थीमें विधवा, पंचमीमें सौभाग्यवती, षष्ठीमें कार्यनाशिनी, सप्तमीमें उत्तम संतति, अष्टमीमें राक्षसी, नवमीमें विधवा, दशमीमें सौख्यभोगिनी, एकादशीमें शुचि, द्वादशीमें मरण, त्रयोदशीमें शुभ, चतुर्दशीमें व्यभिचारिणी, पौर्णिमामें शुभ, अमावास्यामें अशुभ जानिये ॥

ग्रहण और संक्रांतिका फल।

संक्रान्त्यां ग्रहणे चैव वैरिणी च गतालका ॥

टीका—संक्रांतिमें प्रथम ऋतुदर्शन होय तो वैरिणी और ग्रहणमें होय तो विधवा जानिये ॥

वारफल।

आदित्ये विधवा नारी सोमे चैव मृतप्रजा ॥ मङ्गले आत्मघाती

स्याद्बुधे कन्याप्रसूः स्मृता ॥ गुरुवारे सुतप्राप्तिः कन्यापुत्र-
युता भृगौ ॥ मन्दे च पुंश्चली नारी ज्ञेयं वारफलं शुभम् ॥

टीका—रविवारको ऋतुदर्शन होय तौ विधवा होय सोमवारको मृतप्रजा, भौमवारको आत्मघातिनी, बुधवारको कन्यासंतति होय, गुरुवारको पुत्रप्रसूति, भृगुवारको कन्या और पुत्रप्रसूति और शनिवारको होय तौ स्त्री व्यभिचारिणी होय ॥

नक्षत्रफल ।

अश्विन्यां सुभगा नारी भरण्यां विधवा भवेत् ॥ कृत्तिकायां च
वन्ध्या स्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी ॥ मृगे दारिद्र्ययुक्तोक्ता
चार्द्रायां क्रोधकारिणी ॥ पुनर्वसौ पुत्रवती पुष्ये पुत्रधनेश्वरी ॥
आश्लेषायां भवेद्वन्ध्या मघायां चार्थसंयुता ॥ पूर्वायां चार्थयुक्ता हि
चोत्तरायां सती तथा ॥ हस्ते पुत्रधनैर्युक्ता चित्रायामनुचारिणी ॥
स्वात्यान्यगर्भावयवा विशाखायां तु निष्ठुरा ॥ मैत्रे च दुर्भगा नारी
ज्येष्ठायां विधवा भवेत् ॥ मूले पतिव्रता साध्वी पूर्वा सौभाग्य-
भोगिनी ॥ उत्तरार्थवती प्रोक्ता श्रवे साभाग्यसंपदः ॥ धनिष्ठायां
शुभा नारी शते भद्रान्विता बुधैः ॥ पुम्भ चोक्ता कामिनी तु उभे
लक्ष्मीयुता शुभा ॥ रेवत्यां पातिरिक्ता तु ज्ञेयं भानां फलं बुधैः ॥

टीका—अश्विनी नक्षत्रमें जो स्त्री प्रथम ऋतुस्नात होय तौ शुभ, भरणीमें विधवा, कृत्तिकामें वंध्या, रोहिणीमें प्रियभाषिणी, मृगशिरमें दरिद्रिणी, आर्द्रामें क्रोधिनी, पुनर्वसुमें पुत्रवती, पुष्यमें पुत्र और धनवती, आश्लेषामें बांझ, मघामें धनवती, पूर्वामें अर्थवती, उत्तरामें पतिव्रता हस्तमें पुत्रवती, धनवती, चित्रामें दासी, स्वातीमें अन्यगर्भवती, विशाखामें निष्ठुर, अनुराधामें दुर्भागिनी, ज्येष्ठामें विधवा, मूलमें पतिव्रता, पूर्वाषाढामें सौभाग्यवती, उत्तराषाढामें अर्थवती श्रवणमें सौभाग्य और संपत्तियुक्त, धनिष्ठामें शुभ, शतभिषामें शुभ, पूर्वाभाद्रपदामें उत्तमभोगवती, उत्तराभाद्रपदामें लक्ष्मीवती, रेवतीमें पतिरहित जानिये ॥

योगफल ।

आद्यर्तौ विधवा नारी विष्कम्भे च रजस्वला॥स्नेहःप्रीत्या तु दम्पत्योरायुष्मांस्तु धनप्रदः ॥ सौभाग्ये पुत्रयुक्ता तु शोभने मङ्गलान्विता ॥ अतिगण्डे तु विधवा सुकर्मणि तु शोभना ॥ धृतौ संपत्तियुक्ता च शूले रोगयुता भवेत् ॥ गण्डे दुःखान्विता नारी वृद्धौ पुत्रान्विता भवेत् ॥ ध्रुवे तु शोभना नारी व्याघाते भर्तृघातकी ॥ हर्षणे हर्षयुक्ता तु वज्रे चैवानपत्यता ॥ सिद्धौ पुत्रान्विता नारी व्यतीपाते विभर्तृका ॥ मृतवत्सा च वर्याणे परिघे चाल्पजीविनी ॥ शिवे पुत्रवती नारी सिद्धे शीघ्रफलान्विता ॥ साध्ये धर्मपरा नारी शुभे शुभगुणान्विता ॥ शुक्ले शुभकरा नारी ब्रह्मणि स्वपतौ रता ॥ ऐन्द्रे देवररक्ता च वैधव्यं वैधृतौ स्मृतम् ॥

टीका—विष्कंभयोगमें जो प्रथम ऋतुदर्शन होय तो स्त्री विधवा होय, प्रीतियोगमें पतिसे स्नेह, आयुष्मान्में धनप्राप्ति, सौभाग्यमें पुत्रवती, शोभनमें मंगलदायक, अतिगंडमें विधवा, सुकर्मामें शुभ, धृतिमें संपत्तियुक्त, शूलमें रोगिणी, गण्डमें दुःखान्विता, वृद्धिमें पुत्रयुक्ता, ध्रुवमें शुभ, व्याघातमें पतिघातिनी, हर्षणमें हर्षयुक्ता, वज्रमें वंध्या, सिद्धियोगमें पुत्रयुक्ता, व्यतीपातमें पतिरहिता, वर्याणमें मृतपुत्रा, परिघमें अल्पजीविनी, शिवमें पुत्रवती, सिद्धिमें शीघ्र फलयुक्ता, साध्ययोगमें अधर्मपरा, शुभयोगमें शुभगुणयुक्ता, शुक्लयोगमें शुभकर्मपरा, ब्रह्मयोगमें निजपतिरता, ऐंद्रमें देवररता और वैधृतियोगमें विधवा होय ॥

करणफल ।

बवे प्रोक्ता तु वन्ध्या स्त्री बालवे पुत्रसंपदः॥कौलवे पुंश्चली नारी तैतिले चारुभाषिणी ॥ गरे च गुणसंपन्ना वणिजे पुत्रिणी स्मृता ॥ विष्ट्या च मृतवत्सा च शकुनौ कामपीडिता॥ चतुष्पदे शुभा नारी नागे पुत्रवती भवेत् ॥ किंस्तुघ्ने व्यभिचारः स्यात् करणानां शुभं फलम् ॥

टीका–बवकरणमें जो स्त्री प्रथम पुष्पवती होय तो वह वंध्या होय, बालवमें पुत्रकी प्राप्ति, कौलवमें वेश्या, तैतिलमें प्रियभाषिणी, गरमें गुणसंपन्ना, वणिजमें पुत्रिणी, विष्टिमें मृतवत्सा अर्थात् उसके बालक मर जांय, शकुनिमें कामातुरा, चतुष्पदमें शुभ, नागमें पुत्रवती, किंस्तुघ्नमें व्यभिचारिणी जानिये॥

राशिफल ।

व्यभिचारी तु मेषे स्याद्वृषभे सुखभोगिनी ॥ मिथुने धनयुक्तोक्ता कर्कटे दुःखिता बुधैः॥ सिंहे पुत्रवती नारी कन्यायां मानिनी शुभा॥ तुले विचक्षणा नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी ॥ धने पतिव्रता ज्ञेया मांसहीना च नक्रके॥ कुम्भे धनवती ज्ञेया मीने च चपला बुधैः॥

टीका–मेष राशिमें जो ऋतुमती होय तौ व्यभिचारिणी, वृषमें सुखभोगिनी, मिथुनमें धनयुक्ता, कर्कमें दुःखी, सिंहमें पुत्रवती, कन्यामें अभिमानी, तुलामें कुचाली, वृश्चिकमें जारिणी, धनमें पतिव्रता, मकरमें कृशा, कुंभमें धनवती, मीनमें चपला ऐसे जानिये ॥

होराफल ।

सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चन्द्रे होरे पतिव्रता ॥ कुजे होरे तु दौर्भाग्यं बुधे होरे तु पुत्रिणी ॥ जीवे सर्वसमृद्धिः स्याद्भृगौ सौभाग्यमेव च॥ शनौ सर्वविनाशाय होरकस्य फलं बुधैः ॥

होरा	फल	होरा	फल
रविका होरा	रोगिणी	गुरुका होरा	सर्वसिद्धि
सोमका होरा	पतिव्रता	शुक्रका होरा	सौभाग्य
भौमका होरा	दुर्भगा	शनिका होरा	सर्वविनाशिनी
बुधका होरा	पुत्रिणी		

लग्नफल ।

मेषलग्ने दरिद्रा च वृषभे धनसंयुता ॥ कामिनी मिथुने लग्ने कर्कटे पतिनाशिका ॥ सिंहे पुत्रप्रसूता च पतियुक्तस्या(न्य)लग्नके ॥ तुले

चैवान्धतादायी वृश्चिके दद्रुदुःखिनी॥ धनुर्लग्ने धनैश्वर्यं मकरे कर्कशा भवेत्॥ कुम्भे वंशद्वयघ्नी च मीने सर्वगुणान्विता॥

टीका-प्रथमसंक्रांति चलती होय सोई प्रथम लग्न जानिये। १ मेष लग्नमें ऋतुमती होय तो दरिद्रिणी, २ धनयुक्ता, ३ कामिनी, ४ पतिनाशिनी, ५ पुत्रप्रसूता, ६ पतिव्रता, ७ अंधतादायक, ८ दद्रुदुःखित, ९ धनैश्वर्यवती १० कर्कशा, ११ उभयवंशनाशिनी, १२ गुणयुक्ता॥

ग्रहोंका फल।

लग्ने राहुश्च सौरिश्च रविचन्द्रौ तथैव तु॥
तदा सा विधवा नारी सर्वसौभाग्यवर्जिता॥

टीका-जिस लग्नमें स्त्री प्रथम रजस्वला होय उसमें राहु, शनि, रवि, चन्द्र, ये चार ग्रह स्थित होंय तो वह स्त्री विधवा होय॥

रक्तफल।

शोणिता बिन्दुमात्रेण स्वैरिणी चाल्पशोणिता॥ रक्ते रक्ते भवेत्पुत्रः कृष्णे चैव मृतप्रजा॥ पिच्छिले च भवेद्वन्ध्या काकवन्ध्या च पांडुरे॥ पीते दुश्चारिणी ज्ञेया सुभगा गुञ्ज-सादृशे॥ सिन्दूरवर्णे रक्ते तु कन्यासंततिरेव च॥

टीका-प्रथम ऋतुदर्शनके समय रक्त बिंदुमात्र और अल्पवर्ण होय तिसका फल यह है कि स्त्री व्यभिचारिणी होय, रक्तवर्ण रुधिर होय तौ पुत्रवती, काला होय तो मृतप्रजा, पिच्छिल अर्थात् गाढा हो तौ बांझ, पांडुर वर्णसे वन्ध्या, पीतवर्णसे दुराचारिणी, गुंजा सदृशसे सुभागिनी, सिंदूर-वर्णसे कन्याप्रसूति इस प्रकार फल जानिये॥

कालफल।

पूर्वाह्णे सुभगा प्रोक्ता मध्याह्ने चैव निर्धना॥ अपराह्णे शुभा चैव सायाह्ने सर्वभोगिनी॥ सन्ध्ययोरुभयोर्वेश्या निशीथे विधवा भवेत्॥ पूर्वरात्रे तथा वन्ध्या दुर्भगा सर्वसंधिषु॥

टीका—जो स्त्रीके प्रथम ऋतुदर्शन प्रातःकाल होय तो सुभगा जानिये, मध्याह्नमें निर्धना, तीसरे पहर होय तौ शुभ, संध्याको होय तौ सर्वभोगिनी और दोनों संधिमें होय तो वेश्या, आधी रात्रिमें होय तौ विधवा, पूर्वरात्रिमें होय तो बांझ, सब सन्धिमें दुर्भगा ये फल जानिये ॥

पहिरे हुए वस्त्रोंका फल ।

सुभगा श्वेतवस्त्रा च रोगिणी रक्तवस्त्रका ॥ नीलाम्बरधरा नारी विधवा पुष्पवन्तिका ॥ भोगिनी पीतवस्त्रा च मिश्रवस्त्रा वराप्रिया ॥ सूक्ष्मा स्यात्सूक्ष्मवस्त्रा च दृढवस्त्रा पतिव्रता ॥ दुर्भगा जीर्णवस्त्रा च सुभगा मध्यवाससा ॥ धौतवस्त्रा शुभा नारी मालिनी मलिना भवेत् ॥

टीका—प्रथम ऋतुसमय पांडुर वस्त्र पहिरे होय तौ शुभ, लाल वस्त्र पहिरे स्त्री पुष्पवती होय तौ रोगिणी, नीले वस्त्रसे विधवा, पीत वस्त्रसे भोगिनी, मिश्रवर्णवस्त्रयुता पतिप्रिया, सूक्ष्मवस्त्रयुता कृशा, मोटे वस्त्रयुता पतिव्रता, जीर्णवस्त्र पहिरनेसे स्त्री दुर्भागिनी, मध्यम वस्त्रयुता सुभगा, धुले वस्त्रयुता सुभगा और मलीन वस्त्र पहिने स्त्री प्रथम ऋतुधर्मको प्राप्त होय सो मलीन जानिये ॥

रजस्वलाधर्म ।

आर्तवाभिप्लुता नारी नैकवेश्मनि संश्रयेत् ॥ न चान्यजातिसंस्पर्शं कुर्यात्स्पर्शं न च क्वचित् ॥ त्रिरात्रं स्वमुखं नैव दर्शयेद्यस्य कस्यचित् ॥ स्ववाक्यं श्रावयेन्नैव न कुर्याद्दन्तधावनम् ॥ न कुर्यादार्तवे नारी ग्रहाणामीक्षणं तथा ॥ अञ्जनाभ्यञ्जनं स्नानं प्रवासं वर्जयेत्तथा ॥ नखादिकृन्तनं रज्जुतालपत्रादिबन्धनम् ॥ नवे शरावे भुञ्जीत तोयं चाञ्जलिना पिबेत् ॥

टीका—ऋतुमती स्त्रीको एक घरमें रखना, अन्य जातिसे स्पर्श न करना, अपनी जातिमेंभी स्पर्श न करना, तीन रात्रि अपना मुख किसीको न दिखाना, अपनी वाणी किसीको न सुनाना, दातुन नहीं करना, नक्षत्रोंको न देखना, काजल, तैल, स्नान, रस्ता चलना, डोरीका स्पर्श, तालपत्रका बन्धन

इतने कर्म न करे नवीन मृत्तिकाके पात्रमें भोजन करे और अंजुलीसे जल पीवे ॥

गर्भाधानका मुहूर्त ।

ऋतौ तु प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्रे शुभे दिने ॥
मघामूलान्त्यपक्षान्तमुक्त्वा चन्द्रबले सति ॥

टीका-प्रथम ऋतुदर्शन समय पुरुषनक्षत्र और शुभदिनमें मघा, मूल रेवती अमावास्या, पूर्णिमा इनको छोड बलवान् चंद्रमें गर्भाधान करना योग्य है ॥

गर्भाधानमें त्याज्य ।

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् ॥ पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्द्धं स्वपत्नीगमे भानूत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ भद्रा षष्ठी पर्व रिक्ता च सन्ध्या भौमार्कार्कीनाद्यरात्र्यश्चतस्रः ॥

टीका-गण्डांत ३ प्रकारके अर्थात् तिथिगंडांत, लग्नगंडांत, नक्षत्रगंडांत, वधतारा, जन्मतारा, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, ग्रहणदिन, व्यतीपात, वैधृति, श्राद्धदिन, परिघार्ध, उत्पातनक्षत्र, पापयुक्तनक्षत्र, जन्मलग्नसे अष्टम लग्न, भद्रा, षष्ठीतिथि, पर्वतिथि अर्थात् चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पौर्णिमा, संक्रांति, रिक्तातिथि अर्थात् चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, संध्याकाल भौम, रवि शनि ये वार और प्रथम रात्रिसे चार रात्रि ये गर्भाधानमें त्याज्य हैं॥

ऋतुकी षोडशरात्रियोंका शुभाशुभ निर्णय ।

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः ॥ तासामाद्याश्चतस्रस्तु निन्दितैकादशी च या ॥ त्रयोदशी च शेषाः स्युः प्रशस्ता दश वासराः ॥ तस्मात् त्रिरात्रं चाण्डालीं पुष्पितां परिवर्जयेत् ॥

टीका-स्त्रियोंके ऋतुधर्मसंबंधी स्वाभाविक १६ रात्रि होती हैं उनमेंसे प्रथम तीन रात्रिमें पुष्पवती चांडाली होती है और चौथी ग्यारहवीं तेरहवीं ये निंदित अर्थात् वर्जनीय और शेष दश रात्रि प्रशस्त हैं ॥

रात्रौ चतुर्थ्यां पुत्रः स्यादल्पायुर्धनवर्जितः ॥ पञ्चम्यां पुत्रिणी

नारी षष्ठ्यां पुत्रस्तु मध्यमः ॥ सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्या-मीश्वरः पुमान्॥ नवम्यां सुभगा नारी दशम्यां प्रवरः सुतः ॥ एकादश्यामधर्म्या स्त्री द्वादश्यां पुरुषोत्तमः ॥ त्रयोदश्यां सुता पापा वर्णसंकरकारिणी ॥ धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च आत्मवेदी दृढ-व्रतः ॥ प्रजायते चतुर्दश्यां पंचदश्यां पतिव्रता ॥ आश्रयः सर्वभूतानां षोडश्यां जायते पुमान् ॥

टीका—चौथी रात्रिमें स्त्रीसंग करे तो पुत्र अल्पायु और धनवर्जित होय, पांचवीं रात्रिमें पुत्रवती, छठी रात्रिमें मध्यम पुत्र, सातवीमें पुत्र उत्पन्न नहीं होगा, अष्टमी रात्रिमें ईश्वरभक्त, नवमी रात्रिमें सौभाग्यवृद्धि, दशमीमें गुणवान् पुत्र, ग्यारहवींमें अधर्मी पुत्र, बारहवीं रात्रिमें उत्तम पुरुष, तेरहवींमें पापक-र्मिणी कन्या, चौदहवींमें धर्मात्मा कृतज्ञ और व्रत करनेहारा पुत्र, पन्द्रहवीं रात्रिको पतिव्रता, सोलहवीं रात्रिको सब जीवोंका आश्रय देनेवाला पुत्र उत्पन्न होता है ॥

निषेकके तिथि और वार।

षष्ठ्यष्टमी पञ्चदशी चतुर्थी चतुर्दशीरप्युभयत्र हित्वा ॥
शेषाः शुभाः स्युस्तिथयो निषेके वाराः शशाङ्कार्यसितेंदुजाश्च ॥

टीका—षष्ठी अष्टमी, पौर्णिमा, अमावास्या, चतुर्थी, चतुर्दशी इन तिथि-योंको छोडकर शेष तिथि और सोम, गुरु, शुक्र, बुध ये वार शुभ जानिये॥

नक्षत्र।

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानि
निषेककार्ये ॥ पूज्यानि पुष्यवसुशीतकराश्विचि-
त्रादित्याश्च मध्यमफला विफलाः स्युरन्ये ॥

टीका—श्रवण, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, स्वाती, रेवती, मूल, तीनों उत्त-रा, शतभिषा ये नक्षत्र उत्तम कहे हैं और पुष्य, धनिष्ठा मृगशिर, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु ये मध्यम हैं, और शेष नक्षत्र अधम जानिये। मुहूर्त्त मार्तंडके

मतसे। वैधृति, संक्रांति, महापात आदि दुष्ट योग और आद्यात, पूर्वदिन, जन्मनक्षत्रसंधि, दिवस रात्रि नक्षत्र इत्यादि वर्जनीय करते हैं और जिस लग्नमें विषमस्थानी नवांशकमें उच्च बृहस्पति अथवा सूर्य चन्द्रमा होय तो पुत्रप्राप्ति होय और येही ग्रह समराशिके होंय तो कन्याप्राप्ति होय॥

गर्भाधानमें लग्नशुद्धि।

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने॥
ओजांशकेऽजेऽपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात्॥

टीका—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम ये केंद्र इसमें शुभग्रह होय, त्रिकोण, नवम, पञ्चम इसमें शुभग्रह होंय ३।११।१०।६ इसमें पापग्रह होय लग्नको पुरुष ग्रह देखते होंय और विषम नवांशमें चंद्रमा होय तो इसमें गर्भाधान शुभ है और समरात्री, पुनर्वसु, पुष्य, आश्विनी ये नक्षत्र मध्यम होते हैं॥

प्रथम गर्भिणीके पुंसवनादिक संस्कार।

मूलादित्रितये करे श्रवणके भाद्रद्वयार्द्रात्रये रेवत्यां मृगपञ्चके दिनकरे भौमेन रिक्तातिथौ॥ नेत्रे मास्यथवाग्निमासि धनुषि स्त्रीमीनयोश्च स्थिरे लग्ने पुंसवनं तथैव शुभदं सीमन्तकर्माष्टमे॥

टीका—मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर और रवि भौमवार और रिक्ता तिथि वर्जनीय है और गर्भाधानसे दूसरा महीना, तीसरा मास और धन कन्या मीन और स्थिर लग्नोंमें पुंसवन कर्म करे और इनहीं नक्षत्र वा लग्नोंमें ये अष्टमासमें सीमन्तकर्म करना शुभ कहाहै॥

वारफल।

मृत्युश्च सौरेस्तनुहानिरिन्दोः प्रजामृतिः पुंसवने बुधस्य॥
काकी च वन्ध्या भवतीह शुक्रे सुपुत्रलाभो रविभौमजीवैः॥

टीका—शनिवारको पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु होय, चन्द्रवारको शरीरका नाश, बुधवारको सन्तानलाभ, शुक्रवारको काकवन्ध्या एकवार प्रसूति और

रवि, भौम, गुरु इन वारोंमें पुत्रप्राप्त होय, परंतु स्त्रीके चन्द्रमा शुभ होय, दुष्ट योगादिक वर्जित हैं, उक्त नक्षत्र आदिमें और शुभ दिवसमें पुंसवन कहिये गर्भकी पुरुषाकृति होना यह कर्म करावे और जिस मुहूर्तमें गर्भकी स्थिरता कही है इसीमें अनवलोभनभी कर्म उक्त है ॥

अन्य मत ।

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजि सौरेण गर्भे प्रथमं विधेयम् ॥
सीमन्तकर्म द्विजभामिनीनां मासेऽष्टमे विष्णुबलिं च कुर्यात् ॥

टीका–प्रथम गर्भधारण होनेसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम ऐसे सम सौर मासोंमें आठ मासपर्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी स्त्रियोंका सीमंतकर्म और विष्णुबलि करना उचित है ॥

सीमन्ते तिष्यहस्तादितिहरिशशभृत्पौष्णविद्ध्युत्तराख्या ॥
पक्षच्छिद्रा च रिक्ता पितृातिथिमपहायापराः स्युः प्रशस्ताः ॥

टीका–सीमंतकर्ममें पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, मृगशिर, रेवती, रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभ हैं और पक्षरंध्र तिथि, रिक्ता तिथि और अमावास्याको छोड शेष तिथि शुभ जानिये ॥

पक्षच्छिद्रातिथि ।

चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ॥ षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षच्छिद्राह्वयाः स्मृताः ॥ कर्मोदितासु तिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः ॥भूताष्टमनुतत्वाङ्कदशशेषास्तु शोभनाः॥

टीका–चतुर्दशीकी प्रथमकी ५ घटिका, चौथकी ८ घटिका, अष्टमीकी १४ घटिका, षष्ठीकी ८ घटिका, द्वादशीकी १० घटिका वर्जनीय हैं और शेष घडी शुभ हैं ।

मासेश्वरज्ञान ।

मासेश्वराः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरेचन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रादिवाकराः स्युः ॥

मासेश्वरज्ञानार्थं मासेशचक्रम्।

१	२	३	४	५
स्वामी-शुक्र	स्वामी-भौम	स्वामी-गुरु	स्वामी-रवि	स्वामी-चंद्र
६	७	८	९	१०
स्वामी-शनि	स्वामी-बुध	स्वा.गर्भाधा.ल	स्वामी-चंद्र	स्वामी-सूर्य

गर्भिणीधर्म।

भूम्यां चैवोच्चनीचायामारोहणेऽवरोहणे ॥ नदीप्रतरणं चव शकटारोहणं तथा ॥ उग्रौषधं तथा क्षारं मैथुनं भारवाहनम् ॥ कृते पुंसवनं चैव गर्भिणी परिवर्जयेत् ॥

टीका–पुंसवन कर्म होने उपरांत गर्भिणीको ऊंचे नीचे स्थानपर चढना उतरना, भागकर चलना, नदी तरना, गाडीपर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध, नीरस क्षार आदि खाना, मैथुन भार उठाना ये कर्म वर्जित हैं ॥

गर्भिणीप्रश्न।

नामाक्षराणि त्रिगुणीकृतानि तुरङ्गदेशे तिथिमिश्रितानि ॥ अष्टौ च भागं लभते च शेषं समे च कन्या विषमे च पुत्रः ॥

टीका–गर्भिणीके नामके अक्षर तिगुणे करे तिनमें घोडाके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाके वर्तमान तिथि मिलावे और आठका भाग दे शेष अंक सम बचें तो कन्या और विषम बचें तो पुत्र होय ॥

प्रसूतिस्थानप्रवेशनक्षत्र।

रोहिण्यैन्दवपौष्णेषु स्वातीवारुणयोरपि ॥ पुनर्वसौ पुष्यहस्त-धनिष्ठात्र्युत्तरासु च ॥ मैत्रे त्वाष्ट्रे तथाश्विन्यां सूतिकागार-वेशनम् ॥ प्रसूतिसम्भवे काले सद्य एव प्रवेशयेत् ॥

टीका–रोहिणी, मृगशिर, रेवती, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, अनुराधा, चित्रा, अश्विनी ये नक्षत्र प्रसूतिका भवनके प्रवेशमें कहे हैं प्रसूतिसमयमें इन नक्षत्रोंमें तत्काल प्रवेश करावे ॥

गर्भके लक्षण।

कललं १ च घनं २ शाखा३ स्थि४ त्व५ ग्रोमोद्गमः६ स्मृतिः७॥
क्षुत्कि८रुद्वेग९ संसूति १० र्मासेष्वाधानतः क्रमात् ॥

टीका—गर्भाधानसे १० मासतक गर्भका रूप कहते हैं. १ मासमें कलल कहिये शुक्र रुधिर इसके संयोगसे पिंडित होता है. २ मासमें घन कहिये वह पिंड दृढ होता है. ३ मासमें उस पिंडमें शाखा कहिये, हस्त और पाद उत्पन्न होते हैं. ४ मासमें उसमें अस्थि हाड होते हैं. ५ मासमें उसपर त्वचा कहिये चमडा. ६ मासमें रोम कहिये केश होते हैं. ७ मासमें स्मृति अर्थात् ज्ञान होता है. ८ मासमें क्षुधाका होना. ९ नवम मासमें उद्वेग अर्थात् गर्भस्थल उदरसे निकलनेकी इच्छा करता है. १० मासमें प्रसव जानना चाहिये ॥

प्रसूतिसमयकाप्रश्न।

मीने मेषे स्त्रियौ द्वे च चतस्रो वृषकुम्भयोः ॥ तुलाकन्यकयोः सप्त बाणाख्या धनकर्कयोः ॥ अन्यलग्ने भवेत्तिस्र एवं ज्ञेयं विचक्षणः ॥ यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वाङ्गभङ्गता ॥ रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम् ॥

टीका—मीन अथवा मेष इन लग्नोंमें जो स्त्रीके प्रसव होय तो उस समय उसके निकट दो स्त्रियां और वृष कुंभ होंय तो ४, तुला कन्या होंय तो ७, धन और कर्कमें ५, अन्य लग्नोंमें तीन तीन स्त्रियां जाननी चाहिये, जन्मकुंडलीके मध्य जिस दिशामें राहु स्थित होय उसी दिशामें शय्या जाननी, जो लग्नमें मंगल बैठा होय तो खाटका अंगभंग जानिये. जिस स्थानमें रवि होय उसी दिशामें दीपक और जिस दिशामें शनि होय उसमें नाल समझना ॥

तिथिगण्डान्त।

पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथ्योः सन्धिर्नाडीद्वयं तथा ॥
गण्डान्तं मृत्युदं जन्म यात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥

टीका-पूर्णातिथि कहिये १५।५।१० और पडवा, छठ, एकादशी कहिये नंदा इनकी संधिकी दो २ घटी अर्थात् पूर्णिमा पंचमी दशमीके अंतकी एक २ और पडवा छठी एकादशीके आदिकी एक २ घटी गंडांत है. यात्रा विवाह यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं करे तो मृत्यु होय ॥

लग्नगंडान्त।

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ॥
गण्डान्तमन्तराले स्याद्घटिकार्द्धं मृतिप्रदम् ॥

टीका-कर्क सिंह इन दोनों लग्नोंकी घटिका आधी और इस क्रमसे वृश्चिक और धन मीन मेष इनकी आदिकी घडी गंडांतरमें शुभकर्म न करे ये मृत्यु देती हैं।

नक्षत्रगंडांत।

पौष्णाश्विन्योः सर्पपित्र्यर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठामूलयोरन्तरालम् ॥
तद्गण्डान्तं स्याच्चतुर्नाडिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥

टीका-रेवती अश्विनी इनकी संधिकी२ घटिका इसी क्रमसे आश्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इनकी संधिकी २ घटिका वर्जनीय और वैसेही तिथि लग्न और नक्षत्र ये त्रिविध गंडांत जानिये. यह यात्रा जन्मकाल और विवाहमें वर्जित हैं॥

जन्मकालमें गंडांतका शुभाशुभ फल।

आश्विनमिघमूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते पिता ॥ पूषादिशाक्रप-श्चार्द्धे जननी बाध्यते शिशुः॥ सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते ॥ वर्जयेद्दर्शनं शावं तच्च षाण्मासिकं भवेत् ॥

टीका-अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्द्धमें जन्म होय तो पिताको अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन दोनों नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमें जन्म होय तो माताको अशुभ और गंडांतमें जन्म होय तो शिशुका त्याग करना योग्य है अथवा छः मासतक पुत्रको न देखे ॥

कृष्णचतुर्दशीका जन्मफल ।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलम् ॥ चतुर्दश्याश्च षड्भागान् कुर्यादादौ शुभं स्मृतम् ॥ द्वितीये पितरं हन्ति तृतीये मातरं तथा ॥ चतुर्थे मातुलं हन्ति पञ्चमे वंशनाशनम् ॥ षष्ठे च धनहानिः स्यादात्मनो वंशनाशनम् ॥

टीका—जो कृष्णचतुर्दशीका जन्म होय तो तिथिके छः खंड दश २ घटिकाके करे. जो प्रथम खंडमें जन्म होय तो शुभ, द्वितीयामें पिताको अशुभ, तृतीयामें माताको अशुभ, पंचममें वंशनाश, छठेमें धनहानिकारक और अपने वंशका नाशक जानिये ॥

अमावास्याके जन्मका फल ।

सिनीवाल्यां प्रसूताश्च दासी भार्या पशुस्तथा ॥ गजोऽश्वो माहिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥ कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरी स्मृता ॥ यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनम् ॥ सर्वगण्डसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत् ॥

टीका--चतुर्दशीयुक्त अमावास्याको दासी अथवा भार्या गाय हस्तिनी घोडी भैंस जो प्रसूता होय तो इंद्रकीभी संपत्ति हर लेती हैं और ठीक अमावास्याको प्रसूता हो तो बहुतसे दोष लगें और जिसकी इनमें प्रसूति होय उसकी आयुधनका नाश होय और गंडांतमें प्रसूति होय तो बहुतसे दोष जानिये ॥

दिनक्षयादिकफल ।

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ ॥ शूले गण्डेऽतिगण्डे च परिघे यमघण्टके ॥ कालगण्डे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे ॥ तस्मिन्गंडदिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते ॥ अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुता सती ॥

टीका--दिनक्षय व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गण्ड अतिगंड परिघादि यमघंट कालगंड मृत्युयोग दग्धयोग दारुणयोग इनमें जन्म होय तो भारी पाप लगे ऐसी प्रसूतिके स्त्रीको पापयुक्त जानिये ॥

ज्येष्ठानक्षत्रफल।

ज्येष्ठादौ जनने माता द्वितीये जनने पिता ॥ तृतीये जनने भ्राता स्वयं माता चतुर्थके ॥ आत्मानं पञ्चमे हन्ति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ॥ सप्तमे चोभयकुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ॥ नवमे श्वशुरं चैव सर्वं हन्ति दशांशके ॥

टीका—ज्येष्ठा नक्षत्रमें जो जन्म हो तो उस नक्षत्रकी छः घटियोंके दश भाग समान करे तिसका फल प्रथमभाग माताको अशुभ, दूसरा पिताको तीसरा मामाको, चौथा माताको, पांचवां शिशुको, छठा भाग गोत्रजोंको, सातवां पिता, नानाके परिवारको, आठवां बडे भ्राताको, नवम श्वशुरको, दशवां सर्व जनोंको बुरा है ॥

मूलनक्षत्रफल।

मूलं स्तम्भं त्वक् च शाका पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥ वेदाश्च मुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा ॥ नंदा बाणरसा रुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः॥मूले मूलविनाशायः स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ॥ त्वचि भ्रातृविनाशाय शाखा मातुर्विनाशकृत् ॥ पत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्पेषु नृपवल्लभः ॥ फलेषु लभते राज्यं शाखायामल्पजीवितम् ॥

टीका—मूलनक्षत्रको मूल वृक्ष कल्पना करते हैं तिसकी ६० घटीके स्थान इस भांति हैं, प्रथम ४ घटिका वृक्षका मूल तिनमें जन्म होय तो नाश, दूसरा भाग ७ घटिका स्तंभ तिनमें हानि और धनका नाश, तीसरा भाग १० घटिका वृक्षकी त्वचा तिनमें भ्राताको अशुभ होय, चौथा भाग ८ घटिका शाखा तिनमें माताको अशुभ पांचवां भाग ९ घटिका वृक्षके पत्र तिनमें परिवारनाश, छठा भाग ५ घटिका पुष्प तिनमें राजमंत्री, सातवां भाग ६ घटिका फल तिनमें राज्यप्राप्ति, आठवां भाग ११ घटिका वृक्षकी शाखा तिनमें जन्म होय तो शिशु अल्पायु होय ऐसे आठ स्थानका फल जानिये ॥

जन्मकालमें मूल किस लोकमें है सो जाननेकी लग्न।

वृषालिसिंहेषु घटे च मूलं दिवि स्थितं युग्मतुलांगनान्त्ये ॥

पातालगं मेषधनुःकुलीरनक्रेषु मर्त्येष्विति संस्मरन्ति ॥

टीका–वृष सिंह कुंभ वृश्चिक लग्नोंमें जन्म होय तो उस दिन मूल नक्षत्र स्वर्गमें होता है तिसका फल राज्यप्राप्ति और मिथुन तुला कन्या मीनमें मूल पातालमें जानिये तिसका फल धनप्राप्ति और मेष धन कर्क मकर इन लग्नोंमें मूल मृत्युलोकमें होता है इसका फल कुटुंबनाश १२ लग्नोंका फल है ॥

आश्लेषानक्षत्रका नराकारचक्र।

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहुहृज्जानुगुह्यपदामित्याहिदेहभागः ॥ बाणाद्रिनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरुद्रषण्नन्दपञ्चशिरसः क्रमशस्तु नाड्यः॥ राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः कामक्रियारतिः ॥ पितृभक्तो बली स्वघ्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ॥

टीका–आश्लेषा नक्षत्रकी घटिकाओंको नराकार चक्रमें स्थापन करनेमें प्रथम ६ घटिका मस्तक तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वितीय ७ घटी मुख तिनका फल पिताका नाश तीसरा विभाग दो घडी तिनका फल माताका नाश, चौथा ३ घटिका ग्रीवा तिनका फल परस्त्रीरत, पांचवां भाग ४ घटी दोनों कांधे तिनका फल पितृभक्त, छठा भाग ८ घटी दोनों बाहु तिनका फल बली, ७ भाग ११ घटि हृदय तिनका फल आत्मघाती, आठवां भाग ६ घटी दोनों जानु तिनका फल त्यागी, नौवां विभाग ९ घटीका गुह्य तिसका फल भोगी, दशवां भाग ५ घटी दोनों पांय तिनका फल धनवान्, जिस विभागमें जन्म होय तिसका फल स्थानानुसार कहना योग्य है ॥

जन्मसमयमें सूर्यादि ग्रहोंका फल।

तनुस्थान ॥ लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम् ॥ छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं जीवेन्दुभार्गवबुधः सुखकान्तिदाः स्युः॥ धनस्थान॥ दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा वित्ते स्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः ॥ चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते

नैं स्थः ॥ सहजस्थानम् ॥ भानुःकरोतिविरुजंरजनीकरोपि कीर्त्यायुताक्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ॥ ऋद्धिं बुधः सुधिषणंसुविनीतवेषं स्त्रीणांप्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीये ॥ सुहृत्स्थानम् ॥ आदित्यभौमशनयःसुखवर्जिताङ्गंकुर्वतिजन्मनिनरं सुचिरं चतुर्थे ॥ सोमोबुधःसुरगुरुर्भृगुनन्दनोवासौख्यान्वितं च नृपकर्मरतः प्रधानम् ॥ सुतस्थानम् ॥ पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतंबुधश्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रम् ॥ शुक्रेन्दुदेवगुरवःसुतधामसंस्थाःकुर्वन्ति पुत्रबहुलंसुखिनं सुरूपम् ॥ रिपुस्थानम् ॥ मार्तण्डभूमितनुजौहतशत्रुपक्षंपङ्गुर्नररिपुगृहेष्वतिपूजनीयम् ॥ काव्येन्दुजौमतिविहीनमनल्परोगंजीवः करोतिविकलंमरणंशशाङ्कः ॥ जायास्थानम् ॥ तिग्मांशुभौमरविजाः किलसप्तमस्थाजायांकुकर्मनिरतां तनुसंततिं च ॥ जीवेन्दुभार्गवबुधावहुपुत्रयुक्तांरूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ॥ मृत्युस्थानम् ॥ सर्वेग्रहादिनकरप्रमुखानितांतंमृत्युस्थितावितनुते किलदुष्टबुद्धिम् ॥ शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिंसौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ॥ धर्मस्थानम् ॥ धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वन्तिधर्मरहितांविमतिंकुशीलम् ॥ चन्द्रोबुधोभृगुसुतःसुरराजमन्त्री धर्मक्रियासुनिरतं कुरुतेमनुष्यम् ॥ कर्मस्थानम् ॥ आदित्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाः कुर्युर्नरंबहुकुकर्मरतंकुपुत्रम् ॥ चन्द्रःसुकीर्तिमुशनाबहुवित्तयुक्तंरूपान्वितंबुधगुरू शुभकर्मभाजम् ॥ लाभस्थानम् ॥ लाभस्थितोदिनकरोनृपलाभयुक्तंताराप्तिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशम् ॥ सौम्यो विवेकसुभगं च धनायुषीज्यःशुक्रःकरोतिसगुणंरविजःसुकीर्तिम् ॥ व्ययस्थानम् ॥ सूर्यःकरोतिपुरुषंव्ययगो विशीलं काणंशशीक्षितिसुतो बहुपापभाजम् ॥ चन्द्राङ्गजो गतधनं धिषणः कृशाङ्गंशुक्रोबहुव्ययकरं रविजःसुताग्निम् ॥ राहुकेतुफलंसर्वं मन्दवत्कथितंबुधैः ॥

सं०	स्था	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि राहु. के.
१	तनु	अंगपीडा	कांति और सुख	रक्तकोप	कांति और सुख	कांतिऔरसुख	कांतिऔरसुख	अतिदुःखदायक
२	धन	अतिदुःख वा धनकानाश	संपत्तिकीबहुत प्राप्ति	दुःखप्राप्तिधन कानाश	नानाप्रकारके सं० प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्ति प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्तिप्राप्ति	अतिदुःखप्राप्ति धनकानाश
३	सह	निरोगीरहै	कीर्तिलाभ	क्रोधयुक्तरहै	समृद्धि	सुबुद्धि	नानावेषधारण०	स्त्रियोंकोप्रियहो
४	सुहृत्	शरीरकोपीडा बहुतहोय	सुखभोगी	शरीरकोबहुत पीडा	सुखभोगी	सुखभोगी	सुखभोग	शरीरकोपीडाब हुतहोय
५	सुत	रोगबहुतहोय	बहुतपुत्रहोय	संतानरहित	अल्पपुत्रसंतति	बहुपुत्रप्राप्ति	बहुतपुत्र	संतान न हो
६	रिपु	शत्रुकानाशकरे	मरणपावै	शत्रुनाश	बुद्धिहीनबहुरोग	शरीरविकलरहै	बुद्धिहीनबहुरोग	शत्रुग्रहपूज्य
७	जाया	स्त्रीदुष्टकर्मी व संतानअल्प	स्त्रीरूपवतीगुण वतीगुणयुक्तपुत्र	स्त्रीदुष्टकर्मी व संततिअल्प	स्त्रीरूपवान ब हु पुत्रप्राप्ति	औरमनहरण होयसुखभोगी	मनहरनेवाली पुत्रवतीचतुर	स्त्रीदुष्टकर्मी सं तानथोडीउत्पन्न
८	मृत्यु	इसमें सब ग्रहोंकाफल एक समानहोताहै दुष्टबुद्धि शस्त्रघात शरीरपीडा सुखरहित और रोगी होय जो ग्रह इस स्थानमें होय ताका ऐसा फल जानिये						
९	धर्म	अधर्मीदुष्टमति दुष्टशील	धार्मिकहोय	अधर्मीदुष्टमति दुष्टशील	धर्मनिरंतरकरै	धर्मनिरंतरकरै	धर्मनिरंतरकरै	अधर्मी दुष्टबुद्धि
१०	कर्म	अत्यंतदुष्टकर्मी कुपुत्र	अत्यंतकीर्तिवा न् होय	दुष्टकर्मीकुपुत्र	कीर्तिवान्	शुभकर्मकरे	संपत्तिवान्	अत्यंतदुष्टकर्मी व कुपुत्र
११	आय	राजासेसमाग म करे	धनबहुतामिले	पृथ्वीलाभ राजासे	विवेकयुक्तऔर सुंदर	धन और आयु की वृद्धि	गुणवान्	अच्छीकीर्तिपावे
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	काणा होय	पापकर्म	धनहीन	कृशगात्र	व्याधियुत	तीव्रहोय

पुरुषकेजन्मकालमें जैसे ग्रहपडेहोंय तिनकाफल ।

टीका—जन्म लग्नके तनु आदि द्वादशस्थानोंमें जो जो ग्रह पडे होंय तिनके पृथक् २ फल जाननेके लिये कोष्ठक और राहुकेतु के फल शनिके समान जानिये.

जन्मलग्नमें बालकके मृत्युकारकग्रह।

चन्द्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च शनि-
जन्मगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तुपञ्चभृगुषष्ठबुधश्चतुर्थे
जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति सन्तः ॥

टीका–जन्मलग्नसे चंद्रमा अष्टमस्थानी भौम ७ स्थानमें राहु ९ स्थानमें शनि जन्म लग्नमें गुरु तृतीय स्थानमें रवि ५ स्थानमें शुक्र ६ स्थानमें बुध ४ स्थानमें ऐसे ग्रह पडें तो शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

जन्मलग्नमें स्त्रीके मृत्युकारकग्रह।

षष्ठे च भवनेभौमोराहुः सप्तमसम्भवः ॥
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्यभार्या न जीवति ॥

टीका–जन्म लग्नके छठे स्थानमें भौम राहु ७ स्थानमें शनि ८ स्थानमें ऐसे ऐसे ग्रह जिसकी कुण्डलीमें पडे होंय उस पुरुषकी स्त्री न जीवे ॥

अच्छे पराक्रमी ग्रह।

भृतौशुक्रबुधौयस्य केन्द्रे चैवबृहस्पतिः ॥
दशमोङ्गारकोयस्य सज्ञेयः कुलदपिकः ॥

टीका–जिसके जन्म लग्नमें शुक्र बुध और केन्द्र अर्थात् प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें बृहस्पति तथा दशम स्थानमें मंगल होय तो उस बालकको कुलदीपक जानिये ॥

पराक्रमी ग्रह।

नैवशुक्रोबुधो नैवनास्तिकेन्द्रे बृहस्पतिः ॥
दशमोंगारकोनैवसजातः किंकरिष्याति ॥

टीका–जिस बालकके लग्नमें बुध शुक्र अथवा केन्द्रमें बृहस्पति किंवा दशम स्थानमें मंगल ऐसे ग्रह न पडे होंय तो उसका जन्म होना वृथा जानिये ॥

जातिभ्रंशकारक।

धनस्थाने यदासौरिः सैंहिकेयोधरात्मजः ॥ शुक्रोगुरुः

सप्तमे च त्वष्टमोरविचन्द्रकौ ॥ ब्रह्मपुत्रेपदेवापि वेश्यासु
चसदारातिः ॥ प्राप्तेविंशतिमेवर्षेम्लेच्छोभवतिनान्यथा ॥

टीका—जिसके धनस्थानमें शनि राहु मंगल और सप्तम स्थानमें शुक्र गुरु तथा अष्टमस्थानमें रवि चंद्र ऐसे ग्रह होंय सो बालक कदाचित् ब्राह्मण जातिमेंभी जन्म पावे तथापि वेश्याप्रसंगी होय और बीसवीं वर्षकी अवस्थामें अवश्य म्लेच्छ होय ॥

मातापिताके नाशक।

षष्ठे च द्वादशेराशौ यदापापग्रहो भवेत् ॥
तदामातृभयं विद्याच्चतुर्थेदशमेपितुः ॥

टीका—जो छठे अथवा बारहवें स्थानमें पाप ग्रह होंय तो माताका अशुभ किंवा चतुर्थ अथवा दशमस्थानमें पापग्रह होंय तौ पिताको अशुभ जानिये ॥

मृत्युकारकग्रह।

अर्कोराहुः कुजः सौरिर्लग्नेतिष्ठति पञ्चमे ॥
पितरंमातरंहन्ति भ्रातरंस्वशिशून्क्रमात् ॥

टीका—जो सूर्य राहु मंगल शनि ये ग्रह जन्मलग्नसे पांचवें स्थानमें पडे होंय तौ क्रमसे रवि पिताको राहु माताको भौम भ्राताको और शनि अपने बालकोंके लिये अशुभ जानना ॥

लग्नस्थानेयदासौरिः षष्ठोभवतिचन्द्रमाः ॥
कुजस्तुसप्तमस्थाने पितातस्यनजीवति ॥

टीका—जिसके जन्मलग्नमें शनि और छठे स्थानमें चंद्रमा, सप्तममें मंगल, ऐसे ग्रह होंय उसका पिता न जीवे ॥

पातालस्थोयदाराहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेऽपिच ॥
पापदृष्टोविशेषेणसद्यः प्राणहरः शिशोः ॥

टीका—जन्मलग्नके सप्तम स्थानमें राहु छठे अथवा आठवें स्थानमें चंद्रमा और शेष ग्रहोंकी पापदृष्टि जो ऐसे ग्रह होंय तो जन्म होतेही बालककी मृत्यु होय॥

जन्मलग्नेयदाराहुः षष्ठो भवति चन्द्रमाः ॥
जातोमृत्युमवाप्नोति कुदृष्टयात्वपमृत्युना ॥

टीका—जन्मलग्नमें राहु षष्ठ स्थानमें चंद्रमा ऐसे समय जन्मे तौ बालककी मृत्यु होय और जन्मलग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि होय तौ अपमृत्यु जानिये ॥

जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशेमृत्युर्यदिरक्षतिशंकरः ॥

टीका—जो जन्मलग्नमें मंगल और अष्टमस्थानी बृहस्पति ऐसे ग्रह हौंय तौ बारहवें वर्ष शंकर रक्षक होयँ तौभी मृत्यु जानिये ॥

शनिक्षेत्रेयदासूर्यो भानुक्षेत्रे यदाशनिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वैरक्षिता यदि ॥

टीका—जो शनिके क्षेत्रमें सूर्य होय और सूर्यके गृहमें शनि हो तौ बारहवें वर्ष देवरक्षितभी शिशु मृत्युको प्राप्त होय ॥

षष्ठोष्टमस्तथामूर्तौ जन्मकालेयदाबुधः ॥
चतुर्थवर्षेमृत्युश्चयदि रक्षतिशंकरः ॥

टीका—षष्ठ अष्टम अथवा जन्मलग्नमें बुध होय तौ चौथे वर्ष शंकरभी रक्षा करे तौभी बालक न बचे ॥

भौमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टसु च चन्द्रमाः ॥
वर्षेऽष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरोरक्षितायदि ॥

टीका—मंगलके घरमें बृहस्पति और षष्ठ अथवा अष्टमस्थानी चन्द्रमा ऐसे ग्रह होंय तौ ईश्वररक्षितभी बालक आठवें वर्ष मृत्युको प्राप्त होय ॥

दशमोपियदाराहुर्जन्मलग्नेयदाभवेत् ॥
वर्षेतुषोडशेज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥

टीका—जन्मलग्नसे दशमस्थानी अथवा जन्मलग्नमें राहु होयँ तौ सोलहवें वर्षमें मृत्यु होय ॥

ग्रहोंकी दृष्टि।

पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीये-द्विपादद्दष्टिर्नवपञ्चमेवौ॥ त्रिपाददृष्टि-

श्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तके च ॥ शनेस्त्वेकादशेपूर्णा दृष्टिर्जीवस्यकाणके ॥ बुधैर्ज्ञेयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके ॥

टीका—जन्मलग्नसे दशवें और तीसरे स्थानमें ग्रह होंय वे एकपाद दृष्टिसे जन्मलग्नको देखते हैं इसी क्रमसे नवम पंचम स्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टिसे देखते हैं चौथे और आठवें स्थानमें जो ग्रह पडे होंय वे त्रिपाद दृष्टिसे सप्तम स्थानी होयँ तिसकी पूर्ण सम दृष्टि जानिये, जन्म लग्नसे शनैश्वर एकादश अथवा तीसरे स्थानमें होय तो पूर्णदृष्टिसे लग्नको देखता है; पांचवें नववें गुरु और चतुर्थ अष्टम स्थानमें भौम होय तो पूर्ण दृष्टिसे देखता है ॥

ग्रहोंका उच्चत्व व नीचत्व।

रविर्मेषेतुलेनीचोवृषेचन्द्रस्तुवृश्चिके ॥ भौमश्चनक्रेकर्के च स्त्रियां सौम्योझषेतथा ॥ गुरुः कर्के च नक्रे च मीनकन्ये सितस्य च ॥ मन्दस्तुलायांमेषे च कन्याराहुग्रहस्य च ॥ राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम् ॥ प्रोक्तंग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ॥

ग्रह	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृषभ	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	कन्या मिथुन	तुला
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

जन्मलग्नका फल।

मेषेदैन्यमुपैति गर्वितवृषो नानामतिर्मन्मथेशूरः कर्कटकेधृती च वनपे कन्या च मायान्विता ॥ सत्यंचैवतुलेत्वलौ मलिनता पापान्वितंवै धनुर्मूर्खोयं मकरेघटे चतुरतामीनेत्वधीरामतिः ॥

टीका—मेष लग्नमें जन्म होय तो दीनता, वृषमें गर्वित, मिथुनमें नाना प्रकारकी बुद्धियुत, कर्कमें बडा शूर, सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें अत्यंतमानी, तुलामें सत्यवादी, वृश्चिकमें मलीन, धनमें पापबुद्धि, मकरमें मूर्ख, कुंभमें चतुर, मीन लग्नमें जो जन्म पावे सो बडा अधीर होय ऐसे जन्मलग्नका फल जानिये ॥

स्त्रीजातकमाह।

लग्ने च सप्तमेपापे सप्तमेवत्सरेपतिः।
म्रियतेचाष्टमेवर्षेचन्द्रः षष्ठाष्टमेयदि॥

टीका—स्त्रीके जन्मकालमें लग्नमें पापग्रह होय तौ ७ वर्षमें पतिनाश जानना और चंद्र षष्ठ वा अष्टम स्थानमें होंय तौ अष्टम वर्षमें पतिका नाश जानना॥

अन्यमते॥ द्वादशेचाष्टमे भौमे क्रूरेतत्रैवसंस्थिते॥
लग्ने च सिंहिकापुत्रेरण्डाभवतिकन्यका॥

टीका—जन्मसमयमें १२।८स्थानमें जो मङ्गल होय और क्रूरग्रहभी १२।८ स्थानमें होय और जो लग्नमें राहु होय तौ स्त्री विधवा होय ऐसा जानना॥

अन्यमते॥ लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपिवा॥
सद्योनिहन्तिदम्पत्योरेकंनास्त्यत्रसंशयः॥

टीका—जो लग्नसे सप्तमस्थानमें पापग्रह होय और चन्द्रमासे सप्तम स्थानमेंभी पापग्रह होय तौ विवाहसे अल्पकालमें स्त्री विधवा होय॥

रविसुतोयदिकर्कमुपागतो हिमकरोमकरोपगतोभवेत्॥
किलजलोदरसंजनिता तदानिधनतावनितासुतकीर्तिता॥

टीका—जो शनैश्चर कर्कराशिमें होय और चन्द्रमा मकरराशिमें होय तौ जलोदररोगसे स्त्रीका नाश जानिये॥

निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोति॥
पापाः स्मरस्थेन्यखगे च धर्मे किलांगना प्रव्रजितत्वमेति॥

टीका—जो चन्द्रमा पापग्रहके मध्यमें बैठा होय तौ शस्त्रसे मृत्यु कहना और जो चन्द्रमा मंगलकी राशिमें बैठा होय तौ अग्निसे जलकर नाश कहना और जो पापग्रह सप्तम स्थानमें अथवा नवमस्थानमें अन्य शुभ ग्रह होंय तौ स्त्री काषायवस्त्रधारी वेदांती होती है॥

सप्तमे दिनपतौपतिमुक्ताक्षोणिजे च विधवाखलुबाल्ये॥
पापखेचरविलोकनयाते मंदगे च युवतिर्जरतिस्यात॥

टीका–जो स्त्रीके जन्मलग्नमें सप्तम स्थानमें सूर्य होय तो पतित्यागी कहना और जो मंगल सप्तम होय तौ बाला अवस्थामें वैधव्य प्राप्ति होय और जो सप्तम पापग्रह देखता होय तौ यौवन अवस्थामें विधवा होय और जो सप्तमस्थानमें शनैश्चर होय तौ वृद्ध अवस्थ में वैधव्यप्राप्ति हो ऐसा जानिये ॥

लग्नेसितेन्दु च तथाकुजमंदभस्थौक्रूरेक्षितौसान्यरता च बाला ॥
स्मरेकुजांशेर्कसुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्च शुभाशुभांशे ॥

टीका–जो लग्नमें शुक्र चन्द्रमा होय और मंगल शनि ये दशम स्थानमें पडे होंय और उसको पापग्रह देखते होय तौ वह स्त्री परपुरुषसे संग करे और जो सप्तम स्थानमें मंगलका अंश होंय और शनैश्चर सप्तम स्थानको देखता होय तौ नष्टयोनी जानना. जो सप्तम स्थानमें शुभ ग्रहका अंश होय तौ शुभ कहना॥

सूर्यारौखचलाश्रितौहिमवतः शैलाग्रपातान्मृति- ।
भौमेन्द्वर्कसुताः खसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ॥
सूर्याचन्द्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यायुतौ बन्धुना ।
तौचेद्व्यंगविलग्नसंस्थितकरौ तोयेनिमग्नत्वतः ॥

टीका–जो सूर्य मंगल ये दशवें वा चौथे स्थानमें होंय तौ पाषाणसे मृत्यु कहना, और जो मंगल चन्द्र शनि ये अपने स्थानमें सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें बैठे होंय तौ कूवा बावडी तलाव आदिसे मृत्यु कहना और जो सूर्य चन्द्रमाको पापग्रह देखते होंय वा युक्त होंय तौ वह स्त्री बंधुयुक्त कहना, और जो सूर्य, चन्द्र ये द्विस्वभावमें होंय तौ जलसे मृत्यु कहना चाहिये ॥

समेविलग्नेयादिसंस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेन्दुजीवाः ॥
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ॥

टीका–जो समराशिको लग्न होय और उसमें शुक्र बुध चन्द्र गुरु ये बलयुक्त होंय तौ वह स्त्री ब्रह्मविचार करे और उत्तम प्रकारकी ज्ञानी होय ॥

सप्तमेभार्गवेजाताकुलदोषकराभवेत् ॥
कर्कराशिस्थितेभौमेस्वैराभमतिवेश्मसु ॥

टीका-स्त्रीके सप्तम स्थानमें जो शुक्र होय तौ कुलको दूषित करे और जो कर्क राशिमें मंगल होय तो वंध्या और दूसरेके घरमें वास करे ऐसे जानना ॥

पापयोरंतरेलग्ने चन्द्रेवायदिकन्यका ॥
जायते च तदा हान्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥

टीका-जो लग्नमें पापग्रहकी कर्तरी होय अथवा चन्द्रमाके पापग्रहकी कर्तरी होय तौ वह स्त्री दोनों वंशको घात करनेवाली होती है ॥

॥ तनुस्थानम् ॥ मूर्तौकरोतिविधवांदिनकृत्कुजश्चराहुर्विनष्टतनयांरविजोदरिद्राम् ॥ शुक्रः शशाङ्कतनयश्चगुरुश्चसध्वीमायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ॥ धनस्थानम् ॥ कुर्वन्तिभास्करशनैश्चरराहुभौमादारिद्र्यदुःखमतुलंनियमं द्वितीये ॥ वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्यानारीं प्रभूततनयांकुरुतेशशाङ्कः ॥ सहजस्थानम् ॥ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युः स्त्रियंबहुसुतांधनभागिनीं च ॥ सत्यंदिवाकरसुतः कुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मीं ददातिनियतं किलसैंहिकेयः ॥ सुहृत्स्थानम् ॥ स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुते चतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुते शशी च ॥ राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोल्पवीजां सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः ॥ सुतस्थानम् ॥ नष्टात्मजांरविकुजौखलु पञ्चमस्थौचन्द्रात्मजो बहुसुतांगुरुभार्गवौ च ॥ राहुर्ददाति मरणंरविजस्तुरोगंकन्याप्रसूतिनिरतां कुरुतेशशांकः ॥ रिपुस्थानम् ॥ षष्ठस्थिताः शनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथाबहुसुतांधनभागिनींच ॥ चन्द्रःकरोति विधवामुशनादरिद्रां वेश्यांशशांकतनयःकलहप्रियां च ॥ जायास्थानम् ॥ सौरारजीवबुधराहुरवीन्दुशुक्रादद्युः प्रसह्यमरणंखलुसप्तमस्थाः ॥ वैधव्यबंधनभयंक्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण ॥ मृत्युस्थानम् ॥ स्थानेष्टमे गुरुबुधौ नियतंवियोगंमृत्युंशशीभृगुसुतश्च तथैव,राहुः ॥ सूर्यः करोतिविधवां धनिनींकुजश्चसूर्यात्मजोबहुसुतां पतिवल्लभां च ॥ धर्मस्थानम् ॥ धर्मस्थितासुरदिवाकर-

भूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजः सुभोगाम् ॥ राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यांनारींप्रसूतितनयांकुरुतेशशांकः॥ कर्मस्थानम् ॥ राहुर्नभःस्थलगतो विधवांकरोतिपापेपरां दिनकरश्चशनैश्चरश्च॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलां च चन्द्रः शेषाग्रहाधनवतीं बहुवल्लभां च ॥ आयस्थानम् ॥ आयेरविर्बहुसुतां धनिनीं शशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतो रविजोधनाढ्याम् ॥ आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सुपुत्रींराहुः करोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ व्ययस्थानम् ॥ अन्त्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रांवन्ध्यांकुजः पररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वींसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनान्धाम् ॥

स्थान	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	तनु	विधवा	आयुक्रा नाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाशक
२	धन	दरिद्रदुःख	बहुपुत्रवती	दरिद्रदुःख	सौभाग्यसंपात्ति	सौभाग्य संपत्ति	सौभाग्य संपत्ति	दरिद्रदुःख	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	लक्ष्मीवती	लक्ष्मीवती
४	सुहृत्	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्पसंतानी	अतिसुखिनी	अतिसु खिनी	अतिसु खिनी	दुग्धअल्प	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्या अधिक	शिशुनाशवती	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	रोगिणी	मरणप्राप्ति
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	कलहरूप	धनवती	दरिद्रिणी वेश्या	धनवती	धनवती
७	जाया	रोगिणी	प्रवासिनी	विधवा	क्षय	भयबंध	मृत्यु	वैधव्य मरण	वित्तनाश
८	मृत्यु	विधवा	वियोगी मरणांत	धनवती	स्वजनावियोग.	स्वजनावियोग	मरणांत वियोग	अतिपुत्र संतान	मरणांतावियोग
९	धर्म	धर्मपुष्कल करै	पुत्रवती	धर्मकार्य कर्त्री	उत्तमभोगवती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांझ	वांझ
१०	कर्म	पापकारिणी	दरिद्रव्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	धनवतीव-रकीप्राप्ति	धनीवर प्राप्ति	पापकार्मिणी	विधवा
११	आय	अति पुत्र प्राप्ति	लक्ष्मीवती	बहुपुत्रवती	सुखिनी	आयुष्मती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२	व्यय	खर्चकरती	दिनांध	वांझव्याभिचारिणी	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्चकरनेहारी	व्यभिचारिणीपापिनी

अष्टोत्तरीदशाक्रम।

आर्द्रापुनर्वसुपुष्यआश्लेषातुरवेर्दशा ॥ मघापूर्वोत्तराचैव चन्द्रस्य च दशातथा ॥ हस्तोविशाखाचित्राचस्वाती भौमदशास्मृता ॥ ज्येष्ठानुराधामूले च सौम्यस्यचदशाबुधैः॥ अभिजिच्छ्रवणः पूषा ऊषाचैवशनेर्दशा ॥ धनिष्ठा शतताराचपूर्वाभाद्रपदागुरोः ॥ उभापूषाश्विनी कालेराहोश्चैव दशास्मृता ॥ कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगः शुक्रदशाबुधैः॥ एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाः सूर्यादिकादशाः॥क्रूरजाअशुभाप्रोक्ताशुभास्यात्सौम्यखेटज॥॥

महादशाकी संख्याका क्रम।

सूर्यस्यरसवर्षाणि इन्दोः पञ्चदशैवच ॥ भौमस्यवसुवर्षाणि ऋषिचन्द्रबुधस्यच ॥मन्दस्यदशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः ॥ राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रस्यैकोनविंशतिः ॥

टीका—आर्द्रासे मृगाशिरपर्यंत २८ नक्षत्र और सूर्य चंद्र भौम बुध शनि गुरु राहु शुक्र इस क्रमसे आठ ग्रहोंके पृथक् दो कोष्ठक लिखे हैं. तिनमेंसे महादशाकी वर्ष संख्या इस प्रकार है पापग्रहके नक्षत्र ४ और शुभग्रहके ३ नक्षत्र जानिये.आर्द्रासे रविदशा गिनिये और दशाकी संख्या नक्षत्रके विभागसे जाने जो विभागके अंतमें होय तो इन क्रमसे भोग्य दशा जाननी और जन्मकालमें जो दशा होय वही प्रथम जाननी ॥ सूर्यकी दशा ६ वर्ष, चन्द्रकी १५, मंगलकी ८, बुधकी १७, शनिकी १०, गुरुकी १९, राहुकी १२, शुक्रकी १९ वर्ष भोग्य दशा जानिये ॥

अंतर्दशा लानेका क्रम।

महादशाः स्वस्वदशाब्दनिघ्नाभक्ताः स्वबाहूशशिभिः समाद्याः ॥ अन्तर्दशाः स्युर्गगनेचराणांतदेकभावोहिमहादशा स्यात् ॥

टीका—जो ग्रहोंकी अंतर्दशा जाननी होय तो जन्मदशाकी वर्षसंख्याको दूसरी दशाकी वर्षसंख्यासे गुणा करे और १०८ का भाग दे जो लब्धि आवे वह वर्षसंख्या जानिये, फिर १२ से गुणा करके १०८ का भाग देनेसे जो लब्धि आवे सो मास जानिये, फिर ३० से गुणा करके दिन और ६० से गुणा करके घटी और ६० से गुणा करके पल इत्यादि निकाल लीजियें

भूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजः सुभोगाम् ॥ राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यांनारींप्रसूतितनयांकुरुतेशशांकः॥ कर्मस्थानम् ॥ राहुर्नभःस्थलगतो विधवांकरोतिपापेपरां दिनकरश्चशनैश्चरश्च॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुटिलां च चन्द्रः शेषाग्रहाधनवतीं बहुवल्लभां च ॥ आयस्थानम् ॥ आयेरविर्बहुसुतां धनिनीं शशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतो रविजोधनाढ्याम् ॥ आयुष्मतीं सुरगुरुर्भृगुजः सुपुत्रींराहुः करोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ॥ व्ययस्थानम् ॥ अन्त्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दारिद्रांवन्ध्यांकुजः पररतां कुटिलां च राहुः ॥ साध्वींसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनान्धाम् ॥

स्थान	नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	तनु	विधवा	आयुक्षा नाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाशक
२	धन	दरिद्रदुःख	बहुपुत्रवती	दरिद्रदुःख	सौभाग्यसंपात्ति	सौभाग्य संपत्ति	सौभाग्य संपत्ति	दरिद्रदुःख	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	लक्ष्मीवती	लक्ष्मीवती
४	सुहृत्	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्पसंतानी	अतिसुखिनी	अतिसुखिनी	अतिसुखिनी	दुग्धअल्प	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्या अधिक	शिशुनाशवती	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	बहुफल प्राप्ति	रोगिणी	मरणप्राप्ति
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	कलहरूप	धनवती	दरिद्रिणी वेश्या	धनवती	धनवती
७	जाया	रोगिणी	प्रवासिनी	विधवा	क्षय	भयबंध	मृत्यु	वैधव्य मरण	वित्तनाश
८	मृत्यु	विधवा	वियोगी मरणांत	धनवती	स्वजनवियोग.	स्वजनवियोग	मरणांत वियोग	अतिपुत्र संतान	मरणांतावियोग
९	धर्म	धर्मपुष्कल करै	पुत्रवती	धर्मकार्य कर्त्री	उत्तमभोगवती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांझ	वांझ
१०	कर्म	पापकारिणी	दरिद्रव्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	धनवतीवरकीप्राप्ति	धनीवर प्राप्ति	पापकार्मिणी	विधवा
११	आय	अति पुत्र प्राप्ति	लक्ष्मीवती	बहुपुत्रवती	सुखिनी	आयुष्मती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२	व्यय	खर्चकरती	दिनांध	वांझव्यभिचारिणी	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	खर्चकरनेहारी	व्यभिचारिणीपापिनी

अष्टोत्तरीदशाक्रम ।

आर्द्रापुनर्वसुपुष्यआश्लेषातुरवेर्दशा ॥ मघापूर्वोत्तराचैव चन्द्रस्य च दशातथा ॥ हस्तोविशाखाचित्राचस्वाती भौमदशास्मृता ॥ ज्येष्ठानुराधामूले च सौम्यस्यचदशाबुधैः ॥ अभिजिच्छ्रवणः पूषा ऊषाचैवशनेर्दशा ॥ धनिष्ठा शतताराचपूर्वाभाद्रपदागुरोः ॥ उभापूषाश्विनी कालेराहोश्चैव दशास्मृता ॥ कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगः शुक्रदशाबुधैः ॥ एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाः सूर्यादिकादशाः ॥ क्रूरजाअशुभाप्रोक्ताशुभास्यात्सौम्यखेटजा ॥

महादशाकी संख्याका क्रम ।

सूर्यस्यरसवर्षाणि इन्दोः पञ्चदशैवच ॥ भौमस्यवसुवर्षाणि ऋषिचन्द्रबुधस्यच ॥ मन्दस्यदशवर्षाणि गुरोश्चैकोनविंशतिः ॥ राहोर्द्वादशवर्षाणि शुक्रस्यैकोनविंशतिः ॥

टीका–आर्द्रासे मृगाशिरपर्यंत २८ नक्षत्र और सूर्य चंद्र भौम बुध शनि गुरु राहु शुक्र इस क्रमसे आठ ग्रहोंके पृथक् दो कोष्ठक लिखे हैं. तिनमेंसे महादशाकी वर्ष संख्या इस प्रकार है पापग्रहके नक्षत्र ४ और शुभग्रहके ३ नक्षत्र जानिये. आर्द्रासे रविदशा गिनिये और दशाकी संख्या नक्षत्रके विभागसे जाने जो विभागके अंतमें होय तो इन क्रमसे भोग्य दशा जाननी और जन्मकालमें जो दशा होय वही प्रथम जाननी ॥ सूर्यकी दशा ६ वर्ष, चन्द्रकी १५, मंगलकी ८, बुधकी १७, शनिकी १०, गुरुकी १९, राहुकी १२, शुक्रकी १९ वर्ष भोग्य दशा जानिये ॥

अंतर्दशा लानेका क्रम ।

महादशाः स्वस्वदशाब्दनिघ्नाभक्ताः स्वबाहूशशिभिः समाद्याः ॥ अन्तर्दशाः स्युर्गगनेचराणांतदेकभावोहिमहादशा स्यात् ॥

टीका–जो ग्रहोंकी अंतर्दशा जाननी होय तो जन्मदशाकी वर्षसंख्याको दूसरी दशाकी वर्षसंख्यासे गुणा करे और १०८ का भाग दे जो लब्धि आवे वह वर्षसंख्या जानिये, फिर १२ से गुणा करके १०८ का भाग देनेसे जो लब्धि आवे सो मास जानिये, फिर ३० से गुणा करके दिन और ६० से गुणा करके घटी और ६० से गुणा करके पल इत्यादि निकाल लीजिये

और इसी क्रमसे १२० का भाग विंशोत्तरी दशामें दिया जाता है ॥

सूर्यकी महादशाके वर्ष ६ आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा						चंद्रकी महादशाके वर्ष १५ मघा पूर्वाफा० उत्तराफा०					
अंतर्दशाक्रम						अंतर्दशाक्रम					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
सूर्य	०	४	०	०	अशुभ	चंद्र	२	१	०	०	शुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ	भौम	१	१	१०	०	अशुभ
भौम	०	५	१०	०	अशुभ	बुध	२	४	१०	०	शुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ	शनि	१	४	२०	०	अशुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ	गुरु	२	७	२०	०	शुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ	राहु	१	८	०	०	अशुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ	शुक्र	२	११	०	०	शुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ	रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	६	०	०	०		संख्या	१५	०	०	०	

भौमकी महादशाके वर्ष ८ हस्त चित्रा स्वाती विशाखा						बुधकी महादशाके वर्ष १७ अनुराधा ज्येष्ठा मूल					
अंतर्दशा						अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल	ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
भौम	०	७	३	२०	अशुभ	बुध	२	८	३	२०	शुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ	शनि	१	६	२६	४०	अशुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ	गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ	राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ	शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ	रवि	०	११	१०	०	अशुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ	चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
चंद्र	१	१	१०	०	शुभ	भौम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	८	०	०	०	०	संख्या	१७	०	०	०	०

शनिकी महादशाके वर्ष १०
पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अभिजित्‌श्र०

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ
भौम	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	

गुरुकी महादशाके वर्ष १९
धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ
भौम	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९	०	०	०	

राहुकी महादशाके वर्ष १२
उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ
भौम	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	

शुक्रकी महादशाके वर्ष २२
कृत्तिका रोहिणी मृगशिर

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
भौम	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	०	०	०	०	

विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा ।

जन्मनोनजनुर्भमङ्कहृत् क्रमशोर्केन्दुकुजागुसूरयः ॥
शनिचन्द्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तुदशाधिपास्तथा ॥

टीका—जन्मनक्षत्रमें २ घटाकर ९ का भाग दे शेष १ रहे तो सूर्यकी दशा, २ शेष रहें तो चन्द्रकी दशा, ३ शेष बचें तो भौमकी, ४ शेष बचें तो राहुकी, ५ शेष रहें तो गुरुकी, ६ बचें तो शनिकी, ७ शेष बचें तो बुधकी, ८ शेष बचें तो केतुकी, ९ का पूरा भाग लगजाय तो शुक्रकी दशा जानिये ॥

दशाओंके वर्ष भोग्याभोग्य निकालनेकी रीति ।

ऋतुदिग्गिरयो धृतिर्नृपातिधृतिर्मेघहयो नखाः समाः ॥ क्रमतो हिमता अथादिमाजनिभस्था घटिकाः समाहताः ॥ भभोगेन भक्ताः फलंभुक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद्भोग्यसंज्ञा ॥

टीका—ऋतु कहिये ६, दिक् कहिये १० गिरि कहिये ७, धृति कहिये १८, नृप १६, अतिधृति १९, मेघ १७, हय ७, नख २० यह वर्षसंख्या सूर्यसे शुक्रपर्यन्त लिखीहै ॥ जन्म समय जिस ग्रहके जितने वर्ष होंय तिन वर्षोंसे जन्मके गत नक्षत्रको गुणा करे फिर भभोगसे भाग ले जो लब्धि मिले सो वर्ष फिर १२ के भागसे दिवस और शेष घटी पल फिर इनमें भुक्त मासादि घटावे तो शेष भोग्य वर्षादिक निकल आते हैं ॥

विंशोत्तरीक्रम कोष्ठक ।

कृत्तिगादिक्रमेणैवज्ञेयाविंशोत्तरीदशा ॥
अन्तर्दशायुतावर्षमासवासरवर्तिता ॥

टीका—कृत्तिकासे लेकर भरणीपर्यंत २७ नक्षत्र और दशा व अंतर्दशा और उनके पतियोंके नाम और तिनके वर्षादि संख्याका कोष्ठक ॥

अन्यमते ।

स्वदशारामगुणितातद्दशागुणितापुनः ॥
खगुणेनहरेल्लब्धंवर्षमासादिनंभवेत् ॥

टीका—अपनी प्राप्तदशाको तीनसे गुणा देना जिसकी अंतर्दशा लानी होय उसको वर्षसे गुणादेना अनंतर ३० से भाग लेनेसे अंतर्दशा वर्षमासादिन प्राप्त होता

सूर्यके मन्दवर्ष ६
कृत्तिका उत्तराफा० उत्तराषा०
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
रवि	०	३	१८	
चंद्र	०	६	०	
भौम	०	४	६	
राहु	०	१०	२४	
गुरु	०	९	१८	
शनि	०	११	१२	
बुध	०	१०	६	
केतु	०	४	६	
शुक्र	१	०	०	

चन्द्रके मन्दवर्ष १०
रोहिणी हस्त श्रवण
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
चन्द्र	०	१०	०	
भौम	०	७	०	
राहु	१	६	०	
गुरु	१	४	०	
शनि	१	७	०	
बुध	१	५	०	
केतु	०	७	०	
शुक्र	१	८	०	
रवि	०	६	०	

भौमके मन्दवर्ष ७
मृगशिर चित्रा धनिष्ठा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
भौम	०	४	२७	
राहु	१	०	१८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२७	
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
रवि	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	

राहुके मन्दवर्ष १८
आर्द्रा स्वाती शततारका
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
राहु	२	८	१२	
गुरु	२	४	२४	
शनि	२	१०	६	
बुध	२	६	१८	
केतु	१	०	१८	
शुक्र	३	०	०	
रवि	०	१०	२४	
चन्द्र	१	६	०	
भौम	१	०	१८	

गुरुके मन्दवर्ष १६
पुनर्वसु विशाखा पूर्वाभाद्रपदा.
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
गुरु	२	१	१८	
शनि	२	६	१२	
बुध	२	३	६	
केतु	०	११	६	
शुक्र	२	८	०	
रवि	०	९	१८	
चन्द्र	१	४	०	
भौम	०	११	६	
राहु	२	४	२४	

शनिके मन्दवर्ष १९
उत्तराभाद्रपदा पुष्य अनुराधा
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
शनि	३	०	३	०
बुध	२	८	९	०
केतु	१	१	९	०
शुक्र	३	२	०	०
रवि	०	११	१२	०
चन्द्र	१	७	०	०
भौम	१	१	९	०
राहु	२	१०	६	०
गुरु	२	६	१२	०

बुधकी मन्दवर्ष १७
आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
बुध	२	४	२७	
केतु	०	११	२७	
शुक्र	२	१०	०	
सूर्य	०	१०	६	
चन्द्र	१	५	०	
भौम	०	११	२७	
राहु	२	६	१८	
गुरु	२	३	६	
शनि	२	८	९	

केतुके मन्दवर्ष ७
मघा मूल अश्विनी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
सूर्य	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	
भौम	०	४	२७	
राहु	१	०	१८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२७	

शुक्रकी महादशा वर्ष २०
पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा भरणी
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
शुक्र	३	४	०	
सूर्य	१	०	०	
चन्द्र	१	८	०	
भौम	१	२	०	
राहु	३	०	०	
गुरु	२	८	०	
शनि	३	२	०	
बुध	२	१०	०	
केतु	१	२	०	

महादशा और अंतर्दशाओंके फल।

रविकी दशा

देशान्तरंचनिजबन्धुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभयचोरभवाचपीडा ॥ पु
स्थितस्यनिखिलस्यधनस्यनाशोभानोर्दशाजननकालदशाभवंति ॥

टीका—देशांतर वास भ्राताका वियोग दुःख मनको उद्वेग रोग भय
पीडा और संचित धनका नाश करे यह रविदशाका फल है ॥

चन्द्रान्तर्दशा।

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबलवृद्धिपरम्पराच ॥
इष्टान्नदानशयनासनभोजनानिनूनंसदाशशिदशागमनेभवन्ति॥

टीका—सुवर्ण आदिके ऐश्वर्यका और अश्व गज पालकी इत्यादि वा
नोंका लाभ शत्रुका पराजय बलकी वृद्धि और नाना प्रकारके सुरस अन्न
शयन स्थान उत्तम आसन भोजन ये सब चंद्रमाकी दशामें प्राप्त होते हैं

भौमकी अंतर्दशा।

भूपालचोरभयवह्निकृताचपीडासर्वांगरोगभयदुःखसुदुःखिता च।
चिन्ताज्वरश्चबहुकष्टदरिद्रयुक्तः स्यात्सर्वदाकुजदशाजननेभवन्ति

टीका—राजा और चोरोंसे भय और अग्निसे पीडा सर्व अंगरोग
दुःखी और नानाप्रकारकी चिंता ज्वर अत्यंत कष्ट ये सब भौमकी द
मनुष्य भोगते हैं ॥

राहुकी अंतर्दशा।

दीनो नरो भवतिबुद्धिविहीन चिन्तासर्वाङ्गरोगभयदुःखसुदुःखिता
पापानिबन्धबहुकष्टदरिद्रयुक्तं राहोर्दशाजननकाल दशाभवन्ति ॥

टीका—मनुष्य बुद्धिहीन और दीन होय चितायुक्त और सर्व शरी
अत्यंत रोग भय रहे और दुःख बंधन कष्ट बहुत दरिद्रता यह रा
अंतर्दशाका फल जानिये ॥

गुरुकी अंतर्दशा ।

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिर्धर्माधिकार-
परिपालनसिद्धबुद्धिः ॥ सद्विग्रहोपिधनधान्य-
समृद्धिता च स्याद्देवतागुरुदशागमने भवंति ॥

टीका–राज्याधिकार और चित्तकी वृत्ति धर्ममें निष्ठा शरीरकी आरोग्यता निश्चय करके धन धान्यकी वृद्धि यह गुरुकी दशाका फल जानिये ॥

शनिकी अंतर्दशा ।

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचबंधुवचनेषुचयुद्धबुद्धिः ॥
सिद्धंचकार्यमपिचनसदाविनष्टंस्यात्सर्वदाशनिदशागमनेभवन्ति॥

टीका–मिथ्यापवाद दूसरेका हनन बंधन द्रव्यका नाश मित्र तथ बांधवोंसे कलहकी बुद्धि और सिद्ध हुआ कार्यभी नष्ट हो जाय यह शनिकी अंतर्दशाका फल जानिये ॥

बुधकी अंतर्दशा ।

दिव्यांगनामदनसंगमकेलिसौख्यं नानाविलास-
मभिरामभनोभिरामम् ॥ हेममदिरत्नविभवागमके-
शध्यानं स्यात्सर्वदाबुधदशागमनेभवन्ति ॥

टीका–सुंदर स्त्री सुख और सर्व प्रकारके भोग विलास सुवर्ण और रत्न आदिकी प्राप्ति धनसंग्रह ईश्वरस्मरण इत्यादि बुधकी अंतर्दशामें फल जानिये॥

केतुकी अंतर्दशा ।

भार्यावियोगजनितंचशरीरदुःखं द्रव्यस्यहानिर-
तिकष्टपरम्पराच ॥ रोगाश्चबंधुकलहश्चविदेश-
ताचकेतोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥

टीका–स्त्रीवियोगसे शरीरको दुःख द्रव्यकी हानि कष्ट रोग और बंधुकलह देशांतर गमन यह केतुकी दशाका अशुभ फल है ॥

शुक्रदशाका फल।

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्रधन-
धान्यसमाकुलं च ॥ आयुः शरीरसुतपौत्रसुखं
नराणां द्रव्यं च भार्गवदशागमने भवन्ति ॥

टीका-बाग आदिक स्थानकी प्राप्ति और शरीर पुष्ट श्वेत छत्रकी प्राप्ति धन धान्यकी वृद्धि आयुकी और पुत्र पौत्रकी वृद्धि द्रव्यकी प्राप्ति यह शुक्रदशाका फल जानिये ऐसेही सर्व ग्रहोंकी महादशाओंके फल जानिये ॥

योगिनीदशाके स्वामी।

अथा सामधीशाः क्रमान्मंगलायाः शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः ॥
बुधः सूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाः सुतः संकटायास्तथांतेचकेतुः ॥

टीका-मंगलादिक दशाके स्वामी चंद्र सूर्य गुरु मंगल बुध शनि शुक्र राहु केतु संकटा दशाके स्वामी ये मंगलादिक दशाके स्वामी क्रमसे जानना ॥

योगिनीदशाक्रम।

स्वर्क्षपिनाकिनयनैः संयोज्यं वसुभिर्भजेत् ॥
योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपातेनसंकटा ॥

टीका-जन्म नक्षत्रमें तीन अंक मिलावे और आठका भाग दे शेष अंक रहें सो मंगलादिक दशा क्रमसे जानिये इनका क्रम कोष्ठकमें लिखा है ॥

योगिनीदशाके नाम।

मंगला पिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिकापि च ॥
उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशाः स्मृताः ॥

टीका-मंगला, पिंगला, धन्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा ये आठों योगिनी दशाओंको क्रमसे जानिये ॥

वर्षसंख्या।

एकद्वित्रीणिवेदाश्च पंचषट्सप्तमानिच ॥
अष्टवर्षाणिहि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ॥

टीका-मंगलादि दशाओंके नाम पृथक् २ और वर्षसंख्याके दिवस करि तिनमें अन्तर्दशा लानेका क्रम प्रथम दशा वर्ष एक तिसके दिवस ३६० दिन तिनमें ३६ का भाग दे लब्धिको अन्तर्दशा स्पष्ट जानै और इसी रीतिके अनुसार दशा और अन्तर्दशा निकाल लीजिये ॥

अन्तर्दशा ।

अथान्तर्दशायाःप्रकारंप्रवच्मिदशावार्षिकंस्वस्ववर्षेणगुण्यम् ॥
ततःषट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिकासासदाखेटविद्भिर्विधेयाफलार्थम् ॥

टीका-प्राप्त दशासे जिस दशाका अंतर करना होय उसके वर्षसंख्या-से प्राप्त दशाको गुण देना उसमें ३६ का भाग देनेसे अंतर्दशा होती है आगे चक्रमें स्पष्ट प्रतीत होगा ॥

मंगलाकेवर्ष १ तिसके दिन ३६०		पिंगलाके वर्ष २ दि० ७२०		धन्याके वर्ष ३ दि १०८०		भ्रामरी वर्ष४ दि १४४०		भद्रिका वर्ष ५ दि १८००		उल्का वर्ष ६ दि२१६०		सिद्धा वर्ष ७ दि २५२०		संकटा वर्ष ८ दि२८८०	
मंगला	१०	पिं	४०	ध	९०	भ्रा	१६०	भ	२५०	उ	३६०	सि	४९०	सं	६४०
पिंगला	२०	ध	६०	भ्रा	१२०	भ	२००	उ	३००	सि	४२०	सं	५६०	मं	८०
धन्या	३०	भ्रा	८०	भ	१५०	उ	२४०	सि	३५०	सं	४८०	मं	७०	पिं	१६०
भ्रामरी	४०	भ	१००	उ	१८०	सि	२८०	सं	४००	मं	६०	पिं	१४०	ध	२४०
भद्रि०	५०	उ	१२०	सि	२१०	सं	३२०	मं	५०	पिं	१२०	ध	२१०	भ्रा	३२०
उल्का	६०	सि	१४०	सं	२४०	मं	४०	पिं	१००	ध	१८०	भ्रा	२८०	भ	४००
सिद्धा	७०	सं	१६०	मं	३०	पिं	८०	ध	१५०	भ्रा	२४०	भ	३५०	उ	४८०
संकटा	८०	मं	२०	पिं	६०	ध	१२०	भ्रा	२००	भ	३००	उ	४२०	सि	५६०
जोड	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

३६ वर्षमें८योगिनीकीदशा बीत जातीहैं और वारंवार इसी क्रमानुसार जानिये।

दशाका फल ।

वैरिणान्तुविपदाविनाशिका वाहनादिवसुरत्नलाभदा ॥
कामिनांसुतगृहादिलाभदा मंगला सकलमंगलोदया ॥

टीका-शत्रुके उपद्रवका नाश और घोडा हाथी सुवर्ण रत्न आदिका लाभ और स्त्री पुत्र गृहादिकका लाभ और मंगलादि कार्यका उदय होना यह मंगला दशामें फल जानना ॥

दुःखशोककुलरोगवर्धिता व्यग्रताचकलहः स्वजनैश्च ॥
अंशभागकथिता फलदासौ पिंगलाचाविदुषांसुखदादौ ॥

टीका—दुःख शोक कुलमें रोग वृद्धि, चित्तमें व्याकुलता, बंधुनसें वैर पिंगला आदिमें सुख देती है तिसके अनंतर लिखा फल पिंगलाका जानना ॥

धनंधान्यवृद्धिंधरानाथमान्यं सदायुद्धभूमौजयंधैर्यवंतः ॥
कलत्रांगनानांसुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धन्यकाधान्यवृद्धिंकरोति ॥

टीका—धनवृद्धि धान्यवृद्धि राज्यपूजनीय सर्वकाल युद्धभूमिमें जयधैर्ययुक्तस्त्रीपुत्रका सुख और चित्रवस्त्रयुक्त धन्या दशाका यह फल जानना ॥

विदेशेभ्रमंहानियुद्धेगताश्च कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितत्वम् ॥
ऋणंव्याधिवृद्धिर्जनानां प्रकोपं दशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशम् ॥

टीका—विदेशमें भ्रमण, युद्धमें हानि, स्त्रीको पीडा सुखहीन ऋणयुक्त रोग वृद्धि जनका प्रकोप सर्व देशमें भ्रमण यह भ्रामरीदशामें फल जाननां॥

धनानंदवृद्धिर्गुणानांप्रकाशं समीचीनवस्त्रागमंराजमान्यम् ॥
अलंकारदिव्यांगनाभोगसौख्यं सदा भद्रिकाभद्रकार्यंकरोति ॥

टीका—धनकी वृद्धि, आनंदकी वृद्धि, गुणका प्रकाश, उत्तम वस्त्र प्राप्त, राज्यमान्य, भूषणकी प्राप्ति, स्त्री भोगादिकका सौख्य और कल्याण यह भद्रिका दशामें फल जानना ॥

भ्रमंव्याधिकष्टंज्वराणांप्रकोपं धनादेशदारादिकानांवियोगम् ॥
स्वगोत्रैर्विवादंसुहृद्बंधुवैरं दशाचोल्ककानर्थकारी सदैव ॥

टीका—भ्रमण रोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोग देश वियोग स्त्रीवियोग गोत्रमें कलह मित्र, बंधु इनसे वैर और नाना प्रकारके अनर्थ यह उल्का दशामें फल जानना ॥

राज्याभिमानं स्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभंगुणकीर्तिसिद्धिम् ॥
राज्यादिलाभंसुतवृद्धिसौख्यं सिद्धंच सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ॥

टीका—राज्यप्राप्ति, अभिमान, अपने गोत्रमें सुख देखना, धान्य आदिलाभ गुण सिद्धि कीर्तिसिद्धि राज आदिक लाभ, पुत्रवृद्धि, सुख और सर्वकार्यसिद्धि यह सिद्धिदशामें फल जानना ॥

जनानांविवादंज्वराणांप्रकोपं कलत्रादिकष्टंपशूनांविनाशम् ॥
गृहेस्वल्पवासंप्रवासाभिलाषं दशासंकटा संकटं राजपक्षात् ॥

टीका—जनोंमें कलह, ज्वरकी पीडा, स्त्री आदिकका कष्ट और पशुओंका नाश घरमें थोडा वास प्रवास अभिलाष राजपक्षसे संकट यह संकटा दशाका फल जानना चाहिये ॥

मंगलामंगलानंदयशोद्रविणदायिनी ॥ पिंगलातनुतेव्याधिं मनसोदुःखसंभ्रमौ ॥ धन्याधनसुहृद्बंधुरूपसीमन्तिनीकरी ॥ भ्रामरीजन्मभूमिघ्नी भ्रामयेत्सर्वतोदिशम् ॥ भद्रिकासुखसंपत्तिविलासयशदायिनी ॥ उल्काराज्यधनारोग्यहारिणी दुःखकारिणी ॥ सिद्धा साधयते कार्यं नृणांवैसुखदा भवेत् ॥ संकटा संकटव्याधिमरणक्लेशकारिणी ॥

टीका—मंगला दशाका फल शुभ कार्य आनंद यश और द्रव्यप्राप्ति और पिंगलाका शरीरको व्याधि और मनको दुःख तथा भ्रम, धन्याका फल धन मित्र बंधु मिलाप आरोग्यता और सुंदरता, भ्रामरीका फल स्थाननाश दिशा भ्रमण, भद्रिकाका सुख प्राप्ति विलास यश इत्यादि उल्काका राजभय धननाश रोगग्रस्तता और पीडा, सिद्धिका कार्यसिद्धि और सुखप्राप्ति, संकटाका फल व्याधि मरण क्लेश है ॥

रविदिनखसंख्या चन्द्रमाव्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वींचंद्रजःषड्शराश्च ॥ शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः सप्त शुक्रसंख्या ॥ जन्मनां विंशतिःसूर्ये तृतीये दशचन्द्रमा ॥ चतुर्थे भौमश्चाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थकम् ॥ सप्तमं दशसौरिःस्यान्नवमेचाष्टमेगुरोः ॥ दशमेराहुविंशत्या तदूर्ध्वंतु भृगोर्दश ॥ फल ॥ पंथाभोगोजुतापश्च सौख्यंपीडाधनं क्रमात् ॥ नाशःशोकश्चसौख्यंच जन्मसूर्य दशाफलम् ॥

टीका—वर्षदशाका आरंभ उसका क्रम जिस मासमें जिसके जन्मराशिके सूर्य होयँ सो द्वादशस्थान भोगतेहैं और सब दशाका क्रम इसी रीतिपर है ॥

२० बीस दिवस सूर्यकी दशा जन्मस्थान जानिये तिसका फल मार्ग चलना ॥
५० दिवस चंद्रमाकी दशा तीसरे स्थानके १० दिवस रवि भोगते हैं तिसका फल नाना प्रकारके उत्तम भोग ॥

२८ दिवस मंगलकी दशा चौथे स्थान आठ दिवस रवि भोगते हैं तिसका फल रोग और तृप्तता होय ॥
५६ दिवस बुधकी दशा छठे स्थान ४ दिवस रवि भोगते हैं तिसका फल सुखकारक होय ॥
३६ दिवस शनिकी दशा सप्तम स्थान ४ दिवस रवि भोगते हैं तिसका फल पीडाकारक जानिये ॥
५८ दिवस गुरुकी दशा नवमस्थान ८ दिवस रवि भोगते हैं तिसका फल धनप्राप्ति ॥
४२ दिवस राहुकी दशा दशमस्थान २७ दिन रवि भोगते हैं तिसका फल नाना प्रकारका सोच ॥
७० दिवस शुक्रकी दशा द्वादश स्थानमें रवि संपूर्ण भोगते हैं तिसका फल सर्व सुखकारक जानिये ॥

ग्रहोंकीनित्यानित्यदशाओंका प्रकार ।

तिथिवारंचनक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ॥ नवभिश्चहरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमंदज्ञकेसिताः ॥ क्रमेणैकादशाज्ञेयाः फलंपूर्वोक्तमेवाहि ॥

टीका—गततिथि और वार नक्षत्र और अपने नामके अक्षर सबको इकट्ठे करके ९ का भाग दे शेष १ रहे तो रविकी दशा, २ बचें तो चंद्रमाकी, ३ शेष बचें तो भौमकी दशा, ४ शेष रहें तौ राहुकी, ५ बचें तो गुरुकी. ६ शेष रहें तौ शनिकी, ७ शेष बचें तो बुधकी, ८ शेष रहें तौ केतुकी और पूरा भाग लगजाय तौ शुक्रकी दशा जानिये, इसी प्रकार नित्यदशा क्रमसे जानिये और फल वर्षदशाके तुल्य जानिये ॥

दूसरा मत।

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमान्वितम् ॥ नवभिस्तुहरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते ॥ रविणाशोकसंतापौ शशांकेक्षेमलाभकौ ॥ भूमिपुत्रेतु मृत्युःस्याद्बुधेप्रज्ञाविवर्द्धनम् ॥ गुरौवित्तं भृगौसौख्यं शनौ पीडा नसंशयः ॥ राहुणाघातपातौच केतौ मृत्युर्दशाफलम् ॥

टीका–जन्मनक्षत्रको चतुर्गुण करै उसमें गत तिथि और वार मिलाके नव ९ का भाग दे १ शेष रहे तौ एक दिनकी रविकी दशा जानिये, फल शोक संतापकारक, २ शेष रहें तौ चंद्रमाकी दशा फल कल्याण व लाभकारक और ३ शेष रहें तो मंगलकी दशा फल मृत्युकारक, ४ शेष रहें तौ बुधकी दशा फल बुद्धिवृद्धि, ५ शेष रहें तौ गुरुकी दशा फल वित्तप्राप्ति ६ बचें तौ शुक्रकी दशा फल सुखकारक, ७ शेष रहें तौ शनिकी दशा फल पीडाकारक, ८ शेष रहें तौ राहुकी दशा फल घातक और जो भाग पूरा लगजाय तौ केतुकी दशा फल मृत्यु इस प्रकारसे फल जानिये ॥

गोचरप्रकरण।

ग्रह कितने मास एक २ राशिको भोगता है ॥

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्धमासंतुमंगलः ॥ त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्वेदिनेशशी ॥ राहुरष्टादशान्मासान् त्रिंशन्मासान्शनैश्चरः ॥ राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगः प्रकीर्त्तितः ॥ फल ॥ सूर्यःपंचदिनं शशीत्रिघटिका भौमोष्टवैवासरं सप्ताहंभृगुणा बुधस्त्रयदिनं मासद्वयंवैगुरुः ॥ षण्मासं रविजस्तथैवसततं स्वर्भानुमासद्वये केतोश्चैवतथाबलं परिमितं ज्ञेयंग्रहाणां फलम् ॥ राशिप्रवेशेसूर्यारौ मध्येशुक्रबृहस्पती ॥ राहुश्चन्द्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभः ॥

टीका–उनके दिनोंकी संख्याका क्रम अनुक्रमसे लिखते हैं ॥

सूर्य-एक मास एक राशि भोगते हैं उसमें प्रथम पांच दिन फल देते हैं ॥
चंद्रमा-सवा दो दिन एक राशि भोगते हैं और अंतकी ३ घटिका फल देतेहैं॥
मंलग-डेढ मास एक राशि भोगते हैं और प्रथम ८दिवस फल देते हैं ॥
बुध-एक मास एक राशिको भोगते हैं और सर्व दिवस फल देते हैं ॥
गुरु-त्रयोदश १३ मास एक राशि भोगते हैं जिसका फल मध्यम भागमें दो मास जानिये ॥

शुक्र-एक मास एक राशि भोगते हैं और मध्यम भागमें सात दिवस फल देते हैं ॥

शनि-तीस३० मास एक राशि भोगते हैं और अंतके६महीने फल देतेहैं
राहु और केतु-अठारह मास एक राशि भोगते हैं और अंतके दो मास फल देते हैं ॥

द्वादश भवनके स्थानोंके शुभाशुभ फल ।

द्वादश स्थानोंके नाम ।

तत्रादौतनुधनसहजसुहृत्सुतारिपवश्च ॥
जायामृत्यु धर्मव्ययाख्यानि द्वादशभवनानि ॥

स्थानानुसार फल ।

सूर्यःस्थानविनाशं भयंश्रियंमानहानिमथदैन्यम् ॥ विजय मार्ग पीडांसुकृतहांति सिद्धिमायुरथहानिम् ॥ चन्द्रोऽन्नंचधनप्राप्तिं रोगं कार्यक्षातीश्रियम्॥स्त्रियंमृत्युंनृपभयं सुखमायव्ययंक्रमात्। भौमोऽरिभीतिं धननाशमर्थं भयंतथार्थक्षातिमर्थलाभम् ॥ धनात्ययं शत्रुभयंचपीडां शोकंधनंहानिमनुक्रमेण ॥ बुधस्तु बंधं धनमन्यभीतिं धनंरुजं स्थानमथोचपीडाम् ॥ अर्थंरुजं सौख्यमथात्मसौख्यमर्थक्षतिं जन्मगृहात्करोति ॥ गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशं सुखंशुचम् ॥ मानंरोगं सुखंदैन्यं लाभंपीडांच जन्मभात्॥कविः शत्रुनाशं धनंसौख्यमर्थं सुताप्तिं रिपो साध्यसंशोकमर्थम् ॥ बृहद्वस्त्रलाभं विपात्तिंधनाप्तिं धनाप्तिंत-

नोत्यात्मनोजन्मराशेः ॥ शनिःसर्वनाशं तथा वित्तनाशं धनं श-त्रुवृद्धिं सुतादेःप्रवृद्धिम् ॥ श्रियंदोषसंधिं रिपुं द्रव्यनाशं तथा दौ-र्मनस्यं तथा बह्वनर्थम् ॥ राहुर्हानिं तथानैःस्वं धनंवैरं शुचं श्रियम् ॥ कलिंवसुंचदुरितं वैरं सौख्यं शुचं क्रमात् ॥ केतुःक्रमाद्रुजं वैरं सुखं भीतिं शुचं धनम् ॥ गतिंगदं दुष्कृतं च शोकं कीर्तिं च शत्रुताम् ॥

टीका--इसका अर्थ आगे चक्रमें स्पष्ट लेना ॥

गोचरचक्रम् ।

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्नप्रा०	शत्रुभय	बंधन	भय	शत्रुनाश	सर्वनाश	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा०	धनना०	धनप्रा०	ध.प्रा.	धनप्रा०	वित्तना०	धनलाभ	वैर
सहज	धन	सुख	धनप्रा०	भीति	क्लेश	सौख्य	धनला०	धनप्रा०	सुख
सुहृत	मानहा०	रोग	भय	धनप्रा०	ध.ना.	धनप्रा०	शत्रुवृ०	वैर	भय
सु	दैन्य	कार्यक्षय	अर्थप्रा०	रोग	सुख	पुत्रप्रा०	सुतप्रा०	शोच	शोच
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानला.	शोक	रिपुभय	धनप्रा०	लक्ष्मी	ध.प्रा.
जाया	मार्गक्ले०	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	शोक	दोष	कलह	मा.क्ले
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभय	अर्थप्रा०	रोग	धनप्रा०	रिपु	धनला०	रोग
धर्म	पुण्यना०	राजभय	पीडा	रोग	सुख	वस्त्रलाभ	धनना०	पापकर्म	दु.क.
कर्म	सिद्धि	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	विपत्ति	अस्था०	वैर	शोक
आय	लाभ	आय	धनप्रा०	सौख्य	लाभ	धनप्रा०	धनप्रा०	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानि	खर्च	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा०	धनना०	शुचि	श.ना.

वेधचक्रमाह ।

सूर्योरसांत्ये खयुगानिनंदे शिवाक्ष्ययोर्भौमशनीनभश्च ॥ रसां-कयोर्लाभशरेगुणान्त्ये चन्द्रोवराब्दो गुणनंदयोश्च ॥ लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वयेज्ञोद्विशराब्धिरामे ॥ रसांकयोर्नागवि-धौखनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ ॥ द्व्यंत्येनवांशोद्रिगुणे शिवाष्टौ शुक्रः कुनागे द्विनगेग्निरूपे ॥ वेदांबरंपंचनिधौगजेशौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ॥ क्रमाच्छुभोविद्धइति ग्रहः स्यात् पितुः सुतः स्यान्ननवेधमाहुः ॥ दुष्टोपिखेटो विपरीतवेधाच्छु-

भोद्विकोणे शुभदः सितेब्जे ॥ स्वजन्मराशेरिनवेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितःस्युः ॥ हिमाद्रिविन्ध्यन्तरएववेधो नसर्वे देशेष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥

टीका—जन्म राशिसे और ग्रहकी गतिसे गोचरका शुभाशुभ फल लिखे और नवांकसे ज्ञात करे । जैसा सूर्य जन्मस्थानसे षष्ठस्थानमें शुभ जो द्वादश स्थानमें शुभग्रह होय तो शुभ अशुभ और जो अशुभ होय ऐसा सर्व ग्रह वेध जानना । परंतु पिता पुत्र सूर्य शनि चंद्र बुध इनका परस्पर वेध नहीं होय तो जन्मस्थानसे द्वादशस्थानमें सूर्य होय और शनि षष्ठ स्थानमें होय अथवा अन्यग्रह होय तो विपरीत वेध शुभ जानना । हिमाद्रि और विंध्य इनके अंतरमें यह वेध है अन्य देशमें नहीं ऐसा जानना कश्यपऋषि कहते हैं ॥

वेधचक्रम् ।

रवेः				मं.	शा.	रा.	चंद्रस्य					बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	९	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९

			गुरोः					शुक्रस्य								
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	११	११	६	३

जन्मके चंद्रमामें पांचकर्म वर्जनीय ।

जन्मर्क्षस्थे शशाङ्केतु पञ्चकर्माणि वर्जयेत् ॥
यात्रां युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ॥

टीका—यात्रा और युद्धको जाना विवाह और क्षौरकर्म करना तथा गृहप्रवेश ये पांच कर्म जन्मके चंद्रमामें वर्जित हैं ॥

नेष्टस्थानके अनुसार चंद्रमाका उत्तबल ।

द्विपञ्चनवमेशुक्ले श्रेष्ठचन्द्रोहिउच्यते ॥ अष्टमेद्वादशे कृष्णेचतुर्थे श्रेष्ठ उच्यते ॥ शुक्लपक्षे बलीचन्द्रः कृष्णेतारा बलीयसी ॥

टीका—दूसरे पांचवें अथवा नवम स्थानमें चंद्रमा होय तो शुक्लपक्षमें

श्रेष्ठ जानिये तैसेही कृष्णपक्षमें आठवे बारहवें चौथे स्थानका श्रेष्ठ परंतु शुक्लपक्षमें चंद्रमाबल और कृष्णपक्षमें ताराबल ऐसे श्रेष्ठ जानिये ॥

ग्रहोंके नेष्टस्थान।

ये खेचरा गोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभाभवंति ॥
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥

टीका-गोचरका अथवा अष्टवर्गका किंवा दशाक्रमका जो ग्रह नेष्ट स्थानी होय उसके प्रसन्न करनेके लिये दान करावे इस कारण अब दानकी विधि कहते हैं ॥

वारोंके अनुसार दान।

भानुस्ताम्बूलदानादपहरति नृणां वैकृतं वासरोत्थं सोमः श्रीखण्डदानादवनिवरसुतो भोजनात्पुष्पदानात् ॥ सौम्यः शास्त्रस्य मन्त्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्मनत्यापरे च ॥

टीका-सूर्य तांबूलदानसे, चंद्रमा चंदनके दानसे, मंगल भोजन और पुष्पदानसे, बुध शास्त्रोक्त मंत्रके जपसे, गुरु शिवकी आराधना और भोजनसे शुक्र श्वेत वस्त्रसे, और शनि प्रातःकाल तैलस्नान और विप्रसन्मानसे अपने अपने अशुभ फलोंको दूर कर शुभ फलदायक होते हैं ॥

ग्रहोंके दान और जप।

रवि॥ माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुःकौसुम्भवासोगुडहेमताम्रम्॥ आरक्तकंचन्दनमम्बुजंचवदन्तिदानंहि विरोचनाय॥ चन्द्रमा॥ सद्वंशपात्रस्थिततन्दुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ॥ युगोपयुक्तं वृषभंचरौप्यं चन्द्राय दद्यात् घृतपूर्णकुम्भम्॥ भौम ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषोरुणश्चापिगुडः सुवर्णम् ॥ आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रंचभौमायवदन्तिदानम् ॥ बुध॥ वृषंचनीलंकलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम्॥ दासी चदन्तोद्विरदश्चनूनं वदन्तिदानंविधुनन्दनाय॥ गुरु॥ शर्कराच

रजनीतुरङ्गमः पीतधान्यमपिपीतमम्बरम् ॥ पुष्परागलवणं-काञ्चनंप्रीतयेसुरगुरोः प्रदीयते ॥ शुक्र ॥ चित्राम्बरं शुभ्रतुरंगमंचधनुश्चवज्रंरजतंसुवर्णम् ॥ सतन्दुलानुत्तमगन्धयुक्तंवदन्ति दानंभृगुनन्दनाय ॥ शनि ॥ माषाश्चतैलंविमलेन्द्रनीलंतिलाः कुलत्थामहिषी चलोहम् ॥ कृष्णाचधेनुःप्रवदन्तिनूनं तुष्टैयेच दानंरविनन्दनाय ॥ राहु ॥ गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैला-मलकम्बलंच ॥ तिलाश्चतैलंखलु लोहमिश्रस्वर्भानवेदानमि-दंवदन्ति ॥ केतु ॥ वैडूर्यरत्नंसातिलंचतैलंसुकम्बलाश्चापि मदो मृगस्य ॥ शस्त्रंचकेतोःपरितोषहेतोश्छागस्यदानंकथितंमुनी-न्द्रैः ॥ ग्रहोंका जप ॥ रवेःसप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैवतु ॥ भौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकम् ॥ एकोनविंशतिर्जीवेशु-क्रएकादशैवतु ॥ त्रयोविंशतिमन्देचराहोरष्टादशैवतु ॥ केतोः सप्तसहस्राणि जपसंख्याप्रकीर्तिता ॥

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	माणिक	वेणुपात्र युक्ततंदुल	मूंगा	कालाबैल	शर्करा	चित्रवस्त्र	उडद	गोमेद	वैडूर्य
	गेहूं	कर्पूर	गेहूं	सोना	हलद	श्वेतअ०	तेल	घोडा	रत्न
	गोवत्स	मोती	मसूर	कांस्यपा.	घोडा	गाय	नील	नीलव०	तिल
	रक्तवस्त्र	श्वेतवस्त्र	ताम्रबैल	मूंगा	पीतअन्न	वज्र	तिल	कंबल	तैल
दान	गुड	श्वेतबैल	गुड	घृत	पीतवस्त्र	रूपा	कुलथी	तिल	कंबल
	सोना	रौप्य	सोना	गारुत्मत	पुष्परा०	सोना	भैंस	तेल	कस्तू
	तांबा	रूपा	लालवस्त्र	सर्वपुष्प	नोन	तांबूल	लोहा	लोहा	शस्त्र
	रक्तचंदन	घृतकुंभ	कनेरपु.	दासी	सोना	चंदन	कृष्णगौ	का०पू०	मेंढा
	कमल	०	तांबा	हस्तिदंत	०	०	०	०	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ ।

देवब्राह्मणवन्दनाद्गुरुवचःसम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामभिभाषणा-च्छ्रुतिरवश्रेयःकथाकारणात् ॥ होमाद्ध्वरदर्शनात् शुचिमनो भावाज्जपाद्दानतोनोकुर्वन्तिकदाचिदेवपुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ॥

टीका-देव और ब्राह्मणको सादर नमस्कार करे और प्रतिदिन गुरु तथा साधुओंसे भाषण तथा उत्तम २ कथा श्रवण करे होम तथा यज्ञके दर्शन करे और शुद्ध मनके भावसे जप दान करे जो ग्रहोंके निमित्त ऐसे उपाय करे तौ पीडा निवृत्त हो जाय और शुभफल मिले ॥

जातकर्म ।

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नान्दिश्राद्धंविधानतः ॥
जातकर्मततःकुर्यादन्यैरालम्भनात्पुरा ॥

टीका-पुत्र उत्पन्न होनेपर पिता तत्कालनांदिश्राद्धविधिपूर्वक करे तिसपीछे जबतक कोई अन्यजाति बालकका स्पर्श न करे उससे प्रथम जातकर्म करे ॥

नामकरण ।

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा ।
दित्याख्येषुचनामकर्म शुभदंयोगेप्रशस्तेतिथौ ॥
अह्निद्वादशकेतथान्यदिवसे शस्ते तथैकादशे ।
गोसिंहालिघटेषुह्यर्कबुधयोर्जीवेशशांकेपिच ॥

टीका-पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरात्रय पुनर्वसु ये नक्षत्र शुभ कहिये जन्मसे ११ अथवा १२ दिवस उक्त है और दूसरे मतके अनुसार १६।२०।२२।१००। ये दिवस उक्त हैं. और वृष सिंह कुंभ वृश्चिक ये लग्न शुभ हैं और रवि बुध गुरु शुक्र शशांक अर्थात् चंद्रवार शुभ हैं रिक्ता तिथि और दुष्ट योगादिक नामकरणमें वर्जित हैं ॥

नामका अवकहडाचक्र ।

चूचेचोलाऽश्विनीप्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ ॥ आईऊएकृत्तिकास्याद्वोवावीवूतु रोहिणी ॥ वेवो काकीमृगशिरःकूघंगच्छतथार्द्रका ॥ केकोहाहीपुनर्वसुर्हूहेहोडातुपुष्यभम् ॥ डीडूडेडोतुआश्लेषामामीमूमेमघास्मृता ॥ मोटाटीटूपूर्वफल्गुटेटोपाय्युत्तरंतथा ॥ पूषणाठाहस्ततारापेपोरारीतुचित्रका ॥

रूरेरोतास्मृतास्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ नानीनूनेनु राधर्क्षज्येष्ठानोयायियूस्मृता ॥ येयोभाभीमूलतारापूर्वाषाढ भुधाफढा ॥ भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाभिजिद्भवेत् ॥ खीखूखेखोश्रवणभं गागीगूगेधानिष्ठिका ॥ गोसासीसूशतभिषक्सेसोदादीतुपूर्वभाक्॥दुथाझञयथाज्ञेयो देदो चाचीतुरेवती॥

होडाचक्रम्							
चू चे चो ला	अश्विनी ।	हू हे हो डा	पुष्य ।	रू रे रो ता	स्वाती ।	जू जे जो खा	अभिजित्
ली लू ले लो	भरणी ।	डी डू डे डो	आश्लेषा ।	ती तू ते तो	विशाखा ।	खी खू खे खो	श्रवण ।
आ ई ऊ ए	कृत्तिका ।	मा मी मू मे	मघा ।	ना नी नू ने	अनुराधा ।	गा गी गू गे	धनिष्ठा ।
ओ वा वी वु	रोहिणी ।	मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी ।	नो या यी यू	ज्येष्ठा ।	गो सा सी सू	शतभिषा।
वे वो का की	मृगशिर ।	टे टो पा पी	उत्तराफाल्गुनी ।	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपदा ।
कू घ ङ छ	आर्द्रा ।	पू ष ण ठ	हस्त ।	भु ध फ ढा	पूर्वाषाढा।	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपदा ।
के को हा ही	पुनर्वसु ।	पे पो रा री	चित्रा ।	भे भो जा जी	उत्तराषाढा ।	दे दो चा ची	रेवती ।

मञ्चकारोहण ।

शशितुरगधनिष्ठारेवतीपुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरा

स्वातिहस्ताः ॥ बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेर्भकस्य निगदित-मिहपूर्वैर्मञ्चकारोहणं तु ॥

टीका-मृगशिर आश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा तीनों उत्तरा स्वाती हस्त इन नक्षत्रोंमें और बुध शुक्र गुरु ये वार और तुला वृश्चिक कुंभ इन लग्नोंमें शिशुको पूर्वदिशाको शिर करके प्रथम मंचकारोहण करावे तौ शुभ होय ॥

पालनेका मुहूर्त।

आन्दोलशयनंपुंसो द्वादशेदिवसेशुभम् ॥
त्रयोदशेतु कन्याया न नक्षत्रविचारणा ॥

टीका-जन्म होने उपरांत पुत्रको बारहवें और कन्याको, तेरहवें दिवस पालनेमें शयन करावे और नक्षत्र आदिके विचारकी कुछ आवश्यकता नहींहै॥

बृहस्पतिके मतानुसार दुग्धपानमुहूर्त।

एकत्रिंशद्दिनेचैव पयः शंखेनपाययेत् ॥
अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ॥

टीका-जन्म होनेके पश्चात् ३१ दिन अब अन्न प्राशन नक्षत्र जो आगे कहे जायंगे उनमें शंखमें दूध भरके बालकको पिलावे ॥

ताम्बूलभक्षणम्।

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्ताम्बूलं प्रथमं शिशोः ॥ कर्पूरादिकसंमिश्रं विलासायहिताय च ॥ मूलेचत्वाष्ट्रकरतिष्यहरीन्द्रभेषु पौष्णे तथामृगशिरेदितिवासरेषु ॥ अर्केन्दुजीवभृगुबोधन-वासरेषु ताम्बूलभक्षणविधिर्मुनिभिःप्रदिष्टः ॥

टीका-जन्मके उपरांत ढाई मासमें कपूर आदि पदार्थ मिश्रित कर तांबूल खवावे और मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृगशिर पुनर्वसु धनिष्ठा और रवि सोम गुरु शुक्र बुध इन वारोंमें मुनीश्वरोंनें तांबूल भक्षण शुभ कहा है ॥

सूर्यावलोकन।

हस्तःपुष्यपुनर्वसूहरियुगं मैत्रत्रयंरोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनी मृगयुताषाढोत्तरास्वातिभे॥मासौतुर्यतृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वा चरिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुम्भराशिसहितं निष्कासनंशस्यते॥

टीका-हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी रेवती उत्तराफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढा स्वाती और चौथा व तीसरा मास शुभ शनि भौम रिक्ता तिथि वर्जनीय हैं और सिंह कन्या तुला कुंभ ये लग्न उत्तम हैं ऐसे शुभ दिन विचारके प्रथम बालकको बाहर निकालकर सूर्यावलोकन करवाना उत्तम है॥

कर्णवेध।

रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे विष्णुत्रयेकेंत्रये रेवत्यांचपुनर्वसुद्वय युगेकर्णस्यवेधःशुभः॥ मीनेस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटे वर्षेचयुग्मे तिथौसौम्येचेन्दुगुरोरवौचशयनं त्यक्त्वाचविष्णोर्बुधैः॥

टीका-रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृगशिर श्रवण धनिष्ठा शततारका हस्त चित्रा शुभ और युग्मतिथि और युग्मवर्ष ये शुभ और चंद्र गुरु रवि ये वार विष्णुशयनको छोडकर पंडितोंने कर्णवेध शुभ कहा है॥

शिशुको पृथ्वीमें बैठाना।

पञ्चमेचतथामासि भूमौतमुपवेशयेत्॥ तत्रसर्वेग्रहाः शस्ता भौमोऽप्यत्रविशेषतः॥ उत्तरात्रितयंसौम्यं पुष्यर्क्षंशक्रदैवतम्॥ प्रजापत्यंचहस्तश्च शतमाश्विनमित्रभम्॥

टीका-पांचवें मासमें रविवार आदि समस्तवार शुभ दिनमें भौमवार विशेष करके और तीनों उत्तरा मृगशिर पुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा ये नक्षत्र शुभ, ऐसे दिवसमें शिशुको भूमिपर बैठावना शुभ कहाहै॥

अन्नप्राशन।

पूर्वाद्रांभरणीभुजङ्गवरुणं त्यक्त्वाकुजार्कौतथा नन्दापर्वचसप्तमी

मपितथा रिक्तामपिद्वादशीम् ॥ षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणाविधिः स्त्रीणामथुक्पञ्चमे गोकन्याझषमन्मथे बुधबलेपक्षेचयोगेशुभे ॥

टीका–तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी आश्लेषा और भौम शनि ये अशुभ वार नंदा पर्व रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सबको त्यागकर छठे अथवा आंठवें महीनेमें लडकेको और कन्याको पांचवें मासमें कहा है और वृष मिथुन मकर कन्या इन लग्नोंका बल पाके शुक्लपक्ष तथा शुभ योगमें बालकको अन्नप्राशन करावे ॥

चौलकर्म।

रेवत्याश्वकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये पुष्येचोत्तरगेरवौ गुरुकवीन्दुज्ञेषुपक्षेसिते ॥ गोस्त्रीमन्मथचापकुम्भमकरे हित्वा च रिक्तातिथिं षष्ठीं पर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालीं च चूडाशुभा ॥ जन्मतस्तु तृतीयेऽब्दे श्रेष्ठमिच्छन्ति पण्डिताः ॥ पञ्चमे सप्तमे वापि जन्मतोमध्यमं भवेत् ॥

टीका–रेवती अश्विनी हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु मृगशिर ज्येष्ठा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुष्य ये नक्षत्र और उत्तरायण गुरु शुक्र सोम बुधवार और शुक्लपक्ष मुंडनमें शुभ हैं और वृष कन्या मिथुन धन मकर कुंभ इन लग्नोंको त्यागके शेष शुभ जानिये और रिक्ता छठ आठें अमावास्यादिक दुष्ट तिथि वर्जित हैं और जन्म होनेसे तीसरे वर्षमें पंडितोंने श्रेष्ठ और पांचवें सातवें वर्षमें मध्यम कहा है ॥

विद्यारंभका मुहूर्त।

रेवत्यांमृगपञ्चकेहरियुगे पूर्वासुहस्तत्रये मूलेश्वेअभिजिच्चभानुभृगुजे सौम्येधनुर्जीवयोः ॥ अब्देपञ्चमकेविहाय निखिलानध्यायषष्ठीयुतान् रिक्तासौम्यदिने तथैव विबुधैः प्रोक्तोमुहूर्त्तः शुभः ॥

टीका–रेवती मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा श्रवण धनिष्ठा पूर्वा हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी अभिजित् और रवि गुरु शुक्र बुध सोम ये वार और जन्मसे पांचवाँ वर्ष शुभ कहा है और अनध्याय षष्ठी रिक्ता पर्व

आदि दुष्ट योगादिक तिथि वर्जनीय हैं उत्तरायण शुक्ल पक्ष और शुभ लग्नोंमें प्रथम विद्याभ्यास करावे ॥

यज्ञोपवीतका मुहूर्त ।

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रयरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षेसिते ॥ गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रेऽर्कजीवेतिथौ पञ्चम्यांदशमीत्रयेव्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ॥

टीका–पूर्वाषाढा श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अश्विनी मृगशिर हस्त चित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठा पुष्य पूर्वाफाल्गुनी और उदगयन अर्थात् उत्तरायण शुक्ल पक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह ये लग्न और शुक्र रविवार सोम ये वार और पंचमी दशमी आदि तीन दिन अर्थात् १० । ११ । १२ में यज्ञोपवीत करना शुभ है॥

मासादिमुहूर्त ।

विप्रंवसन्ते क्षितिपंनिदाघे वैश्यंघनान्ते व्रतिनंविदध्यात् ॥ माघादिशुक्रान्तिकपञ्चमासाः साधारणावा सकलद्विजानाम् ॥

टीका–ब्राह्मणोंका वसंतमें, क्षत्रियोंका ग्रीष्ममें, वैश्योंका शिशिर ऋतुमें, यज्ञोपवीत करावे, ऐसे वर्णोंके अनुसार व्रतबंधमें ऋतु कहा है माघसे ज्येष्ठ पर्यंत ५ मास समस्त द्विजोंको साधारण कहे हैं ॥

वर्षसंख्या ।

गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पञ्चमेसप्तमेपिवा॥
द्विजत्वंप्राप्नुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशे नृपः ॥

टीका–गर्भसे अथवा जन्मसे आठवेंमें अथवा ५ । ७ वर्षमें ब्राह्मणका और ग्यारहमें क्षत्रियोंका यज्ञोपवीत करना उचित है ॥

गुरुबल ।

वर्णाधिपेबलोपेते उपनीतिक्रियाहिता ॥
सर्वेषांचगुरोस्सूर्ये चन्द्रे च बलशालिनि ॥

टीका–वर्णके अधिपति अनुसार बल देखिये और सबोंको गुरु सूर्य चंद्रमाका बल चाहिये ॥

त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम् ॥
चतुर्थ्येकाकिनीप्रोक्ता अष्टावेवगलग्रहाः ॥

टीका–त्रयोदशीसे प्रतिपदातक चार तिथि सप्तमी अष्टमी नवमी चतुर्थी ये आठ तिथि गलग्रह वर्णनीय हैं ॥

शूद्रादिकोंके संस्कारका मुहूर्त्त।

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभे पुष्येतथाचाश्विभे रेवत्यामृगरोहिणी
दितिकरे मैत्रेतथावारुणे ॥ चित्रास्वातिमथोत्तराभृगुसुते भौमे
तथाचान्द्रजे शूद्राणांतुबुधैःशुभंहिकथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ॥

टीका–मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाती तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और शुक्र भौम बुध ये वार शूद्रादिक संकर अंत्यजातिके संस्कारमें शुभ जानिये ॥

विवाहप्रकरण।

तत्रादौदैवज्ञपूजनम् ॥ दैवज्ञंपूजयेदादौ फलताम्बूलपूर्वके ॥
निवेदयेत्सुमनसास्वकन्योद्वाहनादिकम् ॥

टीका–प्रथम ज्योतिषीकी यथाशक्ति फल तांबूलपूर्वक पूजा करना तिसके पीछे कन्याका पिता कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करे ॥

विवाहसमये प्रश्नमाह।

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहेबलिनौ यदिपश्यतः ॥
रचयतोवरलाभमिमौयदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ ॥

टीका–जो प्रश्नकालमें चंद्रशुक्र यह विषम राशिमें होंय वा अंशमें होंय और दोनों बली होयके लग्नको देखते होंय तो कन्याको पति प्राप्त जानना और समराशिमें वा अंशमें चंद्र शुक्र होंय तो वरको स्त्रीप्राप्ति कहना शुभ है॥

षष्ठुर्विलग्नात्प्रबलः शशांकः शत्रुस्थितो मृत्युग्रहस्थितोवा ॥
यद्यष्टमाब्दात्परतो विवाहात्करोति मृत्युं वरकन्ययोश्च ॥

टीका-जो प्रश्नलग्नसे बलवान् चन्द्रमा षष्ठ अथवा अष्टम स्थानमें बैठा होय तौ विवाहसे अष्टम वर्षमें स्त्री पुरुष दोनोंको अरिष्ट जानना ॥

यद्युदयस्थश्चन्द्रस्तस्माद्यदिसप्तमोभवेद्भौमः ॥
समाष्टकं स जीवति विवाहकालात्परं पुरुषः ॥

टीका-जो प्रश्नलग्नमें चंद्रमा होय और चंद्रमासे सप्तम स्थानमें मंगल होय तौ विवाहसे अष्टम वर्षमें पतिको अरिष्ट जानना ॥

स्वनीचगः शत्रुदृष्टः पापः पञ्चमगोयदा ॥
मृतपुत्रां करोत्येव कुलटां वा न संशयः ॥

टीका-जो प्रश्नकालमें पापग्रह अपने नीचस्थानमें होय अथवा शत्रु ग्रह देखते होंय अथवा पापग्रह पंचमस्थानमें बैठा होय तौ संतानका नाश और स्त्री वेश्या होय ऐसा जानना ॥

भिद्यतियद्युदकुम्भः शयनासनपादुकासुभङ्गोवा ॥
प्रश्नसमयेपि यस्यास्तस्यावैधव्यमादेश्यम् ॥

टीका-जो विवाह प्रश्न कालमें अकस्मात् जलकुंभका भंग होय अथवा निद्रानाश, आसनभंग, पादुकाभंग ऐसा जिस कन्याके विवाहप्रश्नसमयमें होय तौ उसको विधवायोग जानना ॥

अज्येष्ठाकन्यकायत्र ज्येष्ठपुत्रोवरोयदि ॥
व्यत्ययोवातयोस्तत्र ज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ॥

टीका-जो कन्या ज्येष्ठ न होय और पुरुष ज्येष्ठ होय ऐसा दोनोंका भेद होय तौ ज्येष्ठ मासमें विवाह करना शुभ है ॥

वर्षप्रमाणमाह ।

षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयं ततः ॥
सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गन्धर्वश्चतथानलः ॥

टीका-प्रथम ६ वर्षतक कन्याका विवाह नहीं करना कारण यह है कि प्रथम २ वर्ष चंद्रमा भोग करता है, अनंतर दो वर्ष गंधर्व भोग करते हैं, अनंतर २ वर्ष अग्निदेव भोग करता है, तदनंतर विवाहको शुद्ध जानना ॥

अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी ॥ दशवर्षाभवेत्कन्या द्वादशेवृषलीमता॥ गौरींदानान्नागलोकं वैकुण्ठंरोहिणींददत्॥ कन्यादानाद्ब्रह्मलोकं रौरवंतुरजस्वला ॥

टीका—आठ वर्षकी कन्या होय तब उसका नाम गौरी, नव वर्षकी कन्या रोहिणी संज्ञा, दश वर्षकी होय तौ उसका नाम कन्या, जो बारह वर्षकी होय तौ उसे शूद्री नाम जानना, इसका फल गौरीदानसे नागलोकप्राप्ति, रोहिणीदानसे वैकुंठप्राप्ति, कन्यादानसे ब्रह्मलोकप्राप्ति, शूद्रीदानसे घोरनरक प्राप्ति होय॥

विवाहोजन्मतः स्त्रीणां युग्मेब्देपुत्रपौत्रदः ॥
अयुग्मेश्रीप्रदंपुंसां विपरीतेतुमृत्युदः ॥

टीका—स्त्रीका विवाह काल जन्मसे सम वर्षमें करना तौ पुत्रपौत्रप्राप्ति और पुरुषका जन्मसे विषम वर्षमें विवाह होय तौ लक्ष्मीप्राप्ति इससे विपरीत होय तौ मृत्युप्राप्ति जानना ॥

कन्याद्वादशवर्षाणि याप्रदत्तावसेद्गृहे ॥
ब्रह्महत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत्स्वयम् ॥

टीका—कन्या १२ वर्षकी होय और पिताके घरमें रहे तौ पिताको ब्रह्महत्या प्राप्त होय, अनंतर कन्या अपनी इच्छासे पति करे ऐसा आचार्य कहतेहैं॥

मंगलविचार।

लग्नेव्ययेचपाताले यामित्रेचाष्टमेकुजे ॥
पत्नीहंतिस्वभर्तारं भर्ताभार्यांविनाशयेत् ॥

टीका—स्त्रीको और पुरुषको मंगल रहता है तिसका प्रकार १।१२।४ ७।८ इतने स्थानमें मंगल होय तौ स्त्री मंगली कहना और मंगलीसे मंगलीको विवाह करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान् होयँ तोभी करना ॥

भौमपरिहार।

यामित्रेचयदासौरिर्लग्नेवाहिबुकेऽथवा ॥
नवमेद्वादशेचैव भौमदोषोनविद्यते ॥

टीका-स्त्रीको अथवा पुरुषको ७।१।४।९।१२ जो इतने स्थानोंमें शनि होय तौ मंगलका दोष नहीं जानना ॥

ज्येष्ठविचार।

द्विज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठः शुभावहः ॥
ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीत विवाहेसर्वसम्मतः ॥

टीका-पुरुष ज्येष्ठ अथवा कन्या ज्येष्ठ होय अथवा ज्येष्ठ मास होय ऐसा कोई ज्येष्ठमें करना मध्यम समझतेहैं और एक ज्येष्ठमें करना शुभ है, और पुरुष ज्येष्ठ, स्त्री ज्येष्ठ मास ज्येष्ठ, जो तीनों ज्येष्ठ हों तो विवाह नहीं करना चाहिये ॥

ज्येष्ठायाः कन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्यवैमिथः ॥
विवाहोनैवकर्त्तव्यो यदिस्यान्निधनंतयोः ॥

टीका-प्रमथ गर्भमें जो स्त्री होय उसको ज्येष्ठ कहना, जो पुरुष ज्येष्ठ होय और कन्याभी ज्येष्ठ होय तो विवाह नहीं करना यह दुःखदायक होता है ॥

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्याशुद्धिविवर्जिता ॥
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौपाणिग्रहोमतः ॥

टीका-दशवर्षके अनंतर कन्या शुद्धिसे रहित होतीहै तो ताराशुद्धि चंद्रशुद्धि लग्नशुद्धि देखके विवाह करना शुभ है ॥

कन्यालक्षणमाह।

हंसस्वरांमेघवर्णां मधुपिङ्गललोचनाम् ॥
तादृशींवरयेत्कन्यां गृहस्थः सुखमेधते ॥

टीका-स्त्रीका लक्षण स्त्रीका मीठा हंसकेसा बोलना ऐसा होय और मेघकासा वर्ण होय नेत्रका वर्ण सहतके तुल्य होय अथवा पिंगल कहिये कुछ सफेद कुछ काला होय ऐसी कन्यासे विवाह करे तौ गृहस्थ सुख पाता है ॥

वरलक्षणमाह।

जातिविद्यावयः शीलमारोग्यंबहुपक्षता ॥
अर्थित्वंवित्तसंपत्तिरष्टावेतेवरगुणाः ॥

टीका-पुरुषका लक्षण जातिमें उत्तम होय और विद्यायुक्त वयमें वृद्धित्व होय और स्वभाव अच्छा होय और निरोगी, परिवार बहुत होय स्त्रीकी इच्छा होय, धन संपत्ति होय ऐसे आठ लक्षणसे युक्त वर होय तौ कन्या देना चाहिये ॥

वरदोषमाह।

दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनाम् ॥
शूराणांनिर्धनानांच नदेयाकन्यकाबुधैः ॥

टीका-दूर रहनेवाले पुरुषको कन्या देना नहीं, मूर्खको देना नहीं मोक्ष धर्म योगाभ्यासादिक करे उसको देना नहीं, दारिद्री असमर्थको देना नहीं ऐसा पंडितजनोंने कहा है ॥

अस्तोदय।

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितः स्यात् पश्चाद्दशाहमिहपञ्च दिनानिवृद्धः ॥ प्राक्पक्षमेवगदितोऽत्र वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ॥

टीका-पूर्वमें शुक्रका उदय होय तो तीन दिन शिशुत्व और अस्त होयं तो वृद्धत्व, पंद्रह दिन वर्जित और पश्चिमको उदय होय तो पांच दिन शिशुपन और १० दिन वर्जित है और गुरुके उदय अस्तमें १५ दिन वर्जनीय हैं॥

अस्त और उदयका लक्षण।

यमशरभुजवासरवज्रिणोदिशिद्विसप्तसितास्तमनंतथा ॥
गगनबाणयमैर्दिशिपश्चिमेनवदिनास्तमनंतु भृगोर्बुधैः ॥

टीका-२५२ दिन शुक्रका अस्त पूर्वदिशामें होता है, और उसका उदय ७२ वें दिवस पश्चिममें होता है, और २५० दिवस पश्चिममें अस्त होता है तिसका उदय ५९ वें दिन पूर्वमें होता है यह पंडितोंने कहा है ॥

अस्तमें वर्जनीय कर्म।

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरंप्रतिष्ठाव्रतं विद्यामन्दिरकर्णवेध-

नमहादानं गुरोःसेवनम् ॥ तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशं शुभंदूरेणैवजिजीविषुः परिहरेदस्तेगुरौ भार्गवे ॥

टीका—बावडी कूप तडाग अर्थात् तलाव यज्ञ और यात्रा करना चौल अर्थात् मुण्डन देवप्रतिष्ठा यज्ञोपवीत विद्यारंभ नूतन गृहप्रवेश बालकका कर्णवेध महादान गुरुसेवा तीर्थस्नान विवाह उत्तम कर्म मंत्रोपदेश ये कर्म जीनेकी इच्छा रखनेवाला पुरुष गुरु शुक्रके अस्तमें दूरही वर्जित करे ॥

विवाहे वर्जनीयम् ।

नाषाढप्रभृतिचतुष्टये विवाहोनापौषेनचमधुसंज्ञकेविधेयः॥नैवास्तंगतवति भार्गवेचजीवेवृद्धत्वेनखलुतयोर्नबालभावे ॥ गीर्वाणमन्त्रिणिमृगेन्द्रमधिष्ठितेनमासेधिके त्रिदिनसंस्पृशिनामभेच॥

टीका—आषाढ आदि लेके ४ मास और पौष चैत्र मास और गुरु शुक्रका अस्त और इन दोनोंका वृद्धत्व और बालत्व और सिंहका बृहस्पति अधिक मास तथा क्षयमास ये सब विवाहमें वर्जित हैं ॥

मूलादिजन्मनक्षत्रका दोष ।

मूलजाश्वगुणंहन्ति व्यालजाकुलटाङ्गना ॥
विशाखजा देवरघ्नीज्येष्ठाजाज्येष्ठनाशिका ।

टीका—मूल नक्षत्रमें कन्याका जन्म होय तो गुणोंका नाश करे. आश्लेषामें व्यभिचारिणी, विशाखामें देवरकी मृत्युकारक और ज्येष्ठामें ज्येष्ठ बंधुको मृत्युदायक होती है ॥

जन्मनक्षत्रादि वर्ज्य ।

जन्मर्क्षेजन्मदिवसेजन्ममासे शुभंत्यजेत् ॥ ज्येष्ठेमासाद्यगर्भस्यशुभ्रवस्त्रास्त्रियायथा ॥ अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरो यदि ॥ व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ॥

टीका—जन्मसे नक्षत्र दिवस और मासमें बालकोंका शुभ कर्म वर्जित है जैसे स्त्रियोंके श्वेतवस्त्र धारण करना और जो कन्या कनिष्ठ होय तथा वर ज्येष्ठ होय अथवा इससे विपरीत होय तो ज्येष्ठ मासमें विवाह शुभ है ॥

अथ वर्षसारणीयम्।

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	३	६
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	८	२१	३७	५२	८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१३	४६	१८	४९	२१	५२	२४
ऽक्ष	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	१	३०	०	३०	०	३०	०
तिथि	११	२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२७	१	१२	२३	३	१५	२७
नक्षत्र	८	१८	१	११	२१	४	१४	२४	७	२०	३	१०	२०	४	१३	२३
वर्ष	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वार	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५
घटी	२३	२९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४६	५९	१४	३०	४५	१६	१६
पल	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८
ऽक्ष	३०	०	३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३	०	३०	०	३०	०
तिथि	८	१९	०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१३	२४
नक्षत्र	६	१६	२३	९	२९	२	२२	२२	५	१५	२५	८	१८	११	१२	२१
वर्ष	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४
चटी	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५
पल	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३७	३	३४	६	३७	९	४०	१२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	३	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३	१५	२५	६	१७	२९	१०	२१
लग्न	४	१४	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	०	१६	२६	९	९
अंश	६	९	३	१३	६	९	०	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४
वर्ष	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वार	५	६	१	२	४	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३
घटी	२४	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	५१	४७	२	२८	३३
पल	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	३७	५८	३०	१	३३	४	३६
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	२	१३	२४	५	१६	२७	८	२९	१	११	२२	४	१५	३६	७	१८
लग्न	२	१२	२२	५	१५	२५	२	१८	०	११	२१	४	४	१४	७	१७
अंश	७	११	२	५	०	११	१२	५	८	११	२	६	९	०	०	६
वर्ष	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	७	३९	१०	४२	५३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	३९	१०	३१	२	१३	२४	५	१६	२७	९	२०	१	१२	२३	४	१५
लग्न	०	१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	२५
अंश	९	[illegible]	३	[illegible]	१०	४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	५	८

वर्षप्रमाण ।

जन्मतोगर्भधानाद्वा पञ्चमाब्दात्परंशुभम् ॥
कुमारीवरणंदानं मेखलाबन्धनंतथा ॥

टीका-जन्म होनेसे अथवा गर्भ धारणसे पंचम वर्ष उपरांत कन्याका वरना अथवा दान और व्रतबंध उत्तम जानिये ॥

गुरुचन्द्रबल ।

स्त्रीणांगुरुबलंश्रेष्ठं पुरुषाणांरवेर्बलम् ॥
तयोश्चन्द्रबलंश्रेष्ठमिति गर्गेणभाषितम् ॥

टीका-स्त्रियोंको गुरुका बल और पुरुषको रविका और दोनोंको चंद्रमाका बल गर्गमुनिने श्रेष्ठ कहा है ॥

गुरुका बल ।

नष्टात्मजाधनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विता हतधवासुभगा विपुत्रा ॥ स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्यावंध्याभवेत् सुरगुरोक्रमशोभिजन्म ॥

टीका-जो कन्याके जन्मस्थानमें बृहस्पति होय तो विवाहके अनंतर बालकोंकी मृत्यु होय, द्वितीयमें धनवती, तृतीयमें विधवा, चतुर्थमें व्यभिचारिणी, पंचममें पुत्रवती, षष्ठमें पतिनाश, सप्तममें सौभाग्यवती, अष्टममें पुत्रहीन, नवममें पतिप्रिया, दशममें बालकनाश, एकादशमें पति धनाढ्य और द्वादशमें बांझ ऐसे क्रमसे फल जानिये ॥

गुरु अनुकूल करनेका विचार ।

जन्मात्रिदशमारिस्थः पूजयाशुभदोगुरुः ॥
विवाहेच चतुर्थाष्टद्वादशस्थोमृतिप्रदः ॥

टीका-जन्मस्थ तृतीय षष्ठ और दशमस्थानी गुरु नेष्ट है परंतु पूजा करनेसे शुभ फलदायक होता है और चौथा अष्टम द्वादशस्थ मृत्यु करता है सो विचार विवाहमें देखना उचित है ॥

अष्टमैत्रीज्ञानम् ।

वर्णोवश्यं तथा तारा योनिर्ग्रहगणो तथा ॥

भकूटंनाडिमैत्रीचइत्येताश्चात्रमैत्रिकाः ॥

टीका–वर्ण वश्य तारा योनि ग्रह गण भकूट नाडी और मैत्री आदि आठनको शुद्ध विवाहमें विचार लेना योग्य है ॥

वर्णादिकोंकाज्ञान ।

मीनालिकर्कटाविप्रानृपाः सिंहाजधन्विनः ॥ कन्यानक्रवृषा वैश्याः शूद्रायुग्मतुलाघटाः॥वश्योंका ज्ञान॥द्वंद्वचापघटकन्य कातुलामानवाअजवृषौचतुष्पदौ ॥ कर्कमीनमकराजलोद्भवाः केसरीवनचरालिकीटिकाः ॥

वश्यावश्यज्ञानमाह ।

हित्वामृगेन्द्रनरराशिगते च वश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्चभक्ष्याः ॥ सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिंज्ञेयं नराणांव्यवहारतोन्यत् ॥

इन तीनों श्लोकोंकी टीका चक्रसे यथाक्रमसे समझ लेना ॥

ताराबलम् ।

कन्यार्क्षाद्वरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ॥
गणयेन्नवभिः शेषेत्रिष्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

टीका–वधूनक्षत्रसे वरनक्षत्रतक जो नक्षत्र संख्यामें होय तामें नवके अंकका भाग देय जो शेष तीन आवें तो अथवा पांच सात रहें तो अशुभ और सब शुभ होते हैं । ऐसेही वरनक्षत्रसे वधू नक्षत्रतक गिनिके पूर्ववत् प्रमाण लिखनेके अनुसार जानना ॥

योनि ।

अश्वोगजश्छागसर्पौसर्पश्वानाबिडालकः ॥ मेषोबिडालकश्चै-वमूषकोमूषकश्चगौः ॥ महिषीचततोव्याघ्रोमहिषोव्याघ्रकं क्रमात् ॥ मृगोमृगस्तथाश्वाचकपिर्नकुलएवच ॥ नकुलोवा-नरस्सिंहस्तुरगोमृगराट्पशुः ॥ अघोरेणक्रमेणैव अश्विन्या-दिभयोनयः ॥ वैरयोनि ॥ गोव्याघ्रंगजसिंहमश्वमहिषौश्वैणंच बभ्रूरगंवैरंवानरमेषयोश्च सुमहत्तद्बिडालोन्दुरं ॥ लोकानां

व्यवहारतोन्यदपितज्ज्ञात्वाप्रयत्नादिदं दम्पत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ॥ राश्यधिपः ॥ मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ कन्यामिथुनयोः सौम्योगुरुस्तुधनमीनयोः ॥ शनिर्नक्रस्यकुम्भस्यकर्कस्यैवतुचन्द्रमाः ॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणके क्रमात् ॥ गण अनुराधामृगोश्विस्तु श्रवणोदितिपुष्यके ॥ स्वाती हस्तो रेवती च नवदेवगणाः स्मृताः ॥ पूर्वात्रयंरोहिणी च उत्तरात्रयमेवच ॥ आर्द्रा तुभरणीचैवनवैते मानुषागणाः ॥ आश्लेषाशतभिष्मूलविशाखाः कृत्तिकामघा ॥ चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसागणाः ॥

अंत्यनाडी ।

कृत्तिकारोहिणी स्वाती मघाश्लेषाचरेनती ॥
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वंत्यनाडिका ॥

मध्यनाडी ।

पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा धनिष्ठा भरणीमृगाः ॥
पूर्वाषाढानुराधाच पुष्योहिर्बुध्न्यमेवच ॥

आद्यनाडी ।

पूर्वाभाद्रपदामूलं ज्येष्ठाहस्तः पुनर्वसुः ॥ अश्विन्यार्द्राशतभिषाश्चोत्तरात्वेकनाडिका ॥ अश्विनीभरणी कृत्तिकापादं मेषः ॥ कृत्तियात्रयोरोहिणी मृगशिरार्द्धवृषभः ॥ मृगशिरार्द्धमार्द्रापुनर्वसुत्रयंमिथुनः ॥ पुनर्वसोः पादं पुष्य आश्लेषान्तं कर्काटकः ॥ मघापूर्वा उत्तरापादं सिंहः ॥ उत्तरात्रयं हस्त चित्रार्द्धं कन्या ॥ चित्रार्द्धस्वातीविशाखात्रयस्तूलः ॥ विशाखापाद अनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥ मूलपूर्वाषाढा उत्तराषाढापादं धनुः ॥ उत्तराषाढात्रयं श्रवणधनिष्ठार्धं मकरः ॥ धनिष्ठार्द्धं शततारका पूर्वाभाद्रपदात्रयः कुम्भः ॥ पूर्वाभाद्रपदापाद उत्तराभाद्रपदा रेवत्यन्तं मीनः ॥

टीका-सवा दो नक्षत्र एक राशि भोगते हैं इस प्रमाणसे द्वादशराशियें भोगका क्रम और अंत्यमध्यआदि नाडीका क्रम चक्रसे प्रतीत होगा ॥

राशिअनुसार घटितमान ।

राशि	वर्ण	वैश्य	स्वामी
मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	भौम
वृषभ	वैश्य	चतुष्पद	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मानव	बुध
कर्क	विप्र	जलचर	चंद्र
सिंह	क्षत्रिय	वनचर	रवि
कन्या	वैश्य	मानव	बुध
तुल	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चिक	विप्र	कीटक	भौम
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु
मकर	वैश्य	जलचर	शनि
कुंभ	शूद्र	मानव	शनि
मीन	ब्राह्मण	जलचर	गुरु

नक्षत्रअनुसार घटितमान ।

नक्षत्र	योनि	वैरयो.	गण	नाडी
अश्विनी	अश्व	भैंस	देव	आद्य
भरणी	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका	मेंढा	वानर	राक्षस	अंत्य
रोहिणी	सर्प	नौला	मनुष्य	अंत्य
मृग	सर्प	नौला	देव	मध्य
आर्द्रा	श्वान	हरिण	मनुष्य	आद्य
पुनर्वसु	मार्जार	मूसा	देव	आद्य
पुष्य	मेंढा	वानर	देव	मध्य
आश्लेषा	मार्जार	मूसा	राक्षस	अंत्य
मघा	मूसा	मार्जार	राक्षस	अंत्य
पूर्वा	मूसा	मार्जार	मनुष्य	मध्य
उत्तरा	गौ	व्याघ्र	मनुष्य	आद्य
हस्त	भैंस	अश्व	देवं	आद्य
चित्रा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	मध्य
स्वाती	भैंस	अश्व	देव	अंत्य
विशाखा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	अंत्य
अनुराधा	हरिण	श्वान	देव	मध्य
ज्येष्ठा	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य
मूल	श्वान	हरिण	राक्षस	आद्य
पूर्वाषाढा	वानर	मेंढा	मनुष्य	मध्य
उत्तराषा०	मुंगुस	सर्प	मनुष्य	अंत्य
अभिजित्	नकुल	सर्प	मनुष्य	०
श्रवण	वानर	मेंढा	देव	अंत्य
धनिष्ठा	सिंह	गज	राक्षस	मध्य
शततार०	अश्व	भैंस	राक्षस	आद्य
पूर्वाभाद्र०	सिंह	सिंह	मनुष्य	आद्य
उत्तराभा०	पशु	व्याघ्र	मनुष्य	मध्य
रेवती	गज	सिंह	देव	अंत्य

नवपंचक ।

मीनालिभ्यांयुतेकीटे कुम्भे मिथुनसंयुते ॥
मकरेकन्यकायुक्ते नकुर्य्यान्नवपञ्चके ॥

टीका—मीनसे नवके अंतर पर वृश्चिक राशि है, और वृश्चिकसे मीन पांचवीं इसी प्रकार कर्क मीनका और वृश्चिकका कुंभ मिथुन मकर कन्या इन दो २ राशियोंके नवपंचक होते हैं वे वर्जित हैं ॥

मृत्युषडष्टक ।

मेषकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा ॥ युग्माल्योस्तुधुयैर्ज्ञेयो मृत्युर्वैनक्रसिंहयोः ॥ कुम्भकर्कटयोश्चैव वृषकोदण्डयोस्तथा ॥

टीका—मेष और कन्या ये परस्पर छठे और आठवें होयँ इसी रीतिसे तुला और मीन मिथुन वृश्चिक, मकर, सिंह, कुंभ, कर्क, वृषभ धन इन दो दो राशियोंका मृत्युषडष्टक कहाता है सो वर्जित है ॥

प्रीतिषडष्टक ।

सिंहोमीनयुतश्चैव तुलावृषयुतातथा ॥ धनुः कर्कयुतंचैव कुम्भकन्यकयोस्तथा ॥ मक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योः प्रीतिरुत्तमा ॥

टीका—सिंह, मीन, तुला, वृष, कुंभ कन्या, मकर मिथुन, मेष वृश्चिक, धनु कर्क इन दो दो राशियोंका प्रीतिषडष्टक होता है सो शुभ है ॥

द्विर्द्वादश ।

मेषझषौवृषमिथुनौ कर्कहरीतुलकन्यके ॥
अलिधनुषीमकरकुम्भावेतौ द्विर्द्वादशेराशी ॥

टीका—मेष मीन, वृष मिथुन, कर्क सिंह, तुला कन्या, वृश्चिक धनु मकर कुंभ ये दो २ राशि द्विर्द्वादश हैं सो वर्जनीय हैं ॥

चतुर्थदशमतृतीयएकादशउभयसप्तम ।

चतुर्थदशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः ॥
उभयः सप्तमः साम्यमेकर्क्षशुभमुच्यते ॥

टीका-वधू और वरकी परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश होंय तो शुभ और दोनों सप्तम सम होयँ अथवा एक नक्षत्र होय तो शुभ जानिये ॥

वश्यावश्ययोजना ।

सिंहंविनानृणांसर्वेवश्या भक्ष्याश्चतोयजाः ॥
सिंहस्यवश्यास्त्यक्त्वालिं सर्वेणव्यवहारिकः ॥

टीका-सिंहके विना समस्त चतुष्पद मनुष्योंके वशमें हैं और जलजंतु भक्ष्य हैं और वृश्चिकको छोडके सिंहके सब वश होते हैं शेष राशियोंमें भक्ष्याभक्ष्यको वर्जित करि वश्यावश्य व्यवहारसे जानिये ॥

ग्रहोंका शत्रुत्वसमत्वमित्रत्व ।

शत्रूमन्दसितौ समश्चशशिजो मित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्चसुहृदौशेषाःसमाः शीतगोः॥ जीवेन्दूष्णकराः कुजस्यसुहृदोज्ञोरिः सितार्कीसमौमित्रेसूर्यसितौ बुधस्यहिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ गुरोःसौम्यसितावरी रविसुतोमध्योपरेत्वन्यथासौर्य्यार्कीसुहृदौ समौकुजगुरूशुक्रस्यशेषावरी ॥ शुक्रज्ञौसुहृदौसमः सुरगुरुः सौरस्यत्वन्येरवर्यें प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेमीमयाकीर्तिताः ॥

नाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	रवि चंद्र भौम
सम	बुध	शुक्रगुरु भौम श.	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि	गुरु मंगल	गुरु
मित्र	चंद्र गुरु मंगल	रवि बुध	चंद्र गुरु सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शुक्र	बुध शुक्र

मार्तंडमतसे गुणोंका मिलाना।

वर्णके गुण।

दोनोंका एक वर्ण अथवा वरका उच्च होय तौ शुभ।

कन्याका वर्ण	वरोंका वर्ण			
	ब्रा.	क्ष०	वै०	शूद्र
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्यका गुण।

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वयोःसाम्येगुणद्वयम् ॥ वश्यवैरेगुणश्चैको वशभक्ष्येगुणार्द्धकम् ॥ १ ॥

टी०—शत्रु और भक्ष्यमें गुण शून्य० एक जातिमें गुण २ वश्य और वैरमें गुण १ वश्य और भक्ष्यमें गुण अर्द्ध ॥ १ ॥

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

ताराके गुण।

एकतोलभ्यते ताराशुभा चैवाशुभान्यतः ॥
तदासार्द्धोगुणश्चैकस्ताराशुद्धोमिथस्त्रयः ॥
उभयोर्नशुभातारातदा शून्यं समादिशेत् ॥

टीका—एककी शुभ और एककी अशुभ होय तौ गुण डेढ १॥ और दोनोंकी एक तारा अथवा शुभतारा होय तौ गुण ३ और जो दोनोंकी अशुभ होय तौ गुण शून्य जानिये ॥

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिके गुण ।

महावैरेच वैरेच स्वस्वभावेयथाक्रमात् ॥
मैत्र्ये चैवातिमैत्र्ये च खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥

टीका–महावैरका गुण शून्य० दोनोंकी शत्रुताका गुण १ स्वभावके गुण २ दोनोंकी मित्रताके गुण ३ अति मित्रताके गुण ४ जानिये ॥

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा	मा.	मू.	गौ.	भ.	व्या	ह.	वा.	न.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
भैंस	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहोंके गुण ।

दोनोंका स्वामी १ और मैत्रीके गुण ५ सम शत्रुत्व गुण ०॥० सम शत्रुत्व मित्रत्व गुण ४ शत्रुत्व मित्रत्व गुण १ समत्व गुण २ शत्रुत्वगुण॥ ० ॥ इस प्रकार जानिये ॥

गणोंके गुण ।

दोनोंका गण १ होय तिसके गुण६ वर देवगण और वधु मनुष्यगण तिसके गुण ६ इससे विपरीत होय तो५ वर राक्षसगण और वधू देवगण तिसके गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ॥

कन्याके गुण । / वरके गुण ।

	रं	चं	मं	बु	गु	शु	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
बृ	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	५	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

कन्याके गुण । / वरके गुण ।

	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

नाडीके गुण ८

भिन्ननाडीगु. ८ एकनाडीकेगुण०

कन्याके गुण । / वरके गुण

	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

सत्कूटके गुण ।

टीका—राशि एक भिन्नचरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय एका-दश इनके भिन्न राशी नक्षत्र एक इनके गुण ५ प्रीति षडष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नव पंचम इनमें वर दूरत्व योनि शत्रुता होनेपरभी भकूटके गुण ६ होते हैं

असत्कूटके लक्षण ।

टीका—वर योनि मैत्र व स्त्रीदूरत्व होय तो षडष्टक द्विर्द्वादश, नवपंचम दुष्ट कूटोंके गुण ४ जानिये ॥

योनि मैत्र व स्त्री दूरत्व इनमेंसे एक होय तौ दुष्टकूटका एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एकचरण ॥

भकूटगुणाः ।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष.	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

टीका–इस प्रकार गुणोंका मिलाना १८गुण अधिक शुभ, शून्य अशुभ॥

वर्णका फल ।

यास्याद्वर्णाधिकाकन्या भर्तातस्या न जीवति ॥
यदिजीवतिभर्त्ता तु ज्येष्ठपुत्रोविनश्यति ॥

टीका–कन्याका वर्ण वरसे श्रेष्ठ होय तो उसका पति अथवा ज्येष्ठ पुत्रका नाश होय ॥

वैरयोनिका फल ।

टीका–जैसे अश्व और भैंसकी वैरयोनि है इसी प्रकार वधू और वरकी वैरयोनि विचारनी चाहिये और राजा सेवक इत्यादिभी विचारिये इसमें शुभकी इच्छा वर्जित है ॥

गणोंके फल ।

स्वगणेचोत्तमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः ॥
कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम् ॥

टीका-दोनोंका एक गण होय तो उत्तम प्रीति, मनुष्य और मध्यम, देव दैत्यमें कलह, मनुष्य राक्षस गण मृत्यु देता है ॥

कूटफल ।

षडष्टकेऽपमृत्युः पञ्चमनवमेऽनपत्यताज्ञेया ॥
द्विर्द्वादशे निधनताशेषेषु मध्यमताज्ञेया ॥

टीका-दोनोंका षडष्टक मृत्युकारक और नवपंचम अनपत्यकारक द्विर्द्वादश निर्द्धनताकारक शेष मध्यम जानिये ॥

नाडीफल ।

अग्रनाडीव्यधेद्भर्तांमध्यनाडी व्यधेद्द्वयम् ॥
पृष्ठनाडीव्यधेत्कन्याम्रियते नात्रसंशयः ॥

टीका-दोनोंकी अग्रनाडी होवे तो भर्त्ताको बुरा मध्यनाडी अशुभ और अंत्यनाडी कन्याको मृत्युदायक होती है ॥

मध्यनाडी ।

जठरे निर्द्धनत्वं च गर्भे मरणमेवच ॥
पृष्ठेदौर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तांपरिवर्जयेत् ॥

टीका-दोनोंकी मध्यनाडी निर्धनताका कारण और गर्भनाश अंत्यनाडी दुर्भागकारक जाननी चाहिये ॥

ज्योतिःप्रकाशे पार्श्वनाडी ।

निधनं मध्यनाड्यां तु दम्पत्योर्नैव पार्श्वयोः ॥
करग्रहेपृष्ठनाड्यो न निंद्ये इति तद्वचः ॥

टीका-दोनोंकी मध्यनाडी मृत्युप्रद तैसेही पार्श्वनाडी, परंतु पार्श्वनाडी निंदित नहीं, अंत्य मतमें क्षत्रियादिकोंको कही है ॥

असत्कूटविचार ।

स्त्री नक्षत्रसे वरनक्षत्र निकट होय तो अशुभ और वरनक्षत्र दूर होय तो शुभ जो नक्षत्र एक अथवा स्वामी एक होय तो शुभ जा

राजमार्तण्ड मतसे दुष्टकूटोंका दान।

षडष्टकेगोमिथुनंप्रदद्यात्कांस्यं सरूप्यंनवपञ्चमे च ॥
नाड्यांसुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रं द्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणं च ॥

टीका—अति आवश्यक विवाहमें वधू और वरके दुष्ट कूटादिकोंके दान षडष्टकमें दो गौ, नव पंचममें रूपा सहित कांसेका पात्र, एक नाडीमें नौ और द्विर्द्वादशमें अन्न सुवर्ण वस्त्र तथा ब्राह्मणोंका तर्पण इत्यादि करानेसे दुष्ट कूटादिक दोष दूर होते हैं ॥

फक्किका—यस्यवर्णस्ययोनिज्ञानं नोक्तंतस्यजातकावलोकनप्रकारो वास्तुप्रकरणे उक्तः ॥

टीका—जिस वर्णकी योनिका जानना उक्त नहीं है तिसके जातक देखनेका प्रकार वास्तुप्रकरणमें कहा है ॥

विवाहके उक्तनक्षत्र।

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवेन्दवैः ॥
ऐतैर्निर्दोषभैः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः ॥

टीका—मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा मृगशिर ये नक्षत्र स्त्रियोंके विवाहमें निर्दोष और शुभ हैं ॥

एकविंशतिमहादोष।

पञ्चाङ्गशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः प्रकीर्त्तितः ॥ उदयास्तशुद्धिरहितोद्वितीयः सूर्यसंक्रमः ॥ तृतीयः पापषड्गोभृगुःषष्ठःकुजोष्टमः ॥ गण्डान्तंकर्तरीरिःफषडष्टेन्दुश्चसंग्रहः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नंराशौविषघटीतथा ॥ दुर्मुहूर्तोवारदोषः खार्जूरीकंसमांघ्रिगम् ॥ ग्रहणोत्पातभंक्रूराविद्धर्क्षंक्रूरसंयुतम् ॥ कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ॥

टीका—प्रथम पंचांग शुद्धिरहित दोष १ उदयास्तशुद्धिरहित २ संक्रांति ३ पापग्रहका वर्ग ४ लग्नसे छठा शुक्र ५ लग्नसे अष्टम मंगल ६ लग्नसे

		रा	मे	मे	मे	वृ	वृ	वृ	मि	मि	मि	क	क	क	सि	सि	सि
		भा	अ	१	।	।।।	१	।।	।।	१	।।।	।	१	१	१	१	।।
रा.	भा.	नक्ष	अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पुन	पुष्य	आ	म	पू	उ
मे.	१	अ	३६	३३	३२	२४	२१	३२	२७	२८	१९	२३॥	३१॥	२८	२७॥	२१॥	३२
मे.	१	भ	३४	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	३६	२७	३१॥	३३॥	२५॥	३२॥	२४॥	३२॥
मे.	।	कृ	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२६॥
वृ.	।।।	कृ	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२३	२४	२०	१८	२१॥	३१॥
वृ.	१	रो	२३॥	२४॥	१३	१४	३६	३४॥	३५॥	३२	२९	२५॥	२८	१२	१०	२४	२७॥
वृ.	।।	मृ	२४	११	११॥	३२॥	३६	३६	३५	३३	२९	२६	२०	२२	१८	२५	२५
मि.	।।	मृ	२८	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३५	३४	३१	१०॥	१३॥	१४॥	२२॥	१८	२९॥
मि.	१	आ	२०	१८	२३	३३॥	३२॥	३४	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥	१९	२१
मि.	।।।	पु	३०	२७	२३	२७॥	३०॥	३१॥	३०॥	३४	३४	३४	२३	१६॥	२१॥	१५॥	२०॥
क.	।	पुन	२३॥	२९॥	२५॥	२२	२५	२६	३०॥	१६	३३	३४	३४	३२॥	२२	२६	२२
क.	१	आ	३०॥	२४	२७	२४	२०	१९	१३॥	२४	२३	३४	[illegible]	३४	२५	३१	२०
क.	१	पु	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	३४॥	१५॥	१५॥	३२	३४	३४	२०॥	२१	१४
सिं.	१	म	२२	२८॥	३१	१७	१०	१८	२७॥	२२॥	२०॥	२२	[illegible]	२२॥	३६	३६	३२
सिं.	१	पू	२६	२४॥	२२॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२१	[illegible]	१९	३६	३६	३४
सिं.	।	उ	१७	३२	३२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२०॥	२३॥	[illegible]	३१	३२	३४	३६
क	।।।	उ	१३	२२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	[illegible]	२२॥	२३	३१	३४
क.	१	ह	१३	२०	२७॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२३॥	२०॥	[illegible]	२३॥	२४॥	२८॥	२०
क.	।।	चि	१४	७	२०	३१	[illegible]	२०	१९	२६	१४॥	२१॥	[illegible]	२७॥	२९॥	२५॥	१४॥
तु.	।।	चि.	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२७	३५॥	२२	१३	३१	२५	११॥	१७॥
तु.	१	स्वा	३०॥	१९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२७	३४	३३	३४॥	२२॥	२८	१५	१२॥	२४॥	२५॥
तु.	।।।	वि	२२॥	२४॥	२१॥	१६॥	११॥	९॥	३५॥	३०॥	२१	२३॥	२२॥	२९॥	१७॥	१९॥	१७॥
वृ.	।	वि	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२३	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३	११॥
वृ.	१	अ	२४॥	१९॥	११॥	२४॥	२८॥	२१॥	१८	१६	२०॥	१७	११	२१	२४	२०	२८
वृ.	१	ज्ये	१२	१९॥	२४॥	२१॥	२३॥	१३॥	१३	३	५	११॥	२१	२६	२३	२०॥	१५॥
ध.	१	मू	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१३	१०॥	१०॥	२६॥	३२॥	२६॥	१७
ध.	१	पू	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१६॥	२८॥	३२॥	३४॥	३२
ध.	।	उ	३२	३३	३४	१६	११॥	१८	२४	२७	२७	२४॥	२४॥	२४॥	१०॥	२३	३२॥
म.	।।।	उ	२८	२८॥	१५॥	२६	१३	२९॥	२१॥	१३॥	२३॥	२८	२८	१४	१६	२०	२०
म.	१	श्र	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१८	१९॥
म.	।।	ध	२१	१२	२६	३१	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२
कुं.	।।	ध	३१	१२	२६	३१॥	२८	२०	१२	१९॥	१३॥	१४	१६	२०	२५	११॥	१८॥
कुं.	१	श	१६	२२	२८	२२॥	२६॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१५	२१	२५॥	१९॥	११॥
कुं.	।।।	पू	१९	२६	२०	३४	३२॥	३२॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२१॥	१४	१९॥	२१॥	२६॥
मी.	।	पू	२१॥	२९॥	२३॥	२३॥	२७	२७	२७	२७	१८	१७	२६	७॥	३०	२३	१४
मी.	१	उ	३१॥	२३॥	३१॥	३१॥	२७	११	११	२७	२८	२६	११	२०	२०	२५॥	२५॥
मी.	१	रे	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	२७	२७	२६	२६॥	१४	[illegible]	१३	१०॥	२२	[illegible]

क	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कुं	कुं	कुं	मी	मी	मी	०
॥	॥	१	।।।		१	१	१	१	॥	।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	०
चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	ग	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे	०
२४	२२॥	२२	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	३२	३१	३६	२७	२१	२१	१६	१०	२२	३१	३४	१
५	१३॥	१९॥	२२॥	१८॥	३५॥	१९॥	३४	२६	३४	२८॥	२७॥	११	११	२७॥	२५	३०॥	२४	३२	२
१९॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	१८	२५॥	३३	३८॥	२०	१४॥	२४	२५	२६	२७	२०	२५॥	२६॥	१०॥	३
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२२॥	२३॥	१॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	३१॥	२४॥	२१॥	२१॥	१४	४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२९॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	२३	३१॥	३१	२८	२८	३०	५
२७	१०	३०	१५॥	२३॥	२१॥	२५॥	१६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२१	२८	६
११	२१	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२३	११	१८	२१॥	२६	१३	१४	२९	२४॥	२७	२९	२८	७
१४	३४	३४	३४	२१॥	१७	४	१४	२८	२८	२४॥	२९	१९	२०	१३	८	२०॥	२८	२८	८
२७॥	२७॥	३४	२१	१६॥	२१॥	७	१५	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	११॥	१४	१०	१९	२८	२८	९
२२॥	२२	२८	२३	२१	१६	११॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२१	१४	८॥	११॥	२०	२६	२५	१०
१२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१९॥	१७॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	२८	२७	११
२७॥	२७	६	१०	१६॥	२०	२६	२५	१७॥	९॥	२३॥	२३	२६	९	२०	१३	२४	३१	१३	१२
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	३२॥	१६॥	१७	४	४	१९	२४॥	२४॥	१८	१८	१८	११॥	१३
१४	१६॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३३॥	३२॥	३४॥	३२॥	१९	१८	५	९	११॥	२४॥	२४॥	१६	२४	१४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२१॥	३०॥	२२॥	२३	३२॥	३२॥	१९॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१०॥	१५	२६	२४	१५
३०	२०॥	३०॥	२२॥	१८	१७	१३	२४	११॥	१९॥	२६	२६	१८	१६	१९॥	११	१८	३०	२८	१६
३३	२६	२२॥	२४॥	२०	२८	१४	१५	२८	२६॥	२५	२६	२१	१७	१०॥	१३	१८	३०	२८	१७
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	१५	२६	१२	२२	१८॥	१९	१८	१९	२२॥	१७	२८	१२	१२	१८
३४	३४	३२॥	३२॥	२२॥	७॥	११॥	२१	१२	१२	२६॥	२६	२४	२४	२८॥	२४	२४	५	५	१९
२८	३६	३३	३३	२३	२०॥	२७॥	२३	२७	१८	२३॥	२४	२७	२७	१८	३४	२०	२१	१३	२०
३२॥	३२॥	३३	३४	२६	१७॥	२१॥	२६	२०	१४	१८॥	१६	३०	३०	३१	२०	१५॥	१४॥	७	२१
२६	१९॥	२६॥	२६	३२	३३	३५॥	२०॥	२३	१७॥	१३	१५॥	२४॥	२४॥	२५॥	११॥	२५	१५	१९॥	२२
१२	८	३२	१८	३३	३४	३४	२४	३२॥	३०॥	२६	३१	२६	११	२१	२४॥	३१	२५	२४	२३
२५	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	३६	३६	२१	२५	२५	३१॥	२५॥	१९॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८	२४
२७	२७	२६	२७	३१॥	१६॥	२४	३४	३५	३२॥	२२॥	२२॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८	२५
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	२६	३४	२४	३४	१६॥	१३	२३॥	२७	३०	१७	३२॥	२६
२१	१७	१९	१९	२३॥	३२	३२॥	३२॥	२४	३६	३५	२६	३२	३३	२२॥	२९॥	३२॥	३२॥	२४	२७
१७	३१॥	३१॥	२३॥	१९॥	२७	२२	२८	२५	३३	२६	३४	३२	२१	१८॥	३१॥	३०	३०	२२	२८
३०	२७	२२॥	१७॥	१४	२७	२३	१९॥	२८	२७	३४	३६	३४	३६	१९॥	२१॥	२७	२९॥	२२॥	२९
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	२७	२४॥	९॥	१८	३२	२७	३४	३२	२५	२५	३४	१४	२२॥	३०
१७	२५	२७	३१॥	२६	१२	२६	२२॥	१५॥	२४॥	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२॥	१७॥	८	१५॥	३१
३५	३३	२८	२३	२७	३१	१९	३२॥	२४	२४	२६	१०	१५	३३॥	२६	३१	१८	१०॥	२०॥	३२
१७॥	३१	३३	३३	२७॥	१७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२॥	२१॥	१८॥	३२	३३	३४	३४	३४	२१॥	३३
२०	१३	२०॥	१८॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१॥	१३॥	१०	१७॥	३४	३३	३०॥	३४
११	५	२१	१३॥	२६	१९	३४	३१॥	२३॥	३१॥	२१॥	२१॥	२२	८॥	१७	२०	३३	३६	३५	३५
२२	१८	१२	८	१८॥	२७	२९	२८	२०	३२	॥२०॥	२३	२९॥	१५॥	१७॥	२०॥	३०॥	३४	३६	३६

६।८।१२ चंद्र ७ त्रिविध गंडांत समय ८ कर्त्तरी ९ लग्नमें चंद्र और पापग्रह
१० वधू वरकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जनीय ११ विषघटिका १२ दुष्ट मुहूर्त्त

१३ यामार्द्ध आदि १४ लत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहोंकरि विद्धनक्षत्र १८ पापग्रहयुक्त १९ पापांश २० संक्रांतिसाम्य २१

कर्त्तरीदोषलक्षण ।

लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थौ पापखेटौ यदातदा ॥ कर्त्तरीवर्जनी-यासाविवाहोपनयादिषु ॥ नाहिकर्त्तरिजोदोषः सौम्ययो-र्यदिजायते ॥ शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्त्तरी ॥

टीका-लग्न अथवा चंद्रसे बारहवें और दूसरे स्थानोंमें पापग्रह पडे तो कर्त्तरी दोष होता है इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है, कर्त्तरी दोषमें जो इन्हीं उक्त स्थानोंमें सौम्य ग्रह होंय तो अथवा शुभग्रहयुक्त लग्न होय तौ शुभ और क्रूर ग्रह होंय तो कर्त्तरी दोष नहीं होता है ॥

वधूवरकी राशिसे अष्टमलग्न ।

वरवध्वोर्वटोश्चापि जन्मराशेश्चलग्नतः ॥
त्याज्यमष्टमलग्नंस्याद्विवाहव्रतबन्धयोः ॥

टीका-वर वधू और बटु इन सबको जन्मराशि और लग्नसे आठवीं लग्न विवाह और यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं ॥

दुष्टमुहूर्त्त ।

तिथ्यंशोदिनमानस्य रात्रिमानस्यचैवाहि ॥
मुहूर्तः कथितस्तेषुदुर्मुहूर्त्तंशुभेत्यजेत् ॥

टीका-दिनमान और रात्रिमान उनका पंद्रहवां अंश दुर्मुहूर्त्त होता है सो शुभकार्यमें वर्जित है ॥

यामार्द्धादिककथन ।

सूर्याद्यामदलं [illegible] वैवनिगमाद्यश्वीषु नामत्रिषट्संख्याकंकुलिकंदिवेन्द्र रविदिङ्नागर्तुवेदाद्विकम् ॥ व्येकंतंनिशिषोडशांशमपरोतिथ्यंशशु-ज्झन्तितैः कालंकण्टकमैनिघण्टममरेज्यज्ञास्फुजिद्भ्यः क्रमात् ॥

टीका-रविवारसे अर्द्धयामार्द्ध कोष्ठकके अंततक प्रवृत्ति निवृत्तिके अंक होते हैं क्रमकरिके जानिये और शुभ कर्ममें वर्जित हैं दिनमें दिनमानका सो-

छहवां भाग रविवारसे कुलिक कोष्ठकके अंततक अंक होते हैं उनकी कुलिक संज्ञा है और शुभ कर्ममें वर्जित हैं रात्रिमें एक २ घटाइये किसीके मतमें दिनमानका पंचदशांश वर्जित करके गुरुवारसे कालदोष बुधवारसे कंटक और शुक्रवारसे निघंट ये सब यथाक्रम कुलिकके समान वर्जित हैं ॥

वार	*यामार्द्धघटिका ४ संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	कुलिक घटि०२	काल घ०२	कंटक घ०२	निघंट घ० २
रवि	४ था	१२	१६	१४वां	८वां	६वां	१०वां
चंद्र	७ वां	२४	२८	१२वां	६वां	४था	८वां
मंगल	२ रा	४	८	१०वां	४था	२रा	६वां
बुध	५ वां	१६	२०	८वां	२रा	१४वां	४था
गुरु	८ वां	२८	३२	६वां	१४वां	१२वां	२रा
शुक्र	३ रा	८	१२	४था	१२वां	१०वां	१४वां
शनि	६ वां	२०	२४	२रा	१०वां	८वां	१२वां

लत्तादोष—भौमात्त्र्याक्रातिषट्ठजिनाष्टनखभंहन्त्यग्रतोलत्तया
खेटोऽर्कोऽर्कमितंशशीमुनिमितं पूर्णोनसन्मालवे ॥

टीका—भौम जिस नक्षत्रका होय तिससे तीसरे नक्षत्रमें लत्ता दोष, और बुध जिस नक्षत्रका होय तिससे बाईसवें नक्षत्रमें, गुरुसे छठे नक्षत्रमें; शुक्रसे २४ वें नक्षत्रमें और शनिके नक्षत्रसे ८ वें नक्षत्रमें, राहुके नक्षत्रसे २० वें नक्षत्रमें, रविके नक्षत्रसे १२ वें नक्षत्रमें और चंद्रमा पूर्ण होय तो सातवें नक्षत्रमें लत्ता-दोष होता है, यह दोष मालवदेशमें अशुभ और अन्य देशोंमें शुभ होता है ॥

ग्रहणतथाउत्पातनक्षत्रदोष—यस्मिन्धिष्ण्येमहोत्पातो ग्रहणं वाभवेद्यदि ॥ तस्मिन्धिष्ण्येशुभंकर्मषण्मासंवर्जयेद्बुधः ॥

टीका—जिस नक्षत्रमें उत्पात अथवा ग्रहण होय तिस नक्षत्रमें षट्मास-तक शुभ कर्म वर्ज है ॥

पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र।

श्रुत्यग्निभेभिजिद्ब्राह्ये वैश्वेन्द्रक्षेंतुरुद्रभे ॥ मूलादित्ये च पुष्येन्द्रे

*एक दिनका यामार्द्ध ८कुलिकादि ६ मतानुसार जाते उनमेंसे जिस वारकी जो वर्जित हैं वह कोष्ठकमें लिखाहै।

मैत्राश्लेषेमघान्तके ॥ दस्रभागार्यमान्त्ये च हस्ताहिर्बुध्न्यभेतथा ॥ चित्राजचरणेस्वातीवारुणे च परस्परम् ॥ वासवेन्द्राग्निभेतद्वद्वेधः सप्तशलाकजः ॥ त्याज्यः पापोद्भवोयत्नाद्व्रतबन्धादिकर्मसु ॥

टीका–पंच सप्त शलाकाचक्रमें जिस रेखापर जो नक्षत्र होय और उसीमें पापग्रह होय तौ शुभ नक्षत्र विद्ध जानिये ॥

नक्षत्रचरणवेध ।

सप्तपञ्चशलाकाभ्यां विद्धमेकार्गलेनयेत् ॥ लत्तोपग्रहणं धिष्ण्यं पादमात्रंशुभेत्यजेत् ॥ वेधमाद्यंतयोर्द्वयोरन्योन्यं द्वितृतीययोः ॥ क्रूरैरपित्यजेत्पादंकेचिदूचुर्महर्षयः ॥

टीका–विद्धनक्षत्र एकार्गल और लत्ता उत्पात नक्षत्र इनके चरणमें शुभ ग्रह होय तौ वह चरण शुभ कर्ममें वर्जित है प्रथम चतुर्थ द्वितीय तृतीय नक्षत्रके चरण परस्पर विद्ध होते हैं किसीके मतमें पापग्रह विद्ध नक्षत्रोंके चरण वर्जित हैं 'एकार्गलदोषो मार्तंडमते' विष्कंभादि दुष्ट योगरहित दिननक्षत्रसे अभिजित सहित गणनासे विषमनक्षत्रमें सूर्य होय तौ एकार्गल दोष होता है ॥

चण्डायुध–शूलगण्डांतपापानां साध्यहर्षणयोस्तथा ॥
अन्त्यंयचन्द्रभंतास्मिन्नेतच्चण्डायुधंनसत् ॥

टीका–शूल गंड व्यतीपात साध्य वैधृति हर्षण योगोंके अंतमें जो नक्षत्र होय उसे चंडायुध दोष कहते हैं ॥

पंचशलाकाचक्रम् ।

सप्तशलाकाचक्रम् ।
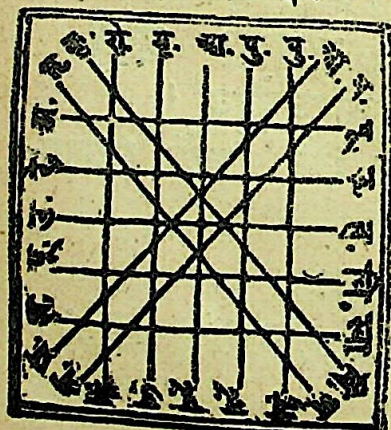
क्रान्तिसाम्य।

युग्मेधनुः कर्किरलौ च युक्तेकन्या च मीनेवृषनक्रयुक्ते ॥
मेषे च सिंहे च घटेतुलायांक्रान्ते च साम्यंशशिसूर्ययोगे ॥

टीका—धन मिथुन लग्नोंके सूर्य और चंद्रमा होंय तो क्रांतिसाम्य होय इसी प्रकारसे कर्क वृश्चिक आदि दो २ राशियोंके क्रांतिसाम्यदोष जानिये ॥

चक्रकाक्रम—ऊर्ध्वरेखात्रयं चैवतिर्यग्रेखात्रयं तथा॥
क्रान्तिसाम्यंबुधैर्ज्ञेयंमध्ये मीनंतुयोजयेत् ॥

टीका—तीन ऊर्ध्व और तीन आडी रेखा खींचे मध्य भागकी रेखाओंमें तीन २ लग्न क्रमसे लिखे द्वादशलग्नोंमें से दो २ का क्रांतिसाम्य होता है ॥

यामित्रदोष।

लग्नेन्दोर्नास्तगः पापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः ॥ तदायामित्रदोषः स्यान्नहिन्यूनाधिकांशके ॥ क्रूरोवायदिवासौम्यो लग्नाच्चन्द्राच्चखेचरः ॥ एकोपियदियामित्रे समांशेचतदाभवेत् ॥ यामित्रंनप्रशंसन्ति गर्गकश्यपदेवलाः ॥ आयषष्ठतृतीयेषु धनधान्यप्रदोरविः ॥

टीका—लग्न चंद्र मध्य सप्तम स्थानका पापग्रह शून्य करनेसे उसके तुल्यांश आवे तो यामित्र दोष होय, अधिक वा न्यून होय तो दोष नहीं है ॥ दूसरा पक्ष ॥ लग्न चंद्रसे सप्तमस्थानीं शुभग्रह अथवा पापग्रह सम अंश होय तौ यामित्र दोष होय, गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियोंके मतके अनुसार यामित्र दोष विवाहमें वर्जित है जो लग्नसे एकादश षष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें सूर्य होय तो यामित्र दोष शुभ और सुखदायक जानिये ॥

चरत्रयदोष—कर्कलग्नेथवामेषे घटांशोयदिदीयते ॥
तुलायांमकरेचन्द्रे वैधव्यंजायतेध्रुवम् ॥

टीका—कर्क और मेष लग्नमें तुलाका अंश और मकर अथवा तुलाका चंद्रमा ऐसे योगोंका दोष वैधव्य करता है ॥

तिथिअनुसारवर्जित लग्न।

प्रतिपदितुलामकरौ सिंहमकरौतृतीयायाम् ॥ कन्यामिथुने पञ्चम्यां सप्तम्यांचैवधनुः ककौं ॥ नवम्यांकर्कसिंहौ एकादश्यांधनुर्मीनौ ॥ त्रयोदश्यांवृषभमीनौशून्यलग्नानितिथियोगात् ॥

टीका–प्रतिपदाको तुला और मकर, तृतीयाको सिंह मकर, पंचमीको कन्या मिथुन, सप्तमीको धन कर्क, नवमीको कर्क, सिंह, एकादशीको धन मीन, त्रयोदशीको वृष मीन इन तिथियोंमें ये लग्न शून्य वर्जनीय हैं ॥

दोषनिवारण–द्यूनंविनाकेन्द्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगोवापिहिलक्षमेकम् ॥ निहन्तिदोषंत्रिशतंभृगुश्च शतंबुधोवापिहिदृश्यमूर्तिः ॥

टीका–गुरु शुक्र अथवा बुध ये १।४।९।१०।५ इन स्थानोंमें होय तौ एक लक्ष गुरु तीन सौ शुक्र १ सौ बुध दोषोंको नाश करे हैं ॥

लग्नप्रमाण वा राश्युदय–गजाग्निदस्रागिरिषट्कदस्रा व्योमेन्दुरामा रसरामरामाः ॥कुरामरामा गजचन्द्ररामा नागेन्दुलोका कुगुणानलाश्च॥षड्रामरामा खशशाङ्करामाः सप्ताङ्कपक्षाश्चगजाग्निदस्राः ॥

टीका–राशिउदय कहिये मेषादि बारह राशि तिनकी १२ लग्न होती हैं जिस राशिके सूर्य होय वही उदयकालकी प्रथम लग्न जानिये तिसकी पल संख्याका क्रम कोष्ठकमें है ॥

लग्न	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
पल	२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३१८	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्नकी घटिकाओंकी संख्या–मीनेमेषेत्र्यष्टपञ्चक्रमान्नाड्यः पलानिच ॥ वृषेकुम्भेऽब्धिसप्तद्विपञ्चदिङ्मिथुनेमृगे॥ धनुः कर्केशरेषट्त्रिसिंहाल्योःशरभूत्रयम्॥बाणाष्टदशतूलांगे लग्ननाड्यःपलानिच॥

टीका–मेषादि लग्नोंकी घटी और पलोंका क्रम ॥

लग्न	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि	धन	मक	कुंभ	मीन
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३६	३१	१८	१८	३१	३६	१०	२७	५८

प्रतिदिवस भुक्तपल जाननेका क्रम।

मीनाजेसप्तषट्पञ्च पलानिविपलानितु ॥ गोकुम्भेष्टौयुगशरा-

दिग्विंशातिर्नृयुङ्मृगे ॥ कर्कचापेभवाःसूर्याः सिंहाल्योरुद्रदृङ्मिताः ॥ तुलाङ्गेदिक्चषट्त्रीणि लग्नेष्वेकांशसम्मितिः ॥

टीका–जो लग्न उदय कालमें होय तिसकी प्रतिदिन भोग्य पल विपल संख्या॥

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुंभ	मी
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्नकथन–यस्मिन्राशौयदासूर्यस्तल्लग्नमुदयोभवेत् ॥ तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नंतदुच्यते॥

टीका–जिस राशिके सूर्य होयँ वही लग्न सूर्योदयमें होती है और उससे सप्तम लग्न सूर्यास्तमें होती है उसीको अस्तलग्न जानिये ॥

लग्नकेउक्तअंशदेनेकाक्रम–वृषश्चमिथुनंकन्या तुलाधन्वीझषस्तथा ॥ एतेशुभनवांशास्तुततोन्येकुनवांशकाः ॥

टीका–वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन ये, अंश द्वादश लग्नोंके शुभ होते हैं शेष अशुभ, मेषादि १२ लग्न वा अंश ७ कोष्ठकमें हैं तिनमेंसे जिसके अंशकी वर्ग शुद्धि होय उनकी कोष्ठकमें लग्न लिखे और उस अंश घडीकों अयनांश देखकर भुक्त काल लाइये ॥

लग्न	वृ	मि	क	कं.	तु	धन	मीन
	० ३ २०	० ६ ४०	० १० ०	० १६ ४०	० २० ०	० २४ ४०	० ० ०
वृष	१ ११ २०	१ १६ ४०	१ २० ०	१ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मिथुन	२ ३२ २०	२ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	२ ० ०	२ ६ ४०	२ १६ ४०
कर्क	० ० ०	० ० ०	३ ० ०	३ ६ ४०	३ १० ०	३ १६ ४०	३ २६ ४०
सिंह	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ०	४ १६ ४०	४ २० ०	२ २६ ४०	० ० ०
कन्या	५ १३ २०	५ ६ ४०	५ २० ०	५ २६ ४०	४० ० ०	० ० ०	० ० ०
तुला	६ २३ २०	६ २६ ४०	६ १ ०	६ ० ०	६ ० ०	६ ६ ०	१ १६ ४०
वृश्चिक	० ० ०	० ० ०	७ १ ०	७ ६ ४०	७ १० ०	७ १६ ४०	७ २६ ४०
धन	४ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ०	६ १६ ४०	८ २० ०	८ २६ ४०	० ० ०
मकर	१ १३ २०	१ २६ ४०	१ २७ ०	१ २६ ४०	४० ० ०	० ० ०	० ० ०
कुंभ	१० २३ २०	१० २६ ४०	० ० ०	० ० ०	१० ० ०	१६ ६ ४०	१० ६ ४०
मीन	० ० ०	० ० ०	११ १ ०	११ ६ ४०	११ १० १	११ १६ ४०	११ २६ ४०

टीका—प्रत्येक कोष्ठकमें ४ अंक हैं उनके नाम राशि अंश कला विकला जानिये राशिकी संज्ञा शून्यका नाम मेष और वृषके नाम १ इस प्रकार १२ राशि होती हैं ॥

तात्काल स्पष्टसूर्य लानेका साधन।

गतगम्यादिनाहतद्युभुक्तः खरसतांशयुग्युतोग्रहः स्यात् ॥

टीका—पंचांगस्थ ग्रहोंके कोष्ठकों पूर्णिमासे अमावास्यापर्यंत और अमावास्यासे पूर्णिमापर्यंत सूर्य स्पष्ट है, परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जिस दिनका सूर्य स्पष्ट करना हो उस दिनको लेकर और दिनोंके अंतरका वर्तमान दिनको सूर्यगतिसे कोष्ठांतमें गुणे और६०का भाग देनेसे जो अंक आवें वे अंश घटी पल जानिये परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जो पीछेका स्पष्ट करना हो तो पंचांग सूर्यके अंश घटी पल जो कोष्ठकमें हैं उनमेंसे उन अंकोंको हीन करे जो आगे काल न होय तो उनमें जोडदे इस प्रकारसे तात्कालिक सूर्य स्पष्ट होजाताहै यह जानिये ॥

भुक्त दिवसोंका उदाहरण।

शकः १७६९ कार्तिकशुक्ल ९ भौमका स्पष्ट सूर्य कहो ॥

सूर्यकी गति

प. वि.
६० ४७.
६ दिन ९ से १५ तक

अंतरको गुणे

६० २८२ गुणा
भागा ६०) २८२ (४ अंश
२४०
४२ शेषफल

३६०
४ ४२ मिलावे
३६४ ४२
६४ ४२ भाग ६०) ३६४ (६ । ४ । ४२
अं. प. वि.

स्पष्ट रविका उत्तर

	रा.	अं.	क.	वि.
पंचांगस्थरवि	७	७	२१	५७
गति		६	४	४२
शेष संख्या	७	१	१७	१५

यह स्पष्ट सूर्य जानिये.

अभुक्त दिवसोंका उदाहरण।

शकः १७६९ कार्तिक कृष्ण ६ को सूर्य स्पष्ट लानेका क्रम पूर्णिमाका स्पष्ट रवि राशि ७ अंश ७ घडी २१ पल ५७ अभुक्त दिवस ६ सूर्यकी गति ६०।४७ इन अंकोंको ६ से गुणा तो हुए ३६४।४२ इनमें ६० का भाग देनेसे शेष रहे वे अंश ६ घटी ४ पल ४ इन अंकोंको सूर्यके अंश घटिका और पलोंमें मिलावे तौ ७ राशि १३ अंश २६ घटी ३९ पल इस प्रकार होते हैं

अयनांश लानेका क्रम।

शाकोवेदाब्धिवेदोनः षष्टिभक्तोऽयनांशकाः ॥
देयास्तेतुरवौस्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ॥

टीका—वर्तमान शकमें ४४४ घटानेसे जो शेष बचे उसमें ६० का भाग दे। चर स्थिर द्विस्वभाव लग्नोंकी सिद्धिके लिये उन अयनांशोंको स्पष्ट सूर्यके अंश और घटिकाओंमें मिलानेसे सायन सूर्य हो जाता है ॥

उदाहरण।

शके १७६९	भा. ६०)१३२५(२२ अंश	७ १ १७ १५ स्पष्टरवि
इनसे ४४४	१२०	२२ ५ अयनांश मिलावे
घटाना	१२५	७ २३ २२ १५
१३२५	१२०	यह सायनसूर्य जानिये.
	५	
	६० गुणक	
	भाग ६०)३००(५ कला	
	३००	
	०००	

लग्नसे इष्टकाल लानेका क्रम।

स्फुटसायनभागार्कभोग्यांशफलसमेतः॥ सायनांशतनोश्चापि

भुक्तांशफलसंयुता ॥ मध्यलग्नोदयैर्युक्ताषष्ट्याप्तानाडिकास्तनोः॥

टीका—सायन सूर्यसे भोग्य और सायन लग्नसे भुक्त बनानेकी रीति। दोनोंका योग करके सूर्यके मध्यका उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देनेसे लग्न परसे सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट हो जाता है। उदाहरण॥ शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारको स्पष्ट सूर्यकी राशि आदि ७।१।१७।१५ और अयनांश २२।५ को सूर्यके अंश और घडियोंमें मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादि ७।२३।२२।१५ यह वृश्चिक राशिका सूर्य २३ अंश २२ घटिक १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६।३७।४५ सूर्य वृश्चिक राशिका है तो वृश्चिकका उदय कहिये ३३१ से भोग्यांश गुणनेसे हुए अंक २१९४ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ७३।८ यह सूर्यका भोग्य काल जानिये ॥

लग्नसे भुक्त लानेका प्रकार ॥ मकर लग्न वृषकी तिसको कोष्ठकमें देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे वे राश्यादि ९।१३।२० कहिये मकर राशिकी लग्न १३ अंश २० घटिका होती है, इस लग्नके अंश घडीमें अयनांश २२।५ मिलानेसे सायन लग्न १०।५।२५ हुई कुंभराशिको लग्न अंश ५ घटी२५सायन लग्न होती, लग्नके भुक्तांश ५।२५ कुंभ राशिका उदय२६७ इनको गुणनेसे अंक हुए १४४६ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ४८।१२ यही अंक लग्नका भुक्त होता है ॥

भोग्य भुक्तसे इष्टकाल लानेका प्रकार।

भोग्य भुक्त योग १२१।२० सूर्य अथवा लग्न जिस राशिके मध्यांतरके उदय २ धन ३१६ मकर ३१० उनका योग ६६४ भोग्य भुक्त योग १२१ इसमें मिलाये तो अंक हुए ७६७ इस युक्त अंकमें ६० का भाग दिया तो वह इष्टकालकी घडी १२ पल ४७ हुए इन पलोंमें वृत्तिके ५ पल जोडनेसे स्पष्ट इष्टकाल १२।५२ आ जाता है।

उदाहरण—सायन सूर्यके भोग्य लानेका क्रम ।

अंश	घटी	पल
३०	०	०
२३	२२	२५
६	३७	४५
		३३१ गुणक
१९८६	२३१७	१६५५
२०८	९९३	१३२४

२१९४ | १२२४७ | भाग ६०) १४८९५ (घटिका २४८

२४८ | १२०

भाग ६०) १२४९५ (अं. २०८ | २८९

१२० | २४०

४९५ | ४९५

४८० | ४८०

१५ शेष | १५ शेष पल

रविके भोग्यकाल लानेका प्रकार.

अंश — घटी

भाग ३०) २१९४ — १५) ७३।८

२१०

९४

९०

४

६० गुणक

२४०

१५ शेष घटी

भाग ३०) २५५ (८ शेष

२४०

१५

१

९

लग्नसे भुक्तकाल लानेका क्रम.

रा अं क

९ १३ २० मकरलग्न

२३ ५ अयनांश मिलावे

१० ५ २५ सायन लग्नभुक्त

२६७ लग्नका उदय

१३३५ १७५

१३३५ १७५

१११ १५०

१४४६ ५० अंश

६०)६६७५(१११

६०

६७

६०

७५

६०

१५

अभुक्तांश

भाग ३०) १४४६ (१४ प. १२

१२०

२४५

२४०

६

६० गुणक

भाग ३०) ३६० (१२

३६०

इष्टकाल.

धन ३३६

मकर ३१० मिलावे

६४६

१२१ यह भुक्त मिलावे

भाग ६०) ७६७ (१२ घ.

६०

१६७

१२०

४७

६० गुणक

भाग ६०) २८२० (४७ पल

२४०

४२०

४२०

भुक्तभोगयोग.

४८ १२ भुक्त

७३ ८ भोग्य

१२१ २० सूर्य व लग्न इन राशि मध्यंतरका उदय

उत्तर इष्टघटिका

घ प

१२ ४७

५ प्रवृत्तिका फल

१२ ५२ उत्तर इष्ट घटी

इष्टकाल समयका तत्कालसूर्यसाधन ।

तत्कालभवस्तथाघटिक्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतः स्यात् ॥

टीका–इष्ट घडीमें सूर्य लाना होय तौ उसको और उससे सूर्यकी घडियोंको गुणकर ६० का भाग दे जो लब्धि होय उसमें जो सूर्य गत हो तौ हीन करे और जो भोग होय तौ उसमें युक्त करनेसे तत्काल सूर्य आजाता है ॥

उदाहरण ।

टीका–शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारके दिन प्रातःकालका सूर्य ७ । १ । १७ । १५ है तौ कहो कि सायन सूर्य कितना होगा ॥

इष्ट घडीकी गतिका गुणाकार.

```
        १२              ५२ इष्टघडी
गु. ६०  ७२०             ३१२०
        ४७ ५६४          २४४४
          ७२०        ३६८४ २४४४
इनका भाग ६० ) ७८२ ( १३ । २
               ६०
               १८२
               १८०
                 २
               ६० गुणक
     भाग २० ) १२०
              १२०
```

घटी पलोंका भागाकार.

```
७२०     ३६८४     ६० ) २४४४
 ६२       ४०           २४
७८२     ३७२४     ८६२
        ३६०
        १२४
        १२०
          ४
७  १    १७     १५ प्रातःकालका रवि
        १३      २   अयनांश
७  १    ३०     ३५
        ३२      ५   गम्यघटी
७ २३    ३५     १७ सायनतत्कालसूर्य
```

इष्टघटीसे लग्न लानेका क्रम ।

तत्कालार्कःसायनोस्योदयघ्ना भोग्यांशा खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ॥
एवंयातांशैर्भवेद्यातिकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥
तदनुविहीनगृहोदयांश्चशेषंगगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् ॥
सहितमजादिगृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदो यनांशहीनम् ॥

टीका–पीछे सायन सूर्य जिस राशिमें होय उसका उदय लेना चाहिये और सायन सूर्यके अंशादिकोंको ३० अंशोंमें हीन करे वे भोग्यांश जानिये और उदयको भोग्यांशसे गुणिके ३० का भाग दे तो सूर्यका भोग्यकाल

निकल आवे । सूर्यका गतकाल लानेका क्रम । सायन सूर्यके उदयमें
अंशादिकोंको गुणिके ३० का भाग दे तौ भुक्तकाल आजायगा इ
योंके पल करके उसमें भोग्यकाल हीन करे शेष जिस राशिमें सूर्य उदय
वह राशि आगे जितनी राशी उदय राशिमें कम होगी उनको घटा दे जो
न घटे तौ अशुद्ध जानिये और शेष अंकोंको ३० से गुणकर अशुद्ध
भाग दे तौ अंशादिक आवेंगे उसमें शेष राशिसे अशुद्ध राशिको पूर्व रा
युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट हो जाता

उदाहरण—पीछे जो सायनसूर्य आया है वह ७।२३।३५।१७
उदय ३३१ सूर्यके अंश २३।३५।१७ ये ३० अंशमें हीन करे शे
वह भोग्यांश ६।२४।४३ इनको उदयसे गुणे वे अंक २१२२ इनमें
का भाग दे तो भोग्यकाल निकल आवे । उसके हिसाबका क्रम ॥

३० ३५ १७ सायन सूर्यके अंश घटावे
२३

६ २४ ४३ शेष भोग्य

३३१ उदय

अंश	कला	विकला
१९८६	१२२४	४३
१३६	६६२	१२९
३०) २१२२ (७०	७९४४	१२९
२१०	२३७	भाग ३०) १४२२३ (
२२	६०) ८१८१ (१३६ अंश	१२०
६० गुणक	१६०	२२३
३०) ३९० (४४	२१८	१८०
१२०	१८०	४३३
२७०	३८१	४२०
	३६०	१३
	२१	

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये ॥

इष्ट घटीमें १२।५२ इनके फल ७७२ इस अंकमें भोग्यकाल घटाया तो शेष अंक७०।१।१६ धन राशिका उदय ३३६ वा मकर राशिका उदय ३१० इन दोनोंका योग ६६४ शेष अंकमें न्यून किया तो रहे ५५।३६ इन अंकोंमें कुंभ राशिका उदय २६७ घटा नहीं सकते इस लिये अशुद्ध उदय जानिये ॥

इष्ट घटी १२		
गुणक ६०	५२	
७२०		
५२		
७७२		
भोग्यकाल ७०	४४	
३३६ धनराशिका उदय ७०१	१६	
३१० मकरराशिका उदय ६४६		इन अंकोंमें कुंभका उदय नहीं घटसकता
६४६ ५५	१६	इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं।

अंशादि ५५।१६ इनको ३०से गुणे वे अंक १६।५८ हुए इनका अशुद्ध उदयमें भाग दे जितने भाग आवें वे अंक और शेष अंक ५६ को ६० से गुणा तो हुए ३३६०फिर इनके उदयमें भाग दिया तो घटी १२ और शेष १५६ को ६० से गुणा तो हुए ९३६० फिर उनके उदयमें भाग दिया तो पल ३५ मेष राशिसे अशुद्धकी पूर्व राशितक राशि १० और पिछलीके अंशादिक ६।१२।१५ तिनके और राशिके अंशोंके लिखनेसे स्पष्ट सायन लग्न १०।३६।१२।३५ अयनांश १२।५ सायनलग्नके अंश घटिकामें घटानेसे स्पष्ट लग्न ९।१४।७।३५ मकर लग्न १४ अंश ७ घटिका ३५ पल जानिये ॥

अंशांक

१५
१६५०
८
२६७) १६५८ (६ अं.
१६०२
५६

१६
३० गुणक
६०) ४८० (८
४८०

५६
६० गुणक
२६७) ३३६० (१२ घ
२६७
६९०
५३४
२५६

१५६
६० गुणक
२६७)९३६०(३५ प
८०१
१३५०
१३३५
१५

राशि	अंश	घटी	पल
१०	६	१२	३५
	१२	५	अयनांश घटावे
९	१४	७	३५

इस प्रकार मकर लग्नका प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये

सूर्य और लग्न एक राशिके हों तौ इष्ट लानेका क्रम

यदितद्दिननाथावेकराशौतदंशान्तरहृतउदयःस्या-
त्स्वाग्निहृत्त्विष्टकालः ॥

टीका–सूर्य और लग्न एक राशिके हों तौ दोनोंका अंतर निकाले और तिसको राशिके उदयसे गुणे ३० का भाग दे जो लब्धि होय सोई इष्ट जाने और रात्रिमें लग्न अथवा इष्टकाल निकालना होय तौ सूर्यकी राशि उसमें मिलावे ॥

लग्नके शुभाशुभ ग्रहोंका विचार।

लग्ने चन्द्रखलारिपौशशिसितौसवेंद्युनेखेबुधोऽन्त्योऽ-।
त्येगुः सुखगोष्टमाः कुजशुभाः शुक्रस्तृतीयः शुचे ॥
लाभे सर्वखगाः शुभा अखिलगात्यष्टारिगा स्युः खला-।
श्चन्द्रस्त्र्यम्बुधने श्रियेंशभहृकेट्स्यान्मृत्यवेष्टारिगः ॥

टीका–लग्नमें चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्नसे षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्र और सप्तम स्थानमें कोई ग्रह होय, दशम स्थानमें बुध द्वादशमें चन्द्र चतुर्थ स्थानी राहु, अष्टमस्थानी मंगल व शुभग्रह और तृतीयस्थानमें शुक्र ऐसे लग्नके ग्रह होंय तौ अनिष्ट शोककारक अशुभस्थानी ग्रह जानिये। लग्नसे एकादशस्थानमें संपूर्ण ग्रह और निंद्यस्थान वर्जित करके और शेष स्थानमें शुभग्रह होयँ और तृतीय अष्टम तथा षष्ठस्थानमें सूर्य और २। ३ चतुर्थ स्थानमें चंद्रमा होय तौ शुभ लक्ष्मीकारक जाने, लग्नका स्वामी अथवा अंशका स्वामी अथवा द्रेष्काणका स्वामी ये षष्ठ वा अष्टम स्थानमें होंय तौ मृत्युदायक जानिये ॥

पञ्चभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यम् ॥
स्थानादिफलसमृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥

टीका–लग्नोंके पांचग्रह शुभस्थानी होंय तो पुष्टिकारक होते हैं और अशुभ होंय तौ अनिष्टकारक होते हैं और यवनादिमतसे चार ग्रहभी इष्टकारक जानिये ॥

षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम ।

गृहंहोरा च द्रेष्काणोनवांशो द्वादशांशकः ॥
त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥

टीका–प्रथम जाननेमें लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ६ ये छः वर्ग इनमें शुभग्रहोंके वर्ग शुभ होते हैं ॥

त्रिंशांशादिकथनम् ।

त्रिंशद्भागात्मकंलग्नंहोरातस्यार्द्धमुच्यते ॥ लग्नात्त्रिभागोद्रेष्काणो नवांशोनवमांशकः ॥ द्वादशांशोद्वादशांशास्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥

टीका–लग्नके अंश ३० होते हैं तिनका अर्द्ध १५ अंश होरा कहाता है और लग्नहीका तीसरा भाग १० ऐसे ३ तीन द्रेष्काण होते हैं और नवम भाग नवांश और तिसका बारहवां भाग द्वादशांश और तीसवां भाग त्रिंशांश इस रीतिसे एक लग्नके ३० अंश होते हैं और उन्हीं तीस अंशोंके छः वर्ग होते हैं ॥

आदौ गृहज्ञानम् ।

यस्य यस्य यो राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥

टीका–जिस ग्रहकी जो राशि होय सो गृह उसीका कहा जाता है ॥

ग्रह	भौ.	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि	धन	मक.	कुंभ	मीन

होराकथनं–सूर्येन्द्वोर्विषमे लग्नेहोराचन्द्रार्कयोः समे ॥

टीका–विषमलग्नमें १५ अंशतक सूर्यका होरा तदनंतर चन्द्रमाका होरा जानिये सम लग्नमें १५ अंशके अन्त लग्न होय तो चंद्रमाका होरा तिस पीछे सूर्यका जानिये होरा चंद्रमाका शुभ और सूर्यका अशुभ ॥

लग्न	मे ०	वृ १	मि २	क ३	सिं ४	क ५	तु ६	वृ ७	ध ८	म ९	कुं १०	मी ११
अंश १५	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं
अंश ३०	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू

द्रेष्काणकथनम् ।

द्रेष्काणआद्योलग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्यच ॥

द्रेष्काणश्चतृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः ॥

टीका-प्रथम द्रेष्काण कहिये लग्नके ३० अंश तिनमैंसे १० अंशका एक द्रेष्काण ऐसे २० अंश ३० अंश तीन द्रेष्काण होतेहैं प्रथम द्रेष्काणका स्वामी लग्नका स्वामी होता है द्वितीयद्रेष्काणका पंचमस्थानका स्वामी होता है और तृतीयद्रेष्काणका नवम स्थानका स्वामी होता है शनि मंगल सूर्यका द्रेष्काण अशुभ जानिये ॥

ल	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	क०	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ अं १०	म०	शु	बु०	चं०	र०	बु०	शु०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
२ अं १०	र०	बृ०	शु०	मं०	गु०	श०	श०	गु०	मं०	शु०	बु०	चं०
३ अं १०	गु०	श०	श०	गु०	मं०	श०	बु०	चं०	र०	बु०	शु०	मं०

सप्तांश ।

	मेष ०	वृषभ १	मि० २	कर्क ३	सिंह ४	क० ५	तुला ६	वृ० ७	धन ८	मकर ९	कुंभ १०	मीन ११
४।१७	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
८।३४	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
१२।५१	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
१७।८	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
२१।२५	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
२५।४२	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
३०	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

लग्नका नवांश ।

मेषसिंहधनुर्लग्नेनवांशामेषतः स्मृताः ॥ वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥ कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतः स्मृताः ॥ नृयुग्मतौलिकुम्भेषु तोलितः स्युर्नवांशकाः ॥

टीका-मेष सिंह धन इन लग्नोंका नवांशका क्रम मेषसे जानिये और वृष कन्या मकर इनका मकरसे क्रम और मिथुन तुल कुंभका तुलसे क्रम, कर्क वृश्चिक मीन इन लग्नोंका नवांश कर्कराशिमें जानना चाहिये नवांश सूर्य मंगल शनिका अशुभ होता है ॥

		मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
३	२०	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं
६	४०	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र
१०	०	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु
१३	२०	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु
१६	४०	र	शु	श	मं	र	शु	श	म	र	शु	श	मं
२०	०	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु
२३	२०	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श
२६	४०	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श
३०	०	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु

द्वादशांककथन ॥ लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेवकीर्त्तिताः ॥

टीका—लग्नके अंश ३० तिनके भाग १२ द्वादश कहातेहैं तिनका क्रम यहहै लग्नसे जो पर्यंत लग्नके अंश हो उसके स्थानसे जो द्वादशांश पति जानिये तिनमें मंगल शनि रवि इनके अंश अशुभ होतेहैं ॥

	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
२ ३०	मं.	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु
५ ०	शु		चं	रं	बु	शु	मं	गु	श	शं	गु	मं
७ ३०	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु
१० ०	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु
१२ ३०	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं
१५ ०	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र
१७ ३०	शु	मं	गुं	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु
२० ०	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु
२२ ३०	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	च	र	बु	शु	मं
२५ ०	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु
२७ ३०	श	गु	मं	शु	बु	चं	र		शु	मं	गु	श
३० ०	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श

विषमत्रिंशांश ॥ कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतय क्रमात् ॥
पंचपंचाष्टशैलेषु भागानां विषमेगृहे ॥

टीका–विषमलग्नमें पंचमांश लग्न पर्यन्त होय तो भौमके आगे ५ अंश शनिके गुरु ८ अंश तिसके आगे ७ अंश बुधके और ५ अंश शुक्रके इस क्रमसे विषम लग्नमें त्रिंशांशपति जानो इनमें मंगल शनि अशुभ जानिये ॥

अं.	मे	मि	सिं	तु	ध	कुं
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं
५	श	श	श	श	श	श
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु

समत्रिंशांश ॥ शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे ॥
पञ्चाङ्गव्वेषु पञ्चानां भागानां कथिता बुधैः ॥

टीका–सम लग्नमें प्रथम ५ अंश पर्यन्त शुक्र तिसके आगे ७ अंश बुध तिसके आगे ८ अंश गुरु तिसके आगे ५ अंश शनि तिसके आगे ५ अंश मंगल ये सम लग्नमें त्रिंशांशपति जानिये तिनमें मंगल शनि अशुभ हैं ॥

अं	वृ	क	क	वृ	म	मी
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
५	श	श	श	श	श	श
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं

षड्वर्ग जाननेका क्रम ।

कार्तिक शुक्ल ९ मंगलवार लग्न मकर अंश १४ घटि ११ पल ५। स्वामी शनि सो गृहेश ॥ ये षड्वर्ग तिनमें शनि अशुभ शेष ५ वर्ग शुभ जानिये ॥

गृहेश	होरा	द्रेष्का०	नवम	द्वादशां०	त्रिंशां०
शनि	चन्द्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु

उक्तांश ।

मेषे षष्टुघटो वृषो त्रिद्विगिनाद्वन्द्वेद्विगोर्काग्नयः कीटेऽन्त्य ङ्गनवाद्रयोर्कभवनेऽङ्काश्वाः स्त्रियांत्र्यर्कषट् ॥ जूकेऽर्का-द्रिखगा अलौगवगषट् चापेत्रिषट्गोद्रयोनक्रेशाश्वरु-णाघटेझषवृषामानर्द्विगोषट्शुभाः ॥

रा. उ.	म.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	३	७	४	६	६	१२	९	३	३	१२	७
	७	३	९	६	७	१२	७	७	६	१२	२	९
-		१२	१२	९		६	९	६	९			६
			३	७					७			

षड्वर्गं पञ्चवर्गंवा चतुर्वर्गमथापिवा ॥
केश्चित्रिवर्गंसत्प्रोक्तंद्व्येकवर्गं तनुंत्यजेत् ॥

टीका—६ अथवा ५ किंवा ४ वर्ग लग्नके होंय तो लग्न बालिष्ठ होय और किसी २ के मतसे ३ वर्ग शुभ होतेहैं और दो एक होंय तो लग्न वर्जनीय है ॥

लग्नांशफल ।

लग्नेचतुर्दशोभागो वृषस्यमकरस्यच ॥
कन्याकर्कटमीनानामष्टमेद्वादशेऽलिनः॥

टीका—वृष मकर इनके १४ अंश कन्या कर्क मीनके ८ अंश और वृश्चिकके १२ अंश ये शुभ फल देते हैं ॥

कुम्भस्यांशेचषड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ॥
नृयुक्कार्मुकयोर्लग्नं शुभंसप्तदशांशके ॥

टीका—कुंभके २६ अंश तुलाके २४ मिथुनके ७ और धनुके १० शुभ हैं इस प्रकारसे जानिये ॥

एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशेहरेः ॥
संपूर्णफलदंचादो मध्यमेघ्यफलप्रदम् ॥

टीका—मेषके २१ अंश सिंहके १८ ऐसे लग्नोंके आदिमें संपूर्ण और मध्यम फल अंश अनुसार जानिये ॥

लग्नवर्गोत्तमलक्षण ॥ अन्तेतुच्छफलंलग्नंयदिवर्गोत्तमंनचेत् ॥ लग्नस्यस्वनवांशोयः सवर्गोत्तमउच्यते ॥

टीका–लग्नके अंतभागमें वर्गोत्तम न होय तो लग्न अनिष्ट फल देता है और लग्न अपने नवांशमें होय तो वर्गोत्तम कहिये ॥

गोधूललग्नका कथन ।

गोधूलंपदजादिके शुभकरंपश्चाङ्गशुद्धेरवेरर्धास्तात्परपूर्वतोऽर्धघटिकंतत्रेन्दुमष्टारिगम् ॥ सोग्राङ्कंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपातमर्कक्रमंजह्यात्द्विप्रमुखेतिसंकटइदंसद्योवनाद्येक्वचित् ॥

टीका–शूद्रादिकोंको पंचांग शुद्ध देखि करिके सूर्यके अर्द्धास्त समय प्रथम और पश्चात् १५ पल गोधूलि काल शुभ और गोधूलिलग्नसे षष्ठ और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पापग्रह भौम अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जिके शुभ और किसीके मनमें विवाहादिके अति संकटमें वर और कन्या होय तो गोरज शुभ होय ॥

वधूप्रवेश ॥ विवाहमारभ्यवधूप्रवेशो युग्मेथवाषोडशवासरान्तात् ॥ तदूर्ध्वमब्देयुजिपञ्चमान्तादतः परस्तान्नियमोनचास्ति ॥

टीका–विवाहसे सम १६ दिवस पर्यंत वधूप्रवेश कहाहै आगे पांच वर्ष पर्यंत विषममासादिक कहेहैं आगे स्वेच्छा ॥

उक्तमासादि ॥ माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने ॥ गुर्वाद्यस्तविशुद्धेस्यात् नित्यंपत्नीद्विरागमः ॥

टीका–माघ फाल्गुन और वैशाख शुक्लपक्षमें शुभदिवसमें गुरु आदि अस्त वर्जित द्विरागमन उक्त है ॥

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनीशाक्रैभास्करवायुविष्णुसरुगत्वाष्ट्रेप्रशस्तेतिथौ ॥ कुम्भाजालिगतेरवौशुभकरप्रांतोदयेभार्गवेजीवज्ञाब्जयुजितांदिनेनववधूवेश्मप्रवेशःशुभः ॥

टीका–मृग तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाती श्रवण शततारका चित्रा ये नक्षत्र, कुंभ मेष वृश्चिकके सूर्य शुक्रादिक उदय गुरु बुध चंद्र ये वार ऐसे शुभ दिवसमें प्रवेश करावे ॥

नूतनपल्लवधारणका मुहूर्त ।

हस्तादिपञ्चमृगपूषभदस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिने गुरुशुक्रवारे ॥
स्त्रीणांशुभंप्रथमपल्लवधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसभये खलुपीतवस्त्रैः॥

टीका—हस्तसे पांच और मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा में नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार और वे ग्रह होंय जो विवाहकालमें कथित हैं ऐसे दिवसमें नूतन पीतवस्त्र करिके स्त्रियोंको प्रथम पल्लव धारण करावे ॥

गन्धर्वविवाहमुहूर्त ।

शूद्रान्त्येषुपुनर्भवापरिणयप्रोक्तोविवाहोक्तभैर्नोलोक्यं तिथिमासवेधभृगुजेज्यास्तादितत्रार्कभात् ॥ त्रिःयक्षैंषुमृतिर्धनंमृतिमृती पुत्रोमृतिर्दुर्भगं श्रीरौन्नत्यमथोधृतीशकृततत्त्वक्षैत्स्ययःसाभिजित् ॥

टीका—शूद्र आदि और रजक आदि और अन्यजाति जिनकी स्त्रियोंका पुनर्विवाह होजाताहै उनके धरेजेका मुहूर्त विवाह नक्षत्र अवश्य देखे मास तिथि वार गुरु शुक्र इनके उदय अस्तका कुछ दोष नहीं और सूर्यनक्षत्रमें दिवसनक्षत्रपर्यंत नक्षत्र गिने क्रमसे प्रथम ३ मरण द्वितीय ३ धन तृतीय ३ मरण चतुर्थ ३ मरण पंचम ३ पुत्रलाभ षष्ठ ३ मरण सप्तम ३ दुर्भगा अष्टम ३ लक्ष्मी नवम औन्नत्य और सूर्यनक्षत्रसे चौथे ग्यारहवें पचीसवें इन चार स्थानोंके नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र सब अशुभ होतेहैं ॥

दूसरे मत अनुसार ।

इन्द्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयंवारुणंतथा ॥
अश्विनीवसुदैवत्यंपट्टकालेशुभंस्मृतम् ॥

टीका—ज्येष्ठा पुनर्वसु आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी धनिष्ठा ये नक्षत्र धरेजा करनेमें शुभ जानिये ॥

दत्तक पुत्र लेनेका मुहूर्त ।

हस्तादिपञ्चकाभिषग्वसुपुष्यभेषुसूर्येक्षमाजगुरुभार्गववासवेषु ॥
रिक्ताविवर्जिततिथा अलिकुम्भलग्नेसिंहे वृषेभवतिदत्तपरिग्रहोऽयम् ॥

टीका—हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य और

रविवार मंगलवार गुरुवार शुक्रवार ये उक्त हैं और चतुर्थी नवमी चतुर्दशी वृश्चिक कुंभ ये लग्न वर्जित और सिंह वृष ये लग्न शुभ हैं ॥

वास्तुप्रकरण।

ग्रामादिअनुकूल।

ग्रामादेरनुकूलत्वंदिशोभूतग्रहस्यच ॥
मासधिष्ण्यादिशुद्धिंच वीक्ष्यायव्ययभांशकान् ॥

टीका–ग्राम दिशा और भूत ग्रह इनके अनुकूल देखिके मास व नक्षत्र शुद्धि और आय व्यय लग्न अंश शुद्धि शुभ देख लीजिये ॥

ग्रहबल।

गुरुशुक्रार्कचन्द्रेषु स्वोच्चादिबलशालिषु ॥
गुर्वर्केन्दुबलं लब्ध्वा गृहारम्भः प्रशस्यते ॥

टीका–गुरु शुक्र सूर्य चंद्र इनको अपने उच्चादिक स्थानोंमें बलयुक्त देखिके और सूर्य चंद्र गुरु इनका बल पाके गृहका आरंभ करना शुभ है ॥

वर्ज्यं ॥ विवाहोक्तान्महादोषानृतेजामित्रशुद्धितः ॥
रिक्ताकुजार्कवारौच चरलग्नंचरांशकम् ॥

टीका–जामित्र शुद्धि बचाके विवाहके जो दोष कहेहैं वे सब वर्जित हैं और रिक्ता तिथि भौमवार रविवार वा चरलग्न और लग्नोंके अंश वर्जित हैं॥

त्यक्त्वाकुजार्कयोश्चांशंपृष्ठेचाग्रेस्थितंविधुम् ।
बुधेज्यराशिगं चार्ककुर्याद्गेहंशुभाप्तये ॥

टीका–रवि भौमके अंश और पीछे वा आगे स्थित चंद्र वर्जित हैं। मिथुन कन्या धन और मीन इन राशियोंका सूर्य गृहारंभ करनेमें शुभ है ॥

द्वारशुद्धि।

द्वारशुद्धिं निरीक्ष्यादौभशुद्धिंवृषचक्रतः ॥
निष्पञ्चकेस्थिरेलग्नेव्द्यङ्गेवाऽऽलयमारभेत् ॥

टीका–प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्रसे नक्षत्रशुद्धि देखकर पंचकरहित स्थिर वा द्विस्वभाव लग्नमें प्रारंभ कीजिये ॥

ग्रामअनुकूल ।

स्वनामराशेर्यद्राशिर्द्विशराङ्केशदिङ्मितः ॥
सग्रामः शुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोन्यथा ॥

टीका—अपनी राशिसे २ । ५ । ९ । ११ । १० जिस ग्रामकी राशि होय वह शुभ और अन्यथा अशुभ जानिये ॥

एकभेसप्तमेव्योमगृहहानिस्त्रिषष्ठगे ॥
तुर्याष्टद्वादशेरोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखम् ॥

टीका—एक राशि अथवा सप्तम होय तो शून्य तीसरी अथवा सप्तम होय तो गृहकी हानि, चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्मकी होय तो रोग-कारक जानिये और शेष स्थान शुभ हैं ॥

जातक जाननेका क्रम ।

अकचटतपयशवर्गाअष्टौक्रमतः स्मृताः ॥ एकोनखेषुवर्णानां स्वरशास्त्रविशारदैः ॥ अवर्गेषोडशज्ञेयाःस्वराःकादिषुपञ्चसु॥ पञ्चपञ्चैववर्णाःस्युर्यशौतुचतुरक्षरौ ॥

टीका—अवर्गादि सवर्गपर्यन्त ४९ अक्षर हैं तिनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गसे पवर्ग पर्यंत ५ तिनके अक्षर २५ और यश इन दोनों वर्गोंके अक्षर चार ४ होते यह स्वरशास्त्रके ज्ञाता कहते हैं ॥

वर्गोंके स्वामी ।

तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजसूकराः ॥
वर्गेशाःक्रमतोज्ञेयाःस्ववर्गात्पञ्चमोरिपुः ॥

टीका—अवर्गका स्वामी गरुड १ कवर्गका मार्जार २ चवर्गका सिंह ३ टवर्गका श्वान ४ तवर्गका सर्प ५ पवर्गका मूषक ६ यवर्गका गज ७ शवर्गका सूकर ८ इस क्रमसे वर्गोंके स्वामी जानिये और जिस वर्गका अक्षर अपने नामका होय उससे पांचवें वर्गका स्वामी उसका रिपु जानिये और चौथा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये ॥

काकिणी ॥ स्ववर्गद्विगुणंकृत्वापरवर्गेणयोजयेत् ॥
अष्टभिश्चहरेद्भागंयोधिकःसऋणीभवेत् ॥

टीका—अपने नामके वर्गको द्विगुण करे उसमें ग्रामादिकका वर्ग मिलावे और आठका भाग दे पुनि ग्रामादिकका वर्ग द्विगुण करके अपने नामका वर्ग मिलावे पूर्ववत् आठका भाग दे इन दोनोंमेंसे जिसके शेष अधिक बचें सो उसका अर्थात् न्यूनवाले ऋणी जानिये ॥

चंद्रमाके मुख जाननेका विच

वाह्नान्मैत्रान्नगर्क्षस्थेचन्द्रेयाम्योत्तराननम् ॥
पित्र्याद्वासवतस्तद्वत्प्राक्परास्यादृगृहंशुभम् ॥

टीका—कृत्तिकासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख दक्षिणको और अनुराधासे ७ नक्षत्रोंमें चन्द्र होय तो गृहोंका मुख उत्तरको और मघासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पूर्वको और धनिष्ठासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तो गृहोंका मुख पश्चिमका शुभ जानिये ॥

आयादिसाधन ॥ गृहेशकरमानेनगृहस्यायादिसाधयेत् ॥
करैश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ॥

टीका—गृहस्वामीके हस्तमात्रसे अथवा अंगुलीमानकरके छः आयादि साधन करे ॥

क्षेत्रफल ।

विस्तारगुणितंदैर्घ्यंगृहक्षेत्रफलंलभेत् ॥
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तंशेषसायोध्वजादिकः ॥

टीका—ध्वज आदि साधनका प्रकार ॥ चौडाई लंबाई अथवा लंबाई चौडाईको आपसमें गुणनेसे क्षेत्रफल जानिये और उसीमें आठका भाग देवे जो शेष बचे सो ध्वज आदि आय जानिये ॥

आयोंके नाम ॥ ध्वजाधूमोथासिंहःश्वासौरभेयःखरोगजः ॥
ध्वाङ्क्षश्चैनक्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ॥

टीका—ध्वजा १ धूम २ सिंह ३ श्वान ४ बैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ इस क्रम करिके आयाष्टक जानिये ॥

वर्णानुसारउक्तआय ॥ ब्राह्मणस्यध्वजोज्ञेयः सिंहोवैक्षत्रियस्यच ॥
वृषभश्चैववैश्यस्यसर्वेषांतु गजःस्मृतः ॥

टीका-ब्राह्मणको ध्वजा आय, क्षत्रीको सिंह, वैश्यको वृषभ और सब वर्णोंको गज आय उक्त हैं ॥

मतान्तरसे आयोंका फल ।

ध्वजे कृतार्थो मरणंचधूमे सिंहेजयश्चाथशुनिप्रकोपः ॥
वृषेच राज्यंच खरेचदुःखध्वांक्षेमृतिश्चैवगजेसुखंस्यात् ॥

टीका-ध्वज आयका फल कृतार्थ, धूमायका मरण, सिंहायका जय, श्वान आयका कोप, वृषआयका राज्य, खरआयका दुःख, ध्वांक्ष आयका मृत्यु और गजआयका फल सुखप्राप्ति होती ॥

नक्षत्रअनुसार व्ययसाधन ॥ पूर्वद्वारेवृषः श्रेयान् गजः प्राग्य-मदिङ्मुखः ॥ क्षेत्रमष्टाहतंधिष्ण्यैर्विभक्तंस्याद्गृहस्यभम् ॥ भेष्टभक्तेव्ययः शेषमायादल्पोव्ययः शुभः ॥

टीका-पूर्वाभिमुख गृहोंका वृषाय और गजाय श्रेयस्कर होता है और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहोंका गजाय कहा है पूर्वमेंके क्षेत्रफलको आठसे गुणा करे और २७ का भाग दे शेष बचें सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें ८ का भाग दे शेष रहे सो उस ग्रहका व्यय और आयकी अपेक्षा व्यय अल्प होय तो शुभ ॥

गृहोंकी राशि ।

अश्विन्यादित्रयेमेषो मघादित्रितयेहरिः ॥
मूलादित्रितयेधन्वी भद्वयंशेषराशिषु ॥

टीका-गृहोंके अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंकी राशि मेष १ रोहिणी और मृगशिरकी वृष २ आर्द्रा पुनर्वसुकी मिथुन ३ पुष्य आश्लेषा-की कर्क ४ मघा पूर्वा और उत्तराकी सिंह ५ हस्त चित्राकी कन्या ६ स्वाती विशाखाकी तुला ७ अनुराधा ज्येष्ठाकी वृश्चिक ८ मूल पूर्वाषाढाकी धन ९ श्रवण धनिष्ठाकी मकर १० शतभिषा पूर्वाभाद्रपदाकी कुंभ ११ उत्तराभाद्रपदा रेवतीकी मीन १२ इस क्रमसे राशि जानिये ॥

गृहोंके नाम लानेका प्रकार ।

गृहस्यपूर्वतोदिक्षुक्रमात्कक्ष्याब्धिदन्तिनः ॥
संस्थाप्यालिन्दजानङ्कास्तन्मित्याषोडशगृहाः ॥

टीका-गृहोंके पूर्व दिशा क्रमसे अंक स्थापित करे वे ऐसे पूर्वको १ दक्षिणको २ पश्चिमको ४ उत्तरको ८ ऐसे चारों दिशाके अंकमें सालकी संख्या अधिक एक करके मिलावे जो अंक होय सोई नाम गृहका जानिये ॥

गृहोंके नाम ॥ ध्रुवं धान्यंजयंनंदंस्वरं कांतंमनोरमम् ॥
सुमुखंदुर्मुखंक्रूरं रिपुदं धनदंक्षयम् ॥ आक्रंदंविपुलंज्ञेयं
विजयंचेतिषोडश ॥ गृहंध्रुवादिकंज्ञेयंनामतुल्यफलप्रदम् ॥

टीका-और इन गृहोंके ध्रुव धान्य जय इत्यादि सोलह नाम हैं इनका शुभाशुभ नामानुसार जानिये ॥

अंश लानेका प्रकार ॥ व्ययेन संयुतेक्षेत्रेगृहनामाक्षरान्विते ॥
त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषांद्वितीयांशोनशोभनः ॥

टीका-पीछेका जो व्यय होय उसे क्षेत्रफलमें मिलावे और गृहोंके नामके अक्षरसे संयुक्त करिके तीनका भाग दे शेष दो बचे तो अशुभ और एक अथवा पूर्ण भाग लग जानेसे शुभ फल होता है ॥

गृहोंके भाग ॥ नवभागंगृहंकुर्यात्पञ्चभागंतुदक्षिणे ॥
त्रिभागंवामतःकुर्याच्छेषंद्वारंप्रकल्पयेत् ॥

टीका-गृह क्षेत्रके नव भाग कर तिनमेंसे पांच भाग दक्षिणको तीन भाग उत्तरको और एक भाग मध्यमें तिसमें द्वारकी कल्पना करे ॥

गृहोंकेद्वार ॥ द्वारस्योपरियद्द्वारंद्वारस्यान्यच्चसंमुखम् ॥
व्ययदं तु यदातच्च न कर्त्तव्यं शुभेप्सुभिः ॥

टीका-द्वारके ऊपर द्वार और सामने सामनेके द्वार व्ययदायक होते हैं शुभाभिलाषी पुरुषोंको ऐसे वर्जने चाहिये ॥

गृहोंके स्थानोंकी योजनाका प्रकार ।

स्नानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यांपचनालयम् ॥ याम्यायं शय-

नागारं नैर्ऋत्यांशस्त्रमंदिरम् ॥ प्रतीच्यांभोजनागारं वायव्यांपशुमन्दिरम् ॥ भाण्डकोशंचोत्तरस्यामीशान्यांदेवमन्दिरम् ॥

टिका–पूर्वमें स्नानका घर १ अग्निकोणमें रसोईका स्थान ५ दक्षिणमें सोनेका स्थान ३ नैर्ऋत्यमें शस्त्रालय ४ पश्चिममें भोजनस्थान ५ वायव्यमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें भंडारकोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इस प्रकारसे स्थानोंकी योजना करावे ॥

अल्पदोष ॥ अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषायनभवेद्गृहम् ॥
आयव्ययोप्रयत्नेनाविरुद्धं भं च वर्जयेत् ॥

टीका–जिस गृहमें दोष तो अल्प होय परंतु वह बहुत गुणों करके श्रेष्ठ होय तौ दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध होय तौ यत्न करिके वर्जित करे ॥

गृहारंभचक्र ॥ आरम्भे वृषभं चक्रं स्तम्भे ज्ञेयं तुकूर्मकम् ॥
प्रवेशेकालशंचक्रंवास्तुचक्रंबुधैः शुभम् ॥

टीका–गृहारंभमें वृषभचक्र और स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र गृहप्रवेशमें कलशचक्र यह वास्तुचक्रमें देख लीजिये ॥

गृहारंभके मास ॥ सौम्यफाल्गुनवैशाखभाद्रश्रावणकार्तिकाः ॥
मासाःस्युर्गृहनिर्माणेपुत्रारोग्यधनप्रदाः ॥

टीका–पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन महीनोंमें गृहारंभ और शिलान्यास और स्तंभप्रतिष्ठा शुभ जानिये पुत्रलाभ आरोग्यता आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति होय ॥

गृहारंभके मासोंका फल।

शोकोधान्यं पञ्चतानिःपशुत्वं स्वाप्तिर्नैःस्व्यं सङ्गरंभृत्यनाशम् ॥
सच्छ्रीप्राप्तिंवह्निभीतिंचलक्ष्मींकुर्युश्चैत्राद्यागृहारम्भकाले ॥

टीका–चैत्रमासमें शोकप्राप्ति १ और वैशाखमें धान्यप्राप्ति २ ज्येष्ठमें मृत्यु ३ आषाढमें पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें दरिद्र ६ और आश्विनमें कलह ७ और कार्तिकमें भृत्योंका नाश ८ मार्गशीर्षमें धन-

दिशानुसार गृहोंका मुख करना ।

कर्कनक्रहरिकुम्भगतेर्कैपूर्वपश्चिममुखानिगृहाणि ॥
तौलिमेषवृषवृश्चिकयातेदक्षिणोत्तरमुखानिवदन्ति ॥

टीका– कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंका सूर्य होय तौ घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करे तुला मेष वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य होय तौ गृहोंका मुख दक्षिण अथवा उत्तरको करे इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहा है ॥

गृहारंभके नक्षत्र ।

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये ॥ धनिष्ठाद्वितयेपौष्णेगृहारम्भः प्रशस्यते ॥ आदित्यभौमवर्ज्यंतुसर्वेवाराःशुभावहाः ॥ चन्द्रादित्यबलंलब्ध्वा लग्नेशुभनिरीक्षिते ॥ स्तम्भोच्छ्रायस्तुकर्त्तव्योह्यन्यत्तुपरिवर्जयेत् ॥ प्रासादेष्वेवमेवस्यात्कूपवापीषुचैवहि ॥

टीका–तीनों उत्तरा मृग रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शतभिषा रेवती ये नक्षत्र शुभ रवि भौमवार वर्जिके शेष वार शुभ और स्थिर लग्नमें शुभग्रहकी दृष्टि देखे और स्तंभरोपण करावे अन्य कर्मोंको उक्त नहीं. देवालय कूप तडाग वापी इन कृत्योंको शुभ जानिये ॥

वृषचक्र ।

त्रिवेदाब्धित्रिवेदाब्धिद्वित्रिमेष्वर्कतः शशी ॥ कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्वासंस्थैर्यंलक्ष्मीं दारिद्रताम् ॥ धनं हानिंक्रमान्मृत्युमारम्भे वृषचक्रम् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनमें प्रथम भाग ३ नक्षत्र लक्ष्मीदायक दूसरा भाग ४ उद्वास तृतीय भाग ४ स्थिरताकारक चतुर्थ भाग ३ लक्ष्मी पंचम भाग ४ दरिद्रता षष्ठ ४ धनदायक सप्तम भाग २ नक्षत्र हानिकारक अष्टम ३ नक्षत्र मृत्यु इस क्रमसे जिस दिनका नक्षत्र शुभफलदायक हो उसीमें गृहारंभ करावे ॥

शिलान्यास ॥ दक्षिणपूर्वेकोणेकृत्वापूजांशिलां न्यसेत् प्रथमाम् ॥
शेषाः प्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवंप्रतिष्ठाप्याः ॥

टीका–पूजन करिके आग्नेय कोणमें प्रथम शिला स्थापन करे शेष शिला प्रदक्षिणमें स्थापित करावे इसी प्रकार स्तंभस्थापनभी करे ॥

शिलान्यासनक्षत्र ॥ शिलान्यासः प्रकर्त्तव्योगृहाणांश्रवणेमृगे॥
पौष्णेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥

टीका–श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा इनमें शिलान्यास कर्त्तव्य है ॥

शेषोंके मुख ।

कन्यासिंहेतुलायांभुजगपतिमुखं शम्भुकोणेऽग्निखातं ।
वायव्ये स्यात्तदास्यंत्वलिधनमकरे ईशखातंवदन्ति ॥
कुम्भे मीने च मेषेनिर्ऋतिदिशि मुखंखातवायव्यकोणे ।
चाग्नेये कोणे मुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ॥

टीका–कन्या तुला सिंह इन लग्नोंमें शेषके मुख ईशान्य कोणको जानो तो अग्निकोणमें खात करावे । वृश्चिक धन मकर इन लग्नोंमें शेषके मुख वायव्यको तिनमें ईशान्यको खात करावे । कुंभ मीन मेष इन लग्नोंमें शेषके मुख नैर्ऋत्यको तिनमें वायव्यकोणमें खात करावे । वृष मिथुन कर्क इनमें शेषके मुख आग्नेयको तिनमें नैर्ऋत्यको खात करावे ॥

दुष्टयोग ॥ वज्रव्याघातशूलश्चव्यतीपातश्चगण्डकः ॥
विष्कम्भपरिघोवर्ज्योवारोमंगलभास्करो ॥

टीका–वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गंड विष्कंभ परिघ और भौम रविवार ये वर्जित हैं ॥

कूर्मचक्र ।

तिथिस्तु पञ्चगुणिता कृत्तिकाद्यृक्षसंयुता ॥ तथाद्वादश मिश्राचनवभागेनभाजिता ॥ फल ॥ जले वेदामुनिश्चन्द्रः स्थलेपंचद्वयंवसुः ॥ त्रिषट्कनवचाकाशं त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥ जलेलाभस्तथाप्रोक्तःस्थले हानिस्तथैवच ॥ आकाशेमरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥

टीका—गृहारंभकी तिथियोंको पांचसे गुणा करे और कृत्तिका नक्षत्रसे लेकर दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्याको उस गुणन फलमें मिलावे फिर १२ और उसीमें मिलावे नवका भाग दे जो ७ । ७ । १ शेष रहें तो कूर्म जलस्थानमें जानिये ताको फल लाभ और ५ । २ । ८ बचें तौ कूर्म स्थलमें जानिये तिसका फल हानि और ३ । ६ । ९ शेष बचें तो कूर्म आकाशमें जानिये तिसका फल मरण ये तीनों प्रकारका कूर्म कहा है ॥

स्तंभचक्र ॥ सूर्याधिष्ठितभद्वयंप्रथमतो मध्येतथाविंशातिः स्तम्भाग्रे रससंख्ययामुनिवरैरुक्तंमुहूर्त्तंशुभम् ॥ फल ॥ स्तम्भाग्रेमरणंभवेद्गृहपतेर्मूले धनार्थक्षयोमध्येचैवतुसर्वसौख्यमतुलंप्राप्नोतिकर्त्तासदा ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम तिसमें प्रथम दो २ नक्षत्र स्तंभमूल तिसका फल धनक्षय और द्वितीय २० नक्षत्र स्तंभके मध्यमें तिसका फल लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्ति तृतीय ६ नक्षत्र स्तंभके अग्रभागमें तिसका फल मृत्यु जानिये ऐसे शुभ फल देखके स्तंभारोपण करावे ॥

देहलीका मुहूर्त्त ॥ मूले मोभेत्रिऋक्षंगृहपतिमरणं पञ्चगर्भे सुखंस्यात् मध्येदेयाष्टऋक्षंधनसुखसुखदं पुच्छदेशेष्टहानिः ॥ पश्चाद्देयंत्रिऋक्षंगृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यर्क्षाच्चन्द्रऋक्षंप्रतिदिनगणयेन्मोभचक्रंविलोक्य ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्या और फल ऐसे क्रमसे जाने प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें तिसमें स्तंभारोपण करे तो मृत्यु द्वितीय ५ नक्षत्र गर्भमें फल सुख तीसरे ८ नक्षत्र मध्यमें फल धन सुत सुख चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छभाग फल मित्रहानि पञ्चम ३ नक्षत्र अग्रभागमें फल सुख भोग पुत्रलाभ ऐसे शुभफल हैं ॥

द्वारचक्र ॥ अर्काच्चत्वारिऋक्षाणिऊर्ध्वेचैवप्रदापयेत् ॥ द्वौ द्वौकोणेषु दद्याद्वैशाखायां च चतुश्चतुः ॥ अधश्चत्वारिदेयानि मध्येत्रीणि प्रदापयेत् ॥ ऊर्ध्वेतु लभते राज्यमुद्वासं कोणकेषुच ॥ शाखायांलभतेलक्ष्मींमध्येराज्यप्रदंतथा ॥ अधःस्थे मरणं प्रोक्तंद्वारचक्रंप्रकीर्तितम् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम, तिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व तिनका फल राज्यप्राप्ति, द्वारकोण चार तिनमें प्रतिकोणमें नक्षत्र तिनका फल उद्वासन, बाजू दो तिनमें नक्षत्र चारि तिनका फल लक्ष्मी और नीचे नक्षत्र ४ फल राज्य, मध्यमें नक्षत्र ३ तिनका फल मरण यह जानिये ॥

शांतिका अग्निचक्र ।

सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणेभ्रे भुवि वह्निवासः ॥
सौख्याय होमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ॥

टीका–जिस तिथिको शांति करनी होय तिसमें एक मिलावे और जो वार होय सो अंक मिलावे ४ का भाग दे शेष रहे तिसका फल तीन अथवा शून्य बचें तो अग्नि मृत्युलोकमें जानिये तिसका फल सुखप्राप्ति और उसमें शांति करनीभी शुभ है और एक शेष रहे तो अग्नि स्वर्गमें तिसका फल प्राणनाश और दो बचें तो पातालमें तिसका फल धननाश होय ॥

ग्रहके मुखमें आहुतिका विचार ।

तरणिविद्भृगुभास्करिचन्द्रमःकुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः ॥
रविभतो दिनभं गणयेत्क्रमात्प्रतिखगं त्रितयं त्रितयं न्यसेत् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र जितने नक्षत्र होंय तिनका इस क्रमसे फल जानिये प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य फल अशुभ, द्वितीय भाग ३ न० बुध शुभ तृतीय भाग ३ न० शनि फल अशुभ राहुके फिर ६ न० चंद्रके फिर ३ न० भौमके फिर ३ न० गुरुके तिस पीछे ३ न० राहुके फिर ३ न० केतुके इसमें शुभ ग्रहके शुभ पाप ग्रहके अशुभ जानिये ॥

गृहप्रवेशका मुहूर्त ।

अथ प्रवेशो नवमन्दिरस्य यात्रानिवृत्तावथ भूपतीनाम् ॥
सौम्यायने पूर्वदिने विधेयं वास्त्वर्चनं भूतबलिश्च सम्यक् ॥

टीका–यात्रा और राजदर्शनके मुहूर्तमें उत्तरायण सूर्य होय और प्रवेशके प्रथम दिवसमें वास्तुपूजा और भूत बलि करके गृहप्रवेश योग्य है ॥

चित्रानुराधामृगपौष्णपुष्यस्वातीधनिष्ठाश्रवणं च मूलम् ॥

वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौप्रशस्तोभवनप्रवेशः ॥

टीका—चित्रा अनुराधा रेवती पुष्य स्वाती धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथिको त्यागिके गृहप्रवेश कीजिये ॥

कलशचक्र ॥ प्रवेशः कलशेर्कर्क्षात्पञ्चनागाष्टषट्क्रमात् ॥
अशुभंचशुभं ज्ञेयमशुभंचशुभंतथा ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जो नक्षत्र हो उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और आठ नक्षत्र शुभ आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ ऐसे कलशचक्र जानिये ॥

वामार्कलक्षण ॥ रन्ध्रात्पुत्राद्धनादायात्पञ्चस्वर्केस्थितेक्रमात् ॥
पूर्वाशादिमुखं गेहंविशेद्वामोभवेदतः ॥

टीका—घरमें प्रवेश करनेके समय सूर्य वामार्क होय तिसका जाननेका क्रम प्रवेश लग्नोंमें अष्टमस्थानमें पंचमस्थानमें सूर्य होय और घरका द्वार पूर्व तथा दक्षिणकी ओरको होय तिसका स्थान० या० पंचमस्थान पर्यंत और घरका मुख पश्चिमको होय २ स्थान० या० पंचमस्थान पर्यंत ३ अथवा गृहोंका मुख उत्तरको होय तो सूर्य ११ स्थान ५ स्थानों तक आवे प्रवेशमें वामार्कयुक्त है॥

शुभाशुभग्रह और लग्न ॥ त्रिकोणकेन्द्रगैःशुभैस्त्रिषष्ठलाभसंस्थितैः॥
असद्ग्रहैः स्थिरोदयेगृहंविशेद्बलेविधौ ॥

टीका—त्रिकोण और केंद्रस्थानमें शुभग्रह होय ऐसी स्थिर लग्न देखिके और तीसरे छठे तथा लाभस्थानमें पापग्रह होय तो बली चंद्रमामें गृहप्रवेश करना शुभ जानिये ॥

गृहारम्भकी लग्नशुद्धि ॥ त्रिषडायगतैः पापैरष्टान्त्येन्तरगैः शुभैः ॥
चन्द्रेलग्नेऽरिरन्ध्रान्त्यवर्जितेस्याच्छुभंगृहम् ॥

टीका—३ । ६ । ११ स्थानमें पापग्रह शुभ और ८ । १२ स्थानमें इतरस्थानोंमें शुभग्रह होय तो शुभ जानिये परंतु चंद्रमा लग्न तथा षष्ठ द्वादश अष्टमस्थानमें न होय ॥

अशुभयोगोंके लग्न ॥ धनकेन्द्रत्रिकोणस्थःक्षीणश्चन्द्रोन शोभनः ॥
शत्रोर्नवांशगः खेटः खास्तसंस्थोपिनोशुभः ॥

टीका—लग्नविषे २ । ३ । ४ । ७ । १० । ५ । ९ स्थानोंमें क्षीणचंद्र स्थित होय तो अशुभ है और स्वराशिका शत्रुनवांशकमें होय तौभी अशुभ है क्षीणचंद्र कृष्णपक्षकी पंचमीसे जानो ॥

आयुष्यप्रमाण ॥ लग्नेजीवः सुखेशुक्रोबुधः कर्मण्यरोरविः ॥
शविजःसहजेनूनंशतायुः स्यात्तदागृहम् ॥

टीका—लग्नमें बृहस्पति ४ शुक्र ६ बुध १० सूर्य ६ शनि ३ ऐसी लग्नमें गृहारंभ करनेसे उस गृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जाननी ॥

दूसरा प्रकार ॥ भृगुर्लग्नेबुधोव्योम्निलाभेऽर्कःकेन्द्रगो गुरुः ॥
यस्यारम्भेचतस्यायुर्वत्सराणांशतद्वयम् ॥

टीका—शुक्र लग्नमें और बुध १० स्थानमें ११ रवि और १।४।७।१० ऐसी लग्नमें गृह आरंभ करावे तो २०० वर्षकी आयु कहिये ॥

अन्यच्च ॥ जीवोबुधोभृगुर्व्योम्नि लाभगोभानुभूमिजौ ॥
प्रारम्भेयस्यतस्यायुः समाशीतिः सहश्रिया ॥

टीका—गुरु बुध शुक्र ये १० स्थानमें ११ रवि भौम होय तो लक्ष्मीयुत घरकी ८० वर्षकी आयु जाननी ॥

स्वोच्चवर्तिनिभृगौविलग्नगेदेवमन्त्रिणिरसातलेऽथवा ॥
स्वोच्चगेरविसुतेऽथवाऽऽयगेस्यात्स्थितिश्चसुचिरंसहश्रिया ॥

टीका—लग्नमें उच्चका शुक्र होके बैठा हो गुरु ४ होय उच्चका वा स्वक्षेत्री होके ११ स्थानमें हो तो लक्ष्मीयुक्त चिरकाल घरकी आयु कहना ॥

स्वर्क्षगेहिमगौलाभेसुरेज्येकेन्द्रसंस्थिते ॥
धनधान्यसुतारोग्ययुक्तंधामचिरंभवेत् ॥

टीका—कर्कका चन्द्रमा ११ स्थानमें और गुरु केंद्रमें १ । ४ । ७ । १० होय तो वह गृह धनयुक्त और सुत आरोग्यसहित चिरकाल रहे ॥

दूसरे मतसे पृथ्वी शोधनेका प्रकार ।

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथमंस्फुटीभवेत् ॥

वर्गादिवर्णः किलतद्दिशिस्मृतंशल्यंमुनीन्द्रैर्हपयास्तुमध्यतः ॥ स्मृत्वेष्टदेवतांप्रष्टुर्वचनस्याद्यमक्षरम् ॥ गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यंसम्यग्विचार्यते ॥

टीका—कुंडके निमित्त अर्थात् नूतन गृहके बनानेको प्रथम भूमि शोधनेका प्रकार—पृच्छक इष्टदेवताका स्मरण करके ब्राह्मणसे प्रश्न करे उसके मुखसे आदि अक्षर जिस वर्गका निकले तिसके उत्तर अक चट तप यह वर्ग पूर्वादि अष्टदिशाओंमें मध्यभागी हपय वर्गोंके आदि अक्षर जहां होवैं उस स्थानमें अमुक शल्य है तिसका प्रकार नीचे लिखा है जिसमेंसे उन २ स्थानोंका फल जानिये ॥

प्रश्नअक्षरफल ।

पूर्व ॥ पृच्छायांयदिअःप्राच्यांनरशल्यंतदाभवेत् ॥ सार्धहस्तप्रमाणेनतच्चमानुष्यमृत्युकृत् ॥ आग्नेय ॥ आग्नेय्यांदिशिकः प्रश्नेखरशल्यंकरद्वयम् ॥ राजदण्डोभवेत्तत्रभयंनैवनिवर्तते दक्षि० ॥ याम्यायांदिशिचः प्रश्नेतदास्यात्कटिसंस्थितम्॥ नरशल्यंगृहेतस्यमरणंचिररोगतः ॥नै०॥ नैर्ऋत्यांदिशि टः प्रश्नसार्धहस्तादधःस्थले॥ शुनोस्थिजायतेतत्रबालानां जायते मृतिः ॥प०॥ तः प्रश्नेपश्चिमायांतुशिशोःशल्यंप्रजायते ॥ सार्धहस्ते गृहस्वामीनतिष्ठातिसदागृहे ॥ वाय० ॥ वायव्यांदिशिपः प्रश्नेतुषाङ्गाराश्चतुष्करे ॥ कुर्वन्तिमित्रनाशंच दुःस्वप्नदर्शनंसदा ॥ उत्तर ॥ उदीच्यांदिशियःप्रश्नेविप्रशल्यं कराधः ॥ तच्छीघ्रंनिर्धनत्वायकुबेरसदृशस्यहि ॥ ई० ॥ ईशान्यायदिशः प्रश्नेगोशल्यंसार्द्धहस्ततः ॥ तद्गोधनस्यनाशाय जायतेगृहमेधिनः ॥ मध्यभाग ॥ हपयामध्यकोष्ठेचवक्षोमात्रं भवेदधः ॥ नृकपालमथोभस्मलोहंतत्कुलनाशकृत् ॥

टीका—पृच्छकके मुखसे आदि अक्षर अवर्गका निकले तौ पूर्वको डेढ हाथ गहरा खोदै तौ मनुष्यकी हड्डी निकले वह मृत्युकारक जानिये १ (क)

निकले तो २ हाथके गहरावमें गद्हेकी हड्डी निकले उससे राजदंडका भय कभी निवृत्त न होय २ (च) अक्षरका उच्चारण होय तो दक्षिणकी ओर कटि बराबर खोदनेसे नरके अस्थि निकलें तिसका फल चिरकालके रोगसे मरण ३ (ट) का उच्चार होय तो नैर्ऋत्य दिशामें डेढहाथ औंडा खोदनेसे कुत्तेकी अस्थि निकलें तिसके फल बालक न जीवे ४ (त) का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशामें डेढ हाथके गहरावमें बालककी अस्थि निकलें तिसका फल गृहका स्वामी सदा घरमें न रहे ५ (प) होय तो वायव्य दिशामें ४ हाथपर जली हुई धातुकी भूंसी वा कोयले निकलें तिसका फल मित्रनाश दुःस्वप्नदर्शन ६ (य) वर्ग होय तो एक हाथपर उत्तर कोणमें ब्राह्मणके हाथ निकलें तिसका फल कुबेर समानभी धनाढ्य दरिद्री होय ७ (श) होय तो ईशान दिशामें डेढ हाथपर गौकी अस्थि निकलें तिसका फल गोधनका नाश ८ (ह प य) होय तो मध्य भागमें छाती बराबर औंडेमें मनुष्यका कपाल वा भस्म वा लोह निकले तिसका फल कुलका नाश ९ जिस वर्गका नाम प्रश्नकर्ताके मुखसे उच्चारण होय उसी दिशाको देखें ॥

यात्राप्रकरण ।

शुक्रसंमुख ॥ एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्रविप्लवे ॥
विवाहेतीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रोनविद्यते ॥

टीका—गांवके गांवमें अथवा शहरके शरहमें दुर्भिक्षकालमें तथा देशोपद्रवमें विवाह समयमें और तीर्थयात्रामें सन्मुख शुक्र होय तो दोष नहीं है ॥

पौष्णादावाग्निपादान्तं यावत्तिष्ठतिचन्द्रमाः ॥
तावच्छुक्रोभवेदन्धः सन्मुखंगमनंशुभम् ॥

टीका—रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंके प्रथम चरणमें चन्द्रमा होनेसे शुक्र अंध होता है इसके सन्मुख गमनमें दोष नहीं है ॥

शुभाशुभफलम् ॥ दक्षिणेदुःखदःशुक्रःसंमुखोहान्ति मङ्गलम् ॥
वामेपृष्ठेशुभोनित्यंरोधयेदस्तगःशुभः ॥

टीका—गमन (यात्रा) में दाहिना शुक्र हो तो दुःखदायक संमुख कार्य-

नाशक और वाम भागमें पीछेका शुक्र मंगलदायक और पूर्वमें अस्त हो तो पश्चिमको गमन शुभ और पश्चिममें अस्त होय तो पूर्वमें शुभ गमन जानिये ॥

घातचंद्रनिर्णयः ॥ प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौवाणिज्यसंग्रहे ॥
वादेचैवगृहारम्भेवर्जितोघातचन्द्रमाः ॥

टीका--यात्रा युद्ध खेतकर्ममें व्यापार अन्न आदि भरनेमें विषाद गृहके आरंभमें घात चंद्रमा वर्जित है ॥

घातप्रकरणम् ॥ घाततिथिंघातवारंघातनक्षत्रमेवच ॥
यात्रायांवर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम् ॥

टीका--घाततिथि घातवार घातनक्षत्र यात्रामें वर्जित हैं और कार्योंमें शुभ हैं॥

मेषेरविर्मघाप्रोक्ताषष्ठीप्रथमचन्द्रमाः ॥ वृषभेपञ्चमोहस्तश्च-तुर्थीशनिरेवच ॥ मिथुनेनवमःस्वातीअष्टमीचंद्रवासरः ॥ क-र्केद्विरनुराधाचबुधःषष्ठीप्रकीर्तिता ॥ सिंहेषष्ठश्चन्द्रमाश्वदश-मीशनिमूलके ॥ कन्यायांदशमश्चन्द्रःश्रवणःशनिरष्टमी ॥ तुलेगुरुर्द्वादशीस्याच्छतंतृतीयचन्द्रमाः ॥ वृश्चिकेरेवतीसप्तद-शमीभार्गवस्तथा ॥ धनेचतुर्थीभरणी द्वितीयाभार्गवस्तथा ॥ मकरेष्टमीरोहिणीद्वादशीभौमवासरः ॥ कुम्भेएकादशश्चार्द्रा चतुर्थीगुरुवासरः ॥ मीनेचद्वादशः सार्पद्वितीयाभार्गवस्तथा ॥

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
नक्षत्र	म.	ह.	स्वा	अ.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ	आ
तथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

मेषादि १२ राशिघात चंद्रादि चतुष्टय बचाकर यात्रामें शुभनक्षत्र आदि देखले॥

कालचंद्र ॥ मेषेवेदावृषेऽष्टौचमिथुनेचतृतीयकः ॥ दशकर्के रविः सिंहेकन्याअङ्कःप्रकीर्तितः ॥ षट्तुलेवृश्चिकेखेन्दुर्धनेरु-द्राः प्रकीर्तिताः ॥ मकरेत्रयःप्रोक्ताः कुम्भेबाणाउदाहृताः ॥

मीनेत्वङ्घ्रिः कालचन्द्राः शौनकश्चेदमब्रवीत् ॥

टीका—मेषराशिको ४ वृषको ८ मिथुनको ३ कर्कको १० सिंहको १२ कन्याको ९ तुलाको ६ वृश्चिकको १० धनको ११ मकरको ७ कुंभको ५ मीनको ४ चौथा चंद्रमा कालचंद्र जानिये कालचंद्र शौनक ऋषि प्रोक्त सर्व कर्मोंमें वर्जित है ॥

तिथिपरत्वसे वर्जित लग्न ।

नन्दायामलिसिंहयोस्तुतुलामकरयोस्तथा ॥ भद्रायांमीनधनुषोःकालस्तिष्ठतिसर्वदा ॥ जयायांस्त्रीमिथुनयोरिक्तायां मेषकर्कयोः ॥ पूर्णायांकुम्भवृषयोर्मनुष्यमरणंध्रुवम् ॥

टीका—नंदातिथिको वृश्चिक सिंह तुला मकर और भद्रातिथिको मीन धन और जया तिथिको कन्या मिथुन और रिक्ता तिथिको मेष कर्क पूर्णा तिथिको कुंभ वृष इन तिथियोंमें लग्न वर्जित हैं ॥

यात्राके नक्षत्र ।

हस्तेन्दुमैत्रश्रवणाश्विनितिष्यपौष्णश्राविष्ठाचपुनर्वसुश्च ॥
प्रोक्तानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपञ्चादिमसप्ततारा: ॥

टीका—हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र प्रयाणमें उक्त हैं परंतु ३।५।१।७ ये तारा गमनमें वर्जित हैं ॥

मध्यनक्षत्र ॥ रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ॥
षाढोत्तराभाद्रविश्वे प्रयाणेमध्यमाः स्मृताः ॥

टीका—रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उत्तरापाढा ये नक्षत्र यात्रामें मध्यम हैं ॥

वर्ज्यनक्षत्र ।

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका ॥ सार्पस्वातीविशाखाचनित्यंगमनवर्जिता ॥ कृत्तिकाएकविंशत्या भरण्यासप्तनाडिका: ॥ एकादशमघायाश्चत्रिपूर्वाणांचषोडश ॥ विशाखासार्पचित्रासुस्वातीरौद्रचतुर्दशी ॥ आद्यास्तुघटिकास्त्याज्याः शेषांशेगमनंशुभम् ॥

टीका—इन नक्षत्रोंको प्रयाणकालमें वर्जित करे परंतु जो कुछ आवश्यक काम व संकट आन पडे तो तीनों पूर्वाकी १६ घटिका मघाकी ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणीकी ७ घटिका कृत्तिकाकी २१ जन्मनक्षत्र संपूर्ण आश्लेषा विशाखा चित्रा स्वाती आर्द्रा इन नक्षत्रोंकी आद्य १४ घटिका वर्जिके प्रयाण करे ॥

प्रयाणमें शुभाशुभ विचार ॥ अर्केक्लेशमनर्थकंचगमने सोमे चबन्धुप्रियं चाङ्गारेऽनलतस्करज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थंबुधे ॥ क्षेमारोग्यसुखंकरोतिचगुरौ लाभश्चशुक्रेशुभोमन्देबन्धनहानि रोगमरणान्युक्तानिगर्गादिभिः ॥

टीका—रविवारको गमन करे तो मार्गमें क्लेश और अर्थकी हानि होय सोमवारको गमन करे तो बंधु और प्रियदर्शन मंगलमें अग्नि चोर भय और ज्वरप्राप्ति बुधवारमें द्रव्य और सुखप्राप्ति गुरुवारमें आरोग्य और सुख शुक्रवारमें लाभ और शुभ फलप्राप्ति शनिवारमें बंधन रोग और मरण प्राप्ति होय॥

होराकथन व शकुन ।

वारात्षष्ठस्यषष्ठस्य होरासार्द्धद्विनाडिका ॥ अर्कशुक्रोबुधश्चन्द्रोमन्दोजीवोधरासुतः ॥ गुरुर्विवाहेगमनेचशुक्रोबोधसौम्यः सर्वकार्येषुचन्द्रः ॥ कुजेचयुद्धंरविराजसेवामन्देचवित्तं इति होरयोगाः ॥ यस्यग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम् ॥ तस्य ग्रहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते ॥

टीका—जिस वारका होरा होय उसीमें प्रथम २ घटिका होरा तिसके छठें वारको दूसरा होरा इस क्रमसे दिवसके वार होरा जानिये २ रविवारका होरा राजसेवाको शुभ द्वितीय २ शुक्रका गमनको तृतीय बुधका ज्ञानप्राप्ति चतुर्थ चंद्रका सर्वकार्यको, पंचम शनिका द्रव्यसंग्रहको योग्य. छठा गुरुका विवाहको सातवां मंगलका युद्धको जानिये इस प्रमाण होराका क्रम जानिये ॥ और जिस २ ग्रहका जो २ वार तिसमें कथित कृत्य उसके होरामें करावे ॥

सूर्यका होरा ॥ सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयं च ॥ काकत्रयंद्वौनकुलौ तथैव चापस्तथैको वृषभश्चगोश्च॥

टीका-रविके होरामें गमन करे तौ आगे जो शकुन होंय तिनको कहते हैं रजकी, वस्त्र, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, दो न्यौला, दो चाष, पुष्ट बैल और गायके शकुन मिलें ॥

चंद्रका होरा।

चन्द्रस्यहोरेद्विजयुग्मकाकभेरीमृदङ्गानकुला खरोष्ट्रौ ॥
हयश्वगोमेषशुनस्तथैवपुष्पाणिनारीद्वयमेवमार्गे ॥

टीका-चंद्रमाके होरामें गमन करे तौ मार्गमें दो ब्राह्मण और काक नगारे मृदंग और न्योला गर्दभ ऊंट घोडा गाय मेंढा कुत्ता और पुष्प दो स्त्रियां ये शकुन मिलें ॥

मंगलका होरा।

मार्जारयुद्धंकलहःकुटुंबेरजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ॥
नपुंसकश्चत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्तोधरणीसुतस्य ॥

टीका-मंगलके होरामें गमन करे तो मार्जारयुद्ध अथवा स्त्रीपुरुषोंका कलह अथवा रजस्वला स्त्री अथवा जलता हुआ घर किंवा नपुंसक तीन कुत्ता किंवा नग्न ब्राह्मण भेंटे ॥

बुधका होरा।

बुधस्यहोरेशकुनस्यसर्वः स्त्रीपुत्रयुक्ताकलशस्तुपूर्णः ॥
सुचातकश्चाषगजोकुमारः पुष्पाणिनारीखलुदर्पणश्च ॥

टीका-बुधके होरामें सर्व शकुन स्त्री पुत्रयुत, पानी भरा हुआ कलश, चातक पक्षी वा चाषपक्षी, गज किंवा बाल, पुष्प, स्त्री, दर्पण ये मार्गमें मिलें॥

गुरुका होरा।

गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुः स्त्रीबालयुक्तासजलोघटस्तु ॥
ऊर्णाचकाकोनकुलोबकश्चहंसस्यराजावहवस्तुवैश्याः ॥

टीका-गुरुके होरामें ब्राह्मण गणिका अथवा गाय पुत्रसहित स्त्री जलपूर्ण घट शाल अर्थात् ऊनवस्त्र काक न्योला बगला हंसका राजा किंवा बहुत वैश्य मिलें ॥

शुक्रका होरा ।

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेन्द्रः काकत्रिपश्चाथनपुंसकोवा ॥
मद्यंहिमांसंगणिकाचधेनुर्धान्यंचशूद्रत्रितयंचवैश्यः ॥

टीका-शुक्रके होरामें ब्राह्मण गणिका ३ काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीन शूद्र वैश्य ये मिलें ॥

शनिका होरा ।

पतङ्गसूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्रीमृतकस्तथैव ॥
पिशाचगृध्रोविधवाजवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचण्डः ॥

टीका-शनिके होरामें नग्न मुसलमान, रजस्वला स्त्री, प्रेत, पिशाच, गृध्र पक्षी, विधवा स्त्री, अग्नि, नपुंसक तथा प्रचंड तरुण पुरुष ये शकुन मिलें ॥

उत्तम प्रश्न न होय तो ।

मनुका वाक्य ॥ गमनंप्रतिराजंस्तु सन्मुखादर्शनेनच ॥
प्रशस्तांश्चैव संभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्तयेत् ॥

टीका-राजाप्रति कहते हैं गमनकालमें पूर्वोक्त शकुनोंका कीर्तन किंवा उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न होय तो मनमें स्मरण करिके गमन करे तो शुभ होय ॥

वारानुसार वस्त्रधारण ।

रवौ नीलं बुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ॥
श्वेतं गुरोर्भृगो भौमेरक्तंसोमेतुचित्रकम् ॥

टीका-रविवारको नीले वस्त्र धारण करे बुधवारको पीत शनिवारको काले गुरु व शुक्रको श्वेत मंगलको रक्त सोमवारमें चित्र इस प्रकार वस्त्र धारण करके गमन करे ॥

नक्षत्रतिथिवार अनुसार दिक्शूलवर्ज्य पूर्वदिशा ।

मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नवमीषुच ॥
शनौसोमेबुधे चैव पूर्वस्यांगमनं त्यजेत् ॥

टीका—मूल श्रवण ज्येष्ठा ये नक्षत्र प्रतिपदा नवमी तिथि और शनि सोम बुध वार इनमें पूर्व दिशाको गमन न कीजिये ॥

दक्षिणदिशा ॥ पूर्वाभाद्रपदाश्विन्योपञ्चमीचत्रयोदशी ॥
गुरुर्धनिष्ठाद्र्राचैवयाम्येसप्तविवर्जयेत् ॥

टीका—पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी नक्षत्र और पंचमी त्रयोदशी तिथि गुरुवार धनिष्ठा इनमें दक्षिण दिशाको गमन न कीजिये ॥

पश्चिम ॥ रोहिण्यांचतथापुष्येषष्ठींचैवचतुर्दशी ॥
भौमार्कगुरुवारेषुनगच्छेत्पश्चिमांदिशम् ॥

टीका—रोहिणी पुष्यनक्षत्र षष्ठी चतुर्दशी तिथि रवि गुरुवार इनमें पश्चिम दिशाको गमन न कीजिये ॥

उत्तर ॥ करेचोत्तरफाल्गुन्यांद्वितीयांदशमींतथा ॥
बुधेरवौ भौमवारे नगच्छेदुत्तरांदिशम् ॥

टीका—हस्त उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र २ । १० तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तरदिशाको गमन न कीजिये ॥

विदिक्शूल ॥ ईशान्यांज्ञेशनौशूलआग्नेय्यांगुरुसोमयोः ॥
वायव्यांभूमिपुत्रेतुनैर्ऋत्यांशुक्रसूर्ययोः ॥

टीका—वारानुसार विदिशाओंका शूल होता है तिसमें गमन न कीजिये बुध और शनिवारमें ईशान्य दिशाको, गुरु और सोमवारमें आग्नेयको और मंगलमें वायव्यको, शुक्र और रविवारमें नैर्ऋत्यको गमन वर्जित है ॥

शूलदोषनिवारणार्थं भक्षण ।

सूर्यवारेघृतंपीत्वा गच्छेत्सोमेपयस्तथा॥ गुडमङ्गारवारे तु बुधवारेतिलानपि ॥ गुरुवारेदधिज्ञेयं शुक्रवारेयवानपि ॥ माषान्भुक्त्वाशनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ॥

टीका—रविवारको घी और सोमवारको दूध पीवे, मंगलको गुड, बुधको तिल, गुरुको दधि, शुक्रको यव, शनिवारको उरदकी वस्तु खाय ऐसे भक्षण करके गमन करे ॥

कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जित कर्म ।

शय्यावितानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणाजिनम् ॥
याम्यादिग्गमनंकुर्यान्नचन्द्रेकुम्भमीनगे ॥

टीका—पलंग बुनवाना और प्रेताग्नि क्रिया और तृणकाष्ठादिसंग्रह और दक्षिणको गमन ये सकल कर्म कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जित हैं ॥

संमुखचंद्रविचार ॥ करणभगणदोषंवारसंक्रान्तिदोषंकुतिथिकुलिकदोषंवामयामार्द्धदोषम् ॥ कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषंहरतिसकलदोषंचन्द्रमाः संमुखस्थः ॥

टीका—करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्द्ध मंगल शनि रवि राहु आदि दोषोंको सम्मुखस्थ चंद्रमा गमन करनेसे दूर करता है ॥

दिशानुसार संमुखचंद्रमाविचार ।

मेषेचसिंहेधनपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेचयाम्ये ॥ तुलेचकुम्भे मिथुनेप्रतीच्यांकर्कालिमीनेदिशिचोत्तरस्याम् ॥ फल ॥ संमुखश्चार्थलाभायदक्षिणेसुखसंपदः ॥ पृष्ठतः प्राणनाशाय वामेचन्द्रेधनक्षयः ॥

टीका—मेष सिंह धन इन राशियोंका चंद्रमा पूर्वमें है और वृष कन्या मकरका दक्षिणमें, तुला कुंभ मिथुनका पश्चिममें, कर्क वृश्चिक मीनका उत्तरमें वास करता है ॥ फल ॥ दिशानुसार सम्मुख चंद्रमा होते गमन करे तो अर्थलाभ होय और दाहिना होय तो धनसंपत्तिकी प्राप्ति होय और पृष्ठभागमें चंद्रमा होय तो प्राणनाश और वामभागी होय तो धनक्षय जानिये ॥

कालवेलाविचार ॥ पूर्वाह्णेचोत्तरांगच्छेत्प्राच्यांमध्याह्नकेतथा ॥
दक्षिणे अपराह्णेतुपश्चिमेअर्धरात्रके ॥

टीका—दिवसके प्रथम प्रहरमें उत्तरको, दूसरे प्रहरमें तथा मध्याह्नमें पूर्वको, तीसरे प्रहरमें दक्षिणको और अर्द्धरात्रिमें पश्चिमको गमन करे ॥

योगिनीवास ॥ प्रतिपन्नवमीपूर्वेद्वितीयादशचोत्तरे ॥ तृतीयेकादशीवह्नौचतुर्द्वादशिनैर्ऋते ॥ पञ्चत्रयोदशीयाम्येषष्ठीभूतं चपश्चिमे ॥ सप्तमीपूर्ववायव्येअमावास्याष्टमीशिवे ॥ फल ॥ पृष्ठेचशिवदाप्रोक्तावामेचैवविशेषतः ॥ योगिनीसा भवेन्नित्यंप्रयाणेशुभदानृणाम् ॥

टीका–प्रतिपदा और नवमीको पूर्वमें द्वितीया और दशमीको उत्तरमें तीज और एकादशीको आग्नेयमें चौथि और द्वादशीको नैर्ऋत्यमें पंचमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें षष्ठी और चतुर्दशीको पश्चिममें सप्तमी और पूर्णिमाको वायव्यमें अमावास्या और अष्टमीको ईशान्यमें इस प्रमाणसे योगिनीका वास जानिये ॥ फल ॥ पृष्ठभागी अथवा वामभागी होय तो शुभ जानिये ॥

वारानुसार कालराहुका वास ॥ अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमे भौमे प्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेच ॥ याम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रेमन्देचपूर्वेप्रवदन्तिकालम् ॥

टीका–रविवारको उत्तरमें सोमवारको वायव्यमें मंगलको पश्चिममें बुधवारको नेर्ऋत्यमें गुरुवारको दक्षिणमें शुक्रवारको आग्नेयमें शनिवारको पूर्वमें इस प्रमाणसे कालराहु वार अनुसार जानिये ॥

फलका श्लोक ॥ रविदिनगुरुपूर्वेसोमशुक्रेचयाम्येवरुणदिशितु भौमेचोत्तरेसौरिसंस्थे॥ प्रतिदिनमितिमत्वाकालराहुदिशानांसकलगमनकार्येवामपृष्ठेचासिद्धिः ॥

टीका–रवि अथवा गुरु इन वारोंमें पूर्वको गमन करे तो कालराहु वाम पृष्ठभागी जानिये तिसमें गमन करे तो सर्व कार्यकी सिद्धि होय सोम शुक्रमें दक्षिणको गमन करे भौमवारमें पश्चिमको शनिवारमें उत्तरको गमन करे तो कार्यसिद्धि होय ॥

क्षुधितराहु ॥ इन्द्रेवायौयमेरुद्रेतोयेग्नौशशिरक्षसोः ॥ यामार्द्धे क्षुधितोराहुर्भ्रमत्येवदिगष्टके ॥ नातिथिर्नचनक्षत्रंनयोगोनचचन्द्रमाः ॥ सिद्ध्यन्तिसर्वकार्याणियात्रायांदक्षिणेरवौ ॥

टीका–प्रथम यामार्द्धमें क्षुधित राहु पूर्वमें जानिये द्वितीयमें वायव्यको

तृतीयमें दक्षिणको चतुर्थमें ईशान्यको पंचममें पश्चिमको षष्ठमें आग्नेयको सप्तममें उत्तरको अष्टम यामार्द्धमें नैर्ऋत्यको इस प्रमाणसे अष्ट दिशाओंमें भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भागमें स्थित रवि विचारके गमन करे तो तिथि नक्षत्रादिका दोष जाता रहे और समस्त कार्य सिद्धि होय ॥

काल कहां है तिसका ज्ञान ॥ कालः पलंपातकलोहपातवडवानलाः खड्गकचोलिकान्तिकाः ॥ नखाश्चतुर्विंशति षट्तथादिक्रुरुद्राधृतिर्वेदगुणाः क्रमेण ॥ तिथ्यायुतंवैवसुभाजितंचशेषश्चकालोमुनयो वदन्ति ॥ फल ॥ कालंचपृष्ठेफलसंमुखेनपातंचलोहंवडवांचपृष्ठे ॥ खड्गंचाग्रेकवचंचवामेकान्तिश्चयोज्यादिशिदक्षिणस्याम् ॥

टीका—कालोंके नाम ॥ १ काल २ पल ३ पातक ४ लोहपात ५ वडवानल ६ खड्ग ७ कवच ८ कांति ऐसे आठ नाम तिनके ऊपर अंक लिखे हैं उनमें गमन कालकी जो तिथि है उनको एक (१) अंकमें मिलावे आठका भाग दे शेष जो अंक रहे तिस दिशाको काल जानिये इस प्रकार पूर्वादि आठ दिशा क्रमसे जानिये पृष्ठ भागी काल शुभ सम्मुखका फल शुभ पृष्ठभागमें पातक लोह और वडवानल ये तीनों शुभ अग्रभागमें खड्ग शुभ वामभागमें कवच शुभ दक्षिणभागमें कांति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचारके उस दिशाको युद्धमें किंवा यात्रामें गमन करे तो शुभ होय ॥

पंथाराहुचक्र ॥ स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थेयाम्याज्याङ्घ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथाभोनिकामे ॥ वह्न्याद्रीबुध्न्याचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानि मोक्षोऽथरोहिण्यर्यम्णाब्जेन्दुविश्वान्तिमभदिनकरर्क्षाणिपन्थादिराहौ ॥

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शततारका
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा
काम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजित्	उत्तराभाद्रपदा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषाढा	उत्तराषा.	रेवती

टीका—नक्षत्र २८ तिनके भाग ४ तिनके नाम प्रथम धर्ममार्गके नक्षत्र ७ दूसरे अर्थ मार्गके नक्षत्र ७ तृतीय काम मार्गके नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्गके

नक्षत्र ७ इस प्रकार चार मार्गोंके नक्षत्र जानिये तिनमें मार्गके नक्षत्रमें सूर्य होय तौ चंद्रमा चारि वर्गके नक्षत्रमें फिरता है तिनके फल कहते हैं ॥

धर्ममार्गीके फल ॥ धर्ममार्गेगतसूर्ये अर्थांशेचंद्रमायदि ॥
तदाशत्रुभयंतस्यज्ञेयंतुविबुधैःशुभम् ॥

टीका-धर्ममार्गी नक्षत्रमें सूर्य और अर्थमार्गी नक्षत्रमें चंद्रमा होय तौ गमन करनेसे मार्गमें शत्रुजय होय ॥

धर्ममार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
संहारश्चभवेत्तत्र भङ्गोहानिःप्रजायते ॥

टीका-धर्ममार्गी नक्षत्रोंके सूर्य और चंद्रमा दोनों होयँ तो संहार भग हानि प्राप्ति होय ॥

धर्ममार्गेगतेसूर्येकामांशेचन्द्रमायदि ॥
विग्रहोदारुणंचैवचौराकुलसमुद्भवम् ॥

टीका-धर्ममार्गीमें सूर्य और काममार्गी नक्षत्रोंका चंद्रमा होय तौ विग्रह दारुण और चोरभय होय ॥

धर्ममार्गे गतेसूर्येचन्द्रेमोक्षगतेयदि ॥
गृहलाभोभवेत्तस्य विज्ञेयो नात्रसंशयः ॥

टीका-धर्ममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल गृहलाभ व मार्गसुख होय ॥

अर्थमार्गके फल।

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रे धर्मस्थितेयदि ॥
गजलाभोभवेत्तस्य तत्रश्रीः सर्वतोसुखी ॥

टीका-अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल लाभ और लक्ष्मीप्राप्ति और सर्वदा सुखी होय ॥

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
प्रथमंजायतेकार्यंतत्रभङ्गो भविष्यति ॥

टीका-अर्थमार्गी सूर्य और चंद्रमा दोनों होय तो प्रथम कार्यसिद्धि होय और पीछे भंग हो जाय ॥

अर्थमार्गंगतेसूर्ये चन्द्रे कामांशसंस्थिते ॥
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्रसंशयः ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो ऐसे योगका फल सर्व कार्यसिद्धि होय ॥

अर्थमार्गगत सूर्येचन्द्रेमोक्षस्थितेयदि ॥
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तःसुखी भवेत ॥

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगोंका फल भूमिलाभ हर्षयुक्त सुख मार्गमें स्थिरता पावे ॥

काममार्गीके फल ॥ काममार्गंगतेसूर्येचन्द्रे धर्मेचसंस्थिते ॥
गजाश्वाश्वाविलभ्यन्तेराजसन्मानसंभवात् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हाथी घोडा भूमि धनका लाभ और राजसन्मान पावे ॥

काममार्गंगतेसूर्येचन्द्रेचैवार्थसंस्थिते ॥
सकलंजायतेतस्यविघ्नभङ्गोविनिर्दिशेत् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा ऐसा योग होय तो सब विघ्नोंका नाश होय ॥

काममार्गंगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
विग्रहंदारुणंचैवकार्यनाशंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और चंद्रमा होय तो विग्रह और कार्यनाश होय॥

काममार्गंगते सूर्येचन्द्रेमोक्षगतेऽपिवा ॥
राज्ञोलाभोभवेत्तस्य स्वर्णलाभंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा होय तो राजासे लाभ सुवर्णलाभ हो ॥

मोक्षमार्गीके फल ॥ मोक्षमार्गंगतेसूर्ये चन्द्रेधर्मस्थितेयादि ॥
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्य प्रसिद्ध्याति ॥

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य व धर्ममार्गी चंद्रमा होय तो हेमलाभ और सर्व सिद्धि होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये अर्थांशेचन्द्रमायदि ॥
विफलंतस्यकार्यंचचोरराजरिपोर्भयम् ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा होय तो राजा और चोरसे तथा रिपुसे भय होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्येचन्द्रेकामास्थितेयदि ॥
सर्वसिद्धिमवाप्नोतिकार्येचजयमेवच ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा होय तो सर्वकार्यसिद्धि और जयप्राप्ति होय ॥

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये चन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ॥
विग्रहंदारुणंचैवविघ्नस्तस्य भविष्यति ॥

टीका–मोक्षमार्गी सूर्य चंद्र होय तो दारुण विग्रह, विघ्न प्राप्ति होय ॥

पन्थाराहु व कर्म करने योग्य ॥ यात्रायुद्धेविवाहेचप्रवेशे नगरादिषु ॥ व्यापारोषुचसर्वेषुपन्थारहुःप्रशस्यते ॥

टीका–यात्रामें युद्धमें और विवाहमें और नगरादि प्रवेशमें और व्यापार अर्थात् सर्व वस्तुके लेनदेनमें राहु मार्गमें शुभदायक होता है ॥

गर्गादिकोंका मुहूर्त ॥ उषःप्रशस्यतेगर्गः शकुनंचबृहस्पतिः ॥ अङ्गिरामनउत्साहोविप्रवाक्यंजनार्दनः ॥

टीका–गर्गजीके मतसे रात्रिकी पिछली ५ घटी उषःकाल गमनमें शुभ और बृहस्पतिके मतसे शकुन शुभ और अंगिराके मतसे मनका उत्साह शुभ और जनार्दनके मतसे ब्रह्मवाक्य शुभ जानिये ॥

शुभाशुभवाहन ॥ आत्मनोजन्मनक्षत्रादिननक्षत्रमेव च ॥ एकीकृत्वाहरेद्भागंनन्दशेषेचवाहनम् ॥ रासभोऽश्वोगजोमेषोजम्बुकः सिंहसंज्ञकः॥काकश्चैवमयूरश्चहंसइत्येववाहनम् ॥ फल ॥ रासभेअर्थनाशश्चधनलाभश्चघोटके ॥ लक्ष्मीप्राप्ति गंजाख्ये हिमेषेचमरणंध्रुवम् ॥ जम्बुकेस्वल्पलाभश्चसर्वसिद्धिश्चसिंहके ॥ काकेचनिष्फलंकार्यमयूरेचसुखावहम् ॥ हंसेतुसर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानांफलंस्मृतम् ॥

टीका—अपने जन्मनक्षत्रसे दिवसके नक्षत्रतक गिने नवका भाग दे शेष बचे सो वाहन जानिये १ रहै तौ गर्दभ तिसका फल अर्थनाश २ बचें तो घोडा धनलाभ होय ३ बचें तो हस्ती लक्ष्मी ४ बचें तो मेंढा मरण ५ बचें तो जंबुक स्वल्पलाभ ६ बचें तो सिंह सर्वकार्यसिद्धि ७ बचें तो काक निष्फल ८ बचें तो मोर सुखप्राप्ति ९ बचें तो हंस सर्वसिद्धि जानिये ॥

अंकमुहूर्त ।

तिथयः पक्षगुणिताःसप्तभिर्भाजिताश्चताः ॥
वाराः स्युर्वह्निगुणिता वसुभिश्चैवभाजिताः ॥
चतुर्गण्यानिभान्यङ्कभाजितानियथाक्रमम् ॥

टीका—जिस तिथिमें गमन करना चाहे उसे १५ से गुणा करके सातका भाग दे और जो वार होय तिसे तीन गुणाकरे आठका भाग दे और जो नक्षत्र होय तिसे चार गुणा करके ६ का भाग दे जो शेष बचें उसका फल कहेंगे ॥

फल ॥ पीडास्यात्प्रथमेशून्येमध्यशून्ये महद्भयम् ॥
अन्त्यशून्येतुमरणंत्र्यंङ्केचैवविजयीभवेत् ॥

टीका—प्रथमतिथिके भागका शून्य बचे तो पीडा और वारके भागमें शून्य बचे तो बहुत भय होय और नक्षत्रके भागमें शून्य हो तो मरण और तीनों जगह अंक बचें तो विजय होय ॥

भ्रमणाडलमुहूर्त ।

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंसप्तभिर्भागमाहरेत् ॥ त्रिषड्भ्रमणंचैव द्विः-
सप्तमहदाडलम्॥ प्रथमपञ्चचत्वारिआडलोनास्तिनिश्चितम् ॥
आडलेताडनंप्रोक्तं भ्रमणेकार्यनाशनम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रताईं गिने सातका भाग दे ३। ६ बचें तो भ्रमण और २। ७ बचें तो महदाडल ये ताडनामें जानिये और १। ४। ५ बचें तो आडल नहीं होता ये गमनमें उक्त हैं ॥

हैवरमुहूर्त ।

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंपक्षादितिथिवारयुक् ॥
नवभिस्तु हरेद्भागंसप्तशेषंतुहैवरम् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चंद्रके नक्षत्रताईं गिनके पक्ष तिथिवार मिलाके नौका भाग देनेसे ७ शेष बचें तो हैवर योग होता है सो यात्रामें शुभ है ॥

घवाडमुहूर्त ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंत्रिगुणंतिथिमिश्रितम् ॥
नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंघवाडकम् ॥

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने तिगुना कर तिथि मिलाय नवका भाग दे तीन शेष बचें तो घवाड मुहूर्त जानिये ॥

वारानुसारस्वरशकुन ।

गुरोशनौरवौभौमेशुभोवैदाक्षिणः स्वरः ॥ अन्यवारेषुवामस्तु स्वरश्चैवशुभःस्मृतः ॥ निर्गमेवामतःश्रेष्ठःप्रवेशेदक्षिणःशुभः ॥ यः स्वरः सचनासाग्रेयोगिनांमतमीदृशम् ॥

टीका—गुरु शनि रवि भौम इन चारों वारोंमें दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करनेमें शुभ होय और सोम बुध शुक्र वारोंमें वामस्वर चले तो गमनको श्रेष्ठ ऐसे स्वरविचार योगियोंके मतसे कहा है ॥

वारानुसार छायाशकुन ।

अष्टौपादाबुधेस्युर्नवधराणिसुतेसप्तजीवेपदानि ।
ज्ञेयंचैकादशार्केशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमर्थंचतुष्कम् ॥
तस्मिन्कालेमुहूर्तेसकलगुणयुतेकार्यसिद्धिःशुभोक्ता ।
नास्मिन्पञ्चाङ्गशुद्धिर्नखलुशशिबलंभाषितंगर्गमुख्यैः ॥

टीका—आठ पद अपनी छाया होय तो बुधवारमें गमन करे नवपद होय तो भौमवारको गमन कीजे ७ पद होय तो गुरुको ११ पद होयँ तो सूर्यवारको गमन करे शनि सोम शुक्रमें चार २ पद होय तो गमन करे यह सर्व गुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त है इसमें चंद्रमा आदि न देखे शुभ है ॥

काकशब्दशकुन ॥ काकस्यवचनंश्रुत्वापादच्छायातुकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाषड्भिर्भागमाहरेत् ॥ फल ॥ लाभःखेदस्तथा सौख्यं भोजनंचतथागमः॥ अशुभंचक्रमेणैवगर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका—काकका शब्द सुनके अपने पैरोंकी छाया मापके १३ और मिलाके ६ का भाग दे शेष बचैं उसका फल १ बचे लाभ २ खेद ३ सुख ४ भोजन ५ धनप्राप्ति पूरा भाग लग जाय तो अशुभ ये गर्ग मुनिके वचन हैं ।

पिंगलशब्दशकुन ॥ उल्हासः किल्बिलेचैवचिलिपल्यांभोजनंतथा ॥ बन्धनंखिट्खिट्स्यात्कुर्कुशब्देमहद्भयम् ॥

टीका—जो किल्बिल शब्द होय तौ उल्हास होय और चिल्बिल शब्द होय तो भोजनप्राप्ति खिटखिट शब्द होय तो बंधन कुर्कुरशब्द होय तो महाभय होय ॥

छिकानुसार पादच्छायाशकुन ।

बुधश्छिकारवंश्रुत्वापादच्छायांचकारयेत् ॥ त्रयोदशयुतांकृत्वाचाष्टभिर्भागमाहरेत्॥ फल ॥ लाभः सिद्धिर्हानिशोकौभयंश्रीर्दुःखनिष्फले ॥ क्रमेणैवफलंज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ॥

टीका—छींकका शब्द सुनके अपने पैरकी छाया मापे १३ मिलावे ८ का भाग दे शेष रहैं तिसका फल १ रहे तो लाभ २ सिद्धि ३ हानि ४ शोक ५ भय ६ लक्ष्मी ७ दुःख ० निष्फल ऐसे गर्गमुनि कहते हैं ॥

छींकशकुन ।

छिकाप्रश्नंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलम् ॥ आग्नेय्यांशोकदुःखं स्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ॥ नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणम्॥ वायव्येधनलाभस्तुउत्तरेकलहस्तथा ॥ ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्मच्छिकामहद्भयम्॥ऊर्ध्वंचैवशुभंज्ञेयंमध्येचैवमहद्भयम्॥ आसनेशयनेचैवदानेचैवतुभोजने॥वामांगेपृष्ठतश्चैवषट्छिकाश्चशुभावहाः॥

टीका—दिवसानुसार छींक फल । पूर्वकी छींक अशुभ आग्नेयकी शोक दुःख करे दक्षिणकी अरिष्ट करे नैर्ऋत्यकी शुभ पश्चिमकी मिष्टभक्षण वाय-

व्यकी धनदायक उत्तरकी कलहकृत ईशान्यकी शुभदायक और अपनी छींक बहुत भय दे ऊपरकी छींक शुभ मध्यकीमेंभी बडा भय आसनमें सोनेमें दानमें भोजनमें वाईं ओर वा पीछे होय तो वृ शुभ जानिये ॥

पल्लीशब्दशकुन ।

वित्तंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलां शक्रेहुताशेभयंयाम्येमित्रवधः क्षयश्चनिर्ऋतेलाभः समुद्रालये ॥ वायव्यांवरामिष्टमन्नमशनंसौम्येऽर्थलाभस्तथाईशान्यांग्रहगोधिकार्यमतुलंसर्वत्रभूमौभयम्॥

टीका–पूर्वमें पल्ली शब्द करे तो शकुन वित्त ब्रह्मसंबंधी कार्य विशेष धनप्राप्ति अग्निमें अग्निका भय होय दक्षिणमें मित्रवध होय नैर्ऋत्यमें क्षय पश्चिममें शब्द होय तो लाभ वायव्यमें सुंदर मीठा भोजन उत्तरमें धनप्राप्ति ईशान्यमें कार्यसिद्धि और भूमिमें होय तो भय करे ॥

पल्लीपतन और सरठका आरोहण ।

राज्यंतुशिरसिज्ञेयं ललाटेबन्धुदर्शनम्॥ भ्रूमध्येराजसन्मानमुत्तरोष्ठेधनक्षयम् ॥ अधरोष्ठेधनैश्वर्यंनासान्तेव्याधिपीडनम् ॥ आयुष्यं दक्षिणेकर्णेबहुलाभस्तुवामके ॥ अक्ष्णोस्तुबन्धनंज्ञेयंभुजेभूपतितुल्यता ॥ राजक्षोभंतथावामेकण्ठेशत्रुविनाशनम्॥ स्तनद्वयेचदुर्भाग्यमुदरेमण्डनंशुभम् ॥ प्रजानाशःपृष्ठदेशेजानुजंघेशुभावहम्॥ करद्वयेवस्त्रलाभःस्कन्धयोर्विजयीभवेत्॥ नाभौबहुधनंप्रोक्तमूर्वोश्चैव हयादिकम् ॥ दक्षिणेमणिबन्धेचमनस्तापोधनक्षयः ॥ मणिबंधेतथा वामेकीर्तिवृद्धिधनप्रदम् ॥ नखेषुधान्यलाभंचवक्रेमिष्टान्नभोजनम् ॥ गुल्फयोर्बन्धनंज्ञेयंकेशांतेमरणंध्रुवम्॥अध्वातुदक्षिणेपादेवामेबन्धुविनाशनम् ॥ स्त्रीनाशःस्यात्पादमध्येपादान्तेमरणं भवेत् ॥ पल्ल्याःप्रपतनेज्ञेयंसरठस्याधिरोहणे ॥ यात्रोद्युक्तमनुष्यस्यैतच्छुभाशुभसूचकम् ॥ तिलमाषादिदानंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने ॥ पिनाकिनं नमस्कृत्यजपेन्मन्त्रंषडक्षरम् ॥ शतंसहस्रमथवा सर्वदोषनिबर्हणम्॥शिवालयेप्रदद्याद्दीपंदोषोपशांतये ॥

टीका–मनुष्योंके गमनसमयमें अंगपर पल्ली अर्थात् छिपकली गिरे अथवा गिरगिट चढे तो शुभाशुभसूचक फल स्थानानुसार कहा है ॥

१ शिर	राज्यप्राप्ति	११ वामबाहु	राज्यभय	२१ ऊरूपर	घोडावाहन
२ कपाल	बंधुदर्शन	१२ कंठपर	शत्रुनाश	२२ दाया पहुँचा	धनक्षय
३ भ्रकुटी	राजसन्मान	१३ स्तनोंपर	दुर्भाग्य	२३ वा मणिबंध	कीर्ति
४ उत्तरोष्ठ	धनक्षय	१४ उदरपर	शुभमंडन	२४ नख	धनलाभ
५ अधरोष्ठ	धनऐश्वर्य	१५ पृष्ठ	बुद्धिनाश	२५ मुखपर	मिष्टान्नभोजन
६ नासिका	व्याधिपीडा	१६ जानुओंपर	शुभ	२६ टकनोंपर	बंधन
७ दा. कान	आयुष्य	१७ जंघाओंपर	शुभ	२७ केशोंपर	मरण
८ वा. कान	बहुतलाभ	१८ हाथोंपर	वस्त्रलाभ	२८ दा. पांव	मार्ग चलना
९ नेत्रोंपर	बंधन	१९ कांधोंपर	विजय	२९ वामपाद	बंधुनाश
१० बाहु	राजासम	२० नाभिपर	बहुधन	३० मध्यपाद	धनिनाश

छिपकली अंगपर गिरे अथवा गिरगट चढे तो सचैल स्नान करके तिल उडद दान दे और ब्राह्मणको दान दे और शिवको नमस्कार करके ११०० शिवमंत्र जपे और शिवके मंदिरमें दीपक घृतका प्रज्वलित करे तो दोष निवृत्त होय ॥

अंगस्फुरण–मनुः ॥ ब्रूहिमत्वंनिमित्तानिअशुभानिशुभानिच ॥
सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठत्वंहिसर्वंविबुद्ध्यसे ॥

टीका–मनु मत्स्यप्रति प्रश्न करते हैं हे धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ ! शुभाशुभ फल वर्णन कीजिये ॥

अङ्गस्यदक्षिणेभागे प्रशस्तंस्फुरणंभवेत् ॥
अप्रशस्तंतथावामे पृष्ठस्यहृदयस्यच ॥

टीका–अंगस्फुरण दक्षिणभागमें शुभ और वामभाग वा पृष्ठभाग वा हृदयमें अशुभ ॥

अङ्गानांस्पंदनंचैव शुभाशुभविचेष्टितम् ॥ तन्मेविस्तरतोब्रूहि येनस्यात्तद्विधोभुवि ॥ मत्स्य उवाच ॥ पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्ध्नि ललाटेरविनन्दन ॥ स्थानवृद्धिंसमायाति भ्रूनसोः प्रियसं-

गमः ॥ भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्तेधनागमः ॥ उत्कण्ठोपगमेमध्ये दृष्टंशाजन्विचक्षणेः॥ दृग्बन्धनेसङ्गरेच जयंशीघ्रमवाप्नुयात् ॥ योषिल्लाभोपाङ्गदेशे श्रवणान्तोप्रियश्रुतिः ॥ नासिकायांप्रीतिसौख्यं प्रियातिरधरोष्ठयोः ॥ कण्ठेतुभोगलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ॥ सुहृत्श्रेष्ठश्चबाहुभ्यां हस्तेचैवधनागमः ॥ पृष्ठेपराजयेत्सोघो जयोवक्षस्थलेभवेत् ॥ कुक्षिभ्यां प्रीतिरुद्दिष्टा स्त्रियाःप्रजननंभगे ॥ स्थानभ्रंशोनाभिदेशे अन्त्रे चैवधनागमः ॥ जानुसंधोपरेःसंधिर्बलवाद्भिर्भवेन्नृप॥ एकदेशे भवेत्स्वामी जङ्घाभ्यांरविनन्दन ॥ उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यांप्रस्फुरणेनृप ॥ अलाभंचाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृप ॥

टीका—मनु प्रश्न करते हैं कि अंगमें स्थान स्फुरणका विचार शुभाशुभ फल विस्तारसहित वर्णन कीजिये ॥

१ मस्तकस्फुरण पृथ्वीलाभ हो
२ ललाटस्फुरण स्थानकी वृद्धि
३ भृकुटीके मध्यमें प्रियदर्शन
४ नेत्रोंमें भृत्य मिले
५ नेत्रोंकी कोरोंमें जयप्राप्ति होय
६ कंठमध्ये राज्यप्राप्ति होय
७ हग्बंधन युद्धमें जय
८ अपांगदेशमें स्त्रीलाभ होय
९ कर्णांतमें प्रियमित्रकी सुधि
१० नासिकामें प्रीतिसुख होय
११ अधरोष्ठ प्रियवस्तुप्राप्ति
१२ कंठमें ऐश्वर्यप्राप्ति
१३ कंधोंमें भोगवृद्धिप्राप्ति
१४ दोनों बाहु मित्रका मिलाप
१५ दोनों हाथ धनप्राप्ति
१६ पृष्ठमें दूसरेसे जय होय
१७ ऊरुमें जयप्राप्ति
१८ कुक्षिमें प्राप्ति होय
१९ शिश्नइंद्री. स्त्रीप्राप्ति होय
२० नाभिमें स्थानभ्रंश
२१ आँतोंमें धनप्राप्ति
२२ जानुसंधिमें बलीशत्रुओंसे संधि
२३ जंघामें एकदेशके स्वामी
२४ पादोंमें उत्तमस्थानमें मान्यता.
२५ तलुओंमें अलाभ और गमन

स्त्रियोंका अंगस्फुरण ।

लाञ्छनंपीठकंचैव ज्ञेयंस्फुरणवत्तथा ॥ विपर्ययेणविहितःसर्वे-स्त्रीणांविपर्ययः ॥ दाक्षिणेपिप्रशस्तेऽङ्गं प्रशस्तंस्याद्विशेषतः ॥

टीका-स्त्रियोंका अंगस्फुरण भ्रूमध्यमें तो पुरुषोंहीके समान है परंतु और सब अंग पुरुषोंसे विपरीत अर्थात् वाम अंग स्त्रियोंका शुभ कहा है ॥

अनन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्यशस्तस्यचानिन्दितस्य ॥
आनिष्टनिद्रोपगमोद्विजानां कार्यंसुवर्णंनतुतर्पणंस्यात् ॥

टीका-हे राजा ! अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण करावे सुवर्ण दान करे तो अंगस्फुरणका दोष जाता रहे ॥

नेत्रस्फुरण ॥ नेत्रस्योर्ध्वं हरतिसकलं मानसंदुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशतिचधनं नासिकान्तेचमृत्युः ॥ नेत्रस्याधःस्फुरण-मसकृत्सङ्गरेभद्रहेतुर्वामेचैतत्फलमाविफलं दक्षिणेवैपरीत्यम् ॥ स्त्रीणांविपर्ययः ॥

टीका-नेत्रोंके ऊर्ध्वप्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण होय तिसका फल कहते हैं नेत्रके ऊपरका पलक स्फुरण होय तो मनका दुःख जाय और धनकी प्राप्ति होय और नासिकाके निकट स्फुरण होय तो मृत्यु नेत्रके नीचेकी पलकमें स्फुरण होय तो युद्धमें पराजय होय ये सर्व फल स्त्रियोंके वामनेत्रके और पुरुषोंके दक्षिण नेत्रके जानो ॥

त्रिशूलयंत्र ॥ रोगिणश्चकुजाद्यर्क्षं दिनाद्यर्क्षंचयुद्धतः ॥
कृत्तिकागमनेदद्यादन्यत्ररवितोदीयते ॥

टीका-रोगीके प्रश्नका त्रिशूल मध्याग्रमें जिस नक्षत्रका मंगल होय तिसका धरे और चंद्रमा जिस स्थानविषे यंत्रमें होय तो फल देवे इस प्रमाणसे आगे फल जानो. युद्धमें जाना होय तो दिवसनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक गिने और गमन करना होय तो कृत्तिकासे दिवस नक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मोंके सूर्य-नक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रतक इस क्रमसे जाने ॥
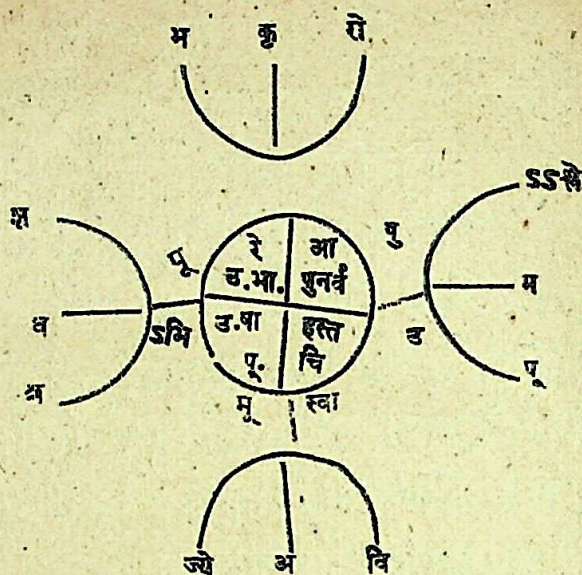
त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यमंबाहिरष्टकम् ॥
लाभक्षेमं जयारोग्यं चन्द्रगर्भेषुसंमतम् ॥

टीका—त्रिशूलके अग्रभागमें दिवसनक्षत्र होय तो मृत्यु और बाहिरी अष्टकमें होय तो मध्यम मध्याष्टकमें होय तो लाभ क्षेम जय आरोग्य ये सर्व संमत जानिये ॥

गमनकी लग्न ॥ चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ॥
लग्नस्थिरेनगन्तव्यं यात्रायां क्षेममिप्सुभिः ॥

टीका—चरलग्न कहिये कर्क तुला मकर ये चार और द्विस्वभाव मिथुन कन्या धन मीन ये चार इन आठोंमें गमन करना शुभफलदायक है और बाकी चार लग्न स्थिर हैं उनमें गमन न करे ॥

दूसरा प्रकार लग्नका ।

लग्नेकार्मुकमेषतौलिगमने कार्यविलम्बान्नृणां पञ्चत्वंमकरे तथैव चघटे तद्वत्फलंवृश्चिके ॥ सिंहेकर्कटके वृषेपरिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुने सौख्यं शुभान्नंवसु ॥

टीका—धन मेष तुला इन लग्नोंमें गमन करे तो कार्यमें विलंब होय और मकर कुंभ वृश्चिक ये तीन लग्न मृत्युकारक सिंह कर्क वृष इनमें कार्य सिद्ध होय कन्या मीन मिथुन ये लग्न शुभकारक अन्न और धनदायक जानिये ॥

द्वादशस्थानोंके अनुसार गमनलग्नमें ग्रहबल।

प्रथमस्थान ॥ जन्मस्थंचाष्टमंत्याज्यं लग्नंद्वादशमेवच ॥
ग्रहाणां च बलंवीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः ॥

टीका-लग्न और अष्टम और द्वादशमें पापग्रह वर्जितके ग्रहबल देखि गमन करे तो दिग्विजय और कार्यसिद्धि होय ॥

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राःसिद्धयन्तिकार्याणिचपञ्चमेऽह्नि ॥
राज्ञः पदंवासुखदेशलाभं मासस्यमध्ये ग्रहभावयुक्तम् ॥

टीका-लग्नमें गुरु अथवा बुध शुक्र होंय तो पांच दिवसमें अथवा एक मासमें राज्यपद सुख किंवा देशलाभ होय ॥

दूसरे स्थानके फल ॥ जीवोबुधोवा भृगुनन्दनोवा स्थानेद्वितीये गमनस्यकाले ॥ सुवस्त्रलाभंचतुरङ्गलाभं मासस्यमध्ये च चतुर्दशेऽह्नि॥

टीका-दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र होय तो वस्त्र और तुरंग लाभ एकमासके मध्यमें अथवा चौदह दिवसमें होय ॥

क्रूराधनस्था रविराहुभौमा सौरिश्चकेतुस्त्रिभिरेवमासैः ॥
वित्तस्यनाशंचददातिमृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयोवदंति ॥

टीका-दूसरे स्थानमें रवि राहु मंगल शनि वा केतु इनमेंसे कोई क्रूर ग्रह होय तो ३ मासमें मृत्यु और वित्तनाश हो यह मुनीश्वरोंने सत्यवाक्य कहा है॥

तृतीय स्थानके फल ॥ स्थानेतृतीये गुरुभार्गवौच सोमस्यसूनुश्च निशापतिश्च ॥ करोतिकार्यंसफलंचसर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ॥

टीका-तृतीयस्थानमें गुरु शुक्र अथवा चंद्र बुध होय तो दो पक्ष अथवा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

चतुर्थ स्थान ॥ क्रूराश्चतुर्थेगमनेयदातु नस्युश्चशेषाःशुभदा हि कार्ये ॥ तत्रापिदैवेन भवेच्चसिद्धिर्मासत्रयेणापिदशाहमध्ये ॥

टीका-क्रूर ग्रह जो कहे हैं उनमेंसे कोई ग्रह चतुर्थ स्थानमें होय उसे वर्जिके शेष ग्रह शुभ होंय तो दैवयोग करिके तीन मास वा दसवें दिवसके अंतमें कार्य सिद्ध होय ॥

पंचमस्थान॥ गुरुर्भृगुश्चन्द्रबुधोयदास्याच्छुभेचलग्नेतुसुतेचयु-
क्ताः ॥ कुर्वन्तिकार्यस्यचसिद्धिमिष्टांमासद्वयेनापिवदन्तिसत्यम्॥

टीका–गुरु शुक्र चंद्र अथवा बुध चारों ग्रह पंचमस्थानमें होंय तो शुभ होंय और दो मासमें इष्ट कार्यसिद्धि होय ॥

षष्ठस्थान।

जीवश्चशुक्रश्च बुधश्चषष्ठे करोतियात्रां सुफलांविलग्नात् ॥
पक्षद्वयेनापि वदन्ति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्चचन्द्रः ॥

टीका–शुक्र गुरु अथवा बुध चारि ग्रह शुभस्थानमें होंय तो यात्रा सफल और मृग नक्षत्रका चंद्रमा उस स्थानमें होय तो सकल कार्य एक मासमें सिद्ध होंय ॥

सप्तमस्थान।

चेत्सप्तमस्थागुरुसोमसौम्याः कुर्वन्ति यात्राविजयंनृपाणाम् ॥
सर्वेनृपास्तस्यभवान्तिवश्या मासद्वयेनापिचपञ्चभिर्दिनैः ॥

टीका–सप्तमस्थानमें गुरु अथवा सोम बुध होंय तो यात्रामें विजय होय और सर्व राजा दो मास वा पांच दिवसमें वशीभूत होंय ॥

अष्टमस्थान।

क्रूराश्चसर्वेयदिलग्नकाले मृत्युस्थितामृत्युकराभवन्ति ॥
सौम्योगुरुर्वा भृगुनन्दनश्च दीर्घायुषंमृत्युकरश्चचन्द्रः ॥

टीका–क्रूर कहिये शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टमस्थानमें होंय तो मृत्युकारक और ये न होंय सौम्य ग्रह होंय तो आयुष्पकी वृद्धि परंतु चंद्र होय तो मृत्युकारक जानिये ॥

नवमस्थान।

धर्मस्थितायादिभवन्तिहिपापखेटाः प्रयाणकालेचतथैवचन्द्र-
माः ॥ तदाजयंवैसबलेचचन्द्रे मासत्रयेणापि दिनैश्चतुर्भिः ॥

टीका–नवम स्थानमें पापग्रह तथा चंद्र होय और चंद्र सबल होय तो तीन मास वा चार दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

धर्मस्थान ॥ धर्मस्थितौवायदिजीवशुक्रौ सोमस्यसूनुर्यदिलग्न-
काले ॥ लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा कार्यस्यसिद्धिश्चभवेच्चलाभः ॥

टीका—धर्म स्थानमें गुरु शुक्र अथवा सोम बुध ये ग्रह चर अथवा स्थिर लग्नमें स्थिर होंय तो कार्यसिद्धि और लाभ होय ॥

कर्मस्थान ।

कर्मस्थिताः पापखगास्तुसौम्याः कुर्वन्तिकार्यंशनिवर्जिताश्च ॥
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा मासत्रयेणापिचचैकमासः ॥

टीका—दशमस्थानमें शनि आदि पापग्रहोंको छोडके सौम्य ग्रह चर वा स्थिर लग्नमें होंय तो उक्त तीन मासमें वा एक मासमें कार्यसिद्धि होय ॥

लाभस्थान ।

लाभस्थितौगुरुबुधौभृगुनन्दनोवा क्रूराश्चसर्वेशशिनैवयुक्ताः ॥
सद्यः फलातिश्चभवेद्धियात्रा पक्षैकमध्येदिवसत्रयेच ॥

टीका—एकादशस्थानमें रवि आदि पापग्रह चंद्रसहित वा गुरु आदि सौम्यग्रह होंय तो एक पक्षमें वा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि होय ॥

व्ययस्थान ।

सर्वैंशुभाद्वादशसंस्थिताश्च यात्राभवेत्तत्रविचित्रलाभः ॥
पापाश्चसर्वेव्ययदाभवन्ति यात्राफलंगर्गमुनिप्रणीतम् ॥

टीका—द्वादश स्थानोंमें सर्व ग्रह शुभ होंय तो विचित्र लाभ होय और पापग्रह होंय तो व्ययकारक जानिये यह यात्राफल गर्गमुनिने कहा है ॥

प्रस्थान रखना ।

सुमुहूर्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यम् ॥श्लोक॥ यज्ञोपवीतकंशस्त्रं मधुचस्थापयेत्फलम् ॥ विप्रादिक्रमतः सर्वं स्वर्णधान्यांबरादिकम् ॥

टीका—मुहूर्तके समय जो किसी कार्यवशसे आप न जासके तो प्रस्थान करना योग्य है उसकी विधि ब्राह्मणादिक अनुसार कहते हैं ब्राह्मण यज्ञोपवीतका और क्षत्रिय शस्त्रका वैश्य मधुका और शूद्र फलका प्रस्थान करे इस क्रमसे जानिये और सुवर्ण वस्त्र धान्य सर्वोंको युक्त है ॥

प्रस्थान कितने दिवसतक उपयोगी होय ।

राजादशाहंपञ्चाहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत् ॥
अङ्गप्रस्थानसंपूर्णं वस्तुप्रस्थानकेऽर्द्धकम् ॥

टीका–राजाओंको प्रस्थान करनेपर दश दिवस औरोंके पांच दिवसतक मुहूर्त उपयोगी रहता है परंतु वस्तुप्रस्थानमें आधा फल जानिये और अंगके प्रस्थानमें पूर्णफल जानिये ॥

प्रस्थानके स्थानका विचार ।

गेहाद्गेहान्तरंगर्गः सीम्नः सीमान्तरंभृगुः॥ बाणक्षेपंभरद्वाजो वसिष्ठोनगराद्बहिः ॥ प्रस्थानेपिकृतेनोयान्महादोषान्वितेदिने ॥

टीका–गर्गजीके मतसे दूसरे घरमें, भृगुके मतसे सीमाके बाहर, भरद्वाजके मतसे बाणके पतनस्थानमें और वसिष्ठके मतसे नगरके बाहर प्रस्थान करे तिसपरभी महादोषयुक्त दिवसमें यात्रा न करे ॥

प्रस्थानदिवसमें वर्ज्य पदार्थ ।

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासवक्षाराभ्यङ्गभयासिताम्बरवमिस्तैलंकटूञ्झेद्गमे ॥ क्षारक्षौररतीः क्रमात्त्रिशरसप्ताहंपरंतद्दिनेरोगंस्यात्तवकांसितान्यातिलकं प्रस्थानकेपीति च ॥

टीका–कोप क्षार स्त्रीसंग परिश्रम मांस गुड द्यूत रोदन दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्यविषयक भय श्वेत वस्त्र गमन तैल कटुपदार्थ इतनी वस्तु प्रस्थानादिन वर्जित हैं तिनमें दूध क्षौर स्त्रीसंग ये क्रमसे ३ । ५ । ७ दिवस प्रस्थान दिनसे पहिले वर्जित हैं । शेष और कही हुई वस्तु केवल प्रस्थानदिनमें वर्जित हैं और श्वेतसे भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्ण आदि तिलक और रोगविषयक चिंताभी प्रस्थानके दिन वर्जित है ॥

मात्स्योक्त दुष्टशकुन कहते हैं ।

औषध्याचनियुक्तोहि धान्यंकृष्णंतुयद्भवेत् ॥
कार्पासश्चतृणंशुष्कं शुष्कंगोमयमेवच ॥

टीका–औषधीयुक्त मनुष्य, काला धान्य, कपास, सूखा तृण भूसा इत्यादि वस्तु उपला ये प्रस्थान समय आगे आवें तो अशुभ जानिये ॥

इन्धनंचतथाङ्गारं गुडंसर्पिस्तथाशुभम् ॥
अभ्यक्तोमलिनोमन्दस्तथानग्नश्चमानवः ॥

टीका—ईंधन भस्म गुड घी दुष्ट पदार्थ तैल लगानेसे मलिन मंद नग्न मनुष्य ये अशुभ जानिये ॥

मुक्तकेशोरुजार्तश्च काषायाम्बरधारिणः ॥
उन्मत्तः कंथितोसत्वो दीनोवाथनपुंसकः ॥

टीका—खुले केशयुक्त मनुष्य, रोगी, गेरुआ वस्त्र पहिने मनुष्य, उन्मत्त कन्थायुक्त पुरुष, पापी पुरुष, दीन वा नपुंसक ये अशुभ शकुन जानिये ॥

आयःपङ्कस्तथाचर्म केशबन्धनमेवच ॥
तथैवोद्धृतसाराणि पिण्याकादितथैवच ॥

टीका—लोहेका खंड कीच चर्म केश बांधता हुआ मनुष्य, जिनके सार निकल लिये गये हैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक येभी अशुभ जानिये ॥

चाण्डालस्यशवंचैव राजबन्धनपालकाः ॥
वधकाः पापकर्माणो गर्भिणीस्त्रीतथैवच ॥

टीका—चंडाल प्रेत बंधुओंके रक्षक वधकर्ता पापी पुरुष गर्भिणी स्त्री येभी अशुभ जानिये ॥

तुषंभस्मकपालास्थिभिन्नभाण्डानियानिच ॥ रिक्तानिचैवभाण्डानिमृतसारंगएवच॥एवमादीनिचान्यानिह्यप्रशस्तानिदर्शने ॥

टीका—तुष भस्म कपाल अस्थि रीते वा फूटे बर्तन, मरा हुआ सारंग पक्षी ये गमनकालमें हानिकारक हैं ॥

क्वयासितिष्ठआगच्छ किंतेतत्रगतस्यतु ॥
अन्यशब्दाश्चयेऽनिष्टास्तेविपत्तिकराअपि ॥

टीका—कहां जाते हो ठहरो आओ वहां जानेसे तुमको क्या होगा ये तथा औरभी अनिष्ट शब्द विपत्तिकारक होते हैं ॥

ध्वजादौवायसस्थानं क्रव्यादानंविगर्हितम् ॥
स्खलनंवाहनानांच वस्त्रसंगस्तथैवच ॥

टीका—ध्वजा वा पताकाके ऊपर काक बैठे अथवा अग्निदान और वाहनोंका गिरना वस्त्र खोलता हुआ पुरुष येभी अशुभ जानिये ॥

दुष्टशकुन दोषनिवारण ।

दुष्टेनिमित्तेप्रथमे अमंगल्यविनाशनम् ॥
केशवंपूजयेद्विद्वान् स्तवेनमधुसूदनम् ॥

टीका–यात्रासमयमें जो प्रथम अमंगल दृष्टि आवे तो इसके निवारणके लिये विष्णुकी पूजा और मधुसूदनके स्तोत्र पाठ करावे ॥

द्वितीयेचततोदृष्टे प्रतीपेप्रविशेद्गृहम् ॥
अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि मंगलानितथानघ ॥

टीका–जो दूसरी वारभी अशुभ शकुन दृष्टि आवें तो घरमें प्रवेश करे इसके बाद मंगलकारक शकुन कहते हैं ॥

गमनकालमें उत्तम शकुन ।

प्रशस्तोवाद्यशब्दश्च भिन्नभेरीरवास्तथा ॥ पुरतः शब्दएहीति शस्यतेनतुपृष्ठतः ॥ गच्छेतिचैवपश्चाद्यः पुरस्ताद्धुविगर्हितः ॥

टीका–गमनकालमें बाजनोंके शब्द भेरी नक्कारोंका शब्द और आओ यह आगेसे होय तो शुभ और पृष्ठ भागमें अशुभ और जाओ यह शब्द पीठ पीछे होय तो शुभ और आगे होय तो अशुभ जानिये ॥

श्वेताः पुष्पाः सुमनसः पूर्णकुम्भस्तथैवच ॥
जलजाः पक्षिणश्चैव मांसंमत्स्यस्यपार्थिव ॥

टीका–बडे २ श्वेतपुष्प पूर्णकुंभ जलके पक्षी मत्स्यमांस शुभ जानिये ॥

गावस्तुरंगमोनागो वृद्धएकः पशुस्त्वजा ॥
त्रिदशाःसुहृदोविप्रा ज्वलितश्चहुताशनः ॥

टीका–गाय, तुरंग, हस्ती, वृद्ध, एक पशु, बकरी, देवता, मित्र, ब्राह्मण, जलता अग्नि ॥

गणिकाचमहाभाग दूर्वाश्चार्द्राश्चगोमयम् ॥
रुक्मंरौप्यंचताम्रंच सर्वरत्नानिचाप्यथ ॥

टीका–गणिका हरीदूर्वा गोबर सोना रूपा तांबा सर्व रत्न ये शुभ जानिये ॥

औषधानियवसर्वज्ञा यवाःसर्वार्थकास्तथा ॥
खड्गपात्रंपताकाच मृत्तिकायुधमीस्तकम् ॥

टीका–औषधी सर्वज्ञ पुरुष यव श्वेत सरसों खङ्गपात्र पताका मृत्तिका आयुध आसन ये शुभ जानिये ॥

राजलिङ्गानिसर्वाणि शवंरुदितवर्जितम् ॥
घृतंदधिपयश्चैव फलानिविविधानिच ॥

टीका–राजाचिह्न रोदनरहित शव घृत दधि दूध नानाप्रकारके फल ॥

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नन्द्यावर्तः सकौस्तुभः ॥
वादित्राणांशुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ॥

टीका–आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभ मणिके साथ नंद्यावर्त मणिवाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशक हैं ॥

गान्धारषड्जऋषभा येगीताः सुस्वराः स्वराः ॥
वायुः सशर्करोत्युष्णः सर्वविघ्नविनाशकृत् ॥

टीका–गांधार षड्ज ऋषभ ये राग और अच्छे गाये स्वर सुंदर मीठा पवन अथवा उष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ॥

प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्द्विजः ॥
अनुकूलोमृदुःस्निग्धः सुखस्पर्शः सुखावहः ॥

टीका–वर्णसंकरज नीच मुसलमानादिक ब्राह्मण ये भयंकर होते हैं और सुखस्पर्श अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे मनुष्यादिक सुखकारी हैं ॥

शस्तान्येतानिधर्मज्ञ यत्रस्यान्मनसः प्रियम् ॥
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमंजयलक्षणम् ॥

टीका–हे धर्मज्ञ। ऊपर कहे शकुन शुभ हैं जो मनको प्यारी वस्तु होय उसका दर्शन उत्तम तुष्टिकारक तथा जयदायक जानिये ॥

चित्तोत्सवत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्यलाभो विजयप्रवादः ॥
मांगल्यलब्धिः श्रवणंचराज्ञां ज्ञेयानिनित्यं विजयावहानि ॥

टीका–यात्रासमयमें हर्ष शुभ तथा लाभकारक विजयवाद और मंगल-मालिका श्रवण शुभ जानो ॥

क्षेमंकरानीलकण्ठाः श्वोलूकखरजम्बुकाः ॥
प्रस्थाने वामतः श्रेष्ठा प्रवेशे दक्षिणाः शुभाः ॥

टीका—मयूर कुत्ता उलूकपक्षी गर्दभ जंबुक ये प्रस्थानसमय वाममार्गी होंय तो गमनमें शुभ और प्रवेशसमयमें दक्षिण भागमें शुभ जानिये ॥

अथ शिवद्धिघटीमुहूर्ताः ।

देव्युवाच ॥ श्रीशंभोप्राणनाथेश वदमेकरुणानिधे ॥ त्रिपुरस्यवधेप्रोक्ता मुहूर्तायेशुभप्रदाः ॥ भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ॥ यातुरर्थप्रदंब्रूहि करुणाकरसुन्दर ॥ ईश्वर उवाच ॥ शृणुदेविप्रवक्ष्यामि ज्ञानंत्रैलोक्यदीपकम् ॥ ज्योतिःसारस्ययत्सारं देवानामपिदुर्लभम् ॥ नातिथिर्नचनक्षत्रं नयोगंकरणंतथा ॥ कुलिकंयमयोगंच नभद्रानचचन्द्रमाः ॥नशूलयोगिनीराशिर्नहोरानतमोगुणः ॥ व्यतीपातेच संक्रान्तौ भद्रायामशुभेदिने ॥ शिवालिखितामित्येवं सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ कदाचिच्चलतेमेरुः सागरश्चमहीधरः॥सूर्यः पततिवाभूमौ वह्निर्वा यातिशीतताम् ॥ निश्चलश्चभवेद्वायुर्नान्यथाममभाषितम् ॥ तत्रादौकथयिष्यामि मुहूर्तानिचषोडश ॥ गुणत्रयप्रयोगेन चलन्त्येवअहर्निशम् ॥ अथषोडशमुहूर्त्तम् ॥ रौद्रंश्वेतंतथामैत्रं चार्वटंचचतुर्थकम् ॥ पञ्चमोजयदवश्च षष्ठंवैरोचनंतथा ॥ तुरगादिकंसप्तमंच तथाष्टौचाऽभिजित्तथा ॥ रावणंनवमंप्रोक्तं बालवंदशमंतथा ॥ बिभीषणंरुद्रसंज्ञं द्वादशंचसुनन्दनम् ॥ याम्यंत्रयोदशंज्ञेयं सौम्यंज्ञेयंचतुर्दशम् ॥ भार्गवंतिथिसंज्ञंच साविताषोडशंभवेत् ॥ अथकार्यमुहूर्त्तम् ॥ रौद्रेरौद्रतरंकार्यं श्वेतकुञ्जरबन्धकः॥स्नानदानादिकंमैत्रे चार्वटेस्तम्भनं भवेत्॥ कार्यंजयदेवसंज्ञे सर्वार्थकरमुच्यते ॥ तद्वैरोचनसंज्ञकेप्रभवति पट्टाभिषेकंक्रमात् ॥ ज्ञात्वैवंतरदेवतानिविदिते शस्त्रादिकंसाधयेत् ॥ सत्कार्यमभिजिन्मुहूर्त्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यंचबालवे ॥ बिभीषणेशुभंकार्यं यन्त्रकार्यं सुनन्दने ॥ याम्येभवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्येसभायांनृप-

वेशनंस्यात् ॥ स्त्रीसेवनंभार्गवकेमुहूर्त्ते साविविलानाम्निप्रपठेत्सु-
विद्याम् ॥ अथमुहूर्तोदयंवारपरत्वेन ॥ उदयरौद्रमादित्ये मैत्रं
सोमेप्रकीर्तितम् ॥ जयदेवंकुजेवारे तुरदेवंबुधे तथा ॥ रावणं
चगुरौज्ञेयं भार्गवेचबिभीषणम् ॥ शनौयाम्यंमुहूर्त्तंच दिवारा
त्रिप्रयोगतः ॥ अथमुहूर्त्ताङ्गत्वेनगुणोदयम् ॥ गुरुसोमदिनेसत्वं
रजश्चाङ्गारकेभृगौ ॥ रवौमन्देबुधेचैव तमो नाडीचतुष्टयम् ॥
सत्वंगौरंरजश्श्यामं तामसंकृष्णमेवच ॥ इमंवर्णविजानीयात्स-
त्त्वादीनांयथोदितम् ॥ अथसत्वादिगुणानांफलम् ॥ सत्वेनसा-
धयेत्सिद्धिं रजसाधनसंपदाम् ॥ तमसासाधयेन्मोक्षं इतिज्ञेयं
सदाबुधैः ॥ सत्त्वेरजसिसत्कार्यमथवा शुभमेवच ॥ तमसाछेद-
भेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ अथ मुहूर्त्ताङ्गत्वेनरेखाज्ञानम् ॥
शून्यंनभः खादिभिरेववर्णैर्विघ्नंधनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः ॥ मृत्युत
थापादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ अमृतश्चो-
र्ध्वरेखैका कालरेखात्रयंभवेत् ॥ विघ्नमावर्त्तकंतत्र शून्येशून्य-
मितिक्रमात् ॥ अथरेखाफलम् ॥ शून्यनैवभवेत्कार्यं विघ्नमा-
वर्त्तकेभवेत् ॥ कालरेखामृत्युकरी सर्वसिद्धिस्तथामृते ॥ धनु-
र्मीनकर्कटानां घातसत्वेविनिर्दिशेत् ॥ तुलालिवृषमेषाणां घा-
तोरजसिनिश्चितम् ॥ कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्यमकरस्य
च ॥ घातस्तामसवेलायां विपरीतंशुभावहम् ॥ धनुःकर्कट-
मीनाख्या गौरवर्णः क्रमोदितः ॥ वृषमेषतुलायांच वृश्चिकेश्या-
मवर्णता ॥ मिथुनेमकरेकुम्भे कन्यासिंहेचकृष्णता ॥ गौरश्च
म्रियतेसत्त्वे श्यामवर्णेरजोगुणे ॥ कृष्णंतामसवेलायां म्रियते
नात्रसंशयः ॥ यस्मिन्वर्षेभवेन्मासो गौणाधिक्यस्तथाक्षयः ॥
मासेनगृह्यतेमासः सर्वकार्यार्थसाधने ॥ माघफाल्गुनचैत्रेषु वै-
शाखेश्रावणेतथा ॥ नभस्ये मासवाराणां मुहूर्त्तानियथाक्रमात् ॥
रुद्रप्रोक्तमिदंज्ञानं शिवायैरुद्रयामले ॥ गोपनीयंप्रयत्नेन सद्यः
प्रत्ययकारकम् ॥

रवौनभः केशवविघ्नराजौ गोविन्दनामानभ आखुगामी ॥ रात्रौ नृसिंहौयुगलं नभोयत् लक्ष्मीशलम्बोदररामसञ्ज्ञौ ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	ь	ь	ь	ь	६६		६६		ь	ь	ь	ь	६६		६६	

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्री
ь	ь	ь	६६		०	[illegible]	ь	ь	ь	६६		६६		ь	ь	०

सोमेहरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरीसुतविष्णुसञ्ज्ञौ ॥ एवंनिशायांखखविष्णुशून्यंयुग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	ь	ь	६६		६६		ь	ь	ь	०	६६		६६		ь	ь

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्री
[illegible]	०	०	ь	ь	०	६६		ь	ь	ь	ь	६६		६६		०

भौमेथमौमारमणोऽथयुग्मंयुग्मेहरिश्चैव गजाननश्च ॥ नक्तं च विघ्नंद्विपदोःमुकुंदपदत्रयं श्रीपतिखंनभः श्रीः ॥

भौम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	[illegible]	[illegible]	ь	ь	ь	ь	६६		६६		ь	ь	६६		६६	

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्री
६६	[illegible]	[illegible]	ь	ь	ь	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ь	ь	ь	०	०	०		०

बुधेधनुः कृष्णयमौ च शौरिः सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः ॥ रात्रौसुपर्णध्वज एवयुग्मंनभोऽथदामोदरकुञ्जरास्यौ ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
[illegible]	६६		ь	ь	[illegible]	[illegible]	ь	ь	ь	६६		ь	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ь

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुध
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्री
ь	ь	ь	ь	ь	६	६	०	ь	ь	ь	ь	६	६	६	६	०

गुरौगोपिनाथस्तथाविघ्नराजोनभः केशवःकुञ्जरास्यस्तथैव ॥ निशायांपदंनन्दजः सूर्यसूनुर्नभोमाधवश्चापमेकंहरिश्च ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	८	८	६	६	६	६	०	८	८	८	८	६	६	६

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
🦶	८	८	८	🦶	🦶	🦶	🦶	०	८	८	८	६	६	८	८	०

शुक्रेकृष्णोस्याधमः खंमुरारिर्गौरीपुत्रः श्रीपतिःशून्यमेकम् ॥ नक्तंकालःकेशहाखंच युग्मंपादद्वन्द्वोवामनः खंचपादौ ॥

शुक्र	वि	तु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	८	८	🦶	🦶	०	८	८	८	६	६	६	६	८	८	८	०

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त		स	स	र	र	रात्रौ
🦶	🦶	८	८	८	६	६	🦶	🦶	८	८	८	८	०	🦶	🦶	०

शनौपदःश्रीः खनभोनभःखंनारायणौ नाहरिखंहरिश्च ॥ रात्रौचशून्यं यमयुग्ममाधवौखविघ्नराजौनृहरिश्चपादौ ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	🦶	८	०	०	०	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	८

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	🦶	🦶	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	८	🦶	🦶	०

तथाश्विने कार्तिकमार्गपौषे सूर्यादिवारेषु मुहूर्त्तयोगाः ॥ नामाक्षराणां प्रचनं प्रवृत्याविचारपूर्वंविबुधैर्विचिन्त्यम् ॥

सूर्यनृसिंहोद्विपदं च चापोहरिर्नभः खेपदमच्युतोऽङ्घ्रिः ॥ रात्रौपदंचापखमच्युतं चयुग्मंयमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	८	८	🦶	🦶	६	६	८	८	०	०	🦶	८	८	८	🦶

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
🦶	६	६	०	८	८	८	६	६	६	🦶	🦶	८	८	८	८	०

सोमेऽग्निचापंस्वनभो मुकुन्दोनभश्चयुग्मंहरिखंहरिश्च ॥ पदंनिशायांखयुगंमुरारिर्विनायकौविष्णुनभश्चविष्णुः ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	मै	श्वे
दिने	स	स	र	र	त		स	सं	र	र	त	त	स	स	र	र
०	👣	६	६	०	०	८	८	८	०	६	६	८	८	८	८	८

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	सं	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
👣	६	६	०	८	८	८	६	६	६	६	८	८	०	८	८	०

भौमेमहेभाग्यनभोऽथ विष्णुंनभोयुगंगोपतिखंगणेशः ॥ नक्तंगजेन्द्रास्यखमच्युतंचयुग्मंचशून्यं नृहरिश्चयुग्मम् ॥

भौम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	६	६	६	६	०	८	८	०	६	६	८	८	८	०	६	६

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	८	८	८	६	६	०	८	८	८	६	६	०

बुधेधनुःश्रीपतिपादयुग्मंनारायणःस्याद्गणनाथसिद्धिः ॥ रात्रौतुकालोहरिशून्यकालौगोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	६	६	८	८	८	👣	👣	८	८	८	६	६	६	६	८	८

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुध
र	र	त	त	स	सं	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
👣	👣	८	८	०	👣	👣	८	८	८	६	६	६	६	०	८	०

गुरौहरिःशून्ययुगंसुरेशः श्रीविघ्नराजोगगनंतथाश्रीः ॥ निशांघ्रिदैत्यारिखकार्मुकंच पदेमुरारीखयुगंपुनःश्रीः ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	०	६	६	८	८	८	८	६	६	६	६	०	०	८

वा	वि	सु	था	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
👣	८	८	८	०	६	६	👣	👣	८	८	८	०	६	६	८	०

शुक्रेऽमृतंचापमरिन्दमश्चलम्बोदरःकेशवशून्यपादम् ॥ नक्तंचयुग्मं नृहरिःखयुग्मं नृसिंहयुग्मं गगनंचयुग्मम् ॥

शुक्र	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	८	६	६	८	८	८	८	६	६	६	६	८	८	८	०	पाद

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	८	८	८	०	६	६	८	८	८	६	६	०	६	६	०

शनौपदंश्रीर्नभोनकृष्णः खंश्रीपदंविष्णुनभोहरिःपदं ॥ रात्रौपदेखंपदनन्दसूनुर्गजाननोगोपतिशून्यपादः ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
८	पाद	८	०	०	०	८	८	०	पाद	पाद	८	८	८	८	८	पाद

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
पाद	०	पाद	८	८	८	८	६	६	६	६	८	८	८	८	पाद	०

३ चक्रं ॥ ज्येष्ठमासेतथाषाढे तथैवचमलिम्लुचे ॥ सूर्यादिवारे संशोध्यमुहूर्तानिक्रमादिह ॥

अर्केसूर्येचकृष्णोयुगपदयुगलंखंहरिर्विष्णुचापम् ॥ रात्रौ शल्मीशयुग्मंयुगलहरियुगंयुग्मकृष्णंत्रिशून्यम् ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सा	भा	सौ
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	
०	०	०	८	८	६	६	पाद	०	६	०	८	८	८	८	६	६

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	८	८	६	६	६	६	८	८	६	६	६	६	८	८	०	०

सोमेचापद्वयंनो नृहरिखयुगलंपीतवासश्च शून्यम् ॥ चापद्वन्द्वंनिशायामजखपदमजश्चापपद्मेशपादम् ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	६	६	६	६	०	८	८	८	०	६	६	८	८	८	८	०

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
६	६	६	६	८	८	पाद	८	पाद	८	६	६	६	६	८	पाद	०

भौमेशून्येचकृष्णोयुगगगनहारिस्त्रीणिचापानिसिद्धिः ॥

भौम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भ	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	०	०	८	८	६	६	०	८	८	६	६	६	६	६	६	८

नक्तंयुग्मंद्विशून्यंयुगलयुगपदंश्रीखचापंहरिश्च ॥

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	६	६	६	६	👣	८	०	६	६	८	८	०

सौम्येश्रीविघ्ननाथोथहरिगणपतिःपद्मनाभश्चपादः ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	८	८	८	८	👣

दोषायांसिद्धियुग्मंहरिखगजमुखाकृष्णशून्येचकृष्णः ॥

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	बुधे
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	६	६	६	६	८	८	०	०	८	८	०

जीवेविष्णुश्चचापोगगनभजितखमंघ्रियुग्मंनृसिंहः ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भ	सा	रौ	श्वे	भै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	६	६	०	८	८	८	०	👣	👣	👣	👣	👣	८	८

रात्रौनोखंमुरारिर्गगनयुगनजोविष्णुचापोंघ्रियुग्मम् ॥

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	०	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	👣	👣	०

शुक्रेयुग्मेमुरारिर्गगनयुगलजोविष्णुचापांघ्रियुग्मम् ॥

शुक्र	वि	सु	वा	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	भै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	प	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	६	६	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	👣	👣

तन्नादौयुग्मगोपीपतियुगगगनंश्रीवरः खंपदश्रीः ॥

सु	वा	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	भै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	८	८	८	८	६	६	०	८	८	८	८	👣	👣	८	०

मन्देश्रीयुग्मासिद्धिःस्वहरिहरिनभःशौरिखंसिद्धिखंवा ॥

शनि	या	सौ	भा	सौ	रौ	श्व	भै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	८	८	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	०

नक्तंश्रीयुग्मसिद्धिःखगयुगलहरिर्व्योमगोविन्दशून्यम् ॥

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मे	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	अ	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	०	६	६	८	८	०	८	८	८	०	०

अथ चौपहरा मुहूर्त श्रीमुछंदर गोरखनाथकृतयात्रानिमित्तारम्भः ॥ तृतीया त्रयोदशीका फल १ चौथ चतुर्दशीकाफल १ पंचमी पूर्णिमाका फल १ अमावास्याके दिन गमन न करे । मूल काम अच्छा न करे । कृष्ण वा शुक्लपक्षकी तिथिको फल १ जिस मासकी तिथिको जाय तौ अपने चित्तसे गमन करे चंद्रमाका बल भरणी भद्रा दिशाशूल योगिनी काल वास तिथिघात नक्षत्रघात चंद्रघात व्यतीपात कल्याणी संक्रांति अनेक कुयोगके दोष न होंगे यह गोरक्षनाथने कहा है जो तिथि साधिके यात्रा करेगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्यसिद्धि करिके आवेगा शुभम् ॥

पौष	माघ	फाल्गु	चैत्र	वैशा	ज्येष्ठ	आषा	श्राव.	भाद्र	आश्वि	कार्त्ति	मार्ग.	प्रथमप्रहर	द्वितीयप्र.	तृतीयप्रहर	चतुर्थप्रहर	ति	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अर्थलाभ	सौख्य	अतिसुख	राजपद	१	सुख	क्लेश	शुभ	गमनार्थ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भलानहो.	क्लेश	विघ्नहोय	अतिसुख	२	दुःख	निष्ट	विघ्न	मध्यम
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थप्राप्ति	राजपद	अतिसुख	विघ्नहो	३	द्रव्यक्ले	दुःख	अर्थप्राप्त	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेशहोय	अशुभ	कार्यसिद्ध	अतिभय	४	लाभ	सुख	मंगल	धनलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अर्थलाभ	मित्रलाभ	शत्रुभय	कार्यसिद्ध	५	लाभ	धनला.	धनागम	सुखहोय
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	संकटहोय	क्लेश	सर्वसुख	कर्जदेना	६	शून्य	लाभ	मित्रलाभ	अर्थागम
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	विलंबहो	अर्थप्राप्ति	यमघंट	सर्वसुख	७.	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुखप्राप्त
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	यमघंट	अशुभ	सर्वसुख	यमघंट	८	कष्ट	सुख	क्लेश	सौख्य
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थलाभ	अशुभ	सुखसेआ	सर्वसुख	९	सुख	लाभ	कार्यसिद्ध	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	चिंताब्या	चिंताहोय	कार्यसिद्ध	सुखसेआ	१०	क्लेश	दुःख	अर्थागम	धनप्राप्ति
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	विग्रह	विघ्नहोय	सुखपावे	सुखप्राप्त	११	मृत्यु	लाभ	द्रव्यनाश	मृत्युप्रद
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मृत्यु	मृत्यु	अशुभ	कार्यसिद्ध	१२	सुख	मृत्यु	अशुभ	कष्टप्रद

अथ गोरक्षकमतेन तिथिचक्रम् ।

फलं ।

मासेशुक्लादिकेपौषे तिथिः प्रतिपदादितः॥ द्वितीयाद्यास्तुमाघेस्युस्तृतीयाद्यास्तुफाल्गुने ॥ एवंचान्येषुमासेषु तिथ्योद्वादशसंज्ञकाः ॥ लेख्याश्चक्रेत्रयोदश्यां संविहायतिथित्रयम् ॥ तृतीयादित्रयेतत्र त्रयोदश्यादिकेफलम् ॥ यानेप्राच्यादिकाष्टासु वक्ष्येद्वादशधाक्रमात् ॥ सौख्यंशून्यंधनार्तिश्च लाभो लाभभयंधनम् ॥ कष्टंसौख्यंकलिर्मृत्युः शून्यंप्राच्यांफलंक्रमात् ॥ क्लेशोनैःस्व्यंव्यथासौख्यं द्रव्याप्तिर्लाभपीडनम् ॥ सौख्यंलाभः कष्टसिद्धिर्लाभःसौख्यंतुदक्षिणे ॥ भयंनैःस्व्यंप्रियाप्तिश्च भयद्रव्यं मृतिर्धनम् ॥ क्लेशाल्लाभोर्थसिद्धिःस्वं लाभोमृत्युश्चपश्चिमे ॥ धनंमिश्रंधनंलाभः सौख्यंलाभः सुखंसुखम् ॥ कष्टंद्रव्यत्वशून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ॥

यथाचक्रम् ।

पौ	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा.	आ	का	मा.	पूर्व	[द]क्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व्य	नैःस्व्य	मिश्रता
३.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेश	दुःख	द्र.प्रा.	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्तलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्र. प्रा.	धनप्रा.	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय भीति	लाभ	मृत्यु	अथलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्र. ला.	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	का.सि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टासि	अर्थसि	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्र.ला.	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	साख्य	मृत्यु	कष्ट

अथ आनन्दादिशुभाशुभयोग।

सूर्येऽश्विभाच्चहिनरोचिषिचन्द्रधिष्ण्यात्सार्पाच्च भूमित-
नयेथबुधेचहस्तात् ॥ मैत्राद्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदे-
वाच्छायासुतेवरुणभात्क्रमशः स्युरेवम् ॥ आनन्दः
कालदण्डश्चधूम्राख्योथप्रजापतिः ॥ सौम्योध्वांक्षो
ध्वजोनामा श्रीवत्सोवज्रमुद्गरः ॥ छत्रंमैत्रोमानसश्च
पद्माख्योलम्बकस्तथा ॥ उत्पातोमृत्युकाणाख्यः सि-
द्धिश्चैवशुभोमृतः ॥ मुसलोथगदाख्यश्च मातङ्गोराक्ष-
सश्चरः ॥ स्थिरः प्रवर्द्धमानश्च योगाऽष्टाविंशतिःक्र-
मात् ॥ फल ॥ आनन्देलभतेसिद्धिं कालदण्डेमृ-
तिंतथा ॥ धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंचप्रजापतौ ॥
सौम्येचैवमहत्सौख्यं ध्वांक्षेचैवधनक्षयम् ॥ ध्वजना-
म्निचसौभाग्यं श्रीवत्सेसौख्यसंपदः ॥ वज्रेक्षयोमुद्गरेच
श्रीनाशस्तुतथैवच ॥ छत्रेचराजसन्मानं मैत्रेपुष्टिर्नसं-
शयः ॥ मानसेचैवसौभाग्यं पद्माख्येचधनागमः ॥
लम्बकेधनहानिश्च उत्पातेप्राणनाशनम् ॥ मृत्युयोगे
भवेन्मृत्युः काणेचक्लेशमादिशेत् ॥ सिद्धियोगेभवे-
त्सिद्धिः शुभेकल्याणमेवच ॥ अमृतेराजसन्मानो मु-
सलेचधनक्षयः ॥ गदाख्येचाक्षयाविद्यामातङ्गेकुलव-
र्द्धनम् ॥ राक्षसेतुमहत्कष्टं चरेकार्यंचसिद्ध्यति ॥
स्थिरयोगेगृहारम्भः प्रवृद्धे पाणिपीडनम् ॥

	आनंदादि	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	फल
१	आनंद	अ.	मृ.	अ.	ह.	अ.	उ.	श.	सिद्धि
२	काल	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	मृत्यु
३	धूम्र	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	असुख
४	धाता	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	सौभाग्य
५	सौम्य	मृ.	अ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	धनक्षय
७	ध्वज	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	सौख्यसंपत्ति
९	वज्र	अ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	क्षय
१०	मुद्गर	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	राजसम्मान
१२	मित्र	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	पुष्टि
१३	मान	ह.	अ.	उ.	श.	अ	मृ.	अ.	सौभाग्य
१४	पद्म	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	धनागम
१५	लुंबक	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	धनक्षय
१६	उत्पात	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	अ.	ह.	मृत्यु
१८	काण	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेश
१९	सिद्धि	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	कल्याण
२१	अमृत	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	राजसम्मान
२२	मुशल	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	धनक्षय
२३	गदा	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पु.	स्वा.	मू.	अक्षयविद्या
२४	मातंग	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	श.	अ.	मृ.	अ.	ह.	अ.	उ.	महाकष्ट
२६	चर	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र	गृहारम्भ
२८	वर्द्धमान	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	विवाह

टीका–आनंदादियोग अट्ठाईस हैं तिनमें एक १ योगका ७ वार और ७ नक्षत्र तिनका क्रम ऐसे जानिये रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृग, मंगलवारको आश्लेषा, बुधवारको हस्त, गुरुवारको अनुराधा, शुक्रवारको उत्तराषाढा, शनिवारको शततारका इन वारोंमें नक्षत्रोंका संयोग होय तो आनंदादिक योग जानिये ऐसे अट्ठाईस योगोंका क्रम पीछे लिखा है ॥

चर योग ।

रवौपूर्वाषाढागुरौपुष्यः शनौमूलंभृगौमघा ॥ सौम्येत्राद्भयं विशा-भौमे चन्द्रेऽद्रोचरयोगकः॥क्रकचयोग ॥ रवौतुद्वादशी प्रोक्ता भौमेचदशमीतथा ॥ चन्द्रेचैकादशींप्रोक्ता नवमीबुधवासरे ॥ शुक्रेचसप्तमीज्ञेया शनौचैवतुषष्ठिका ॥ गुरौचाष्टमिकाज्ञेयो योगस्तुक्रकचोबुधैः ॥ दग्धयोग ॥ बुधेतृतीया कुजपञ्चमीच षष्ठचांगुरावष्टमिशुक्रवारे ॥ एकादशीसोमशनिर्नवम्यां द्वाद-श्यमर्कामितिदग्धयोगः ॥ मृत्युदा ॥ रवौभौमेभवेन्नंदा भद्रा जीवशशाङ्कयोः ॥ जयाशुक्रेबुधेरिक्ता शनौपूर्णाचमृत्युदा ॥ सिद्धियोग ॥ शुक्रेनंदाबुधेभद्रा जयाभौमेप्रकीर्तिता ॥ शनौ रिक्तागुरौपूर्णा सिद्धियोगाउदाहृताः ॥ उत्पातादियोगाः ॥ विशाखादिचतुष्कंतु भास्करादिक्रमेणतु ॥ उत्पातमृत्यु-कालख्यसिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ यमदंष्ट्रयोग ॥ मघाधनि-ष्ठासूर्येतु चन्द्रेमूलविशाखके कृत्तिकाभरणी भौमे सौम्येपू-षापुनर्वसुः ॥ गुरोपूषाश्विनीशुक्रे रोहिणीचानुराधिका॥शनौ विष्णुः शताभिषग् यमदंष्ट्रः प्रकीर्तितः ॥ यमघण्ट ॥ रवौम-घाबुधेमूलं गुरौ चैवचकृत्तिका ॥ भौमेचार्द्राशनौहस्तःशुक्रे चैवतुरोहिणी ॥ चन्द्रेविशाखायोगोऽयं यमघण्टःप्रकीर्तितः ॥ मुसलवज्रयोग ॥ चन्द्रेचित्राभृगौज्येष्ठा शनौचैवतुरेवती ॥ चान्द्रजेतुधनिष्ठोक्ता ॥ रवौतुभरणतिथा ॥ उषाश्चैवतुभौमेच गुरौचैवोत्तरातथा॥ अयंमुसलवज्राख्ययोगोवर्ज्यः शुभे बुधैः॥ अमृतसिद्धियोग ॥ आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणीच ॥ सोमेचविष्णुर्भृगुरेवतीच भौमाश्विनीचा-मृतसिद्धियोगः ॥

टीका–चरयोगादिक त्रयोदश योग और वार सात कोष्ठकमें लिखे हैं तिनमें जिस वारमें नक्षत्र किंवा तिथि होंय सो योग उस दिन जानिये ॥

	योग.	सू.	चं.	मं	बु.	गु.	शु.	श
१	चरयोग	पू.स्वा.	आर्द्रा	वि.	रो.	पुष्य	भ.	मूल
२	क्रकचयोग	१२ ति.	११	१०	९	८	७	६
३	दग्धयोग	१२ ति.	११	५	३	६	८	९
४	मृत्युयोग	ति. १।६।११	२।७।१२	१।६ ११	४।९ १४	२।७ १२	३।८ १३	५।१० १५
५	सिद्धियोग	ति.	ति.	३।८ १३	७।२ १२	५।१० १५	१।६ ११	४।९ १४
६	उत्पातयोग	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.
७	मृत्युयोग	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.
८	कालयोग	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.
९	सिद्धियोग	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.
१०	यमदंष्ट्रयोग	म. ध.	मू. वि.	कृ.भ.	पू. षा. पु.	उ. षा. अ.	रो.अ.	श्र. श.
११	यमघंट	म.	वि.	मृ.	मू.	कृ.	रो.	ह.
१२	मुशलवज्र	म.	चि.	उ.षा.	ध.	उ.	ज्ये.	रे.
१३	अमृतसिद्धि	ह.	श्र.	अ.	अनु.	पुष्य	रे.	रो.

दासदासी लेनेका मुहूर्त ।

दासचक्र ॥ नराकारंलिखेच्चक्रं सेवार्थमृत्युसंग्रहे ॥ शीर्षेत्रीण्यर्थलाभः स्यान्मुखेत्रीणिविनाशनम् ॥ हृदिपञ्चधनंधान्यं पादे षट्कंदरिद्रता ॥ पृष्ठेद्वेप्राणसंदेहो नाभौवेदाः शुभावहम् ॥ गुदे द्वेभयपीडाच दक्षहस्तेकमर्थकम्॥ एकंवामेनाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकम् ॥

टीका–नराकारचक्रके अवयवस्थानोंमें स्थापित करे शिरपै ३ नक्षत्र धरे तिसका फल अर्थलाभ, मुखमें ३ नाश, हृदयमें ५ धनधान्यवृद्धि, पदोंपर ६ दरिद्र, दृष्टिपर २ मृत्यु, नाभिमें ४ शुभ, गुदापर २ भयपीडा, वामहाथपर १ अर्थप्राप्ति दाहिने हाथपर १ नाश होय ॥

दासीचक्र ॥ दासीचक्रंप्रवक्ष्यामि दासीभात्स्वामिभान्तकम्॥

शीर्षेत्रीणिमुखेत्रीणि स्कन्धयोश्चद्वयंस्मृतम् ॥ हृदयेपंच ऋक्षाणि नाभौपञ्चभगेकेकम् ॥ जानुद्वयेद्वयंज्ञेयं पादयोश्चत्रयंत्रयम् फल ॥ शिरःस्थानेभवेल्लाभोमुखेहानिः प्रजायते ॥ स्कन्धेच स्वामिनामृत्युर्हृदयेपुष्टिवर्द्धनम् ॥ नाभौहानिप्रदंप्रोक्तं भगेचैवपलायनम् ॥ जानौसेवांलभेन्नित्यं पादयोस्तुधनक्षयः ॥

टीका—दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रतक जितने नक्षत्र होंय तिनका क्रम शीशपर ३ फल लाभ, मुखमें ३ फल हानि, कंधापर २ फल स्वामीकी मृत्यु, हृदयमें ५ फल पुष्टि होय, नाभिमें ५ फल हानि, भगपर १ पलायन, जानुपर २ फल सेवा करे, पदपर ६ फल धनक्षयकारक इनमें शुभफल देखिके रखे ॥

गवादि पशु लेनेका मुहूर्त्त ।

गोवृषमहिषीचक्र ॥ शीर्षेत्रयंमुखेद्वेच पादेष्वष्टौविनीर्दिशेत् ॥ हृदयेपञ्चऋक्षाणि स्तनेष्वष्टौभगेकेकम् ॥ फल ॥ शिरःस्थानेभवेल्लाभो मुखेहानिः प्रजायते ॥ पादयोरर्थलाभःस्याद्धृदयेसौख्यवर्द्धनम् ॥ स्तनयोस्तुमहालाभो गुह्यस्थानेमहद्भयम् ॥ अर्यमादिगवांज्ञेयं माहिष्यांसूर्यभान्यसेत् ॥ इदमेव वृषे ज्ञेयं विशेषःपत्सुषोडश ॥

टीका—गाय अथवा वृषभ लेना होय तो उत्तराफाल्गुनीसे दिवसनक्षत्रतक गिने उसमेंसे मस्तकपर ३ फल लाभदायक, मुखमें २ फल हानि, पदपर ८ फल अर्थलाभ, हृदयमें ५ फल सुख, स्तनमें ८ फल महालाभ, भगपर १ फल प्रजावृद्धि गुह्यापर ४ फल भय जानिये और महिषी लेनी होय तोभी इसी क्रमसे शुभाशुभ फल जानिये परंतु सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक गिने और वृषभ लेना होय तौभी यही क्रम जानिये परंतु पदपर १६ नक्षत्र धरे शेषस्थानमें २ धरे और गायके समान शुभाशुभ फल जाने ॥

अश्व मोल लेनेका मुहूर्त ।

अश्वेतुसूर्यभाच्चैव, साभिजिद्भानिविन्यसेत् ॥ पञ्चस्कन्धेजन्मभान्तं

पृष्ठेतुदशकंन्यसेत् ॥ पुच्छेज्ञेयंद्वयंप्राज्ञैश्चतुष्पादेचतुष्टयम् ॥ उदरेपञ्चधिष्ण्यानि मुखेद्वेचप्रकीर्तिते ॥ फल ॥ सौभाग्यमर्थलाभश्च स्त्रीनाशोरणभंगता ॥ नाशश्चअर्थलाभश्चफलंप्रोक्तंमनीषिभिः ॥

टीका-सूर्यनक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रतक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करे इस क्रमसे स्थानोंका फल कंधेपर ३, फल सौभाग्य, पीठपर १० फल अर्थलाभ, पूंछपर २ फल स्त्रीनाश, पैरोंपर ४ फल रणभंगता, उदरपर ५ फल नाश, मुखमें २ फल अर्थलाभ, ऐसे फल पंडितोंने कहे हैं ॥

हाथी मोल लेनेका मुहूर्त्त ।

गजाकारलिखेच्चक्रं जन्मभान्तंचसूर्यभात् ॥ कर्णेशीर्षेद्विजेपुच्छे द्वयंसर्वत्रयोजयेत् ॥ शुण्डायांतुद्वयंयोज्यं वेदाःपृष्ठोदरे मुखे ॥ षड्चतुर्षुपादेषु साभिजिद्भन्यसेत्क्रमात् ॥ फल ॥ कर्णेचैवमहाँल्लाभो मस्तकेलाभएवच ॥ दन्तेचैवभवेल्लाभो पुच्छेहानिः प्रजायते ॥ शुण्डायांतुशुभंज्ञेयं पृष्ठेतुसुखसंपदः॥ उदरेरोगसंभूतिर्मुखेतुमध्यमंस्मृतम् ॥ पादयोश्चभवेल्लाभो गजेचैवंविनिर्दिशेत् ॥

टीका-प्रथम सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक स्थापित करनेका क्रम लिखा है परंतु इसके स्थानों और फलों तथा नक्षत्रोंकी संख्या भिन्न है प्रथम कानोंपर २ फल लाभ मस्तकपर २ फल लाभ दांतोंपर २ फल लाभ पूंछपर २ हानि; सूंडपर २ शुभ, पीठपर ४ सुखसंपदा, पेटपर ४ रोग, मुखपर ४ मध्यम; पावोंपर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ॥

शिबिकारोहणचक्रमुहूर्त्त ।

सूर्यभादिनभंयावत्पञ्चपञ्चचतुर्दिशि ॥ मध्येतुसप्तदेयानिचक्रं ज्ञेयंसुखावहम् ॥ फल ॥ पूर्वभागेतुचारोग्यंदक्षिणेकष्टकारकम् ॥ पश्चिमेकुशताचैवउत्तरेव्याधिसंभवः ॥ मध्यमंचशुभं प्रोक्तमायुर्वृद्धिकरंपरम्॥पालकारोपणंचैतद्बालकस्यबुधैर्हितम्॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत पालकी अथवा पालना इनमेंसे जिसपर आरोहण करना चाहे उसके चहूं ओर और मध्य भागमें लिखनेका क्रम पूर्वभागमें ५ आरोग्य, दक्षिणमें ५ कष्टकारक, पश्चिममें ५ कृशता, उत्तरमें ५ व्याधिनाश, मध्यमें ७ शुभ तथा आयुष्यवृद्धिकारक जानिये ॥

छत्रक्रम।

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रं पुष्यश्चशततारका ॥ धनिष्ठाश्रवणं चैव शुभानिच्छत्रधारणम् ॥ फल ॥ मूलेत्रीणिसप्तदण्डे कण्ठेचैव तुपञ्चकम्॥ मध्येवसुप्रदातव्यं शिखरेवेदएवच ॥ मूलेचजायतेनाशो दण्डेहानिर्धनक्षयः ॥ कण्ठेचराजसन्मानो मध्येछत्रपतिर्भवेत् ॥ शिखरेकीर्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ॥

टीका–तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य शततारका धनिष्ठा श्रवण ये नक्षत्र छत्रधारणमें शुभ हैं परंतु अपने जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक लिखनेके क्रमसे प्रथम मूलपर ३ फल जीवनाश, दंडपर ७ हानि धनक्षय, कंठपर ५ राजसन्मान, मध्यमें ८ छत्रपति, शिखरपर ४ कीर्तिवृद्धि जानिये ॥

मञ्चकचक्रम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं मञ्चमूलेचतुश्चतुः ॥ गात्रेषुत्वेकविन्ध्यासु मध्येसप्तविनिर्दिशेत् ॥ फल ॥ मूलेतुसुखसौभाग्यं यात्रेप्रोक्तं भयंमहत् ॥ मध्येसत्पुत्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरंपरम् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र मंचकचक्रमें अंक स्थापन करनेकी रीति पहिले मुखपर १६ फल सुखप्राप्ति, मध्यगात्रपर ४ भयप्राप्ति, आगे विंध्यापर १ भय, मध्यमें ७ पुत्रलाभ और आयुकी वृद्धि होय ॥

शरसहितधनुषचक्र ॥ सूर्यभाज्जन्मभान्तंच धनुष्येवंचयोजयेत् ॥ चापाग्रेबाणसंख्याकं शराग्रेपञ्चयोजयेत् ॥ शरमूलेतथापञ्च पञ्चसंधौप्रकीर्तयेत् ॥ दण्डेचैवतुदद्याद्वे धनुषश्चक्रमुत्तमम् ॥ फल ॥ अग्रेहानिः शरेलाभः शरमूलेजयस्तथा ॥ चापसंधौतुशौर्यस्याद्दण्डेभङ्गः प्रजायते ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रपर्यंत धनुषपर अंक स्थापन करनेकी

रीति प्रथम अग्रपर ५ हानि, शराग्रपर ५ लाभ, शरमूलपर ५ जय, संधिपर ५ शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग शुभफल देख धनुष धारण करे ॥

रथचक्र।

रथाकारंलिखेचक्रं सूर्यभाज्जानिभंन्यसेत् ॥ रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेषुततोन्यसेत् ॥ ऋक्षत्रयंमध्यदण्डे रथाग्रेभत्रयंतथा ॥ युगेच भत्रयं ज्ञेयं षट्ऋक्षाण्यान्तिमेऽश्वानि ॥ शेषमृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैःसर्वतोमुखे ॥ फल ॥ शृङ्गेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेयाचदण्डके ॥ रथाग्रेदण्डअश्वानं मध्येचैवसुखं शुभम् ॥ बुधैरेवंफलंज्ञेयं जन्मभान्तंक्रमेण च ॥ गर्गेणोक्तानि चक्राणि विज्ञेयानिसदाबुधैः ॥

टीका—रथके आकार चक्र खींचके उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम। प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोंपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ और सर्वत्र ३ सुख जानिये ॥

तिलोंकी घानी करनेका मुहूर्त।

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच ॥ त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणित्रीणित्रीणित्रयंतथा ॥ त्रीणित्रीणितुभान्यत्र योजयेद्घाणके शुभम् ॥ फल ॥ हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोद्रव्यमेव च ॥ स्वामिघातोनिर्धनता मृत्युरेवसुखंक्रमात् ॥

ऊखोंका रस काढनेका मुहूर्त।

वेदाद्रिनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमात् ॥ फल ॥ प्रथमंचभवेल्लक्ष्मीर्द्वितियेहानिमेवच ॥ तृतीयेसर्वलाभं च चतुर्थेचक्षयंतथा ॥ पञ्चमेचभवेन्मृत्युःषष्ठस्थानेशुभंस्मृतम् ॥ सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम् ॥ सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रेनियोजयेत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक घानी चन्द्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके घानीके भाग ८ तिनके फल नीचे लिखे हैं ॥

थाना				छत्रोंका रस.	
६	प्रथमभाग	हानि	४	प्रथमभाग	लक्ष्मी
३	भाग	ऐश्वर्य	२	भाग	हानि
३	भाग	आरोग्य	२	भाग	सर्वलाभ
३	भाग	नाश	१	भाग	क्षय
३	भाग	[illegible]	५	भाग	मृत्यु
३	भाग	स्वामिघात	५	भाग	शुभ
३	भाग	निर्धन	२	भाग	पीडा
३	भाग	मृत्यु	६	भाग	धनक्षय

३ भाग सुख इनमेंसे जिस दिन शुभ फल आवे उस दिन काढे ॥

कृषिकर्मका मुहूर्त।

स्वातीब्राह्मयमृगोत्तरादितियुगे राधाचतुष्कंमघा ।
रेवत्युत्तरविष्णुभंकृषिविधौ क्षेत्रादिवापेविधौ ॥
गोकन्याझषमन्मथाश्चशुभदा वाराः कुजार्कीतरं ।
षष्ठीद्वादशिरिक्तपर्वसु तथा वर्ज्यं द्वितीयाद्वयम् ॥

टीका-स्वाती रोहिणी मृग उत्तरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा मघा उत्तराफाल्गुनी श्रवण ये नक्षत्र और वृष कन्या मकर मिथुन ये लग्न शुभ हैं मंगल शनि और षष्ठी द्वादशी तथा रिक्ता दोनों पर्वणी अर्थात् १५ । ३० और दोनों द्वितीया इनको छोडके कृषिकर्मका आरंभ और बीजादिकोंका वपन करावे ॥

हलचक्र।

त्रिकंत्रिकंत्रिकंपञ्च त्रिकंपञ्चत्रिकंत्रिकम् ॥
सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमशुभंचशुभंक्रमात् ॥

टीका-प्रथम हल धारण करनेका मुहूर्त सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत गिने तिनके भाग ८ तिनका क्रम प्रथम ३ फल अशुभ द्वितीय भाग २ शुभ

तृतीय भाग ३ अशुभ चतुर्थ ५ शुभ पंचम ३ अशुभ षष्ठ ५ शुभ सप्तम ३ अशुभ अष्टम २ नक्षत्र शुभ जिस नक्षत्रके भागमें दिवसनक्षत्र आवे उस दिन धारण करे ॥

नौका बनाने वा जलमें उतारनेका मुहूर्त ।

पौष्णादितिस्तुरगवारुणामित्रचित्रशीतोष्णराश्मिवसुजीवकभान्यमूनि ॥ वारेचजीवभृगुनंदनकोप्रशस्तो नौकादिसंघटनवाहनमेषुकुर्यात् ॥

टीका—रेवती पुनर्वसु अश्विनी आश्लेषा शततारका अनुराधा चित्रा मृग हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार शुभ है इनमें नौका बनवाना वा जलमें उतारना उत्तम है ॥

नौकाचक्र ।

रविभुक्तर्क्षमारभ्य कुर्यात्त्रीण्युदयेचषट् ॥ नाल्यांत्रीणिहृदि त्रीणिपृष्ठेभूःपार्श्वगंत्रयम् शुक्काणेत्रीणिषण्मध्ये नौकाचक्रे भसंस्थितिः ॥ उपरिस्थंचमध्यस्थं षट्श्रेष्ठंचपरंनसत् ॥

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्र लिखनेका क्रम ऊपरके भागमें ६ नाडीमें ३ हृदयपर ३ पीठपर १ पार्श्वमें २ शुक्काणमें ३ नौकाके मध्यभागमें ६ दीजिये तिन तिनमेंसे ऊपर और मध्यके नक्षत्र शुभ और अन्य स्थानोंके अशुभ जानिये ॥

लग्न और ग्रहबल ।

त्रिषडायगतःसूर्यश्चन्द्रोद्वित्र्यायगःशुभः ॥ कुजार्कीत्रिषडायस्थो त्रिषट्खेतरगोगुरुः ॥ द्विसुतास्तत्राष्टरिःफायरिपुसंस्थो बुधः स्मृतः ॥ सुखान्त्यारीन्विनायत्र नौयानेशुभदः सितः ॥

टीका—नौकामें माल भरने अथवा चलानेकी लग्नका ग्रहबलदान द्वितीय षष्ठ एकादश इन स्थानोंमें सूर्य अथवा चंद्रमा मंगल शनि ये होंय तो शुभ और ३।६।१० इन स्थानोंको छोडकर अन्यस्थानोंमें गुरु शुभ २।५।

७।८।१२।६ इन स्थानोंमें बुध होय तो शुभ ७।१२।६ इन स्थानोंमें छोड अन्यस्थानका बुध शुभ जानिये ॥

नौकास्थानके ग्रह।

नाल्यांपापखगाःसौम्याःशुक्काणेशुभकारकाः॥ व्यस्तामृत्युकराः क्रूराःपृष्ठेकूपेचभीतिकृत्॥ अन्तेबाह्येस्थितास्तचेह्लाभायस्मृताबुधैः ॥ एवंविचार्यदैवज्ञो नौयानसमयंवदेत् ॥

टीका—लग्नकुंडलीमें जो २ ग्रह जिस २ स्थानमें पडा होय तिसका फल नालिमें पाप ग्रह शुभ शुक्काणपर शुभ ग्रह शुभ ये विपरीत होंय तो अशुभ क्रूर ग्रह पीठपर वा कूपपर आवे तो भयदायक और इन ग्रहोंमेंसे बाहर २ जावे तो लाभ होय यह विचारके ज्योतिषी बतावे ॥

दीपिकाचक्र।

दीपिकायांमुखेपञ्च राजसन्मानलाभदः ॥ कण्ठेनवधनप्राप्तिर्मध्येऽष्टौस्वामिमृत्युदाः ॥ दण्डेपञ्चभवेद्राज्यं अग्निऋक्षाच्चदीपिकाम् ॥

टीका—कृत्तिकानक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम मुखपर ५ लाभ राजसन्मान, कंठपर ९ धनप्राप्ति, मध्यमें ८ स्वामिमृत्यु, दंडपर ५ राजप्राप्ति इस रीतिसे नक्षत्रक्रम जानिये ॥

कूपचक्र।

कूपवाप्यास्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधैः शुभम् ॥ रोहिणीगर्भमेतस्यात्रित्रिऋक्षाणिचन्द्रभम् ॥ मध्येपूर्वेतथाग्नेये याम्येचैवतुनैऋते॥ पश्चिमेचैववायव्यां सौम्येशूलिदिशिक्रमात् ॥ फल ॥ शीघ्रं जलंनजलंमध्यमजलमजलंबहुजलंच ॥ अमृतजलंबहुक्षारं सजलंमध्यजलंक्रमाज्ज्ञेयम् ॥ मत्स्येकुलीरेमकरे बहुजलंतथैवचार्धं वृषभकुम्भयोश्च ॥ अलीचतोलीचजलाल्पता मता शेषाश्चसर्वेजलदाःप्रकीर्तिताः ॥

टीका--नवीन कूप और वापी खोदनका मुहूर्त रोहिणीसे वर्तमानदिवसके नक्षत्रपर्यंतका क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियोंका चंद्रमा होय तौ बहुत जल निकले, वृष कुंभ इनका चंद्रमा होय तो उसका आधा जल रहे वृश्चिक तुल इनका चंद्रमा हो तो अल्पजल रहे, शेष राशियोंके चंद्रमामें खोदे तो जल नहीं निकले यह बात सिद्ध है ॥
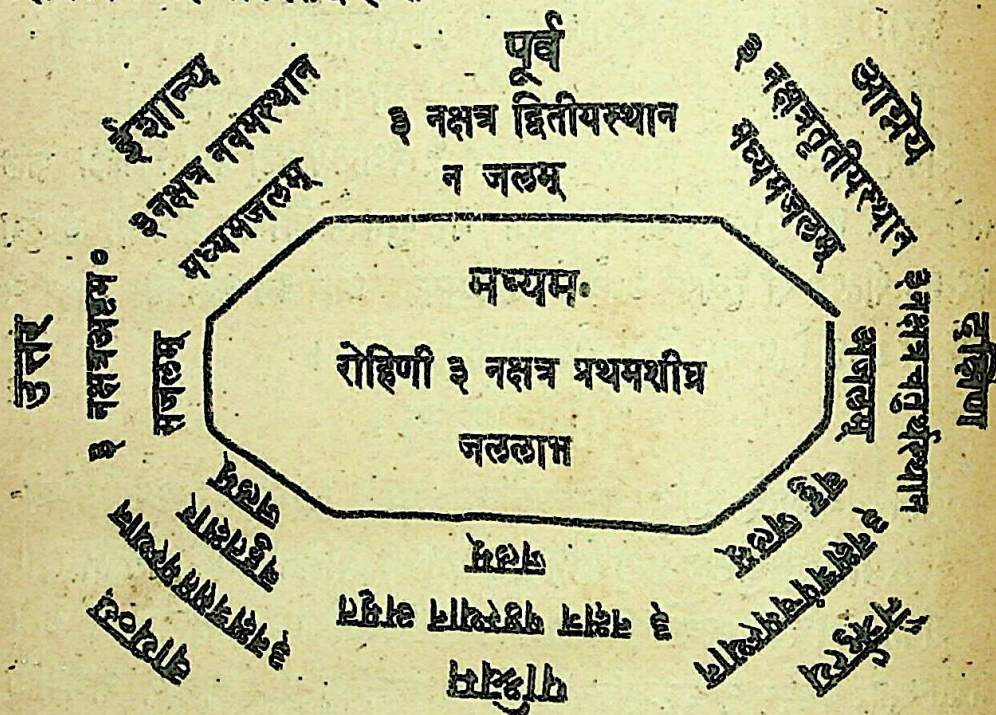
बाग लगानेका मुहूर्त।

गोसिंहालिगतेंशुचान्तरगते भानौबुधादित्रये चन्द्रार्के च शुभावुधैरभिहितारामप्रतिष्ठाक्रियाः ॥ आश्लेषाभरणीद्वयं शतभिषक् त्यक्त्वाविशाखांकुहूं रिक्तापक्षातिमष्टमींपरिहरेत्षष्ठीमपिद्वादशीम् ॥

टीका--उत्तरायणमें वृष अथवा सिंह वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य और बुध गुरु शुक्र चंद्र रवि इनमें कोई वार होय ऐसा शुभ दिन देखकर नवीन बाग लगावे और आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावास्या रिक्ता तिथि द्वितीया अष्टमी षष्ठी द्वादशी इन सबोंको छोडकर अन्य दिनोंमें बाग लगावे ॥

सिक्का ढालनेका मुहूर्त्त ।

मृदुध्रुवाक्षिप्रचरेषुभेषु योगेप्रशस्तेशनिचन्द्रवर्ज्यम् ॥
वारेतथापूर्णजलाह्वयेचमुद्राप्रशस्ताशुभदाहिराज्ञाम् ॥

टीका—मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ये नक्षत्र शुभ और शनि चंद्र ये वार वर्जित हैं॥

अथ प्रश्नप्रकरण ।

तिथ्यादिप्रयुक्तप्रश्न ।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अग्निभिस्तुहरेद्भागं शेषंसत्त्वंरजस्तमः ॥ फल ॥ सिद्धिस्तात्कालिके सत्वे रजसातुविलम्बिता ॥ तमसानिष्फलंकार्यं ज्ञातव्यंप्रश्नकोविदैः॥

टीका—जिस तिथि वार नक्षत्र और प्रहरमें प्रश्न करे तिसका उत्तर नीचे लिखते हैं। उदाहरण—तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोडा तो हुए १७ इसमें ३ का भाग दिया तो भोग्य १५ शेष २ जिसका नाम दूसरा रज तिसका फल कार्यमें विलंब इस प्रमाणसे ३ बचें तो तम निष्फल १ बचे तो सत्व फल कार्यसिद्धि होय ॥

अपनी छायासे प्रश्न ।

आत्मच्छायात्रिगुणितात्रयोदशसमन्विता ॥ वसुभिश्चहरेद्भागं शेषंचैवशुभाशुभम् ॥ फल॥लाभश्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृद्धिःपंचमसप्तके ॥ द्वयोर्हानिश्चतुः शोकं षष्ठाष्टेमरणंध्रुवम् ॥

टीका—अपनी छायाको तिगुणी करके उसमें १३ मिलावे फिर आठका भाग दे बचे वह फल जानिये ॥

शेष १	शेष २	शेष ३	शेष ४	शेष ५	शेष ६	शेष ७	शेष ८
लाभ	हानि	सिद्धि	शोक	वृद्धि	मरण	वृद्धि	मरण

अथ पन्थाप्रश्न ।

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता॥ सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं तुफलमादिशेत् ॥ वर्तमानंचनक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः ॥सप्त

भिश्रहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं सप्तभि-भाजितंतथा ॥ फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषांहिशुभाशुभम् ॥

टीका–तिथि प्रहर वार नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करके सातका भाग दे शेष बचे तो फल जानिये ॥ दूसरा प्रकार–कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्रतक गिनके सातका भागदे ॥ तीसरा प्रकार–प्रश्नके अक्षरोंमें ११ मिलाके सातका भाग दे शेष बचेते फल जानिये ॥

फल–एकशेषेतथास्थाने द्वितीयेपाथिवर्तते ॥ तृतीयेप्यर्द्धमार्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ॥ पञ्चमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतं वदेत् ॥ शून्यंज्ञेयंसप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम् ॥

टीका–१ शेष रहे तो स्थानहीमें जानिये, २ रहे तो मार्गमें ३ बचें तो अर्धमार्गमें, ४ बचें ग्राममें आया जानिये ५ बचें तो मार्गसे लौट गया कहिये ६ बचें तो रोगग्रस्त, ७ बचें तो शून्य अर्थात् मरण जानिये ॥

दूसरा प्रकार ।

घनसहजगतोसितामरेज्योकथयतआगमनंप्रवासिपुंसाम् ॥
तनुहिशुक्रगताविशेषतद्रुझटितिनृणांकुरुतो गृहप्रवेशम् ॥

टीका–द्वितीयस्थानमें शुक्र तृतीयस्थानमें गुरु अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र चतुर्थ स्थानमें गुरु ऐसा योग होय तो परदेशी घरमें शीघ्रही आया जानिये ॥

कार्याकार्यप्रश्न ।

दिशाप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ॥ अष्टाभिस्तुहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ॥ फल ॥ पञ्चैकेत्वरितासिद्धिः षट्तुर्ये चदिनत्रयम् ॥ त्रिसप्तकेविलम्बश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिदौ ॥

टीका–पृच्छकका मुख जिस दिशाको हो वह दिशा और प्रहर वार नक्षत्र इनको एकत्र करके आठका भाग दे शेष बचे तिनमें फल जानिये १ वा ५ शेष बचें तो शीघ्र कार्यसिद्धि जानिये, ६ ।४ बचें तो तीन दिनमें कार्यसिद्धि ३ । ७ बचें तो विलंबसे १ । ८ बचें तो कार्य नहीं होय ॥

अंकप्रश्न॥अङ्कंद्विगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम्॥ त्रयोदशयुतंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत्॥फल॥ एकेहिधनवृद्धिश्च द्वितीयेचधनक्षयः ॥ तृतीयेक्षेममारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहि॥ स्त्रीलाभः पञ्चशेषेस्यात्षष्ठे बन्धुविनाशनम् ॥ सप्तमेईप्सितासिद्धिरष्टमेमरणंध्रुवम् ॥ नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंतथा ॥

टीका-जितने अंकका नाम होय उनको दूना कर फल और नामके अक्षरोंको मिलावे फिर १३ जोड नवका भाग दे शेष बचे तिसका फल १ धनवृद्धि, २ धनक्षय, ३ आरोग्य, ४ व्याधि, ५ स्त्रीलाभ, ६ बंधुनाश, ७ कार्यसिद्धि, ८ मरण, ९ राज्यप्राप्ति, यह गर्गमुनिका वचन है ॥

नवग्रहात्मकंयन्त्रं कृत्वाप्रश्नंनिरीक्षयेत् ॥
फलंपूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः ॥

४	३	८
९	५	१
२	७	६

टीका-नवग्रहात्मकयंत्र बनाके उसमें अवलोकन करे जो अंक आवे उसका फल पूर्वोक्त प्रकारसे जानिये ॥

दूसरामत॥सप्तत्रयाङ्केकथयन्तिवार्ता नवैकपञ्चत्वरितंवदन्ति ॥
अष्टौद्वितीये नहिकार्यसिद्धी रसाश्चवेदा घटिकात्रयंच ॥

टीका-पूर्व जो अंक कहे हैं तिनके प्रमाणसे कृत्य करे परंतु फल भिन्न हैं शेष ७। ३ रहे तो वार्त्ता करना जानिये जो ९। १। ५ बचें तो शीघ्रकार्य होय २। ८ बचें तो कार्य नहीं होय ६। ४ बचें तो तीन घडीमें कार्य होय

वारनक्षत्रयुक्त पन्था प्रश्न।

बुधेचन्द्रेतथामार्गे समीपेगुरुशुक्रयोः ॥ रवौभौमेतथादूरे शनौचपरिपीड्यते ॥ निर्जीवःसप्तऋक्षाणि सजीवोद्वादशेभवेत् ॥ व्याधितोनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तुचान्द्रभम् ॥

टीका-बुध अथवा सोमवारको प्रश्न करे तो मार्गमें चलता हुआ जानिये और गुरु तथा शुक्रको प्रश्न करे ता समीप आया जानिये रवि तथा भौमको दूर जानिये और शनिको पीडायुक्त जानिये, सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम प्रथम ७ नक्षत्रपर्यंत चंद्रमा आवे तो निर्जीव, द्वितीय १२ नक्षत्र-

तक चंद्रमा आवे तो जीवता जानिये, तृतीय नव नक्षत्रपर्यंत चंद्र आवे तो रोगकी उत्पत्ति जानिये इस भांति प्रश्न समुझ लीजिये ॥

नष्टवस्तुप्रश्न ।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंवाह्निविमिश्रितम् ॥ पञ्चभिस्तुहरेद्भागं शेषं तत्त्वंविनिर्दिशेत् ॥ फल ॥ पृथिव्यांतुस्थिरंज्ञेयं अप्सु व्योम्नि न लभ्यते ॥ तेजस्तुराजसंज्ञेयं वायौशोकंविनिर्दिशेत् ॥

टीका—प्रश्न तिथि वार नक्षत्र लग्न इनमें तीन मिलाके ५ का भाग दे शेष १ बचे तो पृथ्वीमें, २ बचें तो जलमें, पर मिले नहीं ३ बचें तो आकाशमें यहभी मिले नहीं, ४ बचें तो तेजमें वह राजमें गई जानिये, ५ बचें तो वायु इसमें शोक जानिये ॥

गर्भिणीप्रश्न ।

तत्पृच्छलग्नेरविजीवभौमे तृतीयसप्तेनवपञ्चमेच ॥
गर्भःपुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहेस्त्रीविबुधैः प्रणीता ॥

टीका—गर्भिणी जिस लग्नमें प्रश्न कहे, उस लग्नसे प्रश्न कहे लग्नके तृतीय अथवा सप्तम नवम पंचम स्थानमें रवि भौम गुरु ये ग्रह स्थित होंय तो पुत्र इन्हीं और स्थानोंमें अन्य ग्रह पडे होंय तो कन्या होय ॥

मुष्टिप्रश्न ॥ मेषेरक्तंवृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम् ॥ कर्केचपाण्डुरं ज्ञेयं सिंहेधूम्रंप्रकीर्तितम् ॥ कन्यायांनीलमिश्रंतु तुलायांपीतामिश्रितम् ॥ वृश्चिकेताम्रमिश्रंच चापेपीतंविनीश्रितम् ॥ नक्रे कुम्भेकृष्णवर्णं मीनेपीतंवदेत्सुधीः ॥

टीका—मेष लग्न होय तो प्रश्नकर्ताकी मुष्टिमें लाल रंगकी वस्तु है और वृष होय तो पीत, मिथुन होय तो नील, कर्क पांडुर, सिंह धूमिली, कन्या नीलमिश्रित, वृश्चिक ताम्रमिश्रित, धन पीतमिश्रित, मकर और कुंभ लोहमय अर्थात् काली, मीन पीतवर्ण वस्तु होय ॥

लग्नसे मनाचिन्तित प्रश्न कहना ।

मेषेचाद्विपदांचिन्ता वृषेचिन्ताचतुष्पदः ॥ मिथुनेगर्भाचिन्ताच

व्यवसायस्यकर्कटे ॥ सिंहेच जीवचिन्तास्यात्कन्यायांचस्त्रियास्तथा ॥ तुलेचधनचिन्ताचव्याधिचिंताचवृश्चिके ॥ चापेचधनचिन्तास्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम् ॥ कुम्भेस्थानस्यचिन्ता स्यान्मीने चिंताचदैविकी ॥

टीका—मेषलग्नमें प्रश्न करे तो मनुष्यकी चिंता कहिये, वृषमें गाय भैंसकी मिथुनमें गर्भकी, कर्कमें व्यापारकी, सिंहमें जीवकी, कन्यामें स्त्रीकी, तुलामें धनकी, वृश्चिकमें रोगकी, धनमें धनकी, मकरमें शत्रुकी, कुंभमें स्थानकी मीनमें भूतपिशाचादि बाहरी बाधाकी चिंता है ॥

संज्ञाके अनुसार लग्नोंके नाम।

धातुमूलंजीवश्चरास्थिरद्विस्वभावाश्च ॥
मेषादयःक्रमेणैवज्ञातव्याः प्रश्नकोविदैः ॥

टीका—मेषादिक्रमसे लग्नोंकी दो दो संज्ञा कहते हैं धातु चरसे मेषलग्नकी संज्ञा, मूल स्थिर वृषकी, जीव द्विस्वभाव मिथुनकी, धातु चर कर्ककी मूल स्थिर सिंहकी, जीव द्विस्वभाव कन्याकी, धातु चर तुलाकी, मूल स्थिर वृश्चिककी, जीव द्विस्वभाव धनकी, धातु चर मकरकी, मूल स्थिर कुंभकी, जीव द्विस्वभाव मीनकी इस प्रकार बारह लग्नोंकी संज्ञा जानिये ॥

अंकप्रश्न ।

अष्टोत्तरशताङ्केषु प्राश्निकोन्यूनमाचरेत् ॥ शेषंद्वादशभिर्भक्तं शेषंचैवशुभाशुभम् ॥ फल ॥ एवंदुर्गासप्तकेवैविलम्बश्चाङ्केतुर्येदिक्षुभूतेषुनाशः ॥ रुद्रेसिद्धिर्युग्मेवृद्धिरत्ताशीघ्रं कार्यं स्यात्त्रिषट्द्वादशेषु ॥

टीका—पृच्छकके कहे एक सौ आठ अंकोंमेंसे एक अंकका नाम लिखावे और उसमें बारहका भाग दे शेष बचें तिसके फल कहिये १ । ७ । ९ बचें तो देरमें काम हो, ८ । ४ । १० । ५ बचें तो नाश, ११ सिद्धि, २ वृद्धि ६ । ० बचे तो शीघ्र प्रश्नकार्य होय ऐसा जानिये ॥

रोगप्रश्न ।

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंप्रहरएवच ॥ अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषंतु फलमादिशेत् ॥ फल ॥ द्वयाग्रोदेवताबाधा पैत्रीवेनेत्रदन्तिषु ॥ षट्चतुर्षुभूतबाधा नबाधाएकपञ्चके ॥

टीका–तिथि वार नक्षत्र और प्रहर लग्न इन सबको एकत्र करके ८ का भाग दे शेष बचें तो तिससे फल कहिये ७ अथवा ३ बचें तो देवताकी बाधा २ । ८ पितरोंकी ६ । ४ भूतकी १।५ बचें तो बाधा नहीं जानिये॥

केवल लग्नसे प्रश्न ।

मेषेचदेवीदोषःस्याद्वृषेदोषश्चपैतृकः॥मिथुनेशाकिनीदोषःकर्कटेभूतदोषकः ॥ सिंहेसहोदराणांवै कन्यायांकुलमातृजः ॥ तुलेदोषश्चंडिकाया नाडीशेषोहिवृश्चिके॥चापेचयक्षिणीपीडा मकरेग्रामदेवतात् ॥ अपुत्राहष्टिजःकुम्भेमीनेआकाशगामिनः ॥

टीका–जिस लग्नमें रोगी प्रश्न करे तिसका उत्तर मेष लग्नमें देवीका दोष, वृषमें पितृदोष, मिथुनमें शाकिनी, कर्कमें भूत, सिंहमें भाइयोंका, कन्यामें कुलदेवता, तुलामें चंडिकाका, वृश्चिकमें नाडीदोष, धनमें यक्षिणी, मकरमें ग्रामदेवताका, कुंभमें अपुत्रा स्त्रीकी दृष्टिका, मीनमें आकाशगामियोंका दोष ऐसे प्रश्न बतावै॥

मेघका प्रश्न ।

आषाढस्यासितेपक्षे दशम्यादिदिनत्रये॥ रोहिणीकालमाख्यातिसुखदुर्भिक्षलक्षणम् ॥ रात्रावेवनिरभ्रंस्यात्प्रभाते मेघडम्बरम् ॥ मध्याह्नेजलबिन्दुः स्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ॥

टीका–आषाढ कृष्णपक्षकी दशमी किंवा एकादशी द्वादशी इन तीनों दिवसोंमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तीन फल तिथि क्रमसे जानिये और रात्रि मेघरहित होय प्रातःकाल मेघ गर्जे मध्याह्नमें बूंद पडें ऐसे लक्षण जिस संवत्सरके होंय उसमें महर्घता जानिये ॥

जललग्न ।

कुम्भःकर्कवृषोमीनमकरोवृश्चिकस्तुला॥जललग्नानिचोक्तानि लग्नेष्वेतेषुसूर्यभम्॥ लग्नत्येवसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ॥

टीका-कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये ७ जललग्न हैं इनमें जो सूर्यनक्षत्र मिले तो वर्षा जानिये ॥

मेघनक्षत्र ।

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषविष्णुमघासुच ॥
स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षतेनात्रसंशयः ॥

टीका-अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रवण मघा स्वाती इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वृष्टि अधिक होय ॥

स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्र ।

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ॥ मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणिक्रमाद्बुधैः ॥ वायुनर्पुसकेभेच स्त्रीणांभेचाभ्र-दर्शनम् ॥ स्त्रीणांपुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ॥

टीका-आर्द्रा आदि स्वातिपर्यंत १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं और विशाखादि ज्येष्ठांत ३ नपुंसक मूल आदि मृगपर्यंत १४ पुरुषनक्षत्र हैं नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवें तो वायु चले और दोनों स्त्री नक्षत्र आवें तो मेघद-र्शन होय जो स्त्रीपुरुष नक्षत्रोंका योग होय तो निश्चयकरि वर्षा होय ॥

सूर्य तथा चंद्रनक्षत्रकी संज्ञा ।

अश्विन्यादित्रयंचैव आर्द्रादेःपञ्चकंतथा ॥ पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम् ॥उक्तानिशशिभान्यत्र प्रोच्यन्तेसूर्यभान्य-थ ॥ रोहिणीचमृगश्चैव पूर्वाफल्गुनिकातथा ॥ सूर्येसूर्यैभवेद्वा-युश्चन्द्रे चन्द्रेनवर्षति॥चान्द्रसूर्यौभवेद्योगस्तदावर्षतिमेघराट्॥

टीका-अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढा उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्रनक्षत्र और शेष सूर्यनक्षत्र जानिये ॥ फल ॥ दिवसनक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों जो सूर्यके हों तो वायु चले और दोनों चंद्रके होंय तो मेघ नहीं वर्षे जो चंद्र और सूर्यनक्षत्रका योग होय तो वर्षा अच्छी होय ॥

धान्यप्रश्न ।

कापायेजयशर्मलाभकुगिरो मित्राणिसर्वंशुभं गोरायेप्रियसुध नानिलपरे लाभारिनाशादिकम्॥ रय्याङ्ककलहःश्रियश्चबलगे स्थानानिमित्रागमौ रोरोरांविपदःपराङ्गकलहःखालेयशोकावहः॥

टीका—सत्ताईस दाने धान्यके लेकर एक राशि करे उसी राशिमेंसे एक चुटकी भर निकालकर रखे ऐसे तीनि राशि करे उसमेंसे तीन २ दाने जुदे जुदे करता जाय जो तीन राशियोंमेंसे एक २ बचे तो जय और लाभ होय १ का कहिये १ पा कहिये १ ये कहिये ३ ऐसी तीन राशियोंसे पृथक् २ एक २ बचे उसका फल जय और लाभ ॥

२ कु क०	१ गी क०	३ रो क० २ मित्रादिसर्वसिद्धि
३ गो क०	३ रा २ ये	१ प्रियभोग धन प्राप्ति
४ ल ३ प	१ रे ३	लाभ और पुत्रका नाश
५ र २ प	१ ग ३	कलह होय
६ व ३ ल	३ ग ३	लक्ष्मी और मित्रलाभ
७ रो २ रो	२ रां २	विपत्ति प्राप्ति
८ प १ रां	२ ग ३	कलह
९ ख २ लां	३ य १	शोकप्राप्ति । ऐसे ३ वार करनेसे बुरा

भला फल जानिये और राशिकी गणनाके समय तीन २ दाने गिने ॥

पशुके विषयमें प्रश्न ।

द्युमणिभान्नवभेषुवनेपशुस्तदनुषट्सुचकर्णपथेस्थितम्॥ अचलभेषुगतं गृहमागतं द्वयगतं गतमेव मृतंत्रिषु ॥

टीका—जो सूर्यनक्षत्रसे वर्तमान नक्षत्र नवम होय तो पशु वनमें जानिये और जो ६ नक्षत्रांत आवे तो मार्गमें जानिये तिसके आगे ७ नक्षत्रांत आवे तो घरमें आया जानिये तिस पीछे २ नक्षत्रांत आवे तो आवनहार नहीं तिसके आगे ३ नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा जानिये ॥

राज्यभंगादियोग ।

यदिभवतिकदाचिच्चाश्विनीनष्टचन्द्रा शशिरविकुजवारे स्वातिरायुष्मयोगे ॥ गगनचरपशूनां जङ्गमस्थावराणां नृपतिजनविनाशो राज्यभङ्गस्तुचोक्तः ॥

टीका—कदाचित् शनि रवि भौम इनमें किसी वारसे युक्त अमावास्याको अश्विनी वा स्वाती नक्षत्र आयुष्मान् योग पडे तो पक्षी पशु जंगम स्थावर व राजा व जन इनका नाश और राज्यभंग होय ॥

सूर्य तथा चन्द्रक परिवेष अर्थात् मंडलका फल ।

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामेचपीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामेच वृष्टिः ॥ रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे ॥

टीका—रविका अथवा चंद्रका मंडल जो प्रथम प्रहरमें हो तो जनोंको पीडा होय, दूसरे प्रहरमें होय तो मेघ वर्षे, तीसरे प्रहरमें धान्यका नाश, चौथे प्रहरमें राज्यभंग होय ॥

उत्पातोंका फल ।

रात्रौधनुर्दिनेउल्का ताराचैवदिनेतथा ॥ रात्रौतुधूमकेतुश्च भूकम्पश्चतथैवहि ॥ एतानिदुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणिच ॥

टीका—रात्रिमें धनुष दिनमें उल्का तथा नक्षत्रपात और रात्रिमें धूमकेतुका उदय तथा भूमिकंप ऐसे चिह्न होंय तो देशक्षयकारक जानिये ॥

अथ छायाबलयात्रा ।

शनौसप्तपादः कवौषोडशस्यू रवौभौमके रुद्रसंख्याविधेया ॥ निशेशेवघेष्टेशसंख्याविधेया गुरावग्निभूसंख्यछायाविधेया ॥ नलत्तानपातं व्यतीपातघातं नभद्रानसंक्रान्तिशूलंतथाच ॥ नरोयातिसंशोध्य छायायदाहि तदाकार्य्यसिद्धिस्त्ववश्यंभवेत्तु ॥ स्वच्छायात्रिगुणाविश्वयुताभाज्याष्टभिःफलम् ॥ लाभोऽ१ थे २

हानी ३ रुग् ४ वृद्धि ५ भयं ६ सिद्धि ७ मृतिः ८ क्रमात् ॥

टीका-शनिवारको ७ पाँवकी छाया शुक्रवारको १६ पांवकी छाया रविवार तथा मंगलमें ११ पावकी छाया विधान करी है चन्द्रमाको ८ और बुधवारको ११ संख्या विधान करी है गुरुको १३ संख्या विधान करी हैं इस छायाबलमें जो यात्रा करते हैं उनको उत्तापात व्यतीपात भद्राघात संक्रांति दिशाशूल नहीं फल देता अपनी छायाके साधन करनेमें मनुष्यकें कार्यसिद्धि अवश्य होती है पुनः अपनी छायाको तीन गुणा कर फिर १३ युक्त करे ८ का भाग देय जो १ बचे तौ लाभ, २ बचें तौ लक्ष्मीप्राप्ति, ३ बचें तौ हानि, ४ बचें तौ रोग, ५ बचें तो वृद्धि, ६ बचें तो भय, ७ बचें तौ सिद्धि, ८ बचें तौ मृत्यु इस क्रम करनेसे यथावत् फल देती है सो यात्रामें विचार लेना चाहिये ॥

अथ वायुपरीक्षाकथनम् ।

आषाढमासस्यचपूर्णिमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवातिवातः ॥
पूर्वस्तदासस्ययुताचमेदिनी नन्दन्तिलोकाजलदायिनोघनाः ॥

टीका-जो आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन सूर्यास्त कालमें पवन पूर्व दिशाकी हो तो पृथ्वी धान्ययुक्त लोक सुखी मेघकी वृष्टि करे ऐसा फल जानना ॥

कृशानुवातेमरणंप्रजानामन्नस्यनाशः खलुवृष्टिनाशः ॥
याम्येमहीसस्यविवर्जितास्यात्परस्परंयान्तिनृपाविनाशम् ॥

टीका-अग्निकोणकी वायु चले तो प्रजाका मरण अन्नका नाश और वर्षाका नाश होय. दक्षिण दिशाकी पवन होय तौ पृथ्वी धान्य करके वर्जित होय और परस्पर राजाओंका विनाश होय यह फल दक्षिणदिशाका जानना ॥

नैशाचरो वारि यदात्र वातो न वारिदोषक्षतिकारिभूरि ॥
तदामहीसस्यविवर्जितास्यात्कन्दन्तिलोकाः क्षुधयाप्रपीडिताः ॥

टीका-नैर्ऋत कोणकी जो पवन होय तौ थोडी वर्षा होय और पृथ्वी धान्य करके वर्जित क्षुधा करके रोगी और पीडित लोग रुदन करें ॥

आषाढमासेयदिपौर्णिमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवारुणेनिलः ॥
प्रवातिनित्यंसुखिनःप्रजाःस्युर्जलान्नयुक्तावसुधातदास्यात् ॥

टीका—आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन जो सूर्यास्त कालमें पश्चिम दिशाकी पवन होय तो प्रजा सुखी रहे और पृथ्वी जल अन्न करके पूरित होय ऐसा पश्चिम दिशाका फल जानना ॥

वायव्यवातेजलदागमः स्यादन्नस्यनाशः पवनोद्धताद्यौः ॥
सौम्येऽनिलेधन्यजलाकुलाधरानन्दन्तिलोकाभयदुःखवर्जिताः ॥

टीका—जो वायव्य कोणकी पवन होय तो जलका आगमन अन्नका नाश और पृथ्वी प्रचंड पवन करके युक्त उत्तर दिशाकी पवन होय तो श्रेष्ठ वर्षा और धनधान्य करके पृथ्वी युक्त लोक सुखी भय दुःख करके वर्जित ऐसा कहना चाहिये ॥

ईशानवृष्टिर्बहुवारिपूरिता धराचगावोबहुदुग्धसंयुताः ॥
भवन्ति वृक्षाः फलपुष्पदाथिनोवातेभिनन्दन्तिनृपाः परस्परम् ॥

टीका—जो ईशान कोणकी पवन चले तो पृथ्वी जलसे पूरित होय और गौ दुग्ध करके पूरित और वृक्ष फल पुष्पोंसे युक्त और राजोंकी परस्पर मैत्री होय ऐसा ईशान दिशाका फल जानना चाहिये ॥

वर्ष निकलनेका प्रकार ।

गताब्दवृन्देर्भुविखाभ्रचन्द्रैर्निघ्नेनभोव्योमगजैः सुभक्ता ॥
त्रिधाफलं वारघटीपलानि स्वजन्मवाराद्दियुतानिइष्टम् ॥

टीका—वर्तमान संवत्में जन्म संवत् हीन करे तो गताब्द संज्ञा होगी गताब्दोंको भुवि १ ख० अभ्र० चंद्र १ अर्थात् १०० से गुणा किया नभ० व्योम० गज ८ अर्थात् ८०० का भाग देय ३ इसमें स्थापना करे जो फल प्राप्त होय सो वार इष्ट होगा इसमें जन्मका वार इष्ट जोड देय और ऊर्ध्वांकमें ७ का भाग देय तो वर्षका वार इष्ट सिद्ध होगा. उदारण—वर्तमान संवत् १९३६ जन्म संवत् १९३४ इन्होंका अंतर २ इसको १०० से गुणा तो २०१४ हुए और इसमें ८०० का भाग दिया तो २ प्राप्त हुए और शेष ४१४ रहे इनको ६० से गुणा तो २४८४० हुए फिर इनमें

८०० का भाग दिया तो ३१ मिले और शेष ४० रहे इनको ६० से गुणा तो २४०० हुए तो इनमें ८०० का भाग दिया तो ३ मिले इस कारण ०२ वार ३१ घटी ०३ पल सिद्ध हुए इनमें जन्मवारादि ६।४५।०५ जोडे ०९।१६।८ ऊर्ध्वांक ९ में ७ के भागसे शेषांक ०२ १६।०५ यह वर्षका इष्ट हुआ ॥

अथ तिथि बनानेका क्रम ।

यातान्दवृन्दोगुणवेदरामे २४३ र्निघ्नःकुरामै ३१ र्विहृतोदिनाद्यम् ॥
घस्रे सहोत्थैःसहितंखरामै ३० र्भक्तंचशेषातिथिरत्रवर्षे ॥

टीका—गत वर्षोंको २४३ से गुणा करे पुनः ३१ का भाग देय जो अंक प्राप्त होय सो तिथि जाने इसमें जन्मकी तिथि युक्त करे फिर ३० से जो शेष रहे सो वर्षकी तिथि होगी परंतु तिथिमें १ ऊनाधिक कहीं हो जाती है ॥

अथ नक्षत्र लानेका क्रम ।

व्योमेन्दुभिः १० संगुणितागतान्दाःखशून्यवेदाश्वि२४०लवैर्विहीनाः ॥ जन्मर्क्षयोगैः सहिताप्रवस्था नक्षत्रयोगो भवतोभ२७तष्टो ॥

टीका—गत वर्षोंको १० गुणा कर फिर दो जगह रखे और एक जगह २४ का भाग देय जो फल प्राप्ति हो वह दूसरेमें घटा दे और जन्मर्क्ष या योग जोड देय और उस नक्षत्रमें २७ का भाग देनेसे शेष नक्षत्र होगा ॥

अथ ग्रहचालनकथनम् ।

स्वेष्टकालोयदाग्रेस्यात्पंक्तौचशोधयेद्धनम् ॥
पंक्तीश्चेवयदाग्रेस्यादिष्टंचशोधयेदृणम् ॥

टीका—इष्टकाल पंचांगस्थ पंक्तिसे आगे हो तो पंक्तिमें काल शोधन करना तो चालन धन होता है और जो पंक्ति इष्टकालसे आगे होय तो इष्टमें पंक्तिशोधन करना तो चालना ऋण होता है ॥

अथ ग्रहस्पर्ष्टीकरणम् ।

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषड्हृता ॥
लब्धमंशादिकंशोध्यं योज्यंस्पष्टोभवेद्ग्रहः ॥

टीका—गत दिनसे वा आगत दिनसे सूर्यादि ग्रहोंकी गतिको गुणा देना और ६० से भाग देना लब्धि अंशादि आवे सो गत दिनका हो तौ ग्रहमें कम करना और आगत दिनका हो तौ युक्त करना इससे ग्रह स्पष्ट होता है ॥

अथ भयातभभोग बनानेकी रीति ।

गतर्क्षनाड्यः खरसेषुशुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषुयुक्ताः ॥
भमुक्तमेतच्चनिजर्क्षनाडिकाःशुद्धाःसयुक्ताश्चभभोगसंज्ञकाः ॥

टीका—गत नक्षत्रकी घडीको ६० में शुद्ध करना ओर वर्षमें सूर्योदयसे जो इष्ट घटी होय सो युक्त करना तो भयात होता है ६० में शुद्ध किया जो नक्षत्र उसमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी युक्त करना तौ भभोग होता है ॥

अथ चंद्रस्पष्टक्रममाह ।

खषड्घ्नंभयातंभभोगोद्धृतंतत्खतर्कघ्नधिष्ण्येषुयुक्तंद्विनिघ्नम् ॥
नवाप्तंशशीभागपूर्वस्तुभुक्तिः खखाभ्राष्टवेदाभभोगेनभुक्ताः ॥

टीका—बीते हुये नक्षत्रका पिंड बांधके ६० से गुणे और भभोगका पिंड बांधके तीन वार भाग देय गत नक्षत्रको ६० से गुणे और जो भभोगके भागसे प्राप्त हुआ जो भयात है उसे इसमें जोड देय फिर इसे दुगुणा करे और ९ का भाग देय तीन वार तौ चन्द्रमा अंशपूर्वक होता है और अंशोंमें ३० का भागमें समीकरे और ४८००७ से गुणे और भभोगका भाग देय दो वार तौ चन्द्रमाकी भुक्ति स्पष्ट हो जायगी ॥

अथ लग्नसाधनम् ।

समागणश्चन्द्रकृशानुनिघ्नः खचन्द्रभक्तोजनिलग्नयुक्तः ॥
तष्टोदिनेशैःकिलवर्षलग्नं सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम् ॥

टीका—गताब्दको ३१ से गुण देना १० से भाग लेना उसमें जन्मलग्न युक्त करना १२ से उसे तष्टित करना जो शेष बचे तौ सामान्य रीतिसे वर्षलग्न जानना चाहिये ॥

अथ मुन्था ।

सेकागताब्दाविरताःपतंगैस्तच्छेषभावे मुथहाजनुर्भात् ॥

टीका–गताब्दमें १ युक्त करना १२ से भाग देना जो शेष रहे सो जन्मलग्नसे मुंथाका स्थान जानना चाहिये ॥

अथ पञ्चाधिकारी ।

मुन्थेशो वर्षलग्नेशस्त्रैराशिकनायकः॥ दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौचन्द्रर्क्षनायकः ॥ जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षपञ्चाधिकारिणः॥

टीका–वर्षमें पञ्चाधिकारी बनानेका क्रम । मुंथेश १ वर्षलग्नेश २ त्रिराशीश ३ दिनमें वर्ष प्रवेश होय तो सूर्यके राशिका स्वामी रात्रिमें वर्ष प्रवेश होय तो चन्द्रके राशिका स्वामी ४ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्षमें यह पञ्चाधिकारी शुभाशुभ फलके लिये ग्रह अधिकार देखना । जिसके दो तीन अधिकार आवें सो बलवान् जानना चाहिये ॥

त्रिराशिपाःसूर्यसितार्कशुक्रा दिनेनिशीज्येन्दुबुधक्षमाजाः ॥ मेषाच्चतुर्णांहरिभाद्विलोमं नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥

टीका–त्रिराशिपति होते सूर्य शुक्र और शनि शुक्र दिनमें मेषसे आदि लेकर कर्क राशितक चक्रसे प्रतीत होय ॥

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वामी	सू.	शु.	श.	शु.	शु.	बु.	श.	शु.	सू.	सू.	श.	शु.
रात्रिस्वामी	बृ.	चं	बु.	चं.	बृ.	चं.	बु.	मं.	बु.	चं.	बु.	मं.
हद्दास्वामी	श.	मं.	बृ.	मं.	श.	चं.	बृ.	मं.	श.	मं.	बृ.	मं.

दृष्टिक्रममाह ।

पादंत्रिरुद्रे १५ सदलंस्वतुर्ये ३० पादत्रयंस्यान्नवपञ्चमेपि ४५ ॥ पश्यन्तिपूर्णं समसप्तके च ग्रहानचान्यत्रविलोकयन्ति ॥

स्पष्टार्थचक्रं विलोकयन्ति ।

१ ११	४ १०	०५ ९	०४ ७	भाव
१५	३०	४५	६०	कालदृष्टि

लग्नस्थमुन्थाप्रकरोतिसौख्यं नृपप्रसादं विजयं रिपूणाम् ॥ हर्षोदयं बाहुबलप्रतापं वृद्धिविलासं घनलाभमुग्रम् ॥ मुन्थाधनस्थानगेलाभमुग्रं करोतिमिष्टान्नसमागमं च ॥ सर्वार्थसिद्धिंनिजबाहुवीर्यात्सुखोदयंमित्रसुतादयंच ॥ लोकाजयंनिजजनाच्चसहोत्थसौख्यं देहार्त्तिकीर्तिशुभकार्यसमृद्धदात्री ॥ सत्सङ्गतिश्चसबलातनुतेहमैत्री मुन्थाच प्राक्रमगतानृपतिप्रसादम् ॥ वित्तक्षयंरिपुजनादशयस्यवृद्धिं वैरोदयंस्वजनराजकुलेषुकुर्यात् ॥ गुप्तार्तिकृद्ददरुजस्याविवर्तिंदात्री तुर्येन्थिहाविविधरोगभयानिपुंसाम् ॥ प्रतापमाहात्म्यसुरार्चनंच सुबुद्धिवृद्धिर्यशसःप्रवृद्धिः ॥ वित्तप्रलाभो जगताप्रसादः पुत्राप्तिसौख्यं सुथनेन्थिहायाम् ॥ नृपाद्भयं चोरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजंभयंच ॥ कार्यार्थहानिः कुमतीष्टवैरं षष्ठेंथिहादुष्टरुजंविदध्यात् ॥ सौख्यार्थनाशोवनितादिकष्टं चिंतामनोमोहनमल्परोगम् ॥ क्लेशोदये स्वेष्टजनेषुवैरं यशोविनाशो मुथगेंथिहायाम् ॥ दुष्टभयार्तिं धनधान्यनाशो विपक्षभीतिर्व्यसनानिमोहाः ॥ कान्तेविनाशं स्वजनेषुपीडा नृपाद्भयंचाष्टमगेंथिहायाम् ॥ धर्मार्थलाभं स्वजनेषुमैत्री नृपोत्तमेः प्रीतियशःप्रवृद्धिः ॥ प्रमोदभाग्योदयकार्यसिद्धिं पुण्योपगेन्था प्रकरोतिसौख्यम् ॥ मनोरथार्तिं स्वजनेषुसौख्यं निजेष्टमन्त्री स्वजनोपकारकः ॥ भूपात्प्रसादो दशमेंथिहायां पुण्योदयः स्याद्विपुलंयशश्च ॥ सुखार्थलाभं शुभबुद्धिवृद्धिर्मनोरथार्तिं नृपतिप्रसादम् ॥ निजेष्टसौख्यं मनसां प्रहर्षं करोतिमुन्था भवगेवशित्वम् ॥ निरुद्यमत्वं निजमित्र-

कष्टं दुष्टातिरुक्नृपतेर्भयंच ॥ धर्मार्थनाशो रिपुचौरभीतिः
स्वाभीष्टपीडा व्ययगोंथिहायाम् ॥

अथ त्रिपताकी चक्रका प्रकार ।

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ॥
स्मृतंबुधैस्तत्त्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखा ग्रहवर्षलग्नात् ॥

टीका–रेखा ३ टेढी ३ सीधी करे और परस्पर ईशान कोणसे रेखाका वेध करे इसको पंडितजन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसमें पूर्वके मध्य रेखापर वर्षलग्नका न्यास करना ॥

तत्र ग्रहन्यासमाह ।

न्यसेद्ग्रचक्रं च विलग्नकार्यां
ताराब्दसंख्या विभजेन्नभोगैः॥
शेषोन्मिते जन्मगचारराशेस्तु-
ल्येचराशौ विलिखेच्छशाङ्कं ॥
परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने
स्वरांशेखचरास्तुलेख्याः॥

२ १ १२ ३ ११ ४ १० ५ ९ ६ ७ ८
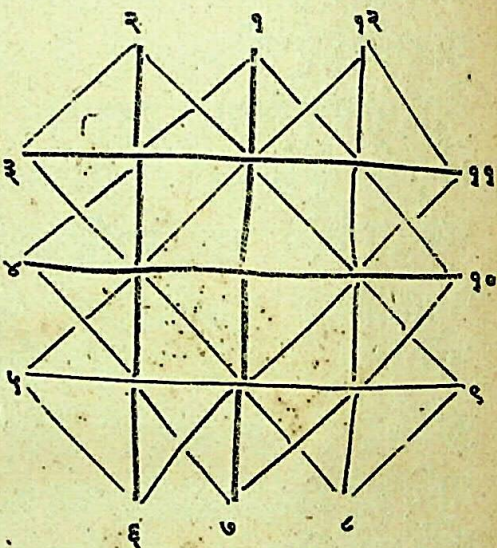
टीका–त्रिपताकी चक्रपर १२ राशि न्यास करना और ग्रहन्यासका प्रकार गतवर्षमें १ युक्त करना ८ से लाभ लेना जो शेष रहे सो जन्मकालमें चन्द्र राशिसे शेष स्थानमें चंद्रमा लिखना और ग्रहको ४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे वहां अपने स्थानसे लिखना और राहु, केतु अपने स्थानसे लिखना तो त्रिपताकी चक्र स्पष्ट होता है ॥

वेधविचार ।

स्वर्भानुविद्धे हिमगौत्वरिष्टं तापोर्कविद्धे रुगिनोर्ध्वविद्धे ॥
महीजाविद्धेतु शरीरपीडा शुभैश्चविद्धे जयसौख्यलाभाः ॥
शुभाशुभव्योमगवेधयोगेफलंतुवेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥

टीका—त्रिपताकी चक्रमें वेध देखनेका प्रकार सर्व ग्रहोंका वेध चंद्रमासे देखना और राहुसे चंद्रसे वेध होय तो अरिष्ट जानना, सूर्यसे वेध होय तो ताप जानना, शनिसे वेध होय तो रोग जानना, मंगलसे वेध होय तो शरीरकी पीडा जानना और शुभ ग्रहसे वेध होय तो जयप्राप्ति सौख्यलाभ और शुभग्रहका वीर्य देखकर वेधमें फल कहना ॥

मुद्दादशा ।

जन्मर्क्षसंख्या सहितागताब्दा द्व्यूनितानन्दहृतावशेषात् ॥
आजंकुराजीशबुकेशुपूर्वं भवन्तिमुद्दादशिकाक्रमोयम् ॥

टीका—जन्मनक्षत्रकी जो संख्या उसमें गताब्दकी संख्या मिलाना और दोनोंकी जो संख्या होय उसमेंसे दो दो कमती करना और ९ से भाग देना जो अंक शेष रहे सो दशा जानना १ शेष रहे तो सूर्यकी दशा, २ शेष रहें तो चंद्रमाकी दशा, ३ शेष रहें तो मंगलकी दशा, ४ शेष रहें तो राहुकी दशा, ५ शेष रहे तो गुरुकी दशा, ६ शेष रहें तो शनिकी दशा, ७ शेष रहें तो बुधकी दशा, ८ शेष रहें तो केतुकी दशा, ० शेष रहें तो शुक्रकी दशा जानना. यह दशाका क्रम ज्योतिषशास्त्रके आचार्योंने कहा है ॥

मुद्दादशाचक्रम् ।

सू.	चं	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
०	१	०	१	१	१	१	०	०	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

मास बनानेका क्रम ।

मासार्कस्यतदासन्नपंक्त्यर्केणसहान्तरम् ॥ कलीकृत्यार्कगत्याप्तदिनाद्येनयुतोनितम् ॥ तत्पंक्तिस्थंयातपूर्वं मासार्केधिकहीनके ॥ तद्वाराद्यमासवेशोद्युप्रवेशः कलासमः ॥

टीका—वर्षसूर्य मासको जो सूर्य सो वर्षके सूर्यसे अंशोंमें निकट हीन वा अधिक होय तो उसका अंतर करे राशि छोड फिर उसका पिंड बांधकर सूर्य पंक्तिके गतिका पिंड बांधके तीन दफे भाग दे तो उससे वार आदि भाग होंयगे. फिर जिस पंक्तिके सूर्यका अंतर किया है उसे उसी मिश्रमानमें घटा दे अथवा जोड दे, जो सूर्य वर्षकी पंक्तिके सूर्यसे अधिक होय तो जोड दे और हीन होय तो घटा देय तब मास वारादि स्पष्ट होगा ॥

अथ ग्रहचक्रप्रकरण ।

सूर्य ॥ ऋक्षसंक्रमणंयत्र द्वेवक्त्रेविनियोजयेत् ॥ चत्वारिदक्षिणे बाहौ त्रीणित्रीणिचपादयोः ॥ चत्वारिवामबाहौच हृदयेपञ्च निर्दिशेत् ॥ अक्ष्णोर्द्वयंद्वयंयोन्यं मूर्ध्निचैकैककंगुदे ॥ फल ॥ रोगोलाभस्तथाध्वाच बन्धनंलाभएवच ॥ ऐश्वर्यराजपूजाच अपमृत्युरितिक्रमात् ॥ चंद्र ॥ चन्द्रचक्रंप्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ॥ शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकं त्रीणिदक्षिणहस्तके ॥ हृदि षट्कंप्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ॥ कुक्ष्यो षट्कंचदातव्यं पादे-कैकं विनिर्दिशेत् ॥ फल ॥ शीर्षेलाभकरंज्ञेयं मुखेतु द्रव्य-हारकम् ॥ हानिदंदक्षिणेहस्ते हृदयेच सुखावहम् ॥ वाम-हस्तेतुरोगाश्च कुक्ष्योः शोकस्तथैवच ॥ पादयोर्हानिरोगौच जन्माधिष्ण्यादिचन्द्रभम् ॥ भौम ॥ भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्माधिष्ण्यादिभौमभम् ॥ शीर्षे षट्कं मुखेत्रीणि त्रीणि वेद-क्षिणेकरे ॥ पादयोः षट्कप्रदातव्यं वामहस्ते त्रयं तथा ॥ गुह्ये चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये त्रयमेवच ॥ फल ॥ विजयश्चैव रोगश्च लक्ष्मीः पन्थाभयंतथा ॥ मृत्युर्लाभः सुखंचापि फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥

सूर्य.			चंद्र.			मंगल.		
सूर्य संक्रांति जिस नक्षत्रमें होय उससे जन्मनक्षत्र पर्यंत गिननेसे जितने नक्षत्र आवें उसका फल ॥			जन्म नक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें चंद्र होय तिस पर्यंत गिने जितने नक्षत्र आवें उसका फल जानिये ॥			जन्मनक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें मंगल होय तिनके गिननेसे जितने नक्षत्र आवें उसका फल ॥		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मुखमें	३	रोगप्राप्ति	मस्तकमें	६	लाभ	शिरपर	६	विजय
दाहिनेहा.	४	लाभ	मुखमें	१	द्रव्यहरण	मुखमें	३	रोगप्राप्ति
पायोंमें	६	मार्गचलन	दाहिनेहा	३	हानिकार	दायाहाथ	३	लक्ष्मीप्रा.
बाईबाहु	४	बंधन	हृदयमें	६	सुखप्राप्ति	पायोंमें	६	मार्गचल.
हृदयमें	५	लाभ	बायेंहा.	३	रोगप्राप्ति	बायांहाथ	३	भय
नेत्रोंमें	४	लक्ष्मीप्रा.	कुक्षिमें	६	शोक	गुदामें	१	मृत्यु
मस्तकमें	१	राजसेपू.	दाहिनेपा	१	हानि	नेत्रोंमें	२	मृत्यु
गुदामें	१	अपमृत्यु	बायांपा.	१	रोगप्राप्ति	हृदयमें	३	सुख

बुध ॥ बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मऋक्षादि सौम्यम् ॥ शिरसि त्रीणिराज्यंस्याद्वक्रैकंधनधान्यदम् ॥ नेत्रेद्वेप्रीतिलाभौचनाभौ श्रीपञ्चकंतथा॥पादयोःषट्प्रवासश्चवामेवेदा धनंतथा॥चत्वारि दक्षिणेहस्ते धनलाभस्तथैवच ॥गुह्यस्थानेभद्वयंचबन्धनंमरणं फलम् ॥गुरु॥ गुरुचक्रंप्रवक्ष्यामिगुरुभाज्जन्मऋक्षकम्॥द्वाच्छिरसिचत्वारि चत्वारि दक्षिणेकरे॥ एकंकण्ठे मुखेपञ्च पादयोःषट्प्रदापयेत्॥करेवामेच चत्वारित्रीणि दद्याच्चनेत्रयोः ॥ ॥ फल॥ राज्यंलक्ष्मीधनप्राप्तिः पीडामृत्युस्तथैवच ॥ सुखं चैव क्रमेणैवं फलंज्ञेयं विचक्षणैः ॥शुक्र॥ शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्तुजन्मभम् ॥ मुखेत्रीणि महालाभः शीर्षे पञ्च शुभावहः ॥ त्रिकंतु दक्षिणेपादे क्लेशहानिकरं सदा ॥ तथैव

वामपादेच त्रीणिभानितुयोजयेत् ॥ हृदयेद्वे धनंसौख्यंभाष्टकं हस्तयोर्द्वयोः ॥ मित्रसौख्यं धनप्राप्तिर्गुह्येत्रीणि तथैवच ॥ स्त्री-लाभश्चफलंप्रोक्तं भृगुपुत्रस्यसूरिभिः ॥

बुध.			गुरु			शुक्र.		
जन्मनक्षत्रसे बुध जिस नक्षत्रमें होय तिस पर्यंत गिने जिस स्थान बुध पडे उसका फल जानिये ॥			जिस नक्षत्रमें गुरु होय उससे जन्मनक्षत्रतक गिने जिस स्थानमें पडा होय उसका फल जानिये ॥			जिस नक्षत्रमें शुक्र होय उससे जन्मनक्षत्रतक गिने जिस स्थानमें पडा होय उस स्थानका फलजानिये		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मस्तक	३	राज्यप्राप्त	मस्तक	४	राज्यप्राप्त	मुखमें	३	उत्तमफ.
मुखमें	१	धन	दाहिनेहा.	४	लक्ष्मीप्राप्त	मस्तकमें	५	शुभ
नेत्रोंमें	२	प्रीतिलाभ	कंठमें	१	धनलाभ	दाहिनेपा.	३	क्लेशहानि
नाभिमें	५	लक्ष्मी	मुखमें	५	पीडा	बायेंपादमें	२	क्लेशहानि
पायोंमें	६	प्रवास	पायोंमें	६	मृत्यु	हृदयमें	२	धनसौख्य
बायेंहाथ	४	धनलाभ	बायेंहाथ	४	सुखप्राप्ति	हाथोंमें	८	मित्रसुख
दाहिनेहा	४	धनलाभ	नेत्रोंमें	३	सुखप्राप्ति	गुह्यमें	३	स्त्रीलाभ
गुदामें	२	बंध व मर	०	०	०	०	०	०

शनि ॥ सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभाज्जन्मऋक्षभम् ॥ मूर्ध्न्यें-कंच तथावक्रे करेचत्वारि दक्षिणे ॥ विन्यसेत्पादयुग्मे षट् वामबाहौ चतुष्टयम् ॥ हृदये पञ्चऋक्षाणि क्रमाच्चत्वारि नेत्रयोः ॥ हस्तेद्वयं गुदे चैकं मन्दस्य पुरुषाकृतेः ॥फल॥ मूर्द्धे-वक्रस्थभेरोगो लाभो वै दक्षिणेकरे स्यादध्वा चरणद्वन्द्वे बन्धौ वामकरे नृणाम्॥ हृदये पञ्चलाभोवै नेत्रप्रीतिरुदाहृता ॥ पूजा मस्ते परानूनं गुदेमृत्युं विनिर्दिशेत् ॥ राहु ॥ राहुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभाद्राहुऋक्षभम् ॥ मूर्ध्नित्रीणि तथाप्रोक्तं करे च

त्वारि दक्षिणे ॥ पादयोः षट्चऋक्षाणिवामहस्ते चतुष्टयम् ॥ हृदयेत्रीणि कण्ठेकं मुखे द्वौ नेत्रयोर्द्वयम् ॥ गुह्योद्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभावतः ॥ फल ॥ राज्यं रिपुक्षयः पन्था मृत्युर्लाभोऽथरोगकः ॥ जयःसौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयंफलं बुधैः ॥ केतु ॥ केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुऋक्षभम् ॥ मूर्ध्निपञ्च जयश्चैव मुखेपञ्च महद्भयम् ॥ हस्तयोर्भानिचत्वारि विजयश्च जयस्तथा ॥ पादयोःषट्चसौख्यंस्याद्धृदि द्वे शोककारके ॥ कण्ठेचत्वारिचव्याधिगुह्यैकंच महद्भयम् ॥

शनि.			राहु.			केतु.		
शनि जिस नक्षत्रमें हो उससे जन्मनक्षत्रपर्यंत गिने जिस स्थलमें नक्षत्र पडा होय उसका फल जानिये			जन्मनक्षत्रसे राहुनक्षत्र पर्यंत गिने जहां नक्षत्र पडा होय उसका फल जानिये ॥			जन्मनक्षत्रसे केतु जिस नक्षत्रमें होय उसतक गिने जितने नक्षत्र पडें उनका फल जानिये ॥		
स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्त	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	दायांहा.	४	रिपुक्षय	मुखमें	५	बडाभय
दक्षिणहा.	४	लाभ	पायोंमें	६	मार्गचलन	हाथोंमें	४	विजय
पायोंमें	६	मार्गचलन	बायेंहाथ	४	मृत्यु	पायोंपर	६	सुख
बायांहाथ	४	बंधन	हृदयमें	३	लाभ	हृदयमें	२	शोक
हृदयमें	५	लाभ	कंठमें	१	रोग	कंठमें	४	व्याधि
नेत्रोंमें	४	प्रीतिला.	मुखमें	२	जय	गुह्यपर	१	बडाभय
मस्तकमें	१	पूजा	नेत्रोंमें	२	सौख्य	०	०	०
गुदामें	१	मृत्यु.	गुदामें	२	कष्ट	०	०	०

जन्मनक्षत्र कहां पडा है तिसका ज्ञान।

शीर्षेत्रीणि मुखेत्रयं चरविभादेकैकभं स्कन्धयोरेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पञ्चोदरे ॥ नाभौ गुह्यतलेच

जानुयुगले चैकैकवृक्षं क्षिपेज्जन्तोःकेचिदितिब्रुवन्तिगणकाः शेषाणिपादद्वये ॥ अल्पायुश्चरणस्थितेचगमनं देशान्तरंजानुभे गुह्येस्यात्परदारलम्भनमथो नाभौच सौख्यप्रदम् ॥ ऐश्वर्यंहृदि चौर्यमस्य करयोर्बाह्वोर्बलं वैमुखे मिष्टान्नं चलभेच्च मानवगणो राज्यंस्थिरंमूर्द्धनि ॥

टीका—केवल मनुष्यचक्र सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक देखनेका क्रम प्रथम ३ नक्षत्र मस्तकपर फल राज्यप्राप्ति, मुखपर ३ नक्षत्र फल मिष्टान्नभोजन, स्कंधपर २ नक्षत्र फल बलवान्, भुजापर २ नक्षत्र फल बल, हाथके तलुवेपर २ नक्षत्र फल चोर, हृदयपर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य, नाभिपर १ नक्षत्र फल सुख, गुह्यपर १ नक्षत्र फल स्त्रीसे लंपट, जानुपर २ नक्षत्र फल देशवास, पादपर ६ नक्षत्र फल थोडा आयुष्य, ऐसा जन्मनक्षत्रसे स्थान विचार करना ॥

लग्नशुद्धिपंचक देखना ।

गततिथियुतलग्नं नन्दहृच्छेषकंच वसुयमयुगषट्के क्षोणिसंख्याक्रमेण ॥ रुगनलनृपचौरं मृत्युदंपञ्चकंस्याद्व्रतगृहनृपमार्गोद्वाहके वर्जनीयम् ॥

टीका—गततिथिको लेकर उसमें लग्न मिलावे और नवका भाग दे शेष बचे तिसका फल जानिये । ८ बचें तो रोगपंचक यह यज्ञोपवीतमें वर्जित, २ बचें तो अग्निपंचक यह गृहारंभमें वर्जित, ४ बचें तो राजपंचक और ६ बचें तो चौरपंचक ये दोनों पंचक गमन लग्नमें वर्जित हैं, १ बचे तो मृत्यु पंचक यह विवाहमें वर्जित है, इनसे अधिक जो शेषांक बचें तो निष्पंचक जाने ये सर्व कार्यमें उक्त हैं ॥

वारोंमें पंचकवर्जित ।

रवौरोगं कुजेवह्निः सोमेतुनृपपञ्चकम् ॥
बुधे चौरं शनौमृत्युः पञ्चकानि तु वर्जयेत् ॥

टीका-रविवारमें रोगपंचक, मंगलमें अग्निपंचक, सोमवारमें राजपंचक, बुधवारको चौरपंचक, शनिवारको मृत्युपंचक ऐसे ये पचक इन वारोंमें वर्जित जानिये ॥

दिनमान रात्रिमान ।

आयनादिकवासररामहता गगनानलबाणशशाङ्कयुताः ॥
परिभाजितशून्यरसैर्घटिका कर्कादिनिशामकरादिदिनम् ॥

टीका-अयन कहिये कर्क संक्रांतिसे मकर संक्रांतितक ६ महीने तैसेही मकरसे कर्कतक ६ महीने जिस दिवसका दिनमान जानना होय तिस पर्यंत कर्क संक्रांतिसे दिन गिनके उसको ३ से गुणा करे जो अक आवें उनमें १५३० मिलावे और ६० का भाग दे जो बचे वह रात्रिमान और जो मकर संक्रान्तिसे गणना करे तो दिनमान आवे यह जानिये ॥

दिन कितना चढा है यह जाननेकी रीति ।

पादप्रभा नगयुता रहिताचमेषात् षड्स्विन्दुनात्रियुगबाण शराब्धिरामैः ॥ स्याद्भाजको दिनदलस्य नगाहतस्य पूर्वं गताः स्युरपरे दिनशेषनाड्यः ॥

टीका-अपनी छायाको पाँवसे मापे जितने पाँव आवें उनमें ७ मिलावे और मेषसंक्रांतिसे कन्या संक्रांति पर्यंत इन्दु कहिये एक इसमें घटावे तिसके आगे तुलासे मीनपर्यंत जो संक्रांति होय उसका क्षेपक तो घटा देवे ऐसे तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ इस प्रमाणसे अंक घटावे जुदे लिखे तिस पीछे दिनदल कहिये १५ इसको ७ से गुणा किया तो हुए १०५ इनमें पीछे लिखे हुए अंकको भाग दे जो भागांक आवें वे घटी जानिये परंतु दिनके पूर्वार्द्धमें दिवसकी घडी आवें और उत्तरार्द्धमें दिन शेष आवे यह जानिये ॥

रात्रि कितनी गई यह जाननेकी रीति ।

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्तसंख्याविशोधितम् ॥
विंशतिघ्नंनवहृतं गतारात्रिः स्फुटाभवेत् ॥

टीका–रात्रिमें जो नक्षत्र होंय तिस पर्यन्त सूर्यनक्षत्रसे गिनके ७ घटा दे शेष रहे उसको २० से गुणा करे और ८ का भाग दे जो अंक शेष रहें उतनीही गत रात्रि कहिये ॥

अंतरंगबाहिरंगनक्षत्र ।

सूर्यभादुडुगणंपुनः पुनर्गण्यतामितिचतुष्टयंत्रयम् ॥
अन्तरंगबहिरंगसंज्ञकं तत्रकर्मविदधीततादृशम् ॥

टीका–सूर्यनक्षत्रसे चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्त्तमान नक्षत्रतक वारंवार गिने तो वे क्रमसे अंतरंग बहिरंग संज्ञक होते हैं इनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करे ॥

सूतिकास्नान ।

करेन्द्रभाग्यानिलवासवान्त्ये मैत्रेन्दवाश्विध्रुवमेऽह्निपुंसाम् ॥
तिथावरिक्तेशुभमामनन्ति प्रसूतिकास्नानविधिंमुनीन्द्राः ॥
इति श्रीशुकदेवविरचिते ज्योतिषसारे संवत्सरादिप्रकरणं समाप्तम् ।

टीका–हस्त ज्येष्ठा पूर्वाफाल्गुनी स्वाती धनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्विनी और ध्रुव नक्षत्र इनमेंसे कोई नक्षत्र जिस दिन होय उस दिन सूतिकास्नान शुभ कहा है रिक्तातिथि वर्जित है यह मुनींद्रोंने कहा है ॥

इति पंडितकेशवप्रसादविरचितज्योतिषसारभाषा समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" ष्टीम् प्रेस,
कल्याण–मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" ष्टीम् प्रेस,
खेतवाडी–मुंबई.